“साहित्य प्रेमी संघ” की नई पहल

मूल्यः ₹ 40

TC-BIHHIN05158

वर्षः 1, अंकः 1, मई-जुलाई 2013 (संयुक्तांक)

सृजक

“शब्दों की नई दुनिया के निर्माता”

मासिक पत्रिका

प्रेम विशेषांक

- प्रेम की उत्पत्तिः एक विश्लेषण
- ओशो प्रवचनः कामवासना और प्रेम
- प्रेम का अन्तिम लक्ष्य क्या-सैक्स ?
- क्या है एडविना-नेहरू के प्रेम का सच ?
- अरेंज मैरेज या लव मैरेज-फैसला आपका
- मुझे तलाश थी एक स्त्री की जो मुझे दु:खी कर सके
- सात वचनः सुखी जीवन के सात आधार स्तम्भ
- भारत हो या इंडिया बेटियाँ तो हमारी ही हैं
- प्रेम विवाह की सफलता या असफलता के लिए जिम्मेदार स्थितियां ?
- क्या सच में वह एक रूह से प्रेम कर बैठा था ?

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक

सत्यम शिवम

विशिष्ट सम्पादक

ई.अर्चना नायडू

उप सम्पादक

वंदना गुप्ता

प्रबंध सम्पादक

स्वाति वल्लभा राज

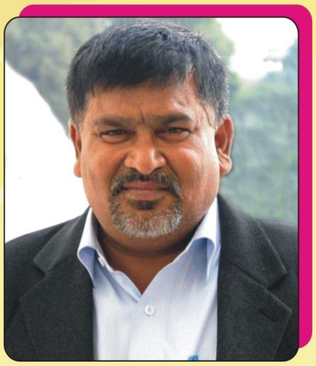

मुख्य परामर्शदाता

प्रसाद रत्नेश्वर

तकनीकी सम्पादक

अभिषेक सिन्हा

सहायक सम्पादक

रविन्द्र सिंह

सह सम्पादक

डॉ.रागिनी मिश्र

चित्रांकनः रोहित रुसिया, अनिल कारपेन्टर, राजकुमार व ओजस्वनी शर्मा

पेन्टिंगः अमित काल्ला

सलाहकार-गणः

डॉ0 विष्णु सक्सेना, ललित शर्मा, डॉ0 रुपचंद्र शास्त्री मयंक, संगीता स्वरुप, दर्शन कौर धनोए
हेमन्त शर्मा (उत्कर्ष प्रकाशन)

मूल्यः ₹ 40
वार्षिकः ₹ 200
पंचवार्षिकः ₹ 1000
आजीवनः ₹ 3000
(डाक खर्च व इंटरसिटी चार्ज सहित)
पत्रिका की सदस्यता के लिये
पृष्ठ 12 देखिए....

‘साहित्य प्रेमी संघ’ की नई पहल

सृजक

RNI-TC-BIHHIN05158

शब्दों की नई दुनिया के निर्माता

मूल्यः ₹ 40
वर्षः 1, अंकः 1
मई-जुलाई 2013
(संयुक्तांक)
मासिक पत्रिका

प्रधान सम्पादक
सत्यम शिवम
मुख्य परामर्शदाता
प्रसाद रत्नेश्वर
विशिष्ट सम्पादक
ई.अर्चना नायडू
उप–सम्पादक
वंदना गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक
स्वाति वल्लभा राज
तकनीकी सम्पादक
अभिषेक सिन्हा
सहायक सम्पादक
रविन्द्र सिंह
सह–सम्पादक
डॉ० रागिनी मिश्र
चित्रांकन: **रोहित रूसिया, अनिल कारपेंटर, राजकुमार व ओजस्वनी शर्मा**
पेन्टिंग: **अमित काल्ला**
सलाहकार–गण: **डॉ० विष्णु सक्सेना, ललित शर्मा, डॉ० रूपचंद शास्त्री ‘मयंक’, संगीता स्वरूप, दर्शन कौर धनोए, हेमन्त शर्मा**
*आवरण चित्र: **टीओ अल्फोंसो की पेन्टिंग से साभार***

सम्पादकीय कार्यालयः
‘ॐ शिव माँ प्रकाशन’, श्री साई
राम शिवम निवास, शिवपुरी,
बेलबनवा, मोतिहारी,
पूर्वी चम्पारण, बिहार पिन–845401
मो० 9031197811
Email:
contact@sahityapremisangh.com
website:
www.sahityapremisangh.com
Facebook:
https://www.facebook.com/Srijakhindi

1. पत्रिका की किसी भी रचना के उपयोग हेतु लेखक की व्यक्तिगत अनुमति व प्रकाशक की सहमति अनिवार्य है। 2. सर्वाधिकार सुरक्षित। संबंधित रचनाएं लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं, प्रकाशक या सम्पादक मंडल का इससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। 3. पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार का विवाद केवल मोतिहारी न्यायालय के अंतर्गत विचाराधीन होगा।
4. यह पत्रिका ‘साहित्य प्रेमी संघ’ का साहित्य को समर्पित एक महायज्ञ है....जहाँ सभी साहित्यानुरागी स्वतंत्र रूप से अपनी साहित्यिक आहुति दे रहे हैं, इसलिये सभी पद व लेखक अवैतनिक हैं।

‘शब्दों की नई दुनिया’ में...

आपकी बातें 2

सम्पादकीय

एक व्यक्ति में भी एक पूरा संसार होता है 4

परिचिर्चाः सबकी बातें

अरेंज मैरेज या लव मैरेज ? फैसला आपका 6

परिचिर्चा–2ः सबकी बातें

प्रेम का अंतिम लक्ष्य क्या–सेक्स ? 13

कथालोक

एल्यूमिनाई मीट– त्रिपुरारि कुमार शर्मा 17
बर्फ में फंसी मछली– दयानंद पाण्डेय 21
अनकहा प्यार– कृष्ण कुमार यादव 27
मैं, तुम, और वो– सुनील कुमार 32
सॉरी सर– सतीश मापतपुरी 35
जिन्दगी तेरी मेरी कहानी है– अंशु हर्ष 40
तोहफा प्यार का– शील निगम 43
हमसफर बावर्ची– डॉ. रागिनी मिश्र 47
वर्जना– पद्मा शर्मा 51

सरोकार–संस्कार

दफन होने का अधिकार– रेखा श्रीवास्तव 20

रामनवमी पर विशेष

राम को अवतरित करें– उर्मिला पोरवाल 26

समसामयिक मुद्दा

भारत हो या इंडिया बेटियां तो हमारी ही हैं– निशा मित्तल 30
एक लड़की का अंत– यशवंत कोठारी 34
स्त्री माने बलात्कार– रंजीता विश्वकर्मा 92

कुछ खासः अंक विशेष

ढाई आखर प्रेम का– कविता विकास 25
वैलेंटाइन डे पर प्यार की पढ़ाई– बृजेन्द्र श्रीवास्तव ‘उत्कर्ष’ 34
प्रेम की उत्पत्ति– विभूति कुमार 37
प्यार, अनुराग, मुहब्बत, इश्क– अनुराग त्रिवेदी ‘अहसास 39
तुमने क्या मुझे याद किया है अभी– सत्यम शिवम 42
राधा कृष्ण अमर प्रेम– स्वाति वल्लभा राज 50
सात वचनः सुखी जीवन के सात आधार स्तम्भ–पं.डी.के. शर्मा ‘वत्स’ 56
प्रेम, वसंत और वैलेंटाइन– आकांशा यादव 94

चलचित्र दृष्टि

काई पो चे (दोस्ती की अनोखी कहानी) 57
काव्य सिंधु **58–61**

अंतरमंथन

ओशो प्रवचनः कामवासना ओर प्रेम 62

सितारे और भविष्य

प्रेम विवाह की सफलता या असफलता के लिये जिम्मेदार स्थितियां 64

बाल उद्यान

बाल कहानीः राक्षस का लड़का 65
बाल कविताः स्कूल में लग जाये ताला– जयप्रकाश मानस 66

सौंदर्य नगरी–ब्यूटी टिप्स

बनी रहें सदा जवान– निशा ठाकुर 67

पुस्तक परिचय

बुन्देलखण्डी ईसाईयत का कड़वापन– बृजमोहन बुधिया 68

शिक्षा दीप

नारी शिक्षा अनिवार्य– डॉ. प्रीत अरोड़ा 69

स्वास्थ्यवर्धक

क्या आपके खाने में फाईबर है ? 70

सन्नाटे का शोर

क्या सच में वह एक रुह से प्रेम कर बैठा था 71

रुबरु

डॉ. विष्णु सक्सैना से बातचीत– सत्यम शिवम 72
हास्य माधुरी **75**
खाना खजाना **76**

अध्यात्म की ओर

महामंत्र ब्रह्मतत्त्व ऊँ– प्रो. श्रीकान्त पाण्डेय प्रसून 77
सृजन का आधार...प्रेम– राज शिवम 79

सुरीली बांसुरी

तेरा मेरा प्यार अमर– ललित कुमार 80

नुस्खों का पिटारा

मोटापा घटाएं, घर के नुस्खे आजमाएं 81

राजनैतिक

धनकुबेरों का कालाधन– प्रमोद भार्गव 82
क्या है एडविना– नेहरू के प्रेम का सच ? 83

बी +Ve

अपने क्रोध को पालना सीखो– डॉ. शालिनी अगम 84

कल के मुसाफिर

अमृता इमरोज–किरण आर्य 85

विज्ञान का कारनामा

ब्लैक बाक्सों का रहस्य– शशांक द्विवेदी 86

रुपांतरण– निजार कब्बानी

मुझे तलाश थी एक स्त्री की जो मुझे दुःखी कर सके– सिद्धेश्वर सिंह 90

व्यंग्यबाण

सच्चे प्यार की निशानी– अविनाश वाचस्पति 46
एक अनार के कई बीमार– डॉ. प्रेम जन्मेजय 91

सफर की यादें

एक यात्रा–हिसार से रोहतक तक– रंजना भाटिया 93

एक नजर

सुरेश चौधरी–साहित्यिक मध्यममार्गी 96
लघुकथाएं– *पेज नं. 20, 25, 63, 66, 74, 81, 89*
गज़ल– *पेज नं. 14, 41, 45, 57, 64, 85, 89*

स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक सत्यम शिवम द्वारा मुद्रक ‘ऊँ शिव माँ प्रकाशन’, श्री सांई राम शिवम निवास, शिवपुरी, बेलबनवा, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण, बिहार के लिए उत्कर्ष प्रकाशन, 142, शाक्य पुरी, कंकरखेड़ा, मेरठ (उ0प्र0) से छपवाकर मोतिहारी, बिहार से प्रकाशित किया। *–सत्यम शिवम, सम्पादक*

आपकी बातें

पाठकों के पत्र

यह जानकर मुझे अपार हर्ष हुआ कि महात्मा गाँधी की कर्मभूमि के अंतर्गत शिक्षा प्राप्त कर सत्यम शिवम ने 'मेरे बाद' पुस्तक को लिखा तथा पत्रिका 'सृजक' का सम्पादन किया, जिसे मैंने देखा। इनकी रचनाओं में सामाजिक व राजनैतिक कर्मों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही पत्रिका की ज्ञानवर्धक बातें युवकों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बनेगी ऐसी मेरी शुभकामना है, इसका प्रकाशन राष्ट्र के नवनिर्माण में सहायक होगा।

ब्रज किशोर सिंह
सचिव,
गाँधी स्मारक एवं संग्रहालय समिति,
मोतिहारी
(पूर्व स्वास्थ्य मंत्री)

सृजक पत्रिका का पहला प्रवेशांक अपने आप मे सम्पूर्ण अंक लगा। बताइये तो क्या नहीं है इस अंक में। राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक हर तरह के विषय, कवितायें, कहानियाँ, आलेख, लघुकथायें सबको सम्मिलित करके एक विशिष्ट अंक बनाने का प्रयास पूरी तरह कामयाब रहा। यहाँ तक कि एक गृहिणी की रसोई भी इसमें शामिल है जो इसे दूसरी साहित्यिक पत्रिकाओं से अलग सिद्ध करती है और अपना एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। हर वर्ग के लोगों को ध्यान में रखकर बनाई गयी पत्रिका निश्चित ही अपना एक विशिष्ट स्थान ग्रहण करेगी।

वंदना गुप्ता, नई दिल्ली

सृजक को देख कर बहुत सारी यादें जेहन में चलचित्र की भांति ताजा हो जाती हैं। चार–चार दशकों का इतिहास जो साहित्य का मैंने जिया है और अनुभव किया है, आज मैं दोराहे नहीं चौराहे पर हूँ और सोच रहा हूँ सृजक के सृजन का पहला कदम कितना समसामयिक है।

प्रस्तुत योजना के गर्भ में दीर्घकालिक अघोषित साहित्य की प्रबल संभावनाएं इस पत्रिका के प्रथम अंक में ही आभाषित होती हैं। अपनी मंगलकामनाएं इस पत्रिका को समर्पित कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका दीर्घजीवी होगी और सृजक से सृष्टि की लम्बी यात्रा तय करने में कामयाबी मिलेगी, इसी विश्वास के साथ भाई सत्यम को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने अपने साहस का परिचय इस पत्रिका को हम सबके सामने रख कर दिया है। धन्यवाद।

भोलानाथ, मैहर

जब से ''सृजक'' पत्रिका हाथ में आयी तभी से इसे पढ़ने में लगा हूँ। आधी से ज्यादा पढ़ चुका हूँ। पत्रिका में उपलब्ध सामग्री इतनी लाजवाब है कि छोड़ने का मन ही नहीं होता। पूरी तरह से साहित्य को समर्पित होते हुए भी ये पत्रिका अपने आप में सम्पूर्ण है। हर पाठक वर्ग के लिए इसमे पढ़ने लायक बहुत कुछ है। सचमुच लाजवाब।

प्रदीप कुमार साहनी,
बोकारो

बहुत–बहुत बधाई,
सृजक पत्रिका आज ही मुझे मिली, अभी पूरी पढ़ी नहीं है लेकिन जितना पढ़ पायी उससे यह तो पता चलता है कि बहुत स्तरीय पत्रिका है, हर विषय का समावेश है। रेखा श्रीवास्तव जी का लेख बहुत पसंद आया, आम आदमी की दुखती रग पर हाथ रखा है। अनंत शुभकामनाएं ।

संगीता स्वरूप, नई दिल्ली

सृजक पत्रिका के अनुक्रम पृष्ठ को ही देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि पत्रिका अनेकानेक विविध विषयों से समृद्ध है। इतने विषय आजकल की पत्रिकाओं में कवर नहीं हो पाते। इसका कारण, हो सकता है कि सामग्री का अभाव, या पूर्णतया व्यवसायिकता। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ इसका नया अंक 'प्रेम विशेषांक' प्राप्त करने का, सत्यम जी बधाई।

अभी से इस बुत–ए–कमसिन का कद जब
आठ फिट का है,
खुदा जाने,
जवानी में कुतुब मीनार हो जाये।

पुरुषोतम वाजपेयी, मुम्बई

मेरी ओर से अनंत शुभकामनायें कि यह हिन्दी पत्रिका के रूप में अत्यंत ऊंचा और प्रतिष्ठित स्थान तो हासिल करे ही, साथ ही इसकी पाठक संख्या भी अनंत हो।

हीरालाल प्रजापति, इटारसी (म.प्र.)

धन्यवाद सत्यम जी,
सृजक का पहला अंक प्राप्त हुआ।
पहला अंक पहली नजर में मस्त।

मुकेश कु0 सिन्हा, नई दिल्ली

युवा और होनहार प्रतिभाओं का एक अनूठा प्रयास श्री सत्यम जी की अथाह मेहनत और उत्साह का जीता–जागता परिणाम है आप सभी गुणी और ज्ञानी मित्रों से आशा है कि उनका उत्साह अवश्य बढ़ाइए, मेरी तरफ से हार्दिक बधाई

अर्चना नायडू,
जबलपुर

सृजक पत्रिका के प्रकाशन हेतु बहुत– बहुत बधाई और शुभकामना हम दुआ करते हैं कि यह पत्रिका अपनी गुणवत्ता की बदौलत बुलंदियों को छुए।

चन्द्रभूषण मिश्रा गाफिल,
गोंडा, उ0प्र0

सृजक पत्रिका की सफलता हेतु बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनायें सत्यम जी।

मीनाक्षी पन्त, नई दिल्ली

सृजक पत्रिका की सफलता के लिये सत्यम जी को विशेष शुभकामनाएँ।

आनन्द विश्वास, नई दिल्ली

नमस्कार बंधू
पत्रिका मिली..

पूरी पढ़ने के बाद ही खबर करने आये हैं...सुन्दर सार्थक प्रयास।

बधाई.......सहयोग राशि जल्द ही आप तक पहुंचेगी। सृजक पत्रिका यह नाम अब किसी पहचान का मोहताज नहीं रहा, हर एक साहित्यकार की जुबान पर यह नाम अंकित सा हो गया है।

'सृजक' बेहद ही उम्दा और बेहतरीन पत्रिका है, जिसमें चुनिंदा रचनाकारों की स्वरचित काव्यकृतियों का अनुपम संग्रह संकलित है। भाई सत्यम शिवम जी के अथक और सार्थक प्रयास से यह पत्रिका हम सभी रचनाकारों को प्रत्येक तिमाही घर पर उपलब्ध हो सकती है बस इसके लिए आपको इसकी वार्षिक, पंचवर्षीय या आजीवन सदस्यता लेनी होगी।

राजा कुमारेन्द्र सिंह सेंगर,
उरई, उ0प्र0

सृजक पत्रिका के प्रवेशांक में पृष्ठ क्रमांक 45 पर मेरी भी एक छोटी सी कविता ''अहसास'' को सत्यम भाई ने स्थान दिया है, बेहद सुन्दर और अनमोल काव्यों की श्रृंखला के साथ यह पत्रिका कल ही मुझे डाक से प्राप्त हुई, हाथ में आते ही मैं खुशी से गदगद हो गया और इसको पढ़कर मन मंत्रमुग्ध हो गया। बहुत ही उम्दा और रोचक जानकारी के साथ अनमोल काव्य रचनाएं समाहित की गयी हैं इस पत्रिका में।

सत्यम भाई, पत्रिका से सम्बंधित कार्यकारिणी और शामिल समस्त रचनाकारों को हार्दिक अनंत शुभकामनाएं एवं बधाई इस नई शुरुआत के लिए। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

नीलकमल वैष्णव ''अनिश''
रायगढ़, छत्तीसगढ़

सत्यम शिवम जी,

सृजक त्रैमासिक पत्रिका सच में एक कम्पलीट मैग्जीन है इसमें हर विधा को लिया गया है– कविता, ग़ज़ल, कहानियां, हास्य व्यंग्य, धर्म, दर्शन आदि सभी विषयों पर पढ़ने का मौका मिला। मुझे पत्रिका

पाठकों के पत्र

भेजने के लिए बहुत–बहुत शुक्रिया।

अगले अंक की इंतजार में...

सुमन कपूर, मंडी,
हिमाचल प्रदेश

मित्रों, कल सखी अर्चना नायडू द्वारा मुझे भेजी गयी पत्रिका ''सृजक'' का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। कल दिन में समय न होने के करण बस उलट पलट कर रख दी थी। मगर रात के समय नींद न आने पर इसे पढ़ा, तो लगा कि सचमुच ये एक अथक प्रयास है पत्रिकाओं के जगत में। सच कहूँ तो अभी बस दो तीन कहानियां और कुछेक लेख ही पढ़े हैं जिनमें मुझे दिविक रमेश जी की कहानी ''सुरजा'' बहुत पसंद आयी। एक ग्रामीण माहौल में पोषित एक परिवार की दो महिलाओं की मनोदिशा का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है उन्होंने जिसमें माँ बेटी के पहलू से दिखाया, एक उम्दा कहानी है। फिर कुछ लघुकथायें भी हैं जिनमें सुकेश साहनी की ''नपुंसक'' एक अच्छी कहानी बनते बनते रह गयी, मुझे ऐसा लगा।

राधेश्याम भारतीय जी की ''छवि'' कहानी पढ़ कर लगा कि कुछ और भी आगे आने वाला है। अब लेख की बात की जाये तो ''ओशो की निगाह में प्रेम'' तो आज के तनाव भरे माहौल में ओशो का महत्व उतना ही है जितने जीने के लिए जल या साँस लेने को हवा, पढ़ते–पढ़ते शीतलता का अनुभव होने लगता है मन मस्तिष्क में। यह सूरज प्रकाश जी की प्रस्तुति है जो बहुत ही उम्दा है। आगे चल कर पृष्ठ 93 पर स्वास्थ्यवर्धक कॉलम में कब्ज को दूर करने के जो घरेलू नुस्खे डॉ. अलोक दयाराम जी ने सुझाये हैं वह बहुत महत्वपूर्ण हैं, न जाने कितनी बीमारियाँ केवल कब्ज के करण जन्म लेती हैं और इससे बचने के लिए जो नुस्खे उन्होंने बताये हैं वह बहुत ही कारगर हैं। अक्सर घर में प्रयोग में आने वाली ही चीजें हैं जिन्हें बस सही तरीके से लेना है।

फिल्मों में ललित कुमार जी की सूक्ष्म नजर की जितनी तारीफ की जाये कम है। उन्होंने जिस तरह से फिल्म ''दिल से'' के नगमे की... चल छैयां छैयां.. का एक–एक शब्द के साथ चित्रण प्रस्तुत करके समीक्षा की है वह सचमुच दृष्टि पटल पर ऐसे उभरता है कि जैसे अभी सामने ही हर दृश्य चल रहा हो। उनका दूसरा लेख भी आनंद फिल्म के किरदार बाबू मोशाय के चरित्र पर है। शायद ही कोई होगा जिसने बाबू मोशाय के किरदार को देखा न हो और न सराहा हो उसके एक–एक डायलॉग जैसे जेहन में बसे हुए हैं जैसे लिम्फो सरकोमा ऑफ द इन्ट्सटाईन इतनी बड़ी बीमारी को भी जिस तरह से राजेश खन्ना ने हँसते–हँसते सहा वह पहली बार देखते हुए उसकी जिन्दादिली से जोड़ देता है। ललित कुमार जी ढ़ेरों बधाई के पात्र हैं इतनी सुन्दर सूक्ष्म समीक्षा देने के लिए।

अभी बस इतना ही पढ़ सकी हूँ, नवपल्लव पत्रिका ''सृजक'' को, मगर कह सकती हूँ कि आने वाले समय में सृजक अपना एक विशिष्ट स्थान बनाएगी।

हाँ, सम्पादकीय भी सत्यम शिवम जी की जिंदगी के विभिन्न पहलुओं की हकीकत को दर्शाती है। मैं बधाई देती हूँ सृजक के लेखकों को, संपादक और उनकी समस्त टीम को, शुभकामनाओं के साथ।

निशा कुलश्रेष्ठ, नोयडा

सृजक पत्रिका का प्रथम अंक पढ़ने को मिला, लगा जैसे मुझे सब कुछ मिल गया। सच है, कोई भी कार्य सच्चे ह्रदय और जुनून के साथ किया जाए, वह निश्चय ही एक अनुपमकृति बन जाती है। सृजक भी उनमें से एक है। निश्चय ही ये "साहित्य प्रेमी संघ" की एक खुबसूरत नई पहल है और नई पीढ़ी के लिए एक सराहनीय प्रयास। सृजक में निश्चय ही साहित्य प्रेमियों के लिए एक अनुपम खजाना छिपा हुआ है। सृजक की पूरी टीम को बहुत–बहुत बधाई। सृजक के लिए मेरी यही शुभकामनाएं है कि ये दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करे और सब तरफ अपनी रोशनी फैलाए ।

बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

माहेश्वरी कानेरी, देहरादून

सृजक पत्रिका का प्रवेशांक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। सर्वप्रथम तो पत्रिका का नाम ''सृजक'' और टैग लाइन ''शब्दों की नई दुनिया के निर्माता'' काफी रचनात्मक और अच्छा लगा। पत्रिका का कवर पेज काफी अच्छा डिजाईन किया गया है। पत्रिका में सभी वर्गों के लिए और सभी विधाओं जैसे कविता, कहानी, गजल, लघुकथा, लेख का अच्छा समावेश है। कुल मिलकर पत्रिका स्तरीय लगी और उम्मीद है सृजक जल्दी ही हिंदी पत्रिकाओं की लम्बी फेहरिस्त में अपना अलग मुकाम बनाने में सफल होगी।

दिनेश गुप्ता 'दिन'
पिपलिया मंडी, मंदसौर (म.प्र.)

'साहित्य प्रेमी संघ' की नई पहल 'सृजक' का प्रवेशांक पढ़ा। बहुत अच्छा लगा। संघ के इस साहित्यिक यज्ञ में हम सदैव साथ हैं। इस पुनीत कार्य के लिए हमारी शुभकामनाएँ।

दो शब्द **'सृजक'** को भेंट स्वरूप–

प्रथम अंक पढ़ा सृजक का
मन को आया बहुत ही रास
साहित्यिक क्रान्ति का प्रथम चरण है
सत्यम जी का ये प्रयास।
कथा, आवरण, कविताएँ प्यारी
काव्य सिंधु लगी अति न्यारी
अंतर मंथन, बाल उद्यान
दादी माँ के नुस्खे सारे
व्यंग्य बाण भी है बिंदास
सत्यम जी का ये प्रयास ।
गजलें मन को छूती सारी
प्रवेशांक का पलड़ा भारी
इन्तजार है प्रेम अंक का
चहक उठेगी बगिया सारी।
हर हाथों में सृजक होगा
ऐसा है मेरा विश्वास
गाँव–गाँव हर शहर–शहर में
फैलेगा इसका प्रकाश।

पंकज बिहारी, पटना

सृजक पत्रिका का प्रवेशांक का कुछ भाग ही अभी पढ़ पाया हूँ। पत्रिका अच्छी लगी। संपादकीय में संपादक सत्यम शिवम जी ने सही विचार दिए हैं कि हमारे साथ कुछ नहीं जाएगा सिवाय अपने कर्मों के फल का। भविष्य में प्रतियोगिता व पुरस्कार का विचार अच्छा है।

वंदना गुप्ता जी का दिवाली के औचित्य पर विचार व राज शिवम जी का आलेख 'नारी विनाशकारी या मंगलदायानी' पसंद आया।

कविता विकास जी का विचार 'टूटते परिवार बिखरता समाज' सही है पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए की बच्चों में जो भी संस्कार आता है वह घर–परिवार, विद्यालय व परिवेश से ही आता है और उसका असर बड़े तक रहता है।

स्वाति वल्लभा राज जी का दृष्टांत 'संस्कार और विश्वास' ठीक तो है पर इस विषय पर हमें गहन चिंतन की आवश्यकता है ताकि युवा व अभिभावक के बीच भावनात्मक सोच में विरोधाभास के कारण उनके बीच का संबंध कमजोर न हो व उसमें दरार या कड़वाहट न हो।

एक अनाथ लड़की के साहसिक कार्य का वर्णन करती मनोहर चमोली 'मनु' जी की कहानी 'पूछेरी' पसंद आयी। यह कहानी जहाँ यह संदेश देती है कि किसी को कम नहीं समझना चाहिए वहीं यह, यह भी बताती है कि लड़की भी ताकतवर हो सकती है बशर्ते कि उसे अपने में दृढ़ संकल्पित होना चाहिए।

महेंद्र भीष्म जी की कहानी 'स्टोरी' में पत्रकार का अपने पत्र–पत्रिका के लिए किये गए कार्य वृद्ध को पानी न देकर उसे मृत्यु तक पहुँचाना, तंबाकू निषेध दिवस पर सिगरेट का उपयोग करना इत्यादि गलत कार्य यही बताते हैं कि आज लोग अपना नाम कमाने के लिए किस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से किसी की जान तक ले लेते हैं। यानी दिखावा के सामाजिक कार्य।

विजय कुमार सप्पति जी की जासूसी कहानी 'द परफेक्ट मर्डर' के पहले भाग में मर्डर का प्लान हो गया है, आगे की घटना का इंतजार है। प्रवीण गुप्ता द्वारा दी गयी जानकारी कि '2600 साल पहले चलता था भगवान श्रीराम का सिक्का' सराहनीय है। निशा मित्तल जी का विचार कि नारी दुर्जन की कुत्सित दृष्टि से कभी सुरक्षित नहीं रही में वास्तविकता का वर्णन किया गया है।

महेश कुमार वर्मा, पटना

सम्पादकीय

एक व्यक्ति में भी एक पूरा संसार होता है...

संसार के अरबों लोगों में एक हम और हमारे अंदर एक अलग संसार। यानि एक संसार में ही अरबों संसार। यह बात सुनने में कुछ अजीब सी लग सकती है पर यह बात सच है कि एक व्यक्ति में भी एक पूरा संसार होता है जब वह प्रेम में होता है, उसकी अलग दुनिया होती है जिसके तौर-तरीके उसके खुद के गढ़े गये होते हैं। वहाँ ना समाज की कोई बंदिश होती है और ना परम्पराओं की जंजीरें। वह संसार प्रेम की खुशनुमा सृष्टि होती है। एक प्रेमी की भावनाओं का जीवंत स्वरूप, जिसमें प्रेम के शाश्वत क्रिया-कलापों का संप्रेषण होता है। मौन को मुखरता मिलती है और प्रेम, दर्शन में बदल जाता है। प्रेमी के अंदर का संसार उसके बाह्य लौकिक संसार से संतुलन स्थापित करने हेतु सबको प्रेममय कर देता है। यह बात सच है कि भाव है तो सृष्टि है, भाव है तो सृजन। भाव के अभाव में तत्क्षण भी सृष्टि की परिकल्पना निरर्थक है। हमारे परिवेश में चारों ओर भावनाओं का एक व्यापक मायाजाल फैला हुआ है जिसमें सब बंधे व उलझे हुये हैं। सकारात्मक भावनायें जीवन की सार्थकता की नींव हैं वहीं नकारात्मक भाव हमारे स्वपतन व ह्रास का एकमात्र कारण। यह बात ईश्वर की परमसत्ता के विस्तृत वजूद को रेखांकित करता है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड में हमारी पृथ्वी जैसी कई पृथ्वियां हैं, सूर्य और चाँद हैं। समुद्र की अनंत बूँदों में बस एक बूँद की भाँति हमारी पृथ्वी का अस्तित्व है और उस पृथ्वी के अरबों लोगों के बीच हमारा एक नगण्य वजूद। वैसे वजूद का अस्तित्व कुछ ज्यादा है हमारे होने से। यानि सही मायने में हम एक भाव हैं। हमारे अंदर भावनाओं और विचारों का एक अलग संसार है। हमारा ब्रह्मांड हमारे भीतर है जिसकी कल्पानाकाश पर हमारे खुद के बनाये गये सूर्य, चाँद और सितारें हैं। इस तरह अरबों की जनसंख्या में अरबों भाव हैं और सब अलग-अलग।

यह है ईश्वर की अलौकिक सृष्टि और सृजन की विषमरूपता। सब की संवेदनायें भिन्न हैं। सब में भावों के कई स्वरुपों का समावेश है पर अनुपात की भिन्नता सबके अलग-अलग व्यक्तित्व का निर्धारण करती है। सकारात्मक भावनाओं का स्वामी प्रभावशाली व दार्शनिक व्यक्तित्व वाला होता है वहीं नकारात्मक भावनाओं का अधिष्ठाता अहंकारी, ईर्ष्यालु और दंभी होता है। उसका अल्पज्ञान उसे महापंडित होने का मिथ्यावहम देता है। उसका सम्पूर्ण जीवन उस असत्य को खोजते हुए गुजर जाता है जो ना कभी था और ना है।

आज के संदर्भ में प्रेम का भी स्वरूप बदल गया है। अब प्रेम स्वार्थ की भावना से ओत-प्रोत है पर शाश्वत प्रेम की सार्थकता तो तब ही है जब प्रेम निःस्वार्थ हो। यहां यह पंक्ति बिल्कुल अतिश्योक्ति साबित होती है कि 'प्रेम तो बस एक बहाना है दर्द पाने का।' जहां लेने का भाव नहीं है बस देने का है। खुद को लुटा देने का भाव बस प्रेम ही दे सकता है जहां लुटने में भी आनंद की प्राप्ति होती है। लिखने, पढ़ने में बड़ा आसान सा दिखता यह शब्द अनुभव की चीज है। क्योंकि बिना अनुभव के कोई एक शब्द भी नहीं लिख सकता प्रेम पर। मैंने भी अनुभव किया है पर छुपाता हूँ और ठीक उसी तरह हर व्यक्ति जो प्रेम में होता है खुद में खोया, खोया रहता है। वह डरता है कि कही उसका प्यार जगजाहिर ना हो जाये और वह अपनी प्रेमिका को अपने दिल के कोने में दुनिया से छुपा कर रखना चाहता हैं। प्रेम लापरवाहों को भी परवाह करना सिखाता है जिससे हमारी सुषुप्त जिम्मेदारियां उभर कर हमारे आचरण में दिखने लगती हैं। हमारी नादानियां खत्म हो जाती हैं और हम एक गम्भीर, परिपक्व प्रेमी बन जाते हैं जो अपने प्रेम के लिये ही जीता है। वह व्यापारी होता है दर्द व संवेदनाओं का। मिलन व विरह प्रेम के हर पक्ष में उसे बस दर्द ही दर्द मिलता है और वह दर्द को खुद में ही कहीं पालने लगता है। वह दर्द ही उसके जीने का सबब होता है, वह दर्द ही उसके होने का सबसे बड़ा कारण होता है। वह दर्द ही प्रेम होता है जो धड़कता है उसके दिल में उसकी धड़कने बन कर। वह एक अजनबी व्यक्ति को अपना मान लेता है, एक पराये को अपना सबकुछ सौंप देता है और ताउम्र उसके इंतजार में ही जिंदगी गुजार देता है। ऐसा है प्रेम जो खुद को तपाने की शक्ति देता है, टूट के बिखर जाने को जुड़ना बताता है।

जब तक प्रेम है तब तक ईश्वर का भी अस्तित्व साकार व आभामंडित है। सृष्टि का कर्ता-धर्ता परमात्मा भी तो बस प्रेम का ही भूखा है। यहाँ भक्त और भगवान के बीच प्रेम के एक नये स्वरूप का जन्म होता है। प्रेम समर्पण की भावना में निहित हो जाता है। आस्था और विश्वास की शक्ति में मिश्रित होकर प्रेम आत्मा को परमात्मा में एकाकार करता है। अंधा भक्त भी बिना किसी सहारे के आगे बढ़ता जाता है और अपने भगवान को ढूँढ़ता-ढूँढ़ता सारी उम्र गुजार देता है और भगवान इस अनोखे प्रेम के वश में जूठे फल भी बड़े स्नेह के साथ खाते रहते हैं। भक्ति की शक्ति में भी प्रेम का साक्षात्कार हो जाता है और एक अंधा भक्त भी प्रेम की आँखों से देख लेता है अपने भगवान को।

प्रेम सम्पूर्ण ब्रह्मांड की एकमात्र वैसी भावना है जिसमें सृजन की क्षमता है। प्रेम के पास सबकुछ है थोड़ा-थोड़ा और उस थोड़े में ही सम्पूर्णता व तृप्ति की सार्थक अभिव्यक्ति मौजूद है। मिलन की आतुरता, विरह का दंश और भीड़ में भी एकाकीपन का भाव ही प्रेम का आरम्भ है। प्रेम ब्रह्मांड की वैसी भाषा है जिसकी सहजता जगजाहिर है। बिना किसी परिश्रम के भी महायुद्धों को सुलह की राह दिखाने वाला एकमात्र प्रेम ही है। यह, वह भाषा है जो इंसानों के साथ ही जीव-जंतुओं से भी सम्बंध बना लेता है और वह सम्बंध

स्नेह का होता है। प्रेम के लिये हृदय में भाव घनत्व का होना अनिवार्य है पर नकारात्मक भाव प्रेम के स्वरूप को बदल देते हैं। प्रेम-घृणा में बदल जाता है जब हमारी मनःस्थिति पर सभी नकारात्मक विचारों का आवरण चढ़ा होता है।

व्यक्ति उससे बहुत प्रेम करता है जो उसके सामने नहीं होता है, उस चीज को बड़ी अहमियत देता है जो उसे मिल नहीं पाती और ताउम्र इस अफसोस में गुजारता है कि काश वो मिल जाता तो मेरी दुनिया ही बदल जाती। पर ठीक इसके विपरीत जो पास होता है वो खास नहीं बन पाता। शायद दूरियों के बढ़ने से प्रेम की तड़प भी बढ़ जाती है और कल्पना में ही प्रेम की कहानियां बनती रहती हैं। हम अपने परिवार के लोगों को बड़ा स्नेह देते हैं। हमारा बेटा हमें जान से भी ज्यादा प्यारा होता है भले ही वो बड़ा होकर जान लेने वाला ही क्यों ना बन जाये, हम सुनना नहीं चाहते है उसकी बुराईयां,उसकी शिकायतें। वास्तविकता यह है कि हम बर्दाश्त नहीं कर सकते अपने खुद के अंश का खराब कहा जाना। हमें उसकी हर गलत से गलत आदतों में भी उसकी खूबियां दिखती हैं और उसकी छोटी-छोटी गलतियों को छुपाते-छुपाते हम एक दिन उसे एक बड़ी गलती करने को प्रेरित करते हैं। वह गलत राह पर चलने लगता है और फिर बदलाव मुश्किल होता है।

वहीं दूसरी ओर किसी और का होनहार, संस्कारी लड़का भी हमें तनिक नहीं सुहाता। एकांत में चिंतन के वक्त हम मन ही मन उसके कार्यो को सराहते हैं, उससे काफी प्रभावित होते हैं पर सब के बीच महफिल में बस उलाहना के शब्द कहते हैं ताकि हम अपने बेटे को तुलनात्मक तौर पर दूसरों से बेहतर कह सकें। आखिर यह कैसी भावना है पक्षपात की। क्या आप यह छोटा सा सच सहन नहीं कर सकते कि हाँ मेरा बेटा गलत है जो मेरी ही परवरिश की कमी का नतीजा है। वह प्रेम के एक ऐसे वृत के चारों तरफ घूमते रहते हैं जहां किसी पराये के लिये अपनी कोई भी भावना नहीं है जो है सो बस अपनों के लिये, पर प्रेम कहां देखता है अपना और पराया वह तो बस निर्झर की तरह बहने लगता है वहां जहां उसे सहानुभूति व सामीप्य का आभास होता है। यहां एक बात और कहना चाहूँगा कि हर बेटे को माँ-बाप के अच्छे संस्कार ही महान नहीं बनाते, महान तो वो बनता है जो खुद के बारे में सोचता है, भविष्य की ओर देखता है। जब तक हम ना चाहें हमें ब्रह्मांड की कोई भी बड़ी से बड़ी ताकत बिगाड़ नहीं सकती और ना ही सँवार सकती। पर हाँ हर गलत व्यक्ति अपने कुकृत्यों हेतु भगवान व अपने परिवेश के लोगों व माता-पिता को दोषी ठहराता है। वैसे माता-पिता मन ही मन अपनी संतान से इतना क्षुब्ध हो जाते हैं कि उनका दर्द अंदर ही अंदर नासूर का रूप धारण कर लेता है। उनका अभिमान उन्हें वहशी दरिंदा बना देता है और वो बस मौके की तलाश में रहते हैं जब औरों के लड़कों की गलतियां निकाल सके। पर जब वह सफल नहीं होते तो एक असफल जुआरी की भाँति अपना सबकुछ लुटता देख वे अपनी हर क्रिया-कलापों में क्रोध, ईर्ष्या व चिड़चिड़ेपन को जगह दे बैठते हैं। निर्जीव, बेजान जंगली घासों को बकरियों के द्वारा खा जाने पर मासूम चरवाहे बच्चों पर अपना मिथ्यादम्भ परिलक्षित करते हैं। किसी के मासूम बच्चे को जिसे परिस्थिति ने चरवाहा बना दिया है, पीट-पीट कर उसके चित्कारों से खुद के अंदर की भड़ास की पुष्टि करते हैं और कोमलता की सारी परिभाषाओं को तार-तार कर देते हैं। हम सब देखते रहते हैं, सुनते रहते हैं और वह समाज का एक प्रतिष्ठित असामाजिक प्राणी अपने नालायक बेटे को दुनिया का सबसे होनहार समझने वाला किसी गरीब के बच्चे को मार-मार कर लहूलुहान कर देता है।

क्या कहते हैं आप ? क्या है सजा ऐसे कलुषित मानसिकताओं से भरे पागल इंसानों की ? जिनका अहंकार किसी और को बड़ा मान ही नहीं सकता वो चाहे भगवान ही क्यों ना हो। ऐसे लोग मेरे अनुसार उस पाप के हकदार हैं जितना सौ लोगों की जान लेने के बाद होता है। आप कहेंगे मैं राष्ट्र की किसी समस्या की ओर इंगित ना कर यहां किस समस्या की बात कर रहा हूँ। पर शुरुआत हमारे समाज, हमारे परिवेश से ही होनी चाहिये। क्योंकि हम सब कोई कोटिरूपों वाले भगवान के अवतार तो हैं नहीं जो एक साथ पूरी सृष्टि को संचालित कर सकते हैं। हम आम आदमी हैं जो बदल सकते हैं दुनिया की तस्वीर, अपने आस-पास के अत्याचारों व कुत्सित मानसिकताओं को बदल कर। हमारा प्रयास हो कि हम सब आगे आयें और अपने समाज की हर तरह की बुराईयों की खातिर मुहिम करें। मैं स्वागत करता हूँ आप सब का यहां आपकी हर मुहिम को एक सार्थक पन्ना दिया जायेगा और परिचर्चा कर उस बुराई की ओर समाज के हरवर्ग का ध्यान बँटाया जायेगा।

'सृजक' का काम है सृजन के हर आयाम में अपना परचम फैलाना चाहे वो लिखित हो या व्यवहार में चित्रित। हमें बदलना है उस समाज को जहां प्रेम के नाम पर सौदेबाजी हो रही है, जहां प्रेम सीमित हो गया है बस अपनों के लिये। हमें समझाना है उस युवा वर्ग को जो प्रेम को बस खिलवाड़ समझते हैं और वासना की पूर्ति का जरिया। हमें देनी है कुछ ऐसी मिसालें जो सोचने को विवश कर दें सबको और अमन का पैगाम फैलायें हर ओर। हमें देना है सकारात्मक भावों को आश्रय जिसकी नींव पर बनेगी हमारे स्वर्णिम भविष्य की सुनहरी छतें। जिस पर खड़े होकर हमारे नौनिहाल देख सकेंगे सबको एक नजर से। वह भाव होगा समरूपता व सद्भावना का। आईये, आप भी हमारे साथ इस सामाजिक व साहित्यिक महायज्ञ में शामिल हो जाइये।

''साहित्य प्रेमी संघ'' की समग्र विषयक पत्रिका 'सृजक' के प्रवेशांक को आप सभी का अपार स्नेह व सानिध्य प्राप्त हुआ है। देश के हर कोने से हजारों मेल व दूरभाष के द्वारा शुभकामनायें प्राप्त हुई हैं जो हमारे इस कार्य को एक नया उत्साह देता है। यह दूसरा अंक प्रेम विशेषांक या वैलेंटाइन स्पेशल प्रेम के रंगों में पूर्णतया रंगा गया है। जहां आपको मिलेगी हर तरह की चुनिंदा कहानियां, कवितायें, आलेख व समसामयिक परिचर्चा भी। साथ ही अन्य सारे स्थायी स्तम्भों में पूर्वतर ज्ञान-वर्धक व रोचक बातों का समावेश होगा। कुछ नये पन्ने होंगे जहां आपको अवसर मिलेगा अपनी सृजनात्मकता को दिखाने का और साथ ही और भी बहुत कुछ। तो अब डूब जाइये प्रेम के इस महासागर में, जहां सब कुछ है, बस पन्ने पलटने भर की देर है।

साथ ही हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा जो आप मेल के द्वारा या दिये गये पते पर भेज सकते हैं। आपकी प्रतिक्रिया व सुझाव हमारा उत्साहवर्धन करते हैं और हम हर बार कुछ नया करने की कोशिश करते हैं।

सत्यम शिवम

फैसला आपका

संयोजिका:
रेखा श्रीवास्तव

अरेंज मैरिज या लव मैरिज

हमारे समाज में प्राचीन काल से विवाह एक संस्कार के रूप में माना जाता रहा है। लेकिन इसका एक निश्चित स्वरूप नहीं रहा, तब इसमें जाति के बंधन नहीं थे। बस योग्य वर हो तो कन्यादान कर दिया। पहले भी विवाह, प्रेम विवाह के रूप में होते थे लेकिन तब भी उसमें दोनों पक्षों की सहमति कम मिलती थी और उस समय अपहरण के बाद विवाह कर लिया जाता था।

सामाजिक व्यवस्था में समय के अनुसार परिवर्तन हुआ। समाज के नियमों में भी सुधार और बिगाड़ हुआ लेकिन ये संस्कार या सामाजिक संस्था अपने अस्तित्व को बनाये रही और आज तक इसके उस स्वरूप को हम देख रहे हैं। पहले विवाह का निर्धारण परिजन ही करते थे और कन्या उसके लिए बाध्य होती थी। वहां उसकी इच्छा का कोई अस्तित्व ही नहीं था। इसमें भी उसके अस्तित्व को कभी मान्यता मिली और कभी वह क्रीत दासी की तरह से जीवन जीती रही।

अरेंज्ड मैरिज या नियोजित विवाह का अस्तित्व सदियों से रहा है, लेकिन प्रेम विवाह का अस्तित्व इतना सहज तरीके से पहले न मिलता था लेकिन अस्तित्व में था।

आज प्रेम विवाह बहुत ही सामान्य सी बात हो गयी है और समाज में लड़के और लड़कियों के खत्म होते भेद और उनके अपने व्यक्तित्व के लिए प्राप्त स्वतंत्रता के साथ समाज ने प्रेम विवाह को अब सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी है।

लेकिन हमारे इस विषय में क्या दृष्टिकोण है ? ये जानने के लिए इस परिचर्चा को आयोजित किया गया है। इसके द्वारा हम अपने साथियों के विचार जानने का प्रयास कर रहे हैं :

लव मैरिज बेहतर है

साधना वैध
आगरा (उ.प्र.)
मो. 9319912798
Email: sadhana.vaid@gmail.com

जीवन की ऊबड़ खाबड़ राहों पर विवाह की गाड़ी को यदि फर्राटे से चलाना चाहते हैं तो गाड़ी का सही हालत में होना बहुत जरूरी है। चारों पहियों का भी उचित रख–रखाव होना चाहिये। प्यार के ट्यूब पर विश्वास का, समर्पण के ट्यूब पर परस्पर सम्मान का, समझदारी के ट्यूब पर परिपक्वता का और त्याग के टयूब पर धैर्य का मजबूत टायर चढ़ा होना चाहिये, साथ ही पीछे डिग्गी में क्षमा के ट्यूब पर समझौते का टायर चढ़ी स्टेपनी की व्यवस्था करना भी ना भूलें। अहम वादी सोच के एक्सीलेटर पर संयम का ब्रेक पूरी तरह से लगता हो और गाड़ी की टंकी हर हाल में निभाने की दृढ़ इच्छाशक्ति के प्रीमियम पेट्रोल से भरी हो। ड्राइविंग सीट पर बैठ कर स्टीयरिंग सम्भालने वाला व्यवहार कुशलता के सभी ट्रैफिक नियमों का दक्षता से अनुपालन करता हो तो फिर शादी चाहे अरेंज्ड हो या प्रेमजनित उसे सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। दरअसल विवाह की सफलता इस पर निर्भर नहीं होती कि शादी माता–पिता की पसंद से हुई है या युवक–युवती की अपनी पसंद से। जिन व्यक्तियों की सोच में परिपक्वता है वे विपरीत एवं विषम परिस्थितियों का सामना भी समझदारी से कर ले जाते हैं और अपने वैवाहिक जीवन पर कोई आँच नहीं आने देते।

मेरे विचार में प्रेम विवाह आज के समय की अनिवार्यता बन चुकी है। गुजरे वक्तों में सामाजिक व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि विवाह के पश्चात स्त्री और पुरुष दोनों के कार्य क्षेत्र अलग–अलग बँटे हुए थे। पुरुष घर से बाहर

जाकर कमा कर लाता था और स्त्री गृह कार्यों का संचालन और परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्यों और बाल बच्चों की देखभाल करती थी। पुरुष घर में आकर सभी जिम्मेदारियों से मुक्त हो अपनी थकान उतारता था और स्त्री उसकी हर जरुरत का ख्याल रखने में ही अपने पत्नी धर्म की सफलता को आँकती थी। लिहाजा कहीं टकराव का प्रश्न ही नहीं उठता था। सामाजिक व्यवस्था कुछ ऐसी भी थी कि युवक, युवतियाँ एक दूसरे के संपर्क में कम ही आते थे तो प्रेम विवाह के दृष्टांत भी कम ही दिखाई देते थे। अपवाद हर युग में होते हैं। आज के युग में लड़कियाँ सुशिक्षित और कामकाजी हैं और अपने कैरियर को गंभीरता से लेती हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें ऐसे जीवनसाथी की जरुरत होती है जो उनकी आवश्यकताओं और बाध्यताओं को समझे और उनका घर के कामों में हर तरह से सहयोग करें क्योंकि उन्हें भी अपनी नौकरी के लिए घर से बाहर जाना होता है। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब दोनों एक दूसरे को भली प्रकार समझते हों और एक दूसरे की भावनाओं और परेशानियों को हल करने के लिये मानसिक रूप से तत्पर हों !

अरेंज्ड मैरिज में इस अवस्था तक पहुँचने में समय लग जाता है क्योंकि नवविवाहित जोड़ा एक दूसरे की रुचि अभिरुचियों तथा प्राथमिकताओं से नितांत अनभिज्ञ होता है। फिर यह भी एक सत्य है कि हमारे समाज में लोगों का अधिकाँश प्रतिशत अभी भी पुरुषवादी मानसिकता से ग्रस्त है। गृहकार्यों में पत्नी का हाथ बँटाना आज भी कई युवकों को नागवार गुजरता है और समय की माँग को समझ कर जो लोग पत्नी की सहायता करने की कोशिश करते हैं उनका खूब मजाक भी उड़ाया जाता है। इन्हीं बातों को लेकर तकरार बढ़ जाती है। घर परिवार के सदस्य यदि समझदार नहीं होते हैं तो वे आग में घी डालने का कार्य करते हैं और यहाँ स्त्री पुरुष दोनों के अहम टकराने लगते हैं। अरेंज्ड मैरिज में दोनों ही शादी करवाने के लिए जिम्मेदार माता–पिता को दोष देते हैं और शादी टूटने के कगार पर पहुँच जाती है।

प्रेम विवाह में अक्सर तो ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न ही कम होती हैं क्योंकि दोनों ही एक दूसरे को पहले से ही जानते भी हैं, समझते भी हैं और एक दूसरे को चाहते भी हैं इसलिए वे एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान भी करते हैं और सहयोग भी। फिर शादी का निर्णय क्योंकि स्वयं उनका अपना होता है इसलिए अन्य किसी को दोष देने की गुंजाइश ही नहीं बचती इसलिए यदि ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होती भी हैं तो वे परस्पर सहयोग से उन्हें सम्भालने की कोशिश में जुट जाते हैं।

पुराने वक्तों में जब विवाह कम उम्र में कर दिये जाते थे लड़कियों की परवरिश एक तरह से ससुराल में ही होती थी। उनके व्यक्तित्व का निर्माण ही ससुराल के वातावरण और प्रथा परम्पराओं के अनुरूप होता था। ससुराल के हर सदस्य की आदतों और पसंद नापसंद से वे भली भाँति परिचित होती थीं और उन्हें तदनुरूप अपने आपको ढ़ालने में कभी कोई परेशानी नहीं होती थी बल्कि वे उसे ही सबसे सही और आदर्श व्यवस्था मान लेती थीं। लेकिन आज के युग में जबकि विवाह की उम्र बढ़ गयी है और शादी के समय तक लड़कियों के व्यक्तित्व का पूरी तरह से ना केवल विकास हो जाता है बल्कि वे अपने विचारों में एक प्रकार से दृढ़ भी हो जाती हैं ऐसे में उनके स्वभाव का लचीलापन समाप्त हो जाता है और उन्हें ससुराल के वातावरण के साथ सामंजस्य बैठाने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन ना तो उनकी आदतें बदल पाती हैं ना सोच। ऐसे में अरेंज्ड मैरिज में अधिक बाधाएं आती हैं। क्योंकि ससुराल के तौर तरीकों के अनुसार अपनी जीवनचर्या को बदल पाना उनके लिए संभव नहीं हो पाता। इससे अनेक प्रकार की गलतफहमियाँ पैदा हो जाती हैं और संबंधों में कड़वाहट आ जाती है। परिणामस्वरूप वैवाहिक सम्बन्ध विघटन के द्वार पर पहुँच जाता है और क्योंकि नवविवाहित जोड़े में परस्पर भी कोई रागात्मक सम्बन्ध विकसित नहीं हो पाता इसलिये वे एक दूसरे को भावनात्मक संबल देने के बजाय आपस में लड़ने झगड़ने में और माता–पिता को ही दोष देने में लग जाते हैं।

प्रेम विवाह में आसानी होती है क्योंकि यहाँ पति–पत्नी एक दूसरे की आदतों और चारित्रिक विशेषताओं से ना केवल परिचित होते हैं वरन कदाचित उनसे प्रभावित भी होते हैं और उन्हें पसंद भी करते हैं इसलिए यहाँ अहम के टकराव का तो प्रश्न ही नहीं उठता और घरवालों की नाराजगी को दूर करने के लिए भी पति–पत्नी एक–दूसरे की कमियों को ढँकने की भरपूर कोशिश करते हैं और एक दूसरे का दृष्टिकोण घर वालों के सामने प्रस्तुत कर आपस में सुलह कराने का प्रयत्न भी करते हैं।

इसलिए मेरा वोट तो प्रेम विवाह को ही जाता है! वर्तमान समय में जबकि दो बालिग परिपक्व सोच वाले, सुशिक्षित, महत्वाकांक्षी और प्रबुद्ध व्यक्ति विवाह बंधन में बँधने के लिए जा रहे हो तो अभिभावकों को अपना कर्तव्य उन्हें आशीर्वाद देने तक और सुख–दुःख में उन्हें भरपूर सहयोग और प्यार देने तक ही सीमित कर लेना चाहिये! समय–समय पर जब उन्हें आवश्यकता हो तो उनका मार्गदर्शन भी करना चाहिये! अपनी पसंद का पात्र चुनकर और जन्मपत्री लेकर पंडितों के यहाँ ग्रह, नक्षत्र और गुण मिलवाने की कवायद बिल्कुल छोड़ देनी चाहिये! कितने भी गुण मिलवा लें यदि लड़के लड़की की अभिरुचियाँ नहीं मिलेंगी, वे एक–दूसरे को सम्मान देने के योग्य नहीं समझेंगे तो वे आपकी पसंद को मन से नहीं अपना सकेंगे और उनके विवाहित जीवन की गाड़ी भविष्य की पथरीली राहों पर सरपट दौड़ पायेगी इसकी कोई गारंटी नहीं होगी।

लव मैरिज के पक्ष में हूँ

रजनी मल्होत्रा
सम्पर्क सूत्रः
बोकारो, झारखंड
Email: rajni.sweet11@gmail.com

सदियों से विवाह को सामाजिक संस्था के रूप में देखा और माना गया है। उस पर भारतीय संस्कारों में अरेंज्ड मैरिज को ज्यादा मान्यता दी जाती है, इसके भी कई कारण हैं। सबसे पहला इस विवाह से परिवार में आये उतार–चढ़ाव को पारिवारिक जिम्मेदारी और बड़ों की सहमति मानकर हर फैसले को स्वीकार कर लिया जाता है। दूसरी अहम बात इसमें लड़की की भावनाओं और विचारों की स्वतन्त्रता नगण्य ही रहती है, क्योंकि उसे बचपन से ही पति परमेश्वर का पाठ पढ़ा दिया जाता है। जिससे अपने वैवाहिक जिन्दगी में अपनी खुशी को नजरंदाज कर, अपने से जुड़े लोगों की खुशी को तवज्जों देना ही सिखाया जाता है, माँ हर सीख पर लड़की को यही समझा कर भेजती है अब दोनों कुल की मर्यादा तुम्हारे हाथों है, इसे बनाकर रखना और लड़की इच्छा हो या अनिच्छा उसे निभाती है। अरेंज्ड मैरिज में लड़की के इच्छा के अनुसार लड़के का परिवार न चलकर, परिवार और पति के अनुसार लड़की को चलना पड़ता है, आज भी कई अरेंज्ड मैरिज के ऐसे उदाहरण हैं जहाँ सिर्फ उम्र से ही बेमेल जोड़ा नहीं है बल्कि सोच से भी बेमेल है। एक की सोच दाएं जाती है तो दूसरी की सोच बाएं। फिर भी साथ निभाने को मजबूर, साथ जी रहे हैं। कारण एक ही साथ कई लोगों की जिन्दगी जुड़ी है, दो परिवार की मर्यादा, इसमें यदि सबसे ज्यादा नुकसान कहें या उपेक्षित होना तो लड़की होती है। यदि लड़के के मनोनुकूल लड़की न हुई तो भी सुनना लड़की को पड़ता है, माँ–बाप के मनलायक दहेज न लायी तो भी लड़की ही सुनती है। हर तरह से आज भी कितने ऐसे अरेंज्ड मैरिज से बने रिश्ते को ज्यादातर लड़की ही अपनी समझदारी से चलाती है। पुरुष का अहम ज्यादातर आड़े आ जाता है, नारी फिर भी कभी परिवार, कभी बच्चे, कभी पति के कारण स्थिति के अहसज होते हुए भी खुद को तैयार रखती है और अपनी सहनशीलता का परिचय देती है। कई माता–पिता विवाह तो कर देते हैं, पर आर्थिक मौकों पर सहायता नहीं कर पाते, इसमें भी आपसी समझदारी से विवाह को बनाकर रखने की कोशिश होती है।

कहते हैं अरेंज्ड मैरिज में विवाह के बाद प्यार पनपता है, विवाह के बाद कई वर्ष

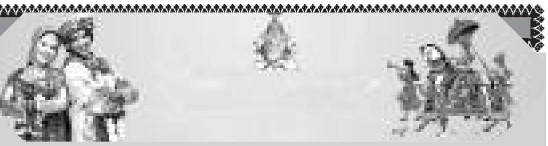

लग जाते हैं एक–दूसरे को समझने में, सही मायने में हम कहें तो बस यही निष्कर्ष निकलता है कि ऐसे विवाह में सिर्फ और सिर्फ यदि अपने भावनाओं की बलि देती है तो वो लड़की। क्योंकि सौ में से पाँच लड़के ही विवाह के बाद पत्नी के इच्छा से चलते हैं। तो यहाँ प्यार वाली बात कहाँ ? प्यार तो बराबरी की बात करता है न कि अधिकार की और हमारे समाज में अरेंज्ड मैरिज कर लायी गयी लड़की एक बहू के रूप में, पत्नी के रूप में, कितनी और कहाँ तक अपने आपको अपने अनुसार ससुराल में रख पाती है ? वो रहती नहीं ढ़लती है उस माहौल में। ज्यादा नुकसान हर कीमत पर लड़की को ही होता है, लड़के को कम क्योंकि लड़की के मनोनुकूल लड़का नहीं मिला तो कितनी लड़कियों को आपने सुना है दूसरी विवाह करते ? पर लड़के के मनोनुकूल लड़की न हुई तो ऐसे कई उदाहरण हैं लड़के के दूसरी विवाह के और भी कई तरह की सामाजिक आर्थिक उतार–चढ़ाव को अरेंज्ड मैरिज में आसानी से लड़के अपने माता–पिता पर दोषारोपण करते हैं। आपकी वजह से ऐसा हुआ, वैसा हुआ इत्यादि, पर बहुत कम लड़कियां ऐसा कर पाती हैं। कुल मिलाकर ये कह सकते हैं कि सदियों से बनी इस सोच को और चली आ रही रीति में अरेंज्ड मैरिज एक ऐसी संस्था है जिसमें दो लोगों के जुड़ने से दो परिवारों का भी बंधन हो जाता है, जहाँ सोच और जिम्मेदारी भी दोगुनी हो जाती है जिसके निष्कर्ष में बस यही आता है– जो कड़ी जुड़ गयी है उसे हर हाल में जुड़े रहना ही समाज और परिवार के हित में है और इसी सोच के साथ इसे निभाने की कोशिश की जाती है, बिना किसी स्वार्थ और अहम के टकराव के बिना। एक नारी शक्ति ही इसे ज्यादा ठोस बना पाती है।

लव मैरिज, यानि प्रेम विवाह। कहते हैं प्रेम करने की कोई उम्र नहीं होती। पर विवाह एक निश्चित उम्र में ही होता है और जहाँ तक प्रेम विवाह का सम्बन्ध है वो यहाँ भी निर्भर करता है आपसी सोच और समझ पर, पंद्रह सोलह वर्ष की उम्र का प्यार कच्चा हो सकता है जिसमें प्यार एक नजर वाला मायने रखता हो जिसमें लड़के–लड़की को खूबसूरती पर प्यार आ जाये, उसके फिल्मी अंदाज पर प्यार आ जाये, पर विवाह से पूर्व हर लड़का–लड़की अपने भावी जीवनसाथी में कुछ न कुछ गुण अवश्य चाहते हैं और प्रेम में भी दो लोगों का आपसी सोचों का मिलना ही एक–दूसरे की ओर खींचता है नजदीकी लाता है, जिसमें समझ काफी मायने रखती है। रही बात आर्थिक रूप से मजबूती का तो वो भी देखभाल कर ही विवाह करती है जोड़ी। उतार–चढ़ाव तो हर मोड़ पर आते हैं, आज की पीढ़ी में इतनी समझ तो जरुर है, क्या सही है? क्या गलत है? पर सबसे अहम बात है आपसी समझ की। कोई भी रिश्ता आपसी समझ से ही टिकता है और जहाँ प्रेम होगा वो झुकेगा जरुर, कभी दाएं पल्ले कभी बाएं। कभी लड़के की समझ, कभी लड़की की समझ, आपसी सहमति। यहाँ एक बात कहना जरुरी समझती हूँ, कई–कई बार माता–पिता की पसंद भी बच्चों का हित नहीं कर पाती, उनकी ओर से लिया गया फैसला भी, उठाया गया अच्छा कदम भी बच्चों के लिए हानिकारक हो जाता है और कई बार बच्चों की पसंद मिसाल बन जाती है। अहम् बात ये है अभिभावक की इच्छा होती है बच्चों का जीवनसाथी का चुनाव उनके द्वारा हो, उनकी इच्छानुसार बच्चे रहें और बच्चों की इच्छा होती है जीवन हमें गुजारना हैं हम देखें, यदि विचारों का टकराव न हो तो कोई भी रिश्ता आसानी से फलता–फूलता है।

प्रेम विवाह की सफलता का सारा श्रेय लड़के–लड़की की आपसी समझदारी को दिया जाता है। यदि टूट गया तो कहा जाता है प्रेम विवाह था तभी नहीं टिक पाया। पर यहाँ एक बात भूलते हैं, वो है विचारों की समझ का, यदि आपसी समझ से काम लिया जाये तो इसमें अधिक सुदृढ़ता होती है और इसके टिकने की सम्भावना भी अरेंज्ड मैरिज से ज्यादा होती है क्योंकि प्रेम विवाह में लड़की के विचारों और भावनाओं का दहन नहीं होता, जबकि अरेंज्ड मैरिज में उसके भावनाओं का निर्वाह न के बराबर होता है। प्रेम विवाह को यदि श्रेय दें अभिभावक तो आने वाले समय में दहेज प्रथा, जातिवाद को दूर कर नारी के सामाजिक स्तर में सुधार लाया जा सकता है। वो तो आपसी समझ है, नहीं तो कई अरेंज्ड मैरिज के जोड़े हैं जिनका जीवन नर्क है एक छत के नीचे तो हैं पर अजनबियों की तरह।

मेरी समझ में प्रेम विवाह अधिक उचित है बशर्ते कि उसमें घर वाले भी सहमति दे दें तो सोने पे सुहागा होगा।

पारिवारिक सहमति जरूरी हो

मुकेश कुमार सिन्हा
सम्पर्क सूत्रः
नई दिल्ली
फोनः 9971379996
Email: mukeshsaheb@gmail.com

विवाह एक ऐसा शब्द है, जो उच्छश्रृंख्ल, अल्हड़ और मस्त युवा जिंदगी को पूर्णता देने के लिए होता है। विवाहोपरान्त, एक जोड़ा पुरुष व स्त्री एक ऐसी जिंदगी को प्राप्त करता है, जहां वो दोनों खुद के लिए, एक–दूसरे के लिए जीते हैं और इस क्रम मे जिंदगी को आगे बढ़ाते हैं। हाँ पर ये सोचने वाला विषय है कि ये विवाह प्रेम विवाह होना चाहिए या हमारे परिवार की सहमति से। जिंदगी में कौन–सा विवाह खुशी ला सकता है और ये खुशी स्थायी होगी या नहीं ?

मुझे जैसा लगता है वो विवाह जिसमें दोनों जोड़े की सहमति के साथ–साथ दोनों के परिवार की सहमति हो, ऐसा विवाह एक स्थायित्व प्रदान करने वाला और खुशहाल जिंदगी देने वाला होता है। क्योंकि हम भारतीयों का ऐसा मानना है कि विवाह सिर्फ एक पुरुष और स्त्री के बीच के संबंध को निर्धारित नहीं करता बल्कि उनके परिवारों को भी जोड़ता है। दो एकदम अलग–अलग वैचारिक स्थिति में जीने वाले लोग जब जुड़ते हैं तो दोनों परिवार की सहमति इस खुशी को स्थायी करने के लिए ज्यादा जरूरी होती है और फिर वैसे भी विवाहोपरान्त एक युवती अपने वर के घर आती है और उसको अपने पति के अलावा परिवार के अन्य सदस्यों के प्यार–दुलार और आदर की जरूरत भी होती है। अतः मेरा मानना है पारिवारिक सहमति से किया गया विवाह ज्यादा स्थायी होता है।

समझदारी हो तो दोनों उचित

पल्लवी सक्सैना
सम्पर्क सूत्रः
लन्दन, यूनाईटेड किंगडम
Email: pallavisaxena80@gmail.com

इनमें से भला कौन–सी शादी के सफल होने कि आशंका सबसे ज्यादा मानी जाये, क्योंकि आजकल तो शादी के मायने ही बदल गए हैं हर किसी की नजर में शादी का अपना एक अलग अर्थ है। कोई मजबूरी या पारिवारिक दबाव में आकर शादी करता है, तो कोई महज दिखावे के लिए, कोई वास्तव में शादी करना चाहता है, मगर शादी का अर्थ हर एक के लिए अलग है। तो इस विषय पर सबसे पहला प्रश्न यह उठता है कि शादी के सही मायने आखिर हैं क्या ? क्या वास्तव में एक सुखी और सफल जीवन की चाह रखने वालों के लिए शादी करना अनिवार्य है ? क्या

आपसी समझ ही आधार

विवाह दो व्यक्तियों, दो परिवारों, दो

सरस दरबारी
सम्पर्क सूत्रः
इलाहाबाद, उ0प्र0
Email: sarasdarbari@gmail.com

जीवनशैलियों का मिलन है और जाहिर है इसमें दोनों ही पक्षों को मिलकर सामंजस्य बैठाना होता है, एडजस्टमेंट करने होते हैं और यह हर विवाह में करने होते हैं फिर चाहे वह लव या प्रेम विवाह हो या प्रबंधित या अरेंज्ड मैरिज।

यह कह पाना थोड़ा मुश्किल है कि दोनों में से कौन सफल है, मेरी समझ से यह विवाह पद्धति पर नहीं बल्कि व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है, उसकी निष्ठा, उसके समर्पण भाव, उसकी कोशिश उसकी दृढ़ता पर निर्भर करता है।

कोई भी विवाह सफल या असफल काफी हद तक दो व्यक्तियों की वजह से होता उसके बिना एक व्यक्ति अपना जीवन सुखपूर्वक नहीं गुजार सकता और यदि यही सच है तो कैसे जी लेते हैं कुछ लोग शादी किए बिना ? ऐसे बहुत से प्रश्न है जिनका यदि उत्तर मिलना संभव हो जाये तो शायद एक हद तक अंदाज लगाया जा सकता है कि लव मैरेज ज्यादा सफल होगी या अरेंज्ड मैरेज।

मेरी नजर में शादी दो इन्सानों का नहीं दो परिवार का भी मिलन है। हालांकि यह भी सच है कि जिन दो इन्सानों के बीच यह बंधन बाँधा जाता है जिंदगी उनको साथ गुजारनी होती है। इसलिए शादी में उनके मन मिलना ज्यादा जरूरी होना चाहिए, बनिस्बत परिवार के लेकिन शादी भी जिंदगी की तरह एक जुआँ हैं जिसे बस आपको अपनी किस्मत के भरोसे खेलना है। यदि दांव सही लगा तो आपका जीवन सुखमय तरीके से शांति पूर्वक व्यतीत हो जाएगा और यदि दांव उल्टा पड़ा तो समझिए स्वर्ग–नरक दोनों धरती पर ही दिख जाने हैं, कारण कौन क्या सोचता है इस विषय पर उस पर निर्भर करता है। कुछ लोग एक सफल शादी की कुंजी समझौता मानते हैं, तो कुछ लोग समर्पण, मैं उनमें से हूँ जो शादी को अनिवार्य मानती हूँ क्योंकि माता–पिता एवं आपके भाई–बहन एक समय तक ही आपके साथ रहते हैं फिर उसके बाद जीवन आपको अकेले ही गुजारना है और अकेले जीवन जीना बहुत कठिन है फिर आप चाहे कितने भी आत्मनिर्भर क्यूँ ना हो जीवनसाथी की जरूरत तो महसूस होती ही है जो आपके अच्छे–बुरे वक्त में आपका साथ निभा सके उदाहरण के तौर पर जब कभी आप बीमार हो तो कोई तो हो जो आपका हाल जान सके और कुछ नहीं तो कम से कम आपको सांत्वना दे सके। आपका ख्याल रख सके। करने को यह सब काम एक नौकर भी कर सकता है मगर वो अपनापन नहीं दे सकता, जो एक जीवनसाथी दे सकता है। क्योंकि अपना चैन पैसा देकर खरीदा नहीं जा सकता।

अब यदि हम लव मैरिज की बात करें तो लव मैरिज में तो समझौता और समर्पण दोनों का भाव निहित होता है, लेकिन उसके बावजूद भी सबसे ज्यादा तलाक के किस्से लव मैरिज के अंतर्गत ही देखने और सुनने में आते हैं। अब भला ऐसा क्यूँ जहां त्याग, समझौता और समर्पण जैसे भाव हो जहां आप एक–दूसरे को बहुत ही करीब से जानते हो। भला उस शादी में तलाक की नौबत क्यूँ आती है। मेरी नजर में उसका एक मात्र कारण है विश्वास की कमी क्योंकि लव मैरिज करने वाले अक्सर ना चाहते हुए भी अपने जीवनसाथी पर पूर्ण रूप से भरोसा नहीं कर पाते। उनको अपने मन में कहीं न कहीं यह डर हमेशा बना रहता है कि कहीं ऐसा न हो कि हमारा जीवनसाथी हमें छोड़कर किसी और के विषय में ना सोचने लगा हो क्योंकि शादी के बाद जिंदगी बदल जाती है प्राथमिकतायें बदल जाती हैं फिर आपको अपना वही जीवनसाथी बदला–बदला सा नजर आने लगता है। समय का अभाव नजर आने लगता है। ऐसा लगता है जैसे वह पहले अधिक प्यार करता था आपसे, मगर शादी के बाद नहीं करता क्योंकि पहले वो आपके लिए कैसे न कैसे समय निकाल ही लिया करता था। मगर शादी के बाद आप उसकी प्राथमिकता नहीं रहते या नहीं रह पाते तो, जाहिर है आप खुद को उसकी नजरों में नजर अंदाज पाते हैं। नतीजा शक और फिर तलाक हालांकि यदि परिवार की दृष्टि से देखा जाये तो लव मैरिज के अंतर्गत आने वाली बहू जितनी सेवा करती है उतना अरेंज्ड मैरेज वाली बहू शायद ही करती हो, क्योंकि लव मैरिज वाली बहू खुद को उस परिवार में ढ़ालने की जरूरत से ज्यादा कोशिश करती है ताकि उस परिवार के लोग उसे स्वीकार कर लें। क्योंकि हमारे समाज में आज भी लव मैरिज को आसानी से स्वीकृति नहीं मिलती।

खैर, अब हम बात करते हैं अरेंज्ड मैरिज की। इसमें मुझे ऐसा लगता है कि यह शायद इसलिए सफल होती है क्योंकि इसमें आप अपने जीवनसाथी को धीरे–धीरे जानने का प्रयास करते हैं या यूं कहे कि धीरे–धीरे जान पाते हैं जिसके कारण आपसी लगाव और प्रेम धीरे–धीरे पनपता है और उसी से पनपते हैं समझौते और समर्पण जैसे महत्वपूर्ण भाव जब आप एक के परिवार के लिए थोड़ा कुछ करते हैं तो दूसरे को भी आपके परिवार के लिए थोड़ा कुछ करने का भाव उत्पन्न होता है और जैसा कि मैंने कहा हमारे हिंदुस्तान में शादी दो व्यक्ति के साथ–साथ दो परिवारों का भी बंधन होता है तो वह भी कहीं न कहीं एक बड़ा कारण होता है उन दो व्यक्तियों को आपस में जोड़े रखने के लिए क्योंकि ऐसे में व्यक्ति न सिर्फ अपने बारे में बल्कि अपने जीवनसाथी के परिवार के बारे में भी सोचता है और फिर भले ही समझौता ही क्यूँ ना करना पड़े, कर लेता है क्योंकि शादीनुमा गाड़ी को चलाने के लिए पति–पत्नी नुमा दो चक्कों को समान रूप से साथ चलना जरूरी होता है और यदि इन दोनों में से एक भी चक्के के पग डगमगा गये तो गाड़ी का क्षतिग्रस्त होना स्वाभाविक है। अब यदि इस क्षति से लोग सबक लेकर संभल जायें तो शादी सफल अथवा विफल होने की स्थिति बदल जाए।

यह उन दो इंसानों की निजी सोच पर निर्भर करता है कि वह अपने अहम को ज्यादा महत्व देते हैं या उसे त्यागकर समर्पण को, लेकिन ऐसा सिर्फ समझदार इंसान ही कर पाते हैं वरना आजकल तो दहेज के लोभी अपनी पत्नियों को अपने पैर की जूती समझते हैं जिसके कारण महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं और इसका परिणाम यह है कि इस समस्या से निजात पाने के लिए लड़कियां आत्मनिर्भर तो हैं लेकिन उनके मन में शादी एक प्यारा सा बंधन नहीं समझौता बनकर रह गया है। जहां वह किसी भी कीमत पर ससुराल में झुकने को तैयार नहीं सबको अपना–अपना अहम प्यारा है नतीजा वही तलाक क्योंकि लोग आत्मसम्मान और अहम में फर्क ही नहीं समझ पाते जिसके चलते समय और परिस्थिति के मुताबिक समझौता नहीं कर पाते और शादियाँ टूट जाती हैं। फिर चाहे वो अरेंज्ड मैरेज हो या लव मैरेज इसलिए यह कह पाना कि कौन सी शादी सफलता के मुकाम पर खरी उतरेगी कहना नामुमकिन सी बात है, मैंने सिर्फ एक अंदाजा लगाने की कोशिश की है इस विषय में सबका अपना मत हो सकता है इसलिए विचारों में मतभेद स्वाभाविक है मैंने वही लिखा जो मैं महसूस करती हूँ बाकि तो सबका अपना–अपना नजरिया है। इसलिए मैं किसी को सही या किसी को गलत नहीं ठहरा रही हूँ बस वही लिख रही हूँ जो मुझे लगता है।

अतः उपरोक्त कथन के आधार पर बस इतना ही कहा जा सकता है कि शादी जैसे रिश्ते को निभाने के लिए सिर्फ और सिर्फ एक ही कुंजी की आवश्यकता होती है और वह है आत्म–सम्मान और अहम में फर्क को समझना। जो यह समझ गया वह निभा लेता है जो नहीं समझा वह नहीं निभा पाता।

है जो उस विवाह में बंधे होते हैं, जहाँ प्रेम विवाह में वे दोनों एक–दूसरे को भली–भांति जानते हैं वहां पर सामंजस्य बैठने में और आसानी होती है, लेकिन कभी–कभी एक–दूसरे को इतनी अच्छी तरह से जानना ऊब का कारण भी बन जाता है, क्योंकि उस रिश्ते में कोई नयापन नहीं रह जाता है, एकस्प्लोर करने को नहीं रह जाता है।

वहीं प्रबंधित या अरेंज्ड मैरिज में एक–दूसरे को शनैः शनैः जानने की प्रक्रिया अपने आप बहुत रोमांचक होती है, एक–दूसरे को धीरे–धीरे एकस्प्लोर करने का सुख अलौकिक होता है। यह इन्हें एक–दूसरे के और करीब लाता है। यह अन्यथा भी हो सकता है कि दोनों की ही रुचियाँ बिल्कुल भिन्न हो स्वभाव न मेल खाते हो और वस्तुतः साथ रहना दूभर हो जाये।

विवाह से जो परिवार बनता है, वह एक त्रिकोणीय आयाम है और उसका तीसरा कोण है बच्चे।

जब भी कभी उन दोनों कोनों के बीच त्रासदियों और मतभेद उगते हैं तो वह तीसरा कोण– एक बहुत मजबूत पक्ष बन जाता है, उन्हें बांधने में, इसमें मातृत्व पक्ष अहम होता है, अपने व्यक्तित्व पक्ष को दरकिनार कर, ऐसे में अक्सर मातृत्व ही उस परिवार को जोड़ने में उस विवाह को बनाये रखने में एक अहम भूमिका निभाता है। पति भी अगर इस रिश्ते के प्रति संवेदनशील है और अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में रुचि और विश्वास रखता हो तो वह परिवार हमेशा मजबूती से खड़ा रहेगा।

इसलिए मैं अपनी बात को दुहराना चाहूंगी कि किसी भी विवाह की सफलता उन दोनों पर निर्भर करता है वे अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनाने में कितने तत्पर हैं।

समझदारी, एक–दूसरे का विचार संवेदनशीलता, त्याग यही सब तो कुंजियाँ है– सफलता की, जो एक सुखी वैवाहिक जीवन का दरवाजा खोलता है लेकिन आपका अपने रिश्ते के प्रति समर्पण ही आखिरकार तय करता है कि आपका विवाह सफल है या असफल फिर चाहे वह प्रेम विवाह हो या फिर प्रबंधित विवाह ।

"पसंद अपनी-अपनी और ख्याल अपने-अपने"

अंजू चौधरी (अनु)
सम्पर्क सूत्रः
करनाल, हरियाणा
Email:anuradhagugnani40@gmail.com

हर माँ–बाप अपने बच्चों की शादी को लेकर कितने ही ख्वाब बुनते हैं कि अपनी पसंद की लड़के–लड़की से हम अपने लाडलों का घर संसार बसाएंगे। कितनी ही छोटी–छोटी बातों को ध्यान में रखकर बच्चों के रिश्ते की बात चलाई जाती है और भारतीय विवाह की धूम तो जग मशहूर है, विवाह की रौनक, चमक–दमक, रस्मों–रिवाज हम सबको कुछ दिनों के लिए एक अलग ही दुनिया में ले जाते हैं। वर–वधू जो जन्म–जन्म के लिए एक अटूट बंधन में बंधने वाले होते हैं, उस पल का हर कोई करीबी दोस्त और रिश्तेदार साक्षी बनने को आतुर होता है। जहाँ बेटी दुल्हन के लिबास में और बेटा दूल्हे के लिबास में सजता है, माँ–पापा उसकी नजर उतारते नहीं थकते, उनकी खुशी तो देखते ही बनती है उनके चेहरे का नूर उफ्फ्फ हर व्याख्या से परे है।

शादी नए जीवन की शुरुआत होती है और हर लड़का–लड़की इसके लिए बहुत तरह के सपने देखते हैं और हर किसी की शादी को लेकर अपने–अपने विचार रहते हैं। कई–कई परिवारों में सिर्फ और सिर्फ लव मैरिज को महत्व दिया जाता है और कई परिवार इसके सख्त खिलाफ होते हैं। वैसे हिन्दुस्तान में विवाह एक सामाजिक बंधन है जिसे परिवार और समाज की स्वीकृति मिलना बहुत जरुरी माना गया है। देखा जाए तो विवाह समाज व संस्कारों का सामंजस्य भी है, जिसे हर किसी को निभाना भी पड़ता है। हर माता–पिता अपने बच्चों की शादी कर, उसे उसके दायित्व को सौंप देते हैं ताकि वो अपने अस्तित्व का नव–निर्माण कर सके। जहाँ एक लड़की शादी के बाद बहुत से रिश्तों में बंध जाती है वहीं दूसरी ओर लड़का अपनी नई जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी से निर्वाह करता है, शादी के बाद की ये बातें रिश्तों में ईमानदारी और एक अच्छे परिवार की नींव रखते हैं।

आज का वातावरण और बच्चों की शादी का फैसला ये बहुत कठिन प्रश्न आज के माँ–बाप के सामने आ खड़ा हुआ है। जहाँ एक ओर शिक्षा का महत्व बढ़ा है वहीं दूसरी ओर, इसके साथ–साथ लव मैरिज का चलन बहुत तेजी से हमारे समाज में अपनी पैठ बना चुका है और इसके साथ आया है अंतरजातीय विवाह का चलन, जो बहुत तेजी से बढ़ा है और इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है कि छोटे–छोटे कस्बों से निकलकर बच्चे उच्च शिक्षा के लिए बड़े शहरों की ओर रुख करते हैं जो अपने परिवारों से दूर रहकर पढ़ते हैं, उन्हीं क्लासमेट्स के साथ बार–बार उठना–बैठना जो कि उन्हें भावनात्मक जुड़ाव की ओर ले जाता है और दोस्ती को प्यार में बदलने में अधिक समय नहीं लगता, पर आज के युवाओं की सोच पहले से कहीं अधिक बदल चुकी है, वो आज अपनी पसंद को अहमियत देते हैं और बहुत से ऐसे रीति–रिवाज हैं जिसे वो लोग नहीं मानते जैसे कि दहेज प्रथा, जाति–प्रथा और किसी विधवा से दुबारा शादी जैसे कुछ मसले हैं जो प्रेम–विवाह के आड़े नहीं आते। जहाँ एक ओर कुछ बातें अच्छी हैं प्रेम विवाह में वहाँ कभी कभी ऐसी शादियों को परिवार के बुजुर्गों द्वारा मान्यता नहीं मिलती और परिवार टूटकर बिखर जाते हैं और कहीं–कहीं इन्हें सबकी रजामंदी से स्वीकार कर लिया जाता है।

बच्चे माता–पिता का आईना होते हैं और बच्चों द्वारा किया जाने वाला हर अनुचित व्यवहार उन्हें दुःखी कर जाता है और उनकी परवरिश पर प्रश्नचिन्ह लगाता है, परेशानी तब आती है जब बच्चे बिल्कुल अपनी जिद्द पर कायम रहते हैं और अपनी मर्जी से शादी कर अपने माँ–बाबा को उस सुख और सपने से वंचित रखते हैं जो उन्होंने अपने बच्चों के लिए देखे होते हैं, अपना मन मार उन्हें अपने बच्चों की पसंद को मजबूरी में हाँ की मोहर लगाकर देनी पड़ती है और एक टीस जो उम्र भर उनके मन में एक 'गाँठ भी भांति' उन्हें चुभती रहती हैं और बहुत बार ये भी देखने में आया है कि बच्चों की जिद्द के सामने माता–पिता भी बच्चों के सामने शर्त रख देते हैं हम या वो (लड़का–लड़की) दोनों में से चुन लो। अजीब से हालात, अजीब सी मानसिक हालत बहुत वक्त तक घर पर तनाव का वातावरण रहता है और आखिर में प्रेम विवाह को ही जीतते हुए देखा गया है और माँ–बाप अपने बच्चों से और उनके करीब रहने से हाथ धो बैठते हैं, रिश्तों में एक खटास भर जाती है। माँ–बाप की रजामंदी से किए गए विवाह, जहाँ दो परिवारों में प्यार की नींव रखते हैं वहाँ सब एक विश्वास की डोर से बंधकर और भी करीब आते हैं, अपने अपनों को खुशी देते हुए हर चेहरे पर मुस्कान बिखेर देते हैं, उन्हें एक आश्वासन की डोर से बांधने का काम करते है कि "हाँ! हम आपके हैं और आपके ही रहेंगे"।

जैसे हर कहानी में एक किरदार होता है जो अपनी जिम्मेदारी को पूरा करता है ठीक वैसे ही हर परिवार का मुखिया अपनों को बहुत अच्छे से संभाल लेता है अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारी के साथ वक्त और अपना समाज बहुत तेजी से बदल रहा है पिछले कुछ सालों में एकाकी परिवारों का चलन बहुत तेजी से आया है। संयुक्त परिवार बहुत कम देखने को मिलते हैं, इससे भी बच्चों की सोच में बहुत अंतर देखने को मिलता है, बरहाल प्रेम विवाह या माँ–बाप द्वारा तय की शादी, इसमें से कौन से ज्यादा बेहतर है इसका आंकलन करना आज के वक्त के मुताबिक बहुत मुश्किल है। मैं अपने विचारों को प्रेम विवाह या माँ–बाप द्वारा तय की गई शादी लव मैरिज और अरेंज्ड मैरिज के पक्ष या विपक्ष में नहीं बाँध सकती क्योंकि मैंने बहुत

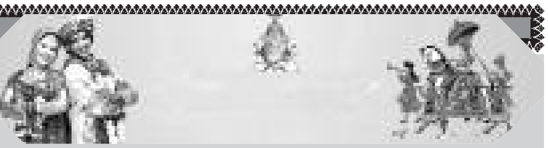

से प्रेम विवाह को बनते और टूटते देखे हैं वहाँ आजकल तय की गई शादियाँ भी टूट रही हैं और इसकी सबसे बड़ी वजह हम सबका अहम है, हमारे मन का अहम जो हमें किसी के सामने झुकने नहीं देते इसलिए मैं बस इतना ही कहूँगी कि ''पसंद अपनी–अपनी और ख्याल अपने अपने''।

प्रेम विवाह में पारिवारिक सहमति हो

अनामिका
सम्पर्क सूत्रः
फरीदाबाद, हरियाणा
Email: anamika7577@gmail.com

आज बेटी हो या बेटा, दोनों के माता–पिता अपने बच्चों का वैवाहिक जीवन खुश देखना चाहते हैं। लेकिन जहाँ भी देखो तलाक के केस, दहेज की समस्याएं या आपस का मन–मुटाव इन विवाह बन्धनों में दीमक लगा रहे हैं। इन सब समस्याओं को देखते हुए प्रश्न यह उठता है कि विवाह कौन–सा सफल है प्रेम विवाह या नियोजित विवाह। हमारा देश अपने संस्कारों और सभ्यता से जाना जाता है और यहाँ की बेटियों को जन्म से ही संस्कारों की पोटली उनके परिवार से मिलती है जिसमें उन्हें सहनशक्ति, सहिष्णुता, बड़ों का आदर और समाज में रहने का सलीका, उनकी उम्र के बढ़ने के साथ दिए जाते हैं। बेटी के माता–पिता तो बेटी के पैदा होते ही उसके विवाह के लिए चिंता करना शुरू कर देते हैं। हमारे समाज में आज भी नियोजित विवाह को ही सर्वोपरि माना गया है। माता–पिता अपनी बेटी को उच्च शिक्षा देने के साथ–साथ नियोजित विवाह के कायदे–कानून भी पढ़ाते हैं। माता–पिता के मुंह से कहते सुना जाता है कि उनकी बेटी अगर उनके द्वारा चुने हुए वर से विवाह करेगी तो वो सदा उसके सुख–दुःख में उसका साथ देंगे। किसी भी प्रकार के पारिवारिक गृह–क्लेश में बेटी के साथ खड़े होंगे, यहाँ तक कि भविष्य में किसी प्रकार के भी उतार–चढ़ाव में उसकी सहायता करेंगे। लेकिन यदि बेटी उनकी इच्छा के विरुद्ध जाकर प्रेम विवाह करेगी तो उसे सदा के लिए परिवार की ओर से नकार दिया जायेगा।

आज हमारे बीच यह एक बहस का विषय है। क्या सच में नियोजित विवाह में भविष्य में आई मुसीबतों में माता–पिता सहायक बन पाते हैं ? अचानक से बंधे इस बंधन के युगल के यदि आपस में विचार ही नहीं मिलेंगे तो क्या हमारे माता–पिता विचारों को, सोच को मिला पाएंगे ? अगर लड़के के परिवार वाले, जिन्हें हम अच्छी तरह से जानते, समझते नहीं हैं– वो दहेज की मांग करते हैं या दहेज के लिए बेटी को प्रताड़ित करते हैं तो क्या बेटी के माता–पिता अपनी बेटी को उनकी दहेज की भूख से महफूज रख पाएंगे ? इसी प्रकार अन्य कई समस्याएँ भविष्य में आती हैं जिन्हें सिर्फ और सिर्फ लड़की को अपनी समझ से, अपनी सहनशीलता से, अपने विवेक से सुलझाना होता है जो कि उसे जन्म से ही संस्कारों की पोटली रूप धरोहर में मिलते हैं। अपने पति के साथ सामंजस्य लड़की को स्वयं ही बैठना पड़ता है। अन्ततोगत्वा अपने दुःख स्वयं को ही झेलने होते हैं ऐसी स्थिति में तो दिमाग इस प्रश्न का उत्तर यूँ देता है कि इस नियोजित विवाह से बेहतर तो प्रेम विवाह है, जिसमें कम से कम युगल पूर्ण रूप से एक–दूसरे से अंजान तो नहीं होता। लड़के का परिवार दहेज की मांग यूँ मुंह खोल के तो नहीं कर सकता। युगल एक–दूसरे को पहले से ही समझ परख तो लेता ही है और पहले से जानने उपरान्त आपस में वैचारिक पृष्ठभूमि में तो सामंजस्य होगा ही, एक–दूसरे के प्रति प्रेम, समझ और सहनशीलता का जज्बा भी होता है जबकि नियोजित विवाह में ये शुरुआत शादी के बाद होती है और समय लग जाता है। प्रेम विवाह में अधिकतर ये भी होता है कि विवाह उत्सव दोनों बच्चों की या परिवार की आपसी सहमती द्वारा निर्धारित होता है। प्रेम विवाह का अर्थ ये तो कदापि नहीं है कि लड़का या लड़की एक–दूसरे के परिवारों के आपसी प्यार का, उनके रीति–रिवाजों का अनादर करेंगे। विवाह तो वैसे भी दो परिवारों और वर–वधू के बीच एक प्रेम–पूर्वक समझौता है। जहाँ नियोजित विवाह में अत्यधिक उम्मीदों और कल्पनाओं का काल्पनिक धरातल होता है वहीं दूसरी तरफ प्रेम विवाह में यथार्थ की धरा और सत्य का समझौता होता है, जिससे भविष्य में आने वाले मनमुटावों से बचने का निदान होता है। प्रेम उन दो के बीच होता है जो एक–दूसरे का ध्यान रखते हैं, विश्वास रखते हैं और एक–दूसरे को आजादी देते हैं– यहीं एक लम्बे वैवाहिक जीवन की सफलता का राज है और ये सभी प्रेम विवाह में ही संभव हैं, जबकि नियोजित विवाह में इन सब विचारों को स्थान देने में एक लम्बा समय लग जाता है तब तक आपसी संबंधों में दरारें आ जाती हैं। नियोजित विवाह के पति रूपी प्राणी को पूर्ण रूप से न समझ पाने के कारण लड़की पर कुछ फैसले थोप दिए जाते हैं जिनका वो विरोध नहीं कर पाती और समय–समय पर अपनी इच्छाओं का दमन करती–करती घुट–घुटकर रह जाती है जबकि प्रेम विवाह में एक–दूसरे को अच्छी तरह समझते हुए भविष्य की योजनाओं को पहले से ही प्रारूप दिया जाता है। स्वयं के परिवार और करियर सम्बन्धी योजनाओं पर दोनों की सहमति से पालन होता है जो कि नियोजित विवाह में बिल्कुल संभव नहीं। इसलिए आज की पीढ़ी के विचारों को और समय की चाल को देखते हुए तो आज नियोजित विवाह की बजाय प्रेम विवाह के पक्ष में अधिक सफलता नजर आती है। अंत में यह कहना उचित होगा कि परिवार की महत्ता है, लेकिन परिवार आपकी जिन्दगी की रूप–रेखा न निर्धारित करें बल्कि आप स्वयं जिन्दगी की रूप–रेखा निर्धारित करें और ऐसी जिन्दगी आपसी समझ और विश्वास से ही संभव हैं और इन दो गुणों की अधिकता और विश्वसनीयता तो प्रेम विवाह में ही देखने को मिल सकती है।

अरेंज्ड मैरिज और लव मैरिज में क्या सही है

प्रतिभा सक्सैना
सम्पर्क सूत्रः
फोलसोम, कैलिफोर्निया
Email: Pratibha.Saksena@gmail.com

मानव–स्वभाव इतना भिन्नतापूर्ण है और जीवन इतनी कॉप्लेक्स चीज है कि किसी सही–गलत का निर्णय हर परिस्थिति में हर व्यक्ति पर नहीं थोपा जा सकता। एक जगह जो कुछ ठीक लगता है दूसरी परिस्थिति में वह गलत सिद्ध हो सकता है.

विवाह एक सामाजिक संस्था है जो मानव वृत्तियों के तोषीकरण, नियमन एवं ऊर्ध्वीकरण के साथ, सृष्टि का क्रम चलाने और उसे व्यवस्थित रखने के लिये बनाई गई है। विवाह स्त्री–पुरुष का एक जोड़ा संयोजित करता है–परिवार रचने के लिये जिसमें आजीवन दायित्व निभाने की सहमति, पारिवारिक जीवन के साथ सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा, परंपराओं की स्वीकृति और सामाजिक संबंधों के निर्वहन की अपेक्षा की जाती है। (प्रेम–विवाह में इस सब बातों में ढील पड़ जाती है)। समाज के बीच परिवार में जन्म ले कर हमने जो सुरक्षा और सुविधाएँ पाई उनका

परिचर्चा

सबकी बातें

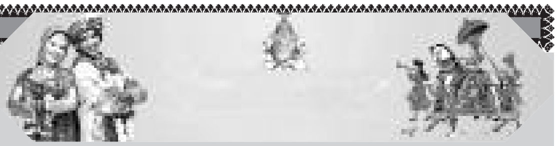

ऋण चुकाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व बनता है. जिससे निरंतरता बनी रहे। इसी की पूर्ति के लिये गृहस्थ जीवन की कल्पना की गई। विवाह उसी गृहस्थ–जीवन का प्रारंभ है।

पूर्वकाल में हमारे यहाँ विवाहों की कई कोटियाँ थीं, पर अब सामान्यतः दो प्रकार के देखे जाते हैं.

1. परिवारों द्वारा निश्चित किया गया।

2. प्रेम से प्रेरित हो कर किया गया।

पहले प्रकार मैं परिवारिक संस्कारों की अनुरूपता के आधार पर पहले विवाह होता है फिर उसके बाद पति–पत्नी में ताल–मेल बैठने का क्रम शुरू होता है. परस्पर सहानुभूति, विश्वास और प्रेम का विकास क्रमशः होता है। प्रेम–विवाह में ताल–मेल (कितना है वही दोनों जाने) पहले बैठ जाता है – दुनियादारी से निरपेक्ष आपस की समझ एक दूसरे को अनुभव कर बनती है विवाह का संस्कार का नंबर बाद में आता है.

सामान्यतया जो देखने में आता है– प्रेम–विवाह में पारिवारिकता और सामा. जिकता के स्थान पर वैयक्तिकता हावी रहती है, वह अपनी दुनिया में ही रहना चाहता और सामाजिक मर्यादाओं को महत्व नहीं देना चाहता. प्रारंभ के आवेग में सब सुन्दर, मोहक लगता है लेकिन जब सम पर आकर जीवन सहज गति से चलने लगता है, आगे के (पारिवारिक तथा अन्य) दायित्वों के निर्वहन में कोई बाधा पड़ने पर या परस्पर किसी गलतफहमी अथवा अन्य कारण से गतिरोध की स्थिति उत्पन्न होने पर मुश्किल हो जाती है. जब कि सामान्य विवाह में कोई गतिरोध आने पर दोनों के परिवार सहारा देते हैं. उसे दूर करने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं. इस आधार और सहयोग से विषम परिस्थितियाँ भी संभल जाती हैं. विवाह कैसा भी हो दोनो ओर के परिवारजनों की स्वीकृति और सहयोग बना रहे तो सोने में सुहागा !

यहाँ अमेरिका में तो सभी प्रेम–विवाह करते हैं. तलाक भी धड़ल्ले से होते हैं. इन स्थितियों में बचपन कितना अरक्षित अनुभव करता है, आघात झेलता है, कैसा कुंठित हो जाता है मैंने देखा है.किशोरों में कैसी–कैसी, गलत आदतें विकसित होने लगती हैं जो व्यक्तिगत जीवन और समाज के लिये घातक होती हैं. परिवार का स्नेहमय संरक्षण और संस्कार मिलते रहने पर इस प्रकार की विकृतियाँ नहीं आती.

विवाह के लिये जिस प्रतिबद्धता की आवश्यकता है, उसमें खरा उतरना सबसे पहली बात है. परिवार, समाज का दबाव भी कारगर होता है 'छूट पाते ही मानव–मन अपने को नियंत्रित कर ले यह हमेशा संभव नहीं होता, थोड़ा दबाव चाहिये ही, अपने से बड़ों का, जिन पर विश्वास हो. एक सहारा हमेशा के लिये बना रहे तो बहुत अच्छा है. पारस्परिक विश्वास और सौमनस्य पूर्वक कर्तव्यों को निभाने में ही गृहस्थ–जीवन की सफलता और चारुता निहित है. चाहे प्रेम–विवाह हो या तय किया गया इसी में उसकी गरिमा है.

विवाह संस्था पहले भी और आज भी इस जगत की रीढ़ रही है और रहेगी– हाँ उसके स्वरूप में हो रहे परिवर्तन ने सामाजिक को मान्यताओं का नया स्वरूप प्रदान किया है। आज जो स्वरूप विवाह का समाज में अधिक स्वीकृति पा रहा है वह है की पसंद को अब जाति और प्रदेश की सीमाओं से परे जाकर स्वीकृति देना और सहर्ष न भी दे पायें फिर भी वे सामाजिक तौर पर विवाह के कार्यक्रम को पूर्ण करते हैं और बच्चों को आशीर्वाद देते हैं। हमें अपनी सोच बदलनी भी चाहिए क्योंकि बच्चों की शिक्षा दीक्षा में प्रगतिशील हो चुके है और उनको लड़की और लड़के कैसे परे मान रहे हैं तो फिर इस दृष्टि से हम अपने को क्यों बदलना चाहते. लड़के और लड़कियों की बदलती कार्य दशाएं और दायित्वों को सफलतापूर्वक निभाते हुए देखा है बस हमें भी सहयोग करना चाहिए। निष्कर्ष यही है की परिपक्व और आत्मनिर्भर बच्चों की अपनी पसंद है तो उसके लिए पहले विचार करना चाहिए. लव मैरिज को नियोजित कर सम्पन्न करने में ही हमारी भी गरिमा शेष रहती है।

साहित्य प्रेमी संघ की त्रैमासिक पत्रिका 'सृजक' कर रही है साहित्य सेवा के साथ ही समाज सेवा भी... आप भी आगे आएँ

हमारे प्रबन्धन द्वारा लिए गये निर्णय के अनुसार पत्रिका के प्रवेशांक से अर्जित सहयोग राशि में से पांच प्रतिषत राशि का उपयोग कम्बल वितरण में किया गया। यह कम्बल वितरण इन सर्दियों में दिल्ली फुटपाथ पर रात काटने वालों के बीच किया गया। साहित्य के साथ ही समाज के उत्थान में भी भागीदार बनिए और इस पत्रिका को सफल बनाइए, अपना पूरा योगदान दीजिए ।

आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु पत्रिका की सदस्यता लें और साहित्य रसास्वादन के साथ ही सामाजिक सेवा में भी भागीदार बनें। फार्म में दी गयी जानकारी को सदस्यता लेने के बाद राशि भुगतान पत्र के साथ या भुगतान विवरण संलग्न करके इस ईमेल पर मेल करें–

ईमेलः contact@sahityapremisangh.com

ऑनलाइन सदस्यता फॉर्म

मूल्यः 40 रुपये, वार्षिकः 200 रुपये, पंचवार्षिकः 1000 रुपये, आजीवनः 3000 रुपये (डाक खर्च व इंटरसिटी चार्ज सहित)

सदस्य का नाम...

डाक का पूरा पता (पिन सहित)...

....

मोब./फोन...

ईमेल...

नीचे दिए गए खाते में अपनी सदस्यता राशि अपने नाम के साथ जमा कराएं और हमारे ईमेल पते पर सदस्यता की सूचना दें और फॉर्म भरकर भेजें।

Satyam Shivam, Ac.No. 30443703697
S.B.I. Bazar Branch, City-Motihari, State-Bihar, IFSC code-SBIN0001231
Website: www.sahityapremisangh.com, Email: contact@sahityapremisangh.com

प्रेम का अंतिम लक्ष्य क्या सेक्स है ?

संयोजिका: वंदना गुप्ता

प्रेम का अंतिम लक्ष्य क्या सैक्स है..... इस विषय पर हमने फेसबुक पर उपस्थित लोगों से बात की और उनके विचार जाने.... जो आपके सामने उसी रूप में प्रस्तुत हैं जैसे उन्होंने व्यक्त किये.... और ये भी पता चला कि प्रेम की परिणति सैक्स कभी नहीं हो सकता। प्रेम तो एक ऐसी दिव्य ज्योति है जो सब कुछ स्वंय में समाहित कर लेती है और सैक्स मात्र क्षणिक क्रिया.... प्रेम निस्वार्थ है तो सैक्स स्वार्थ.... प्रेम त्याग है तो सैक्स प्राप्तव्य.... प्रेम खुदा है तो सैक्स मात्र क्षणिक सुख... जो प्रेम की ऊँचाई को कभी नहीं छू सकता और ना ही प्रेम का अन्तिम लक्ष्य बन सकता है.... सैक्स महज प्रकृति में संतुलन स्थापित करने की क्रिया.... प्रेम तो बस प्रेम में ''प्रेम'' होना ही है फिर चाहे राधा हो, मीरा हो, रूक्मणी हो, शबरी हो या विदुरानी, ध्रुव हो या प्रह्लाद या फिर गोपियाँ जिन्होंने अपने लिये कुछ चाहा ही नहीं..... प्रेम अपने लिये कुछ नहीं चाहता बस सब प्रियतम का और प्रियतम की खुशी में अपनी खुशी.... प्रेम निष्कामता है, सहजता है, सरलता है जिसका कोई पर्याय नहीं होता जिसका सिर्फ स्व–स्वरूप में ही लोप होता है.....।

फेसबुकियों की राय

प्रेम कई प्रकार का होता है लेकिन किसी भी प्रेम के भीतर अपना ही स्वार्थ होता है। जिस प्रेम की आप बात कर रही है वह पुरूष और स्त्री के बीच होता है जिसका लक्ष्य प्रजनन कर वंश वृद्धि ही होता है। लफफाजी कितनी भी हो कोर में तो यही है।

अरूणेश सी दवे

यह तो निर्भर करता है, प्रेम की प्रकृति पर.. जैसे भगवान की भक्ति का अंतिम लक्ष्य सभी के लिये मोक्ष नहीं होता वैसे ही सभी के लिये आपका कथन सत्य नहीं हो सकता। प्रेम व्यक्ति जिससे करता है मतलब कि उसके सान्निध्य में रहना उसे अच्छा लगता है, यह सेक्स नहीं यह आत्मीयता होती है, जिसे उसे अपने अंदर से कोई शक्ति प्रेरित करती है, यह केवल पुरूष और महिला के संदर्भ में ही हम देखते हैं.. सभी सोचते हैं कि प्रेम की परिणिति हमेशा सैक्स होती है, तो शायद यह कुछ हद तक गलत है, सैक्स तो किसी से भी किया जा सकता है जिससे प्रेम नहीं है उससे भी, यह केवल भूख है, पर प्रेम भूख नहीं है, उसमें सैक्स केवल एक प्रेम प्रकट करने का तरीका मात्र है। ''आजकल'' के मानक बदल चुके हैं, ''आजकल'' आप युवा पीढ़ी में प्रेम को सैक्स के रूप में और पैसे खर्च करवाने के रूप में देख सकती हैं, ऐसे और भी बहुत सारे रूप हैं, परंतु अगर वाकई प्रेम समझ में आता है वह है शादी के बाद, उसके पहले तो मैं समझता हूँ कि हरेक लड़का केवल सैक्स को ही प्रेम समझता है।

विवेक रस्तोगी

जी नहीं प्रेम का मतलब सैक्स नहीं होता, सच्चा प्रेम दुर्लभ है परन्तु सच्ची मित्रता उससे भी दुर्लभ है. सैक्स व प्रेम में काफी अंतर होता, सैक्स हवसपूर्ण होता परन्तु प्रेम दिल को तसल्ली देती है, हां अगर किसी को किसी से सच्चा प्रेम हो तो वह सेक्स की भावना गौण हो जाती है, सैक्स सिर्फ कुछ पल के लिए किसी को जोड़ता पर प्रेम हर समय, हर जगह दिलों को जोड़ता और अपनापन की भावना होती है। यू ही माने तो सैक्स व प्रेम का अन्योश्रय सम्बन्ध है, परन्तु सैक्स प्रेम के लिए मजबूर नहीं करता व प्रेम सैक्स के लिए मजबूर कर सकता है और रही बात पति–पत्नी की जो की प्रेम की दहलीज पर सैक्स पूर्ण संतुष्टि को प्राप्त करती है, प्रेम भावना से किया गया सैक्स अनोखा होता है और इस स्थिति में दोनों हमसफर तरो–ताजा महसूस ही नहीं बल्कि अपने आप को आनंदित हो जाते हैं।

विरेंद्र कुमार गुप्ता

प्रेम किसी लक्ष्य को साधने के लिए नहीं किया जाता..... मेरा मतलब स्वाभाविक प्रेम से है.... वह शनैः शनैः परवान चढ़ता है.... उसे व्यक्त करने के कई तरीके होते हैं... हर इंसान का अपना तरीका होता है. जो जिसे सही लगे. ... सैक्स भी उन्हीं में से एक है.... लेकिन उसे अंतिम लक्ष्य मानना मेरी समझ से तो जरूरी नहीं.!

सरस दरबारी

बहुत अच्छा प्रश्न किया है आपने– प्यार का मतलब सैक्स बिलकुल नहीं है। वास्तव में प्यार–दो दिलों का आपस में मेल–मिलाप, जोकि एक–दूसरे की भावनाओं को समझ सकें, एक–दूसरे के सुख–दुखः के साथी हों, प्यार वो नहीं जो केवल दो जिस्मों में होता है और सैक्स की पूर्ति के लिए हो– बस, उसके बाद कोई मतलब नहीं –यह प्यार नहीं कामपूर्ति की इच्छा मात्र है– यह प्यार नहीं हो सकता– बस मतलब के दोस्त और प्यार दिखाते हैं। प्यार के कई रूप हैं। आप प्यार को किस रूप में देखते हो, सोचते हो, करते हो– यह सब–कुछ आपकी मानसिकता पर निर्भर करता है। प्यार तो माँ–बेटे का, मां–बेटी का, भाई–बहन का, दोस्ती का, मानवता का और देश प्रति प्यार–जय हो।

कपूर हरीश

गुरू जी हीं ....प्रेम केवल महिला पुरुष के बीच का ही सम्बन्ध तो नहीं है. यह तो कई रिश्तों के बीच समाहित है, प्रवाहित है. माँ–बाप, बेटा–बेटी, बहन–भाई आदि पारिवारिक रिश्तों के अलावा दोस्त अन्य कई धार्मिक, सामाजिक सम्बन्ध हैं जिनके बीच प्रेम पनपता है, इसके अलावा भी सजीव निर्जीव कई ऐसी चीजें जिनके प्रति प्रेम होता है, प्रेम का कोई निश्चित दायरा नहीं हैं, यह एक अभिव्यक्ति है... काम की आसक्ति से प्रेम किया जा सकता है, लेकिन प्रेम का उद्देश्य या अर्थ काम नहीं हो सकता है, जहाँ स्त्री पुरुष की बात है. वहां पर शायद... क्योंकि दायरा अब सीमित एवं संकुचित हो चुका है..... तो मेरा मानना है कि आज प्रेम आत्मिक रूप से सिमट रहा है... इसका स्वरूप अब कुंठित हो गया है.... क्योंकि प्रेम एक प्रभाव है..और प्रथम प्रभाव तो अक्सर भौतिक रूप से ही पड़ता है. .... अब बात ये है कि आप प्रेम को उपभोग के रूप में लेते हैं या आराधना के रूप में, आप का प्रेम के प्रति दृष्टिकोण प्रेम के लक्ष्य को इंगित करता है..... हालाँकि बिना स्वार्थ के प्रेम भी नहीं होता..... महत्वपूर्ण यह है कि यह कितना दीर्घकालिक है.. अगर यह दीर्घकालिक है तो निश्चित तौर यहाँ पर प्रेम भावनात्मक रूप से ससक्त है.... वह जिस्म के बीच का न होकर आत्मा के बीच का प्रेम है।

उत्तम सिंघल

प्रेम... प्रेम होता है... और हमेशा सच्चा ही होता है। रही बात एक आम व्यक्ति के लिये, प्रेम का प्रथम लक्ष्य सैक्स भी हो सकता है परन्तु अंतिम नहीं. प्रेम का अंतिम लक्ष्य तो, योग (जुड़ना) ही है..... परन्तु नीयति तो वियोग

ही है प्रेम का अंतिम लक्ष्य तो, योग (जुड़ना) ही है..... और सेक्स भी योग (जुड़ना) है। अतः दो प्रेमी सैक्स में लिप्त है तो हम इशारे में कहते हैं कि वो प्रेम में लिप्त हैं।

वंदना जी प्रेम का प्रथम और अंतिम लक्ष्य प्रेम करना ही तो है और कुछ नहीं.... देखो न, प्रेमी भी तो वही कर रहे हैं।

मैं कुंदन ये तो एक मत से सभी कह रहे हैं कि प्रेम का लक्ष्य सैक्स तो बिल्कुल नहीं है... बाकी सभी के कहे से सहमत भी हूँ सिर्फ विवेक रस्तोगी जी को छोड़ कर।

विवेक जी आज कल की युवा पीढ़ी पर क्यूँ ऐसे लांछन लगाए जाते हैं इसका कोई आधार तो होगा ना आप के पास।

अगर आप युवा हैं तो अपनी बात कहिये, नहीं हैं तो आप को युवा पीढ़ी के बारे में ये जानकारी मिली कहां से ? आजकल के युवा सैक्स और प्रेम को अलग–अलग रखते हैं। मैं नहीं कहता सैक्स नहीं करते, बिल्कुल करते हैं लेकिन इस बात को तय करके कि जो भी हो रहा है वो सिर्फ सैक्स है प्रेम नहीं और जब आजकल के युवा प्रेम करते हैं तो उनका प्रेम भी उतना ही पवित्र होता है जैसा आप के जमाने में था या शायद पिछले कई सौ सालों से पवित्र है।

सभी से निवेदन है कि युवा को हर बुरी बात के लिए दोष देना बंद करिए। आज का युवा पिछली पीढ़ी को दोष देता है, हर उस बुराई के लिए जो आज सिस्टम में है... भ्रष्टाचार, बुरी सोच और गंदगी सब पिछली पीढ़ी की निष्क्रियता के कारण आज की पीढ़ी को मिली है। आज के युवा अगर इस गंदगी को बदलना चाह रहे हैं तो आप उन्हें ही अपराधी बनाने पर लग गये हैं। सोच बदलिये जनाब या फिर युवा सोच को समझिये। मैं अभी भी वही कह रहा हूँ... मैं हमेशा से प्रेम को सिर्फ देने का जरिया मानता रहा हूँ और उसका लक्ष्य सैक्स कभी नहीं हो सकता। सैक्स जो होता है वो सिर्फ प्रेम का बाय प्रोडक्ट होता है जो की स्वतः होता है और जो लोग दिल से प्यार करते हैं वो सेक्स को अपना लक्ष्य नहीं बनाते और मेरी शिकायत विवेक जी के उस कथन पर है जिसमें उन्होंने युवाओं को दोषी ठहरा दिया है बाकी और कुछ नहीं।

प्रेम और सैक्स दो अलग–अलग दिशाएँ हैं। प्रेम में एक दर्शन छिपा होता है जिसे वह ही समझ सकता है जो करता है और जिसको करता है। यह जीवन के आध्यात्म का आधार है, यह आधार स्नेह और प्यार को दर्शाता है जैसे स्नेह छोटों से किया जाता है और प्यार प्रेयसी से मगर प्रेम जीवन से जुड़े उन रिश्तों से किया जाता है जहाँ अपेक्षा ना हो और मानसिक संवेदना हो, प्रेम में त्याग समर्पण होता है। सैक्स तो सोच की सबसे निचली सतह है। यह प्रेम के साथ नहीं जोड़ी जा सकती क्योंकि प्रेम शाश्वत पवित्र रिश्ता होता है। हाँ प्यार से सैक्स जोड़ा जा सकता है। यह मेरे अपने विचार हैं।

ज्योति खरे

वन्दना जी आपकी सोच को नमन करता हूँ प्रेम की परिणती सम्भोग कैसे हो सकता है प्रेम नित्य है और सम्भोग कामवा. सना का रूप तथा सृष्टि चलाने का साधन मात्र प्रेम अपने अनुकूल स्वभाव के किसी भी व्यक्तित्व से हो सकता है हम अपने पालतू जानवर से भी बेहद प्यार करते हैं जरूरी नहीं सैक्स और प्यार का साथ होना हाँ दो प्रेमी अगर सैक्स करते हैं तो वहीं संतोष देता है और खुशी भी बिना प्रेम का सम्बन्ध या तो मजबूरी है या बलात्कार प्रेम तो प्रेम है उसमें स्वार्थ नहीं होता ऐसा मेरा मानना है।

डॉ. गिरीश चन्द्र पाण्डेय प्रतीक

"**प्रेम** ने आँखों से कब देखा है" जबकि बिना आँखों से देखे भी प्रेम अपने लक्ष्य पर अनवत चल रहा है, सैक्स मेरे विचार से बस स्वार्थ है, जो लोग सैक्स को प्रेम से जोड़तें हैं वो उनका भोग–प्रवृति का स्वार्थ हैं ऐसे लोग प्रेम की सार्थक परिभाषा को स्पष्ट नहीं कर पाते और ना ही प्रेम उनके जीवन में कभी परिलक्षित हो सकता !

कवि राकेश 'गगन'

बिल्कुल नहीं प्रेम और सैक्स दोनों अलग हैं. सैक्स शारीरिक आकर्षण है, प्रेम दो आत्माओं का मिलन. जिससे भी वैचारिक और आत्मिक समानता हो, उससे प्रेम हो सकता है, बिना कोई सैक्स आकर्षण के. प्रेम एक उदात्त भावना है, सैक्स केवल एक शारीरिक भूख।

कैलाश शर्मा

ऊपर बहुत ही सारगर्भित विचारों की प्रस्तुतियां देखी, सभी सुधिजनों का साधुवाद, कम शब्दों मे इतना ही कहना है की प्रेम की परिणिति सैक्स हो सकता है, परन्तु लक्ष्य सैक्स नहीं होता, अगर वो सच्चा प्रेम है तो..

राजेंद्र अग्रवाल

प्रेम अक्षय है, वंदना जी, अपने स्वरूप में। सैक्स की आपूर्ति उसे लांछित ही करती है, प्रेम की परिणिति कभी होती ही नहीं, ऐसी मेरी मान्यता है। अतः प्रेम अक्षय बना रहे, सुन्दर, अपूर्व बना रहे, प्रेयसी अप्राप्य ही रहे तो बेहतर है। मेरा एक शेर हैः अच्छा है जिन्दगी में कोई कशिश रह जाए। कि यकबयक कोई आस बन के सामने आये।

चेतन प्रकाश

मुझे लगता है यह दोतरफा यात्रा है.. प्रेम से दैहिक प्रेम और दैहिक प्रेम से पुनः प्रेम में लौटना.... दोनों ही प्रेम हैं, दोनों वस्तुतः एक ही हैं, अभिव्यक्ति के स्तर पर अलग– अलग हैं.... अनुभूति के स्तर पर समान।

माया मृग

एक दूसरे को बेहतर ढंग से समझना ही प्रेम है। साहिल के जाने के बाद अमृता प्रीतम और इमरोज ताउम्र एक साथ रहे मगर सैक्स का विषय उनके दरमयाँ बेमानी था।

दिनेश गेरा

यदि यह आपकी वास्तव में जिज्ञासा है तो,, मेरा आग्रह है आप "ओशो" के द्वारा नारद के भक्ति सूत्र पर दिए गये प्रवचन को पढ़ या सुन लीजिये! ऑडियों प्रवचन और प्रवचन की पुस्तक दोनों ही सरलता से उपलब्ध हो जायेंगी।

संजय पाराशर बबलू

इस संदर्भ में कहीं पढ़ा था मैंने "हम पंखे का उपयोग क्यों करते हैं? जबकि जीने के लिए जरूरी, हवा सारी दुनिया में चारों तरफ है!" उनका आग्रह था कि पंखे को सैक्स और हवा को प्रेम मान कर फिर से पढ़ें

बीएस पाबला।

ग़ज़ल

चलाया जादू मुझ पे कैसा

संजय कुमार शर्मा 'राज'
सम्पर्क सूत्रः अकलतरा, जिला जांजगीर-चाम्पा, छत्तीसगढ़
फोनः 09425544808
Email:ss.janjgir@gmail.com

चलाया जादू मुझ पे कैसा,
कि ये चाहत दे दी,
हुस्न ने इश्क को,
ये कैसी हिमाकत दे दी,
तेरे दहकते बदन को,
जब भी छू लूँ तो लगे,
कि जैसे शम्मा ने आग को,
है इजाजत दे दी,
वाह! तेरा संदल सा बदन
संगमरमरी हमदम,
क्या किया मुझको फक़त बुत
की इनायत दे दी,
मैं तो काफिर था और
सूफी ज़िगर रखता था,
तो इश्क़ोअल्लाह की
शिद्दत से इबादत दे दी,
जिसकी ली थी कसम,
ताउम्र नहीं पीने की,
उसी ने सुबहोशाम पीने की
आदत दे दी,
रहे दुनिया में हमेशा
चाँद-तारों की तरह,
मेरे महबूब ने मुझे वो
बादशाहत दे दी,
इश्क के मारे को लोग
बदमाश कहे देते हैं,
कौन जाने कि तूने मुझको
शराफत दे दी,
आब-ए-ज़न्नत से मिरे
खुश्क़ मिट्टी को किया तर,
छुए ग़रदूं को "राज",
ऐसी इमारत दे दी।।

प्रेम का अंतिम लक्ष्य क्या... सेक्स ?

(गद्य)

राजेश सक्सेना ''रजत''
अंसिस्टेंट वाइस प्रेसीडेंट
रिलाइंस इंफ्रा.लि.
ए-2, सैक्टर-24, नोयडा,(उ.प्र.)
मो. 09312024877
Email:Rajesh.Saxena@relianceada.com

कार्ल मार्क्स की विवेचना से हर कोई प्रबुद्ध व्यक्ति परिचित होगा। माँ और शिशु के बीच के सुन्दरतम रिश्ते में भी एक ऐसी विवेचना जो सोचने पर मजबूर करती है कि उस प्रेम का आधार भी कुछ कल्पना से परे हो सकता है।

भारतीय परिपेक्ष्य में उस सन्दर्भ को आगे न बढ़ाते हुए, मैं मुख्य विषय की ओर चलता हूँ। ''प्रेम'' जिससे हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में जीवन के सोपान में आकर्षित हुआ है। प्रेम अर्थात लगाव अर्थात मोह।

प्रेम मुख्यतः भावनात्मक होता है। भाव जो धनात्मक दृष्टिकोण से पनपते हैं। कोई वस्तु या व्यक्ति जब हमें भाती/भाता है अर्थात अच्छी लगती/लगता है तो मन /हृदय में लगाव या मोह पैदा होता है। कोई भाता तब है, जब वो हमारे अवचेतन मन में पड़ी तुलनात्मक छवि के करीब होता है। यह छवि चाहें किताबों में पढ़कर बनी हो या सुनी हुई कहानियों से पनपी हो या गाहे–बगाहे बीते जीवन में, जो किरदार, अपनी छाप, मन मस्तिष्क पर छोड़ गए हों, उनसे बनी हो। उस छवि का बनना बिगड़ना बुद्धि व विवेक पर निर्भर करता है। बुद्धि व विवेक, व्यक्ति विशेष की विश्लेष्णात्मक प्रतिभा या समाज से मिले तार्किक विश्लेषण से प्रभावित होते हैं। इन सब में अच्छे साहित्य और अच्छी संस्कृति का बड़ा योगदान रहता है। ये अंततः मन को सीमित करते हैं जो छवियों को उकेरने में माहिर हैं। तो छवि बनती बिगड़ती रहती है। लगाव कम–ज्यादा होता है। मोह घटता बढ़ता रहता है। अर्थात प्रेम प्रबल या क्षीण होता रहता है।

दूसरी तरफ प्रेम शारीरिक होता है एक स्वाभाविक ईश्वर प्रदारेण प्रक्रिया है ये। यह एक तरह से, शरीर में उत्पन्न रासायनिक क्रिया है जिसमें अवचेतन मन में बसी छवि एक उत्प्रेरक का काम करती है।

संस्कार, उस श्रंखलाबद्ध रासायनिक क्रियाओं के नियंत्रक स्वरूप होते हैं। क्रियाओं की गति को कम करने या संतुलित रखने में इनका बड़ा योगदान रहता है। जिसका पलड़ा भारी होगा, क्रिया उसी ओर कूच करेगी। अंततः भाव, क्रियाएँ व विचार प्रभावित होते हैं।

शरीर में टेस्टोस्टरोन रसायन का यदि वैज्ञानिक गण, समय के साथ ग्राफ दर्शाएँ तो इस शारीरिक प्रेम का सही पक्ष उजागर होगा और उसके विश्लेषण से नए निष्कर्ष निकल सकते हैं, ऐसा मेरा मानना है। अब मानव शरीर में इन दोनों प्रकार के प्रेम में निरंतर हर पल द्वंद चलता रहता है – शारीरिक प्रेम व भावनात्मक प्रेम। जो जीता वहीं सिकंदर। परिणाम आप स्वयं जान सकते हैं। ऐसे में बुद्धि व विवेक, उनमें संतुलन बनाने का भरसक प्रयास करते हैं। अब यदि किसी में बुद्धि या विवेक की कमी है तो यह कार्य संस्कार और सत्संग के माध्यम से होता है।

जब वह भी न हो तो परिणाम आप सोच सकते हैं। वैसे बुद्धि, विवेक, संस्कार और सत्संग, किसी न किसी सीमा में सभी में होते हैं। लेकिन मुख्य बात सोचने की है कि समय पर इनका रिसपोंस अर्थात प्रतिक्रिया का समय कम या ज्यादा होने पर शारीरिक व भावनात्मक प्रेम के द्वन्द में हार जीत होती रहती है। ऐसे समय में आत्मा से हमेशा सत्य वचन प्रेषित होते रहते हैं। जिनको पकड़ना बुद्धि का काम है। अंततः विवेक, बुद्धि के साथ मिलकर, मन को लगाम देता है, जो छवि के बनने बिगड़ने में उत्तरदायी है।

अब सोचिये कि भावनात्मक प्रेम सौ प्रतिशत है। मीरा का जन्म अवश्यम्भावी होता है और कृष्ण भक्ति संसार को देखने को मिलती है। दूसरी तरफ यदि शारीरिक प्रेम सौ प्रतिशत है, तो व्यभिचार, स्त्रियों के प्रति दुर्व्यवहार, दुराचार की पराकाष्ठा दिखती है। यह स्त्रियों में भी सौ प्रतिशत हो सकता है और उनका स्वरुप रम्भा और उर्वशी के रूप में देखने को मिल सकता है। वैसे ये पुरुष प्रधान इसलिए ज्यादा है क्योंकि पुरुषों में इस क्रिया की, प्रतिक्रिया का समय बहुत तेज होता है और चरमोत्कर्ष पर वीभत्स रूप भी ले लेता है।

मानव जीवन में इन दो प्रेम स्वरूपों का संतुलन अनिवार्य है। संस्कार, सत्संग व समाज के उन्मुक्त निर्माण में सही सामंजस्य इसको संतुलन दे सकता है।

किसी वास्तविकता से मुँह मोड़ने से वह बंद कोठरी में अपने स्वरुप को, अंधेरों में उजागर करने लगता है व एक दबी आवाज सी रह–रह कर समाज को आती रहती है। इसलिए आवश्यकता है ऐसे प्रबंध व व्यवस्थाओं की जहाँ समाज में असत्य की पूजा न हो। असत्य को सिद्ध करने की बाजीगरी न की जाये। न ही ऐसे बाजीगरों को पनपने दिया जाये।

एक विशेष बात जो उत्प्रेरक का कार्य करती है वो है ''एकांत''। यह कुछ धनात्मक दृष्टिकोण के लोगों को शक्ति प्रदान कर सकती है, लेकिन ज्यादातर को उच्छंखल बनाती है।

मैं अंत में निर्णय स्वरुप यही कहूँगा कि परोक्ष रूप से ज्यादातर प्रेम का अंतिम लक्ष्य शारीरिक संतुष्टि है जिसे सैक्स की संज्ञा दी जाती है और ये वर्तमान समय में ज्यादा देखने को मिलता है। इसको समझने व सही दिशा देने का दायित्व समाज का है।

प्रेम का अंतिम लक्ष्य सेक्स ? (काव्य)

वन्दना गुप्ता
सम्पर्क सूत्रः
नई दिल्ली
फोनः 9868077896
Email: rosered8flower@gmail.com

प्रेम एक अनुभूत प्रक्रिया
न रूप न रंग न आकार
फिर भी भासित होना
शायद यही इसे
सबसे जुदा बनाता है
ढ़ाई अक्षर में सिमटा
सारा संसार
क्या जड़ क्या चेतन
बिना प्रेम के तो
प्रकृति का भी अस्तित्व नहीं
प्रेम का स्पंदन तो
चारों दिशाओं में घनीभूत होता
अपनी दिव्यता से आलोकित करता है
फिर भी प्रेम कलंकित होता है
फिर भी प्रेम पर प्रश्नचिन्ह लगता है
आखिर प्रेम का वास्तविक अर्थ क्या है
क्या हम समझ नहीं पाते प्रेम को
या प्रेम सिर्फ अतिश्योक्ति है
जो सिर्फ देह तक ही सीमित है
जब बिना प्रेम के प्रकृति संचालित नहीं होती
तो बिना प्रेम के कैसे
आत्मिक मिलन संभव है
जो मानव देह धारण कर
इन्द्रियों के जाल में घिर
हर पल संसारिकता में डूबा हो
उससे कैसे आत्मिक प्रेम की
अपेक्षा की जा सकती है
आम मानव के प्रेम की परिणति तो
सिर्फ सैक्स पर ही होती है
या कहिये सैक्स ही वो माध्यम होता है
जिसके बाद प्रेम का जन्म होता है
ये आम मानव की व्यथा होती है
जिस निस्वार्थ प्रेम की अभिलाषा में
वो उम्र भर भटकता है
अपने साथी से ही न निस्वार्थ प्रेम कर पाता है
उसका प्रेम वहां सिर्फ
सैक्स पर ही आकर पूर्ण होता है
ये मानवमन की विडंबना है या कहो
उसकी चारित्रिक विशेषता है
जो उसका प्रेम सैक्स की बुनियाद पर टिका होता है
मगर देखा जाये तो
सैक्स सिर्फ सांसारिक प्रवाह का
एक आधार होता है
मानव तो उस सृजन में
सिर्फ सहायक होता है
और खुद को सृष्टा मान सैक्स का दुरूपयोग
स्व उपभोग के लिए करना जब शुरू करता है
यहीं से ही उसके जीवन में
प्रेम का ह्रास होता है
क्योंकि
प्रेम का अंतिम लक्ष्य सैक्स
कभी नहीं हो सकता
ये तो जीवन और सृष्टि के संचालन में
मात्र सहायक की भूमिका निभाता है
ये तो वक्ती जरूरत का
एक अवलंबन मात्र होता है
जिसे आम मानव प्रेम की परिणति मान लेता है
जबकि प्रेम की परिणति तो सिर्फ
प्रेम ही हो सकता है
जहाँ प्रेम में प्रेम हुआ जाता है
प्रेम में किसी का होना नहीं
प्रेम में किसी को अपना बनाना नहीं
बल्कि खुद प्रेमस्वरूप हो जाना
बस यही तो प्रेम का वास्तविक स्वरुप होता है
जिसमें सारी क्रियाएं घटित होती हैं
और जो होता है आत्मालाप ही लगता है
बस वो ही तो प्रेम में प्रेम का होना होता है
मगर आम मानव के लिए
विचारबोध जिन्दगी के
अंतिम पायदान पर खड़ा होता है
उसके लिए तो
प्रेम सिर्फ प्राप्ति का दूसरा नाम है
जिसमें सिर्फ जिस्मों का आदान–प्रदान होता है
लेकिन वो प्रेम नहीं होता
वो होता है...... प्यार... हाँ...... प्यार
क्योंकि प्यार में सिर्फ
स्वसुख की प्रक्रिया ही दृष्टिगोचर होती है
जिसमें साथी सिर्फ अपना ही सुख चाहता है
जबकि प्रेम सिर्फ देना जानता है
और प्यार सिर्फ लेना...... सिर्फ अपना सुख
और यही पतली सी लकीर
प्रेम और प्यार के महत्त्व को
एक दूजे से अलग करती है
मगर आज का प्राणी
अपने देहजनित प्यार को ही प्रेम समझता है और
बेशक उसे ही वो प्रेम की परिणति कहता है
क्योंकि
कुछ अंश तक तो वहां भी प्रेम का
एक अंकुर प्रस्फुटित होता है
तभी कोई दूसरे की तरफ आकर्षित होता है
और अपने जिस्म को दूजे को सौंपा करता है
और उनके लिए तो
यही प्रेम का बीजारोपण होता है
अब इसे कोई किस दृष्टि से देखता है
ये उसका नजरिया होता है
क्योंकि..... उसकी नजर में
सैक्स भी प्रेम के बिना कहाँ होता है
कुछ अंश तो उसमें भी प्रेम का होता है
और ज्यादातर दुनिया में
आम मानव ही ज्यादा मिलता है
और उसके लिए
उस तथाकथित प्रेम का
अन्तिम लक्ष्य तो सिर्फ सैक्स ही होता है.....
जबकि सैक्स में
कहाँ प्रेम निहित होता है
वो तो कोरा रासरंग होता है
वक्ती जरूरत का सामान
आत्मिक प्रेम में सिर्फ
प्रेम हुआ जाता है
वहाँ ना देह का भान होता है
बस यही फर्क होता है
एक आत्मिक प्रेम के लक्ष्य में
और कोरे दैहिक प्रेम में
हाँ जिसे दुनिया प्रेम कहती है
वो तो वास्तव में प्यार होता है
और प्यार की परिणति तो सिर्फ सैक्स में होती है ....मगर प्रेम की नहीं
बस सबसे पहले तो
इसी दृष्टिकोण को समझना होगा
फिर चयन करना होगा
वास्तव में खोज क्या है
और मंजिल क्या.......?

●

काव्य

'चाहने वाले उसके बुढ़ा जाएंगे'

डंडा लखनवी
सम्पर्क सूत्रः
लखनऊ
फोनः 5224025758
Email:dandalakhnavi@gmail.com

पंगई दंगई, लुच्चई, नंगई।
हर जगह बढ़ गई आजकल वाकई
अब है मौसम का
कोई भरोसा नहीं
मार्च में जनवरी, जनवरी में मई
भा गया हैरीपाटर नई पौध को-
धूल खाती किनारे कहीं सतसई
जिसको देखो वो सपने
में ही बक रहा-
मुंबई, मुंबई, मुंबई, मुंबई
राजा दशरथ अगर
आज कोई बना-
नोच डालेंगी अब की उसे केकई
गलियों-गलियों में करके
सुना एमबीए-
लड़की-लड़के कहें
ले दही, ले दही
प्यार साँसें भरे पहरेदारी में जो-
तो मोबाइल के जरिए मिले चंगई
चाहने वाले उसके बुढ़ा जाएंगे-
नई दिल्ली रहेगी
नई की नई।

कथालोक

एल्यूमिनाई मीट

त्रिपुरारि कुमार शर्मा
ए–203, गाँधी विहार,
नई दिल्ली–110009.
फोनः 91–9891367594
ईमेलः
tripurariks@gmail.com

कहानी

रात खत्म हो चुकी है। सुबह की आँखों में अब भी नींद ठूँसी हुई है। जैसे लकड़ी का बुरादा किसी बोरे में भरा जाता है। सूरज ने भी ठीक वक्त पर दरवाजे की घंटी बजाई। आज कुछ इस तरह से कमरे में दाखिल हुई है सुबह। पीली चादर लपेटे धूप खिड़की से अंदर झाँक रही है। उसका साया अपनी ही बांहों में फर्श पर सिमटा हुआ है। हर एक चीज अपनी जगह पर है। मैंने दरवाजे के परदों को देखा, जो थोड़ा–सा खिसका हुआ है। कमरे के सामने पौधे अपने गमलों में आराम फरमा रहे हैं। फूल अब भी खिले हुए हैं। हवा अपनी अदा से पत्तों को चूम रही है। मगर बगीचे का चेहरा बहुत उदास है। मैंने खिड़की से बाहर देखा। एक पंखुड़ी फूल से टूट कर जमीन पर लेटी हुई है। शायद नाराज है वह। मैंने सोचा क्यों न उसकी नाराजगी दूर की जाए। तभी मोबाइल मचलने लगा। अचानक कुछ याद आया। नजर कैलेण्डर पर जा पहुंची। फरवरी 2011 की 5वीं तारीख। कॉलेज में एल्यूमिनाई मीट है। मैं झटपट तैयार हुआ और कॉलेज की तरफ भागा। मैं थोड़ा लेट हो चुका था। हॉल में पहुंचते ही मैंने पाया कि डिपार्टमेंट की हेड स्टेज पर माइक से कुछ कह रही हैं। दरअसल, वहाँ इतना शोर था कि किसी और से कुछ कहना संभव नहीं था। मैंने इधर–उधर देखा। कुछ पुराने 'दोस्त', कुछ 'क्लासमेट' नजर आए। मैं उन्हीं के साथ जा बैठा। शोर की शक्ल धीरे–धीरे चुप्पी में बदलने लगी। आवाज हवा की सतह पर तैरने लगी। बात छन–छनकर सामने आने लगी। अचानक गेट पर मुझे एक जानी–पहचानी शक्ल नजर आई। उस एक चेहरे को देखकर जैसे मेरी साँस बर्फ हो गई। कहते हैं कि समय की हर करवट के साथ व्यक्ति की निजी जिंदगी मे एक बदलाव आता है। कभी–कभी यह बदलाव पूरी जिंदगी को तितर–बितर कर देता है। हॉल में धीरे–धीरे फूल से टूटी हुई पंखुड़ी की महक भरने लगी। समय, जैसे मेरी पुतली में नाच उठा। कुछ दृश्य मेरी आँखों की सतह पर उभरने लगे...

कुछ तो बात थी! ...तभी तो वह डूब–डूब जाता था उसकी आँखों में। सच कहूँ, तो वह कैदी था उसकी आँखों का। वह यानि चिराग और आँखों की मलिका थी जीत। दोनों मेरी क्लास में पढ़ते थे। मैं उन दिनों जीत पर फिदा था। चिराग, जीत की आँखों पर मरता था। ...और जीत! उसका आज तक कुछ पता नहीं चला। उसके दिल की बात कोई समझ न सका। शायद वह दिल की बात किसी से कह न सकी। शायद वह भी चिराग की तरफ खिंचने लगी थी। 'उन्स' था कोई। 'उन्स' ही होगा। नहीं तो प्यार में 'इंटरकास्ट मैरिज' कोई बड़ी दीवार नहीं। कई बरस बीत जाने के बाद जब चिराग से मुलाकात हुई, तो पता चला कि जीत शादीशुदा है।

मैंने कहा – "तुम भी शादी क्यों नहीं कर लेते?"

चिराग ने अपने ही अंदाज में कहा– "कौन करेगी मुझसे शादी? एक जीत थी, उसे कोई और जीत ले गया। हाँ, कोई हारने को तैयार हो तो बुलाओ। मैं अभी शादी करने को तैयार हूँ।"

मैं जानता था कि चिराग सिर्फ मजाक कर रहा है। मगर आज जीत को उसके बच्चों के साथ देखा, तो मुझे कॉलेज के दिन याद आने लगे। तब हम ग्रेजुएशन फायनल ईयर में थे। मैं अक्सर लड़कियों के बैग चेक किया करता था। मुझे पसंद थी ये बदमाशियाँ। एक दिन, मुझे जीत के बैग में एक डायरी मिली। डायरी में पके हुए शब्दों का गुच्छा लेटा पड़ा था। यह चिराग और जीत की प्रेम कहानी थी। मैं गुजरने लगा...

1. सुनो, मेरी एक ख़्वाहिश है। मैं इस देह से आजाद होना चाहती हूँ। इसमें रहना अब मुश्किल–सा लगता है। अक्सर साँस लेते हुए लगता है कि फट गया है मेरा गला। मेरी सफेद मुलायम चमड़ी पर निशान–से उभर आते हैं। मैं खुद को तंग महसूस करती हूँ इस देह में। अच्छा, एक अनुभव बताऊँ–मैं जब भी तुम्हारे पास होती हूँ, तो लगता है कि मैं देह से मुक्त हो चुकी हूँ। फिर मुझे यह देह किसी जेल की दीवार नहीं, बल्कि कोई सुरंग की तरह लगती है। ऐसा लगता है, यह भी एक रास्ता है, जिससे होकर प्यार की मंजिल तक पहुंचा जा सकता है। प्यार कह लो या परात्मा, एक ही बात है। यह देह ही तो है, जिससे लोग चिपके हुए हैं। परात्मा को पाने के लिए पता नहीं कहाँ–कहाँ भटकते रहते हैं। वैसे, यह अनुभव भी अजीब है न! जैसे कोई पुरानी बात याद

कथालोक

आ जाती है।

जैसे परिंदे शाम को अपने घर वापस लौट आते हैं। कहाँ हो तुम? आओ न, मैं भी अब अपने घर लौटना चाहती हूँ। तुमने तो कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी। अब इस ख्वाहिश का क्या करोगे? सोचती हूँ कि तुम सामने होते, तो पूछ ही लेती! जैसे तुम मुझे अक्सर मजबूर कर देते हो आईसक्रीम खाने के लिए। जबकि तुम्हें मालूम है, मुझे आईसक्रीम पसंद नही। मैं फिर भी खा लेती हूँ न! एक बात कहूँ, अब मुझे आईस्क्रीम अच्छी लगने लगी है। तुम्हें याद है, जब हम पहली बार मिले थे, तब भी तुम आईसक्रीम खा रहे थे। बारिश हो रही थी। इंडिया गेट की वो शाम याद है तुम्हें? तेज हवा से जब मेरा छाता उड़ गया था। मैं भीगने लगी थी। तुमने अपनी आईस्क्रीम फेंक पर मेरा छाता पकड़ा था।

मेरे हाथ में छाता थमाते हुए तुमने कहा था – "कभी–कभी भीग लेना भी बुरा नहीं है।"

पता नहीं मुझे क्या हुआ? मैं अपना छाता वहीं इंडिया गेट पर छोड़ आई। हाँ, तुम्हारी बातों ने मेरे मन को जरूर गीला कर दिया। अगले दिन जब तुमने मुझे बस स्टॉप पर देखा, तो पहले मैंने ही बात शुरू की थी। ये और बात है कि मैं अब भी कहती हूँ कि तुमने पहले टोका था। जब तुम्हें पता चला कि मैं तुम्हारे ही कॉलेज में, तुम्हारी क्लास में पढ़ती हूँ, तुम मुस्कुराने लगे। याद है कुछ भी? चलो एक बात बताती हूँ... तुम मुस्कुराते हुए बहुत अच्छे लगते हो। जब तुम्हारे होंठ लेफ्ट साइड खिंच जाते हैं, तो गालों पर एक खुशी नाच उठती है। सुनो, तुम जब भी मुझसे मिलना... ऐसे ही मुस्कुराना।

2. दिल्ली की शाम अजीब होती है। आज की शाम भी बहुत उदास है। आसमान का चेहरा उतरा हुआ है। अंधेरा और उजाला एक दूसरे से मुंह फेरे बैठे हैं। जैसे तुम मुझसे रूठ जाते हो। चुप हो जाते हो। कुछ बोलते ही नहीं। मैं इंतजार कर रही होती हूँ, फोन के दूसरे सिरे पर। बोलते–बोलते मेरी आवाज थक जाती है। 'कहना' पूरा नहीं होता है मेरा। मेरी बात हमेशा की तरह अधूरी रह जाती है। मुझे तो लगता है कि तुम्हें मजा आता है। मुझे सताने में, चुप रहने में। एक बात कहूँ– मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती तुम्हारी चुप्पी। मैं जलती हूँ इस चुप्पी से।

तुम कहते हो – "ये चुप्पी तुम्हारी सौत है क्या?"

मैं कहती हूँ – "हाँ, है।"

फिर अचानक तुम मुस्कुराने लगते हो। तुम्हारी आँखें चमकने लगती हैं। तुम्हें पता है एक बात। आज तक मैंने नहीं कही। शायद कह भी नहीं पाऊँगी। तुम्हारी आँखों में यह चमक देखने के लिए मैं अपनी जान भी कुर्बान कर सकती हूँ। कई बार कहना चाहा कि कह दूँ। कह दूँ कि मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ। कहाँ कह पाती हूँ? अपाहिज हैं मेरे शब्द। जाहिर नहीं कर पाते हैं मुझे पूरी तरह। कई कोशिशों के बाद महसूस होता है, 'चुप्पी ही आखिरी सच है।' चुप्पी ही आखिरी जवाब है। फिर मुझे तुम पर प्यार आने लगता है। सुनो, कहाँ हो तुम? सच कहूँ, तो मुझे तुम्हारी कभी याद नहीं आती। पता है क्यों? याद करने के लिए दूरी बहुत जरूरी है। तुम मुझसे दूर कहाँ हो? तुम्हारी उपस्थिति का नाम ही 'साँस' है। तुम्हारी अनुपस्थिति का नाम ही धड़कन है। जब तुम होते हो, तभी तो मेरी साँस चलती है। जब तुम नहीं होते हो, तो तुम्हारे लिए ही धड़कता है मेरा दिल। अब तुम कहोगे– बंद करो अपनी फिलॉसफी! सच कहती हूँ। तुमने कभी आईना देखा है? अपना ही चेहरा देखने के लिए दूरी बनानी होती है। ये दूरी मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती हूँ।

3. आज फिर बरसात का दिन है। मैं अपने घर के बालकोनी में बैठी हूँ। सोचती हूँ कि काश! आज कॉलेज खुला होता यह कॉलेज आखिर बंद ही क्यों होता है? सच तो यह है कि कॉलेज का खुलना या बंद होना मेरे बस में नहीं। बस यही सोचकर मैं ठहरने की कोशिश करती हूँ। कहाँ ठहर पाती हूँ? दिल है कि धड़कता ही चला जाता है। साँस है कि रुकने का नाम ही नहीं लेती। सोच है कि सोचती ही रहती है। खुशी तो महज यह महसूस कर होती है कि इन दिनों एक नाम सोच में घुला हुआ है। इतना तो तुम भी जानते हो कि वह नाम तुम्हारा ही है। याद है? तुमने पूछा था कि चिराग का मतलब जानती हो?

मैंने कहा – "हाँ, जो खुद जलता रहता है, मगर दूसरों को रोशनी देता है।"

तुमने कहा था– "नहीं, यह सोचकर मैंने अपना नाम चिराग नहीं रखा था। दरअसल, जब चिराग जल रहा हो या बुझा हो, दोनों स्थिति में उसे चिराग ही कहा जाता है।" मैं पूछती हूँ – "महज चिराग कहने से उसके जले और बुझे होने का पता कैसे चलता है?"

तुम कहते हो– "यह बात सिर्फ मेरी नहीं है। यह बात सारी दुनिया पर लागू होती है। लोग होते कुछ और हैं और उन्हें समझा कुछ और जाता है।"

हमारी यह बहस, कितनी भी दूरी क्यों न तय कर ले, यात्रा खत्म नहीं होती है। तुम्हें गुस्सा आने लगता है। मैं भी कुछ नाराज–सी हो जाती हूँ। हमारे पास मान जाने और मनाने का एक ही उपाय है। या तो मैं तुमसे कहती हूँ, अपनी आँखें बंद करो। जब तुम अपनी आँखें बंद कर लेते हो, तो मैं तुम्हें चूम लेती हूँ। या फिर तुम मेरी आँखों की तारीफ करते हो। कोई शेर कहते हो। गजल सुनाते हो।

मैं अक्सर पूछती हूँ – "आखिर क्या है इन आँखों में?"

तुम हंसते हुए कहते हो – "तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है?"

मैं कहती हूँ– "और भी गम हैं जमाने में मुहब्बत के सिवा।"

4. तुम कहते हो, कौन कहता है कि हम एक–दूसरे से प्रेम करते हैं? क्या यह संभव है कि कोई किसी से प्रेम करे? हाँ, यह हो सकता है कि हम प्रेम को उपलब्ध हो जाएं। तुम कहते ही चले जाते हो... तुमने देखा है कभी? किसी बूँद को समंदर में गिरते हुए। जब बूँद समंदर में गिरती है, तो वह मिट जाती है। तब यह कहना कि बूँद ने समंदर को पा लिया, गलत होगा। हाँ, यह कहना उचित होगा कि समंदर ने बूँद को पूरी तरह पा लिया। तुम यह कह सकती हो कि बूँद समंदर को उपलब्ध हो गई।

मैं कहती हूँ – "बंद करो अपनी फिलॉसफी।"

तुम कहते हो – "यह फिलॉसफी नहीं, जिंदगी की सच्चाई है।"

मैं पूछती हूँ – "तुम्हारी जिंदगी की फिलॉसफी क्या है?"

तुम कहते हो – "कुछ भी नहीं... जिनके पास जिंदगी की फिलॉसफी होती

है, उनके पास जिंदगी नहीं होती। मेरे पास जिंदगी है, जिंदगी की फिलॉसफी नहीं।"

मैं पूछती हूँ – "कहाँ है तुम्हारी जिंदगी?"

तुम कहते हो – "क्या तुम्हारे घर में आईना नहीं है?"

मेरे होंठों पर हंसी की हल्की–सी एक बारीक लकीर खिंच जाती है। मैं हंसने लगती हूँ। मैं जानती हूँ, तुम कहना चाहते हो कि मैं ही तुम्हारी जिंदगी हूँ। लेकिन कभी नहीं कहा तुमने। मालूम नहीं, कह भी पाओगे या नहीं। मेरी खातिर हजारों कविताएं लिखी होंगी तुमने। हजारों दफा जाहिर किया होगा अपना प्रेम। मगर तुम कह न सके अब तक कि तुम मुझसे प्यार करते हो।

तुम कहते हो – "जो बात हम दोनों के अहसास में शामिल है, उसे कहना जरूरी है क्या?"

मैं कहती हूँ – "हाँ, जरूरी है। बस एक बार। मैं सुनना चाहती हूँ।"

यहीं आकर हम दोनों चुप हो जाते हैं। आँखें जाहिर होने लगती हैं। साँसें उलझने लगती हैं। धड़कनें रुकने लगती हैं। हाथ एक–दूसरे की तरफ बढ़ने लगते हैं। हम दोनों को एक साथ किसी 'स्पर्श' का अनुभव होता है। हमारे होंठ एक–दूसरे के नजदीक आने लगते हैं। कोई भी समय क्यों न हो, शाम के उतरने का एहसास होने लगता है। उजाला सिमटने लगता है। अंधेरे की आहट सुनाई पड़ने लगती है। होंठ बोलने लगते हैं। हालांकि आवाज को तुम नहीं समझ पाते हो। मैं भी कहाँ जानती हूँ इस आवाज को? हाँ, इतना जरूर है कि हम रंग जाते हैं, एक ही रंग में। पता नहीं, कब और कितना समय बीत जाता है। मुझे तो लगता है कि समय ठहर जाता है।

तुम कहते हो – "समय है ही नहीं। सिर्फ प्रेम की घड़ी में 'समय–शून्यता' और 'अहंकार–शून्यता' का बोध होता है।"

"समय–शून्यता? अहंकार–शून्यता? तो क्या समय मर जाता है? तो क्या अहंकार खत्म हो जाता है?"

"नहीं!" तुम कहते हो और कहते ही चले जाते हो।

मैं सुनती ही चली जाती हूँ। तुम्हारी आँखें दूर आसमान में 'पिन–अप' हो जाती हैं। तुम ठहर जाते हो। सिर्फ होंठ हिलते रहते हैं। तुम्हारे होंठों से निकले शब्द जैसे 'शून्य' से आते हैं। तुम फैलने लगते हो। मैं सिमटने लगती हूँ। तुम मुझ पर छाने लगते हो। मैं अपना केंद्र ढूँढ़ती हूँ और किसी अनदेखे–अनजाने बिंदु पर आकर ठहरने लगती हूँ। मेरे मन की सतह पर उगते विचार खत्म होने लगते हैं। जब भी तुम इस तरह बोलते हो, मुझे बहुत अच्छा लगता है। तुम्हें ओढ़ने का जी करता है। तुम कहते हो कि तुमसे ज्यादा आकर्षण मुझमें है। ऐसा नहीं है। तुम्हारे या मेरे कहने मात्र से सच, झूठ में नहीं बदल जाता। सच तो यह है कि तुम ज्यादा आकर्षक हो। हमारे बीच अक्सर इस बात पर बहस होती है। हम अक्सर यहीं आकर रुक जाते हैं कि हम दोनों आकर्षक हैं।

5. "सुनो, कभी तुमने सोचा है कि हमारी मुलाकात क्यों हुई?" तुम पूछते हो।

मैं इशारों में कहती हूँ–"नहीं मालूम।"

इंकार तो तुम भी करते हो जानने से, मगर मुझे ऐसा क्यों लगता है कि तुम्हें सबकुछ मालूम है। खैर, जाने भी दो। याद है तुम्हें? तुमने एक बार पूछा था–

"बताओ, तुमने कभी खुद को आईने में देखा है? क्या–क्या नजर आता है?"

मेरा जवाब था–"कुछ खास नहीं।"

मैंने तुमसे एक बार पूछा भी था कि आखिर ऐसा क्या है मुझमें, जो तुम मुझे इतना पसंद करते हो? तुम मुझसे इतना प्यार करते हो? मैं भी दूसरों की तरह एक आम लड़की हूँ। तुमने मुंह फेर लिया था। याद है न! तुमने कुछ भी तो नहीं कहा था।

"तुम ऐसे क्यों हो?" मैं पूछती हूँ।

आज तक तुमने मेरे इस सवाल का जवाब नहीं दिया। तुम कहते हो कि सवालों को जीओ। एक दिन जवाब अपने आप मिल जाएगा।

"एक बात और कहूँ... दुनिया में उतने जवाब नहीं हैं, जितने सवाल हैं।"

कभी–कभी तुम मेरी समझ से बाहर हो जाते हो। कभी–कभी लगता है कि तुम इस दुनिया के हो ही नहीं। मैं फिर पूछती हूँ कि ऐसा क्यों?

तुम कहते हो– "जब सवाल अपने पूरे वजूद के साथ खड़ा हो जाए, तो उसका जवाब एक चुप्पी के सिवा कुछ भी नहीं। एक लम्बी और गहरी चुप्पी।"

6. याद है, एक दिन मैं बाल खोल कर कॉलेज आई थी। उस दिन तुमने यूँ ही मजाक में पूछा था –

"कौन–सा शैम्पू इस्तेमाल करती हो?"

मैंने तुम्हें चिढ़ाने की खातिर, तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं दिया था। तुम रूठ गए थे। पूरे दो घंटे तक तुमने मुझसे बात नहीं की थी।

फिर तुमने कहा – "कुछ लोग खुले बालों में अच्छे लगते हैं।"

तुम यूँ भी कह सकते थे कि मैं खुले बालों में अच्छी लगती हूँ। मगर तुमने नहीं कहा। मैं जानती हूँ तुम्हारा अंदाज। 'कुछ लोग' कह कर तुम मुझे ही पुकारते हो। तुम आज मेरे पास नहीं हो। पता है, आज भी मेरे बाल खुले हैं। आज भी मैंने अपने बाल शैम्पू किए हैं। आज भी मैं कुछ–कुछ उसी दिन की तरह लग रही हूँ। सुनो, आज जब मैं बाथरूम से नहा कर निकली और आईने के सामने खड़ी हुई, तो एक पल के लिए लगा कि तुम सामने हो। शर्म के मारे मेरी नजर आईने में जम गई। वो नजर अब तक आईने में बंद है। कभी माचिस की डिबिया में भर के 'नजर' लाऊँगी। तुम्हें दिखाऊँगी। हाँ, माचिस से याद आया। तुम अब भी सिगरेट पीते हो क्या? मैंने जब पहली बार तुम्हें सिगरेट पीने से मना किया था, तो तुमने क्या कहा था? याद है? तुमने कहा था कि यह मेरी निजी आजादी है।

मैंने पूछा – "क्या मिलता है सिगरेट पीने से?"

तुमने कहा – "नहीं पीने से क्या मिलता है? अगर सिगरेट नहीं पीने से कुछ मिलता है, तो पीने से भी कुछ मिलता है। कभी पीकर देखो।"

उस समय मैंने सिगरेट पीने से इंकार कर दिया था। मगर घर आते हुए रास्ते में मैंने सिगरेट खरीद कर पी थी। एक ही कश लिया था कि खांसी होने लगी। तुम्हारी तरह धुएं का छल्ला बनाने का मेरा शौक अधूरा रह गया।

तुम कहते हो– "आदत कोई भी क्यों न हो, मर्जी तुम्हारी होनी चाहिए। अगर मालिक तुम हो, तो सब ठीक है। अगर किसी और की मर्जी से या आदत से मजबूर होके कुछ भी करो, तो वह ठीक नहीं। तुम अगर भगवान की पूजा भी आदत से मजबूर होके करती हो, डेली रूटीन की तरह करती हो, तो सिगरेट पीने और पूजा करने में कोई फर्क नहीं है। दोनों लत है।"

मैं सोचती हूँ – "क्या कभी ऐसा भी होगा कि मैं तुम्हें तर्कों से हरा पाऊंगी।"

फिर सोचती हूँ – "हरा कर ही क्या होगा? सबसे बेहतर है चीजों को समझना। जिस चीज को हम समझने लगते हैं, उससे मुक्त होने लगते हैं।"

जीत की यह डायरी जाने कितनी प्रेम कहानियाँ कह देती हैं, जो कॉलेज से शुरू होकर कॉलेज में ही दफ्न हो जाती हैं। खैर, मैं तो अपने बारे में सोच रहा हूँ... क्या मैं जीत से मुक्त हो चुका हूँ? क्या मैं जीत को पूरी तरह समझ चुका हूँ? शायद हाँ, शायद नहीं! लेकिन इतना तो तय है कि फूल से टूटी हुई पंखुड़ी अब नहीं जुड़ सकती।

◆

सरोकार-संस्कार

दफन होने का अधिकार !

रेखा श्रीवास्तव
सम्पर्क सूत्रः
कानपुर
फोनः 9307043451
Email:rekhasriva@gmail.com

हमारे देश के संविधान में सभी को कुछ मौलिक अधिकार मिले हैं, जिनमें जीवन में होने वाली सभी जरूरतों को शामिल किया गया है। कमोबेश सभी किसी न किसी तरह से जी भी रहे हैं. घर नहीं तो सीमेंट के बड़े बड़े पाइप में घर बसा कर बरसात और सर्दी से बचने के लिए जी रहे हैं। मलिन बस्तियों में बांस और पालीथीन के सहारे टेंट की तरह बनाये घरों में अपने परिवार के साथ जीवन गुजार रहे हैं। लेकिन वे जी रहे हैं चाहे एक छोटे से कमरे में २० लोग जी रहे हों। जी रहे हैं घर में जगह नहीं है तो पार्क में, फुटपाथ पर, पेड़ों के नीचे रात गुजार ही लेते हैं और दिन में तो कोई मुकम्मल जगह की जरूरत ही नहीं है. इंसान कहीं भी काम पर जाकर या अपने लिए रोजगार खोजने या करने के लिए कहीं न कहीं तो चला ही जाता है। जीने के लिए समस्या नहीं है- हम जिस समस्या की बात करने जा रहे हैं वह मेरी दृष्टि में तो आज तक नहीं गुजरी है क्योंकि मरने के बाद भी इंसान को दो गज जमीन की जरूरत को हम सदियों से स्वीकार करते चले आ रहे हैं। जिन्दगी में उसे रहने की अपनी जमीन न मिले लेकिन मरने पर तो उसके लिए वे लोग उसे जमीन मुहैय्या कराते हैं वह भी तब जब कि वह उसकी मांग नहीं कर रहा होता है, लेकिन ये हमारा नैतिक दायित्व होता है कि उस दिवंगत को दफन होने की जगह दी जाये

अगर हम ये कहें कि अब हमारे देश में ही बल्कि देश ही क्यों कहें ? उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री के गृह जनपद में ऐसे जगह है जहाँ पर लोगों को दफन होने की जगह नहीं है। ये जगह है इटावा जिले में चकरनगर के तकिया मोहल्ला. जहाँ पर दो परिवारों के रहने से शुरुआत हुई थी और धीरे धीरे आबादी बढती गयी और अब उन्हें अपने परिवार वालों को दफनाने के लिए जगह नहीं मिल रही है. हकीकत ये है कि यहाँ पर हर घर में एक कब्र बनी हुई है। और कब्र के होने पर उसके साथ कुछ धार्मिक आस्थाएं भी जुडी होती हैं. उसको कोई लांघें नहीं और उसके कुछ बनाया भी नहीं जाना चाहिए. यहाँ पर लोग घर के कमरों में, गुसलखाने में, दरवाजे के पास हर जगह कब्र बनाये हुए हैं. कब्र के बगल में बैठ कर खाना बना रहे होते हैं, सो रहे होते हैं। बच्चों की कब्र दरवाजे के पास बना देते हैं क्योंकि बच्चों के लिए जगह कम लगती है। यहाँ घर वालों को घर में ही दफन करने के लिए मजबूर लोग कहाँ जाएँ? और कैसे जियें ? क्या सरकार मीलों लम्बे जंगल में से कुछ जगह भी इन दिवंगत लोगों के दफन होने के लिए देने की व्यवस्था नहीं कर सकती है? बड़े बड़े स्टेडियम, पार्क और गाँव को राजधानी बना देने वाले शासक अपने ही जनपद में लोगों के दफन होने के अधिकार को बहाल नहीं कर सकते हैं। अभी धरती इतनी छोटी नहीं है कि मरने के बाद इंसान के लिए दफन होने की जगह भी न मिल सके वे भी इंसान ही है अपने ही घर में दफन करके उनके साथ ही जीने के लिए लोग मजबूर हैं। बड़ी बड़ी बातें और बड़े बड़े वादे करने वाले ये सरकार के नुमाइंदे आम आदमी की बुनियादी जरूरतों को समझने के लिए तैयार ही कहाँ है? यहाँ पर कोई एकडों जमीन पर बने बंगले को सिर्फ अपने परिवार के रहने के लिए छोटा बता कर बड़े की मांग कर रहा है और कहीं वे अपने घर के सदस्य को मरने के बाद भी कहीं दो गज जमीन मुहैय्या नहीं करवा पा रहे हैं।

हम लोकतंत्र में जी रहे हैं लेकिन जीने के अधिकार को खोने के बाद अब मरने के बाद दफन होने का हक भी खो रहे हैं।

लघुकथा

नाम में क्या रखा है...

-राजीव रंजन प्रसाद

कागभुशुण्डि जी, कोकिला शर्मा से बतिया रहे थे।

‘बताईये कलकता को कोलकाता कर दिया, मद्रास को चेन्नई कर दिया, बम्बई को मुम्बई कर दिया, बेंगलोर को बेंगलुरु कर दिया लेकिन कभी डलहौजी या बख्तियारपुर के नाम भी बदलेंगे ?’ काक ने कहा।

‘ये नाम क्यों बदलने चाहिये ?’ मृदुभाषिणी कोकिला ने पूछा।

‘जिस कारण और सभी नाम बदले और उन्हें पुराना नाम मिला। जिन शहरों की मैं बात कर रहा हूँ उनके नाम तो अपने समय के सबसे बडे दैत्यों पर आज भी पड़े हुए हैं, बदलना चाहिये।’ काक ने पूरी करकशता के साथ कहा।

‘नेतागिरि करना चाहते हैं क्या ?’ कोकिला बोली।

‘नहीं तो’

‘तो भारत की संस्कृति का काहे चूना उखाड़ रहे हैं ? आजकल केवल वही बदलता है जिसके बदलने या न बदलने से किसी का कुछ नहीं बदलता है।’

‘बात तो ठीक है वो कहते हैं न कि नाम में क्या रखा है?’

‘नाम में काहे नहीं रखा ? कागभुशुण्डि से आपको सब कौवा बुलाने लगें तब...?’ कोकिला मुस्कुराई।

‘आप भी ना.......’ काक खिसिया गये थे।

बर्फ में फंसी मछली

दयानंद पांडेय
संपर्क सूत्रः
5/7, डालीबाग आफिसर्स कालोनी,
लखनऊ–226001
फोनः 0522–2207728, 09335233424,
ईमेलः
dayanand.pandey@yahoo.com

कहानी

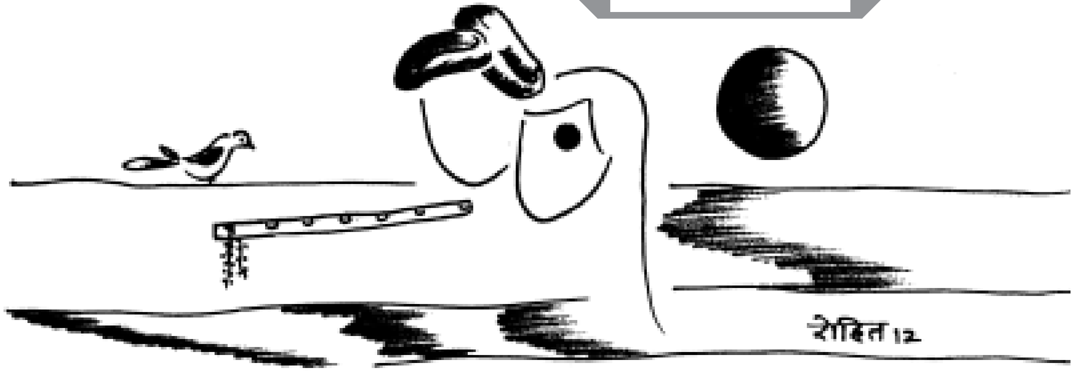

यह उस के लिए कोई नया अनुभव नहीं था। पर अनुभव तो था ही। प्रेम उसने कई बार किया था। जो लोग कहते हैं कि प्रेम सिर्फ एक बार होता है, उसे उन लोगों पर तरस आता है। उसका मानना है कि जैसे किसी का एक बार खाना खाने से पेट नहीं भर सकता, वैसे ही किसी की जिंदगी सिर्फ एक प्रेम से नहीं चल सकती, हां यह जरूर हो सकता है कि किसी एक प्रेम की तासीर ज्यादा हो, तो किसी और प्रेम की तासीर कम।

उसे याद है कि उस का पहला प्रेम रिश्ते की एक लड़की से हुआ। कायदे से वह रिश्ते में भी नहीं थी। बल्कि रिश्तेदार के गांव से थी। वह पहले भी उससे मिला था, पर पहली मुलाकात में उसे उससे प्यार नहीं हुआ था। एक बार तो वे दिन–रात शहर में साथ रहे, तब भी प्यार नहीं हुआ। एक शादी में जब वह घाघरा–शमीज पहन कर आई तो उस के दिल की घंटियां बज गईं। वह अचानक धक से रह गया। 'दिल तो लई गवा, अब का होगा रे!' फिल्मी गाना उस की जुबान पर खट से आ गया। पर अब वह कुछ कर नहीं सकता था सिवाय प्यार के। लेकिन तब वह उस से कुछ कह भी नहीं पाया। सिर्फ प्यार करता रहा। एकतरफा। बिना कुछ बोले। बस देखता रहा। उस बार उस रिश्तेदार के यहां से उस का लौटने का मन नहीं हुआ। पर लौटना तो था ही। वह फिर–फिर गया उस रिश्तेदारी में। सब कोई मिलता पर वही नहीं मिलती। वह जाता। खेतों से पूछता, मेड़ों से पूछता, फूल–पत्तियों और पेड़ों से पूछता, उस लड़की के बारे में। बिन बोले पूछता। टीनएज का प्यार था यह। तीन चार साल चला जिसमें बमुश्किल वह दो बार मिली। मिली क्या दिखी। बस। फिर उस का विवाह हो गया। लेकिन वह उस को भूल नहीं पाया। आज भी नहीं भूला।

लोग कहते हैं कि इश्क और मुश्क छुपाए नहीं छुपता। पर सच है कि उस का यह प्यार किसी ने नहीं जाना। बहुत बाद में उस ने जब खुद पत्नी को बताया तो पत्नी ने जाना। फिर मां ने। और मां को भी शायद पत्नी ने ही बताया।

फिर कॉलेज के दिनों में उसे दूसरा प्यार हुआ। दो लड़कियों से एक साथ। फिर अचानक उसने पाया कि एक और लड़की उसे अच्छी लगने लगी है। लेकिन इन तीनों में से एक लड़की के प्यार में वह पागल हुआ। इसी बीच उसे मुहल्ले की भी एक लड़की अच्छी लगने लगी। पर प्यार वह कालेज वाली उस लड़की से ही करता रहा। दीवानगी की हद तक। उसे चिट्ठियां भी लिखता। उस के आने–जाने के रास्तों पर वह घंटों खड़ा रहता। कभी वह दिखती, कभी नहीं दिखती। यह प्यार भी उस का तीन–चार साल चला। पर यह भी एकतरफा था। जाने वह कहां गई, और वह कहां! पर यह प्यार सारे शहर ने जाना।

इस के बाद कुछ और फुटकर प्यार किए उसने। कभी दफ्तर में, कभी राह में। कभी पड़ोस में, तो कभी कहीं भी। ऐसे फुटकर प्यारों की उसे ठीक–ठीक याद भी नहीं है। वैसे भी उसे किसी प्यार में कभी कोई रिस्पांस मिला भी नहीं ।

हां, जब वह ठीक–ठाक नौकरी में आ गया तो और औरतों से प्रेम किया। उन औरतों का उसे रिस्पांस भी मिला और उन की देह भी, पर बाद में जब उसने पीछे मुड़ कर देखा तो पाया कि न तो वह प्यार था और न ही कोई खिंचाव था। यह तो बस आदान–प्रदान था। जस्ट गिव एंड टेक!

लेकिन उस के मन में प्रेम कहीं न कहीं अंकुआता जरूर था। कभी कोई अच्छा चेहरा देखता तो रीझ जाता। सोचता कि प्यार करे, पर व्यस्तता में प्यार का समय ही नहीं मिलता। बात आई–गई हो जाती। लेकिन प्रेम की तलाश उस की खत्म नहीं होती। प्यार तलाशते–तलाशते धीरे–धीरे वह अधेड़ हो गया।

मोबाइल और इंटरनेट का जमाना आ गया। उस ने मोबाइल पर भी प्यार तलाशा। यहां रिस्पांस मिला और खूब मिला। लगा कि जिंदगी में प्यार तो बहुत है। तो क्या यह ग्लोबलाइजेशन का असर था? या कुछ और। समझना मुश्किल था। खैर, मोबाइल पर उसने चैटिंग शुरू कर दी। अजब अफरा–तफरी थी। लोग चैटिंग में जो एक दूसरे को जानते तक न थे, उस के मुहब्बत का इजहार कर रहे थे। अदभुत था यह छलावा भी। लोग चैटिंग में विश्वसनीय दोस्त ढूंढते। जीवन साथी

ढूंढते। क्या औरत क्या मर्द! क्या लड़के क्या लड़कियां! अजब खोखलापन था। या फिर यह लोगों का अकेलापन था?

समझना कुछ नहीं, काफी कठिन था। हैरान था वह लोगों के इस खोखलेपन पर। इस अकेलेपन पर।

क्या प्यार इतनी आसान और सस्ती चीज थी? पर वह देख रहा था कि लड़कियां बेधड़क हो रही थीं। वह कोई भी बात करने को तैयार थीं। वह सीधे अपना नंबर देती और कहतीं कि बात करो। वह मिलने को भी तैयार हो जातीं। और दो दिन फोन न करे तो मिस कॉल पर मिस कॉल करना शुरू कर देतीं। हॉस्टलों में रहने वाली लड़कियां रात–रात भर चैट करतीं। वह चुप भी रहता तो उकसाती रहतीं और सीधे–सीधे चैटिंग में ही संभोगरत हो जातीं। वह पहले इसे रोमेंटिक चैट कहतीं, फिर सैक्स चैट कहतीं और कपड़े उतार कर फेक चैट पर बुला लेतीं।

तरह–तरह की मैथुन मुद्राएं पूछतीं और बतातीं। अजब घालमेल था। कुछ लड़कियां मिलने के लिए भी बुलातीं। वह जब बताता कि वह तो अधेड़ है तो कुछ लड़कियां कतरातीं और पूछतीं कि पहले क्यों नहीं बताया? कुछ कहतीं कि इससे क्या फर्क पड़ता है? पैसा तो है न तुम्हारे पास? वह अफना जाता। एक लड़की नहीं मानी। वह मिलने चली आई। वह समझाता रहा उम्र का गैप पर वह थी कि लिपटी जा रही थी। चिपटने को तैयार थी। कहने लगी, 'चैटिंग पर तो इतनी हॉट–हॉट बातें करते हो और यहां कूल हो गए हो? कम ऑन यार!'

वह महंगे–महंगे रेस्टोरेंटों में बैठने की आदी थी। महंगे गिफ्ट्स की डिमांड भी करती। वह सेक्सी और सतही बातें लगातार करती रहती। वह किसी कंप्टीशन की तैयारी कर रही थी। एक प्राइवेट हॉस्टल में रहती थी। खर्चे उस के बढ़ गए थे जो वह चैटिंग फ्रेंडों से पूरा कर रही थी।

हां, उस का गुजारा सिर्फ एक फ्रेंड से नहीं था। बमुश्किल उसने उससे पिंड छुड़ाया। अभी इस से पिंड छुड़ाया ही था कि मुंबई की एक लड़की चैटिंग में फंस गई। वह बार–बार मुंबई बुलाती। बताती कि अकेली हूं आ जाओ। वह खुद फोन करती और धकाधक किस पर किस करती हुई कहती, 'कुछ हॉट–हॉट, कुछ सेक्सी–सेक्सी बातें करो ना।'

वह तो यही चाहता ही था। खूब बातें होतीं। एक दिन उस ने पूछा कि, 'तुम सर्फिंग नहीं करते?'

'मतलब?'

'नेट पर सर्फिंग।'

'नहीं।'

'क्यों?'

'बस ऐसे ही।' वह टालता हुआ बोला।

'अच्छा तुम्हारी आई.डी. क्या है?'

'मतलब?'

'ओह, तुम बिलकुल बुद्धु हो।' फिर उस ने बताया कि, 'आई.डी. मतलब इंटरनेट एड्रेस।'

'अच्छा–अच्छा।'

'तुमने कभी सर्फिंग नहीं की?'

'मेरे पास आई.डी. ही नहीं है।'

'फुल्ली लल्लू हो।' वह भड़की और बोली, 'मेरी आई.डी. नोट करो। और आगे से इसी पर बात करना।'

'क्या बेवकूफी की बात करती हो?' वह बोला, 'मुझे कंप्यूटर इंटरनेट कुछ नहीं आता।'

'तो बुद्धु, पहले यह सीखो, फिर मुझ से बात करो।'

'कहां से सीखूं?'

'तुम्हारे शहर में साइबर कैफे नहीं है? या कंप्यूटर इंस्टीट्यूट नहीं हैं?'

'हैं तो!'

'तो जाओ सीखो।' यह कहकर उस ने फोन काट दिया।

अब वह कंप्यूटर–इंटरनेट सीखने लगा।

जल्दी ही वह सीख भी गया। अब यहां अंग्रेजी उस की समस्या बन गई। इस का भी निदान उस ने जल्दी ढूंढा। रोमन हिंदी का उस ने सहारा लिया। इतने से भी बात नहीं बनी तो रैपिडेक्स इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स की किताब लाया। गाड़ी चल पड़ी।

वह सुनता और पढ़ता था कि इंटरनेट पर एक से एक सूचनाएं और जानकारियां हैं। और यहां वह देख रहा था समूचा इंटरनेट सैक्स को समर्पित था। एक अजीब और बीहड़ दुनिया से वह परिचित हो रहा था। लोग डालर खर्च कर–कर के औरतों से चौटिंग कर रहे थे। बी.बी.सी. की एक रिपोर्ट में उस ने पढ़ा कि इंटरनेट लोगों को बेवफा बना रहा है। पर यहां तो लग रहा था जैसे समूची दुनिया ही बेवफा हो चली थी। बहुतेरी चैटिंग साइटें औरतों की फोटुएं दिखा–दिखा, फ्री रजिस्टर्ड का विज्ञापन दिखा लुभातीं, और अंततः रजिस्ट्रेशन होते न होते क्रेडिट कार्ड के मार्फत डॉलर मांगने लगतीं और लोग डॉलर पर डॉलर खर्च कर रहे थे, औरतों से बतियाने के लिए। इनमें रंडियों की भी संख्या अच्छी–खासी थी। जो सीधे अपना रेट बताती हुई हाजिर थीं। गरज यह कि औरत एक प्रोडक्ट में तबदील हो चली थी। ऐसे बिक रही थी, जैसे–तेल, साबुन। हद थी यह भी! लग रहा था जैसे समूची दुनिया सैक्स में समाई हुई थी। जैसे सैक्स के सिवाय कोई और काम ही न हो लोगों के पास। हर कोई सैक्स में भुखाया और अघाया दिखता। रोटी की भूख से ज्यादा सैक्स की भूख थी। तमाम औरतों की अपनी वेबसाइटें थीं और वेबकैम पर वह खुद ही लाइव रहतीं। कपड़े उतारती रहतीं, बतियाती रहतीं। कुछ बात उस की समझ में आतीं और ज्यादातर नहीं आतीं। सैक्स की एक से एक टर्मानोलॉजी कि वात्स्यायन मुनि भी शर्मा जाएं। एक से एक मैथुनी मुद्राएं कि ब्लू फिल्में भी पानी मांगें। एक से एक अतृप्त आत्माएं, कामरस में इस कदर पागल कि इंद्र भी देख कर सनक जाएं।

ग्लोबलाइजेशन की अद्भुत पराकाष्ठा थी यह। रशियन, अमरीकन, अफ्रीकन, इंडियन, नाइजीरियन वगौरह–वगौरह सभी एक साथ हाजिश्र। कोई नस्ल भेद नहीं, कोई भाषा भेद नहीं, कोई उम्र का परहेज नहीं। जो जहां चाहे लग जाए और अपनी अतृप्त वासनाओं–कामनाओं की धज्जियां उड़ा ले। नंगई की यह हद थी। ग्लोबलाइजेशन की यह हद थी। गोया सैक्स–सैक्स न हो, बच्चों का खेल–तमाशा हो, जो जहां जब चाहे खेले–सो ले। प्यार, प्यार न हो कोई तमाशा हो। बाजा–गाजा हो! सैक्स–सैक्स की इसी भीड़ में वह रशियन औरत भी मिली। प्यार से भरपूर और भावनाओं से लबरेज। सैक्स नहीं, उस की प्राथमिकता में प्यार था। प्यार में समाई वह लंबी–लंबी चिट्ठियां लिखती। साथ में अपनी फोटो भी अटैच करती रहतीं। किस्म–किस्म की। बर्फीली घाटियों में खड़ी, बेंच पर बैठी, मासूमियत की नदी बहाती, प्यार में वह ऐसे खोई दिखती कि लगता जैसे इस ग्लोबलाइज होती दुनिया में वह अनूठी है। अप्रतिम है। औचक सौंदर्य में नहाई। उस की चिट्ठियां भी, चिट्ठियां न हो कर लगता कि कोई कविता हो। कोई पोर्ट्रेट हो। उस की निर्दोष और भावुक बातें उसे प्यार के ऐसे गहरे सागर में खींच ले जातीं कि उन में से उस का निकल पाना बेहद–बेहद मुश्किल होता जा रहा था।

अब वह चिट्ठियों में कई बार बहुत टफ अंगरेजी लिखने लगी। तो उस ने लिखा कि मेरी अंग्रेजी बड़ी कमजोर है। इतनी कि तुम्हारी चिट्ठियों का जवाब देने के लिए अच्छी अंग्रेजी जानने वाले किसी दोस्त की मदद लेनी पड़ती है। जवाब में उस ने बताया कि मेरा भी हाथ अंग्रेजी में बहुत तंग है। और कि उसे भी अंग्रेजी में लिखने के लिए अंग्रेजी जानने वाले की मदद लेनी पड़ती है। फिर उस ने प्रस्ताव रखा क्यों न तुम रशियन सीखो और मैं

हिंदी। उस के प्रस्ताव को उस ने स्वीकार कर लिया और अपने शहर की यूनिवर्सिटी में जा कर पता किया तो पता चला कि रशियन डिप्लोमा का कोर्स वहां पर है। कुछ किताबें वगैरह लाया वह। उधर उस ने वहां पर इंडियन ऐंबेसी से संपर्क कर हिंदी सीखने के लिए लिट्रेचर मंगा लिए और हिंदी सीखने लगी। उस ने यह बताया भी कि वह हिंदी बड़ी तेजी से सीख रही है। जान कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उस ने बताया कि हिंदी में एक फिल्म है 'मेरा नाम जोकर'। जिस में एक हीरोइन है जो सर्कस में काम करती है और इंडियन हीरो से प्यार करती है। अपने प्यार को परवान चढ़ाने के लिए हिंदी सीखती है। फिल्म का हीरो भी रशियन सीखता है। और जब दोनों डिक्शनरी ले कर बात करते हैं तो अजब–अजब फ्रेम सामने आते हैं। लेकिन अंततः वह रशियन हीरोइन इंडियन हीरो को छोड़ कर चली जाती है। उस का दिल तोड़ देती है। कहीं तुम भी तो हमें नहीं छोड़ दोगी। मेरा दिल तो नहीं तोड़ दोगी?

उस ने जवाब में लिखा कि इस फिल्म को मैं देखने की कोशिश करूंगी। और हां, तुम मेरा दिल भले तोड़ दो, मैं नहीं तोड़ने वाली। उस ने हिंदी में लिखा था, 'मैं अपनी बात की बहुत पक्की हूं।' फिर उस ने बताया कि इस फिल्म के हीरो राजकपूर हैं जो रूस में बहुत पॉपुलर रहे हैं, हो सकता है उस का रशियन वर्जन भी वहां मिल जाए। उसे जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हफ्ते भर के भीतर ही उस ने 'मेरा नाम जोकर' की हिंदी और रशियन वर्जन जुगाड़ कर देख ली और बड़ी तफसील से चिट्ठी लिखी। फिल्म के एक–एक फ्रेम के बारे में कई–कई दिन डिसकस करती रही। वह अब हिंदी भी बहुत तेजी से सीख रही थी। एक दिन वह बताने लगी कि मेरा नाम जोकर के हीरो की मां की तरह ही मेरी मां भी है। वह भी उतनी ही मुझे चाहती है, जितनी कि उस हीरो की मां। हां, मेरी मां मुझ से भी ज्यादा भावुक है और कि वह भी हिंदी सीख रही है।

एक चिट्ठी में उस ने लिखा कि आज उस ने अपनी मां से उस का जिक्र किया और कि मां ने उसे ब्लेसिंग दी है।

एक और चिट्ठी में उस ने लिखा कि आज उस ने अपनी एक फ्रेंड से उस की चर्चा की। और कि फ्रेंड बोली कि तुम बड़ी खुशकिस्मत हो कि तुम को ऐसा प्यार मिला है। वह उस को अपना ऐंजिल भी बताने लगी। ऐंजिल मतलब देवदूत और इस मैसेज को उस ने रिकॉर्ड कर के अटैचमेंट के साथ भेजा। उस का निर्दोष और प्यार में नहाया चेहरा उसे आज भी नहीं भूलता।

उस की बातों में समाया टटकापन उस के मन की अलगनी पर आज भी कहीं टंगा हुआ है।

उस के बात करने का अंदाज, उस की चिट्ठियों की तफसील जैसे उसे किसी परीलोक में खींच ले जाते।

एक चिट्ठी में उस ने लिखा कि अब वह उस के बिना रह नहीं सकती। और कि वह उस के पास उड़ कर इंडिया आ जाना चाहती है। चिट्ठी पढ़ कर उसे यकीन नहीं हुआ।

लेकिन उस की चिट्ठी का भाव लगभग वही था कि 'पंख होते तो उड़ आती रे, तुझे दिल का दाग दिखलाती रे!' चिट्ठी पढ़ कर वह आकुल–व्याकुल हो गया और लगभग उसी भाव में उसे जवाब दिया। अगली चिट्ठी में उसने उसे अपना भावी पति घोषित कर दिया। तो वह अचकचाया और लिखा कि मैं तो शादीशुदा हूँ और कि हमारे देश में दूसरी शादी करना कानूनन अपराध है और सामाजिक भी। और मैं खुद भी अपनी बीवी–बच्चों से इतना प्यार करता हूं कि उन्हें छोड़ नहीं सकता। उस का जवाब आया तो फिर प्यार क्यों किया? प्यार भरी बातें क्यों की? फिर लिखा कि उस ने इंडिया आने की पूरी तैयारी कर ली है। और कि वह कैसे उसे एयरपोर्ट पर फूल लिए रिसीव करेगा, इस कल्पना का भी बिलकुल पोएटिक अंदाज में पूरा ब्यौरा उस ने परोस दिया था। यह सब पढ़ कर वह घबराया। और पलट कर लिखा कि वह क्यों परेशान होती है? और कि यहां गरमी भी बहुत है, जिसे वह बर्दाश्त नहीं कर पाएगी। सो वह खुद ही रूस उस से मिलने आ जाएगा। उस ने जवाब में लिखा कि उस के रूस आने से उसे मुश्किल होगी। इसलिए वह न ही आए तो अच्छा।

'फिर हमारे प्यार का क्या होगा?' उस ने चैटिंग में पूछा।

'जो भी होगा, इंडिया में होगा। रूस में नहीं।' लंबी–लंबी बातें करने वाली ने संक्षिप्त–सा जवाब दिया।

'अच्छा चलो, कुछ दिन बाद सोच कर बताते हैं।'

'कुछ दिन क्या, कुछ पल भी अब मैं नहीं रह सकती तुम्हारे बिना।'

'ऐसा भी क्या है?'

'मैंने पासपोर्ट भी बनवा लिया है और ऐंबेसी में जा कर वीजा के लिए भी बात कर ली है।'

'आर यू रियली सीरियस?'

'बिल्कुल।'

'ओ. के. माई लव!' कह कर उस ने साइन आउट कर बात खत्म कर दी।

'लेकिन बात खत्म कहां हुई थी?'

उस के मेल पर मेल आते रहे। और वह कतराता रहा। कभी दाएं, कभी बाएं। लेकिन कब तक कतराता। आखिरकार एक दिन चौटिंग पर उसने पूछ लिया, 'अभी तुम हम को जानती कितना हो? कि मेरे साथ रहने को तैयार हो!'

'मैं तुम से प्यार करती हूं बस!' वह बोली, 'अब इस के बाद कुछ समझना रह

जाता है क्या?'

'हां, रह जाता है। कम से कम मेरे लिए तो रह ही जाता है।'

'जैसे क्या?'

'जैसे मैं तुम्हारी फीलिंग्स के अलावा तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानता।'

'क्या जानना चाहते हो?'

'जैसे कि तुम्हारी सेक्सुअल लाइफ?'

'ओ. के.। मैं तुम्हें लेटर लिख कर डिटेल में बताऊंगी।'

'क्यों? अभी क्यों नहीं?'

'इस लिए कि सेक्स मेरे लिए कोई कैजुअल सब्जेक्ट नहीं है।'

'ओ. के.। आई विल वेट फॉर यौर लेटर।' कहकर उस ने फिर साइन आउट कर दिया।

दूसरे दिन उसे उस का लंबा लेटर मिला।

उस ने बताया था कि जैसे लव उस के लिए फीलिंग है, सैक्स भी उसके लिए एक बड़ी फीलिंग है। बिना प्यार के वह सैक्स नहीं कर सकती। लेकिन रशियन पुरुष लव नहीं जानते, फीलिंग्स नहीं जानते, वह सिर्फ सैक्स जानते हैं। बिना प्यार का सैक्स। वह औरत को, औरत नहीं कमोडिटी मानते हैं। सैक्स का औजार मानते हैं। कहूं कि सैक्स ट्वायज मानते हैं। शराब पीते हैं, सैक्स करते हैं और औरत को ढ़केल देते हैं। जैसे वह कोई बेकार चीज हो।

ऐसे ही तमाम उबी और रूखी लेकिन तल्ख सचाइयों से उस की चिट्ठी भरी पड़ी थी। पहली बार उस की चिट्ठी में तल्खी दिखी थी। उस ने लिखा था कि इसीलिए वह रशियन समाज से, रशियन पुरुषों से भागती है। ऐसे पुरुष जिनके पास फीलिंग्स नहीं है, प्यार नहीं है, प्यार का भाव नहीं है, से वह भागती है। और शायद इसीलिए वह इंडिया आना चाहती है। उस की बांहों में समा जाना चाहती है। अनंत, अनंत और अनंतकाल के लिए। युगों-युगों तक के लिए।

लेकिन तुम्हें रशियन पुरुषों के सैक्स के बारे में इतना डिटेल कैसे मालूम है? उस ने चिट्ठी लिख कर पूछा।

'मैं डाइवोर्सी हूं। इसलिए सारे डिटेल्स जानती हूं।' उस का जवाब आया। उस ने लिखा था, 'तुम्हारे पास भी मैं सैक्स के लिए नहीं, प्यार के लिए, प्यार की प्यास बुझाने के लिए आना चाहती हूं। यहां मेरी हालत वैसे ही है, जैसे कोई मछली पानी में हो और पानी जम कर बर्फ बन जाए। मैं बर्फ में फंसी वह मछली हूं, जो न जी पाती है, न मर पाती है। प्लीज मुझे इस बर्फ से उबार सको तो उबारो! मैं तुम्हारी बांहों में सचमुच समा जाना चाहती हूं। मुझे अपनी बांहों में ले लो। इस चिट्ठी के साथ उस ने अपनी एक फोटो भी अटैच की थी जिस में वह अपनी गोद में एक बिल्ली लिए बर्फ के मैदान पर ऐसे खड़ी थी, गोया उस में धंस जाएगी। उसे उस पर सचमुच प्यार आ गया।

हालां कि वह उस पर तरस खाना चाहता था। उस के मछली की तरह बर्फ में फंसे रहने की उस की फांस यही कहती थी कि उस पर तरस खाया जाए। बर्फ के मैदान पर खड़ी उस की फोटो भी यही चुगली खाती थी कि उस पर तरस खाया जाए। लेकिन उस की गोद में समाई बिल्ली ऐसे उसे निहार रही थी, और वह उस बिल्ली को, कि दोनों की मासूमियत पर उस को प्यार आ गया। उसे प्यार आ गया उसकी पुरानी बातों को याद करके। उस की पुरानी चिट्ठियों की उन इबारतों को याद कर के प्यार आ गया जिनमें वह लगभग पोएटिक हो जाती और पोएटिक होते-होते उसे किसी परीलोक में खींच ले जाती। उसे सचमुच उस पर बहुत प्यार आ गया।

उस ने एक दिन चैटिंग में कहा कि, 'ठीक है तुम इंडिया आ जाओ। पर यह बताओ कि तुम यहां रहोगी कैसे?'

'कैसे? मतलब? तुम्हारे साथ रहूंगी, तुम्हारी बांहों में। और कैसे?'

'ओ. के.।'

'तुम्हारे सिवाय और मैं कुछ सोचती ही नहीं।'

'ओ. के.।'

'दिन-रात सिर्फ तुम्हें सोचती हूं। कुछ और नहीं। सिर्फ तुम्हें।'

'वह तो ठीक है। पर जब तुम इंडिया आओगी, मैं तब की बात कर रहा हूं खयालों और खवाबों की नहीं।'

'समझी नहीं।'

'मेरा मतलब गुजारा कैसे होगा?'

'मैंने सब सोच लिया है। और उस से भी पहले यह कि मैं तुम पर बोझ नहीं बनूंगी।'

'ओह!'

'हां, मैं ने सोच लिया है।' वह रुकी और बोली, 'मैं अपना बिजनेस करूंगी।

तुम्हारी इंडिया में।'

'किस चीज का बिजनेस?'

'उस के बारे में मैं ने सोचा भी नहीं।' वह बोली, 'वहीं आ कर तुमसे एडवाइज लूंगी।'

'फिर भी कुछ तो सोचा होगा।'

'कुछ नहीं! यह तुम सोचोगे।'

'तो भी।'

'अब तुम्हारी इंडिया में किस चीज का बिजनेस चलेगा मैं क्या जानूं ?' वह बोली, 'वैसे तुम्हें बताऊँ कि मैं कुक बहुत अच्छी हूं। नहीं होगा तो एक रेस्टोरेंट ही खोल लूंगी। पर तुम इतना जान लो कि मैं तुम पर बोझ नहीं बनूंगी। और कुछ नहीं होगा, तो इतनी हिंदी जान गई हूं कि वहां के लोगों को रशियन पढ़ा सकूं।' वह तैश में आ गई।

'ओ. के.। ओ. के.।' वह बोला, 'कुछ और बात करें?'

'नहीं, कोई और बात नहीं।' कह कर वह खुद साइन आउट कर गई। फिर बहुत दिनों तक उस का कोई मेल भी नहीं आया। ना ही वह चैट पर आई। इस बीच वह दूसरी लड़कियों-औरतों से फ्लर्ट-चौट करता रहा। इन्हीं दिनों उसे कुछ नाइजीरियन और अफ्रीकन लड़कियां भी चैट पर मिलीं। दो-तीन दिन तक वह रोमेंटिक-सैक्सी बातें करतीं और तन-मन-धन सब न्यौछावर करते-करते अचानक मदद मांगने पर आमादा हो जातीं। ढेर सारी कसमें देतीं, अर्धनग्न फोटो अटैचमेंट के साथ भेजती हुई उन लड़कियों की कहानियां लगभग एक जैसी होतीं।

फर्क सिर्फ चौहद्दी का होता। वह भी कुछ इस तरह की किसी का पति मर गया होता, तो किसी का पिता। किसी न किसी हादसे में इनकी हत्या हुई होती और वह किसी तरह जान बचा कर इस वक्त रिफ्यूजी कैंप में रह रही होतीं। उनके पति या पिता कई मिलियन डॉलर छोड़ गए होते। उन का कोई बिजनेस पार्टनर होता, जो फॉरनर होता, और वही फॉरनर पार्टनर उसे बना कर वह इंडिया में उस के नाम सारा पैसा ट्रांसफर कर के फिर से नई जिंदगी शुरू करना चाहतीं और उस की हमसफर बनना चाहतीं। अजब गोरखधंधा था यह। वह कइयों के प्रस्ताव मानता गया। अपना पूरा डिटेल बैंक एकाउंट सहित देता गया। फिर वह सब पैंतरा बदलती हुई डिप्लोमेटिक खर्च के डिमांड पर आ जातीं। और यह खर्च भी हजारों नहीं लाखों में होता। वह समझ गया कि यह सब औरतें और लड़कियां फर्जी हैं और किसी गैंग का हिस्सा हैं। इसी बीच अप्रत्याशित रूप से उस की लाटरियां भी इंटरनेट पर खुलने लगीं और सभी लाटरियां मिलियन, बिलियन डॉलरों में होतीं। उस ने माथा पकड़ लिया। जिस लाटरी के टिकट को उस ने कभी खरीदा नहीं, उनके बारे में कभी जाना नहीं, वहां कभी झांका नहीं, और वह लोग उसे अरबों-खरबों डालर देने पर आमादा थे।

तो क्या इंटरनेट पर सिर्फ चार सौ बीसी ही होती है? कहीं वह रशियन औरत भी उस के साथ चार सौ बीसी तो नहीं कर रही थी? उस ने यह सब सोचा। यह सब सोचते हुए ही उसे एक चिट्ठी लिखी और पूछा कि तुम हो कहां?

कहां गुम हो?

उस का कोई जवाब नहीं आया।

काफी दिन बीत गए। अचानक एक दिन उस रशियन औरत की एक मेल दिखी। उस ने झट से खोला। मेल एड्रेस जरूर उस का था लेकिन चिट्ठी उस की नहीं, उस की मां की ओर से थी। चिट्ठी में उस की लंबी बीमारी का जिक्र था। उसे ब्लड कैंसर बताते हुए लिखा था कि वह बैठ नहीं सकती लेकिन तुम्हारा नाम दिन–रात लेती रहती है। इंडिया–इंडिया बड़बड़ाती रहती है। वह इंडिया जैसे उड़ जाना चाहती है। वह गहरे डिप्रेशन में है। हो सके तो तुम आ जाओ और उसे इंडिया ले जाओ।

हालांकि वह जाने की स्थिति में नहीं है फिर भी वह जाना चाहती है। क्या तुम आ सकोगे? और जो न आ सको तो अपनी कुछ फोटो तो भेज ही दो। इसी से उसे तसल्ली हो जाएगी! आने–जाने में अगर पैसे वगैरह की दिक्कत आए तो भी लिखना।

टिकट मैं यहीं से भेज दूंगी। एयरपोर्ट पर खुद आ जाऊँगी। क्योंकि वह तुम्हें देखना चाहती है, तुम से मिलना चाहती है। आ सकोगे तुम? चिट्ठी के साथ उस की कुछ फोटो थीं जिन में वह बिस्तर पर अपनी बिल्ली के साथ लेटी थी। एक फोटो में उस ने देखा कि उस ने अपने सिरहाने उस की एक बड़ी सी फोटो फ्रेम करवा कर दीवार में लटका रखी थी।

फोटो में उस की दशा देख कर वह रो पड़ा। असमंजस उस का बढ़ता जा रहा था। वह रोज रूस जाने की तैयारी में लगा रहा था। पासपोर्ट के लिए उस ने अप्लाई कर दिया था। वह आने–जाने के खर्च के लिए पैसे भी बटोर रहा था। वह रूस जाना चाहता था पर उस रूसी औरत के खर्च पर नहीं। पासपोर्ट और पैसे बटोरने के चक्कर में उस को कुछ समय लगेगा यह बताते हुए उस ने उस की मां को चिट्ठी लिख कर बता दिया कि वह जल्दी ही आ रहा है। उस की मां ने उसे अपने घर का पता भी भेज दिया। अब तो यह तय था कि वह कोई चार सौ बीस नहीं है। वह सचमुच उस से प्यार करती है। इंटरनेट पर ही सही। वह उस के प्यार से अभिभूत था। वह उस को जी रहा था, और उस के साथ ही मर भी रहा था। पासपोर्ट उस का बन गया था। अब वीजा बनवाने का नंबर था। वीजा बनवाने के लिए वह दिल्ली गया। रशियन ऐंबेसी से संपर्क किया। टूरिस्ट वीजा के लिए।

वह दिल्ली हफ्ते भर तक रुका रहा। एक दिन वह अपनी मेल चेक कर रहा था कि फिर उसे उसकी मेल दिखी जो उस की मां ने ही लिखा था। मेल सिर्फ एक लाइन की थी, 'रीम्मा इज डेड!' वह साइबर कैफे में ही रो पड़ा।

वह वापस लखनऊ आया और पत्नी से लिपट कर रो पड़ा। पत्नी ने पूछा, 'क्या हुआ?'

'वह नहीं रही!' वह बुदबुदाया, 'वह मर गई।'

'कौन मर गई?' पत्नी अचकचाई

'वही जिस के लिए रूस जा रहा था।'

'क्या?'

अब उस के घर में नया कोहराम मच गया था। पत्नी उसे ऐसे देख रही थी गोया उसे सूली पर चढ़ा देगी। पहले और दूसरे प्यार की सूचना और कुछ फुटकर हरकतों पर वह पहले ही से शक के सलीब पर था। और अब यह फिर!

सारा प्यार भस्म हो गया था।

बर्फ में फंसी मछली अब वह खुद बन गया था।

कुछ खासः अंक विशेष

ढाई आखर प्रेम का ...

कविता विकास
धनबाद, झारखंड
फोनः 09431320288
Email:
kavitavikas28@gmail.com

ढाई आखर का यह शब्द प्रेम इतना बलशाली है जो विश्वबंधुत्व और आत्मवत सर्वभूतेषु जैसी व्यापक भावनाओं का अंकुर प्रस्फूटित कर देता है। सदियों पहले तपस्वियों द्वारा पहचाना गया यह यथार्थ आज भी अक्षरशः सत्य है। दो रिश्तों को प्रेम भाव से ही सींचा जाता है। रिश्तों की तासीर के अनुसार प्रेम का स्वरुप होता है। माँ–बेटी, पिता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–बहन आदि का प्रेम शाश्वत होता है जिसमें छल कपट और स्वार्थ का लेशमात्र भी संशय नहीं होता। आशा और अपेक्षाएँ रिश्तों में स्वतः आती हैं, पर उनके न पूर्ण होने पर भी रिश्ते कायम रहते हैं क्योंकि वहाँ प्रेम है। प्रेम की शक्ति निराशा में आशा की किरण जला देती है, विषाद में हर्ष की लौ जगमगा देती है।

प्यार एक अहसास है। यह स्वतः उपजता है। इसे जबर्दस्ती किसी पर थोपा नहीं जा सकता। दूर रह कर भी एक माँ जान जाती है कि उसका बेटा अस्वस्थ है या एक पत्नी कोसों दूर से अपने पति की पदचाप पहचान लेती है। स्पंदन के तारों का जुड़ना शायद यही है। प्रेम ही वह पुख्ता जमीन तैयार करता है जिससे टकरा कर अहम् का शीशा टूट जाता है और दो दिल जुड़ जाते हैं। उस एक के चलते सारी दुनिया सुन्दर लगने लगती है। चेहरे पे नूर आ जाती है, अपनत्व बढ़ जाता है। फिर क्या दोस्त, क्या दुश्मन, हर कोई अपना लगता है।

प्रेम जब जुनून बन जाता है, तब सांप भी रस्सी बन जाता है, वही रस्सी जिसके सहारे कालिदास ने उफनती हुई नदी सहजता से पार कर ली। प्रियत्व की चाहत बड़ी बलवती होती है। आँख, कान और स्पर्श जैसी इन्द्रियाँ अनुभव बन जाती हैं। देश से प्यार देशभक्त बना देता है। फांसी पर खुशी–खुशी लटकने वाले क्रांतिकारियों के चेहरे पर एक शिकन तक न आ पाती थी क्योंकि देश के प्रति उनकी बेहद दीवानगी थी। सबसे अनूठा प्रेम तो भक्त और भगवान का है। शबरी का निश्छल प्रेम राम को जूठे बेर खाने को बाध्य करता है तो सुजाता के हाथों से खीर खाने के बाद बुद्ध को बोध की प्राप्ति हुई। ऐसे प्रेम के लिए तो भगवान भी लालायित रहते हैं। जगजाहिर राधा–कृष्ण की जोड़ी साधारण किशोर–किशोरियों का ही प्रतिरूप है जो अपने चरम पर पहुँच कर प्रकृति के साथ एकात्म होता है और ईश्वरीय बन जाता है। इस प्रेम की अलख जिसमें जग जाती है, वह भी देवतुल्य हो जाता है। सार यह है कि प्रेम के बिना जीवन निरर्थक है। दुःख–सुख, पीड़ा–प्रसन्नता आदि संवेदनाओं का उमड़ना प्रेम के कारण ही है। आज के भौतिकवादी युग में कहीं–कहीं स्वार्थ भले ही दिख जाए, तब वह प्रेम क्षणिक होता है। उसका अंत ही श्रेयस्कर है। स्वान्तः सुखाय, स्वान्तः हिताय की भावना को आधार बना कर प्रेम की गंगा सर्वत्र बहनी चाहिए।

लघुकथा

तुम कहाँ हो ?

–डॉ० एस. के. पाण्डेय

नीलोत्पल ने मुझसे पूछा 'संत लोग कहते हैं कि यह संसार माया है। मिथ्या है। लेकिन जो हमारे सामने प्रत्यक्ष है, वह मिथ्या कैसे हो सकता है?'

मैंने कहा 'ठीक ही तो कहते हैं । संसार सत्य है । यह तो आभास मात्र है । वस्तुतः यह मिथ्या ही है ।'

मैंने आगे कहा 'हम और आप आमने-सामने प्रत्यक्ष बैठे हैं । लेकिन वस्तुतः हम तो हैं ही नहीं ।'

यह सुनकर वह कुछ बोला नहीं । शायद वह कुछ समझ नहीं पा रहा था। इसलिए उसे और समझाने की गरज से मैंने उसके हाथ की ओर इशारा करके पूछा 'यह क्या है ?' जबाब मिला 'यह मेरा हाथ है ।'

फिर मैंने उसके पैर की ओर इशारा करके पूछा 'यह क्या है ?'

फिर जबाब मिला 'यह मेरा पैर है ।'

इसी तरह जबाब मिलता गया 'यह मेरी आँख है । यह मेरी नाक है। यह मेरा कान है । यह मेरा सिर है...आदि ।

यह सुनकर मुझे हँसी आ गई । मैंने कहा 'सब कुछ तो तुम्हारा है। लेकिन तुम कहाँ हो ?' नीलोत्पल ने कोई जबाब नहीं दिया ।

रामनवमी पर विशेष

राम को अवतरित करें खुद के अन्दर

उर्मिला पोरवाल
सम्पर्क सूत्रः-
49/1, आर.एन.टी. मार्ग,
उज्जैन, म.प्र.
E-mail: urmiporwal@gmail.com

हमारी भारतीय संस्कृति धर्मपरायण संस्कृति है जहाँ प्रत्येक त्योहार अपनी विषेशता लिए हुए हैं। उन्हीं विशेष त्योहारों में एक है— रामनवमी।

रामनवमी अर्थात भगवान श्रीराम का जन्मदिन।

राम जन्म के कारण ही हिन्दू धर्म में चैत्र मास का बहुत महत्व है।

भारत वर्ष में यह दिन पुण्य पर्व माना जाता है। इस दिन स्नान ध्यान पूजन भोज दान व्रत आदि किए जाते हैं।

राम का नाम सुनते ही हमारे मानसपटल पर एक मर्यादा पुरुषोत्तम व्यक्ति की छवि अंकित होती है। श्रीराम का चरित्र आदर्शवादी है, जिनसे संसार का प्रत्येक व्यक्ति प्रेरणा लेता है। संसार की प्रत्येक माता अपने पुत्र में राम को देखना चाहती है। क्योंकि राम ने अपने जीवन काल में अपनी प्रत्येक भूमिका का निर्वाह श्रेष्ठतापूर्वक किया— गुरु सेवा, शरणागत की रक्षा, जाति—पाति का भेद मिटाना हो या भ्रात—प्रेम, मातृ—पितृ भक्ति, एक पत्नी व्रत, भक्त वत्सलता, कर्तव्यनिष्ठा, आदि चरित्र के महान रूप हमारे समक्ष राम ने प्रस्तुत किए हैं।

उत्तर भारत में चैत्र माह में रामचरितमानस के पारायण की परम्परा सदियों पुरानी है। वाल्मीकि रामायण में इसका विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है।

कहा जाता है कि जब भगवान अवतरित होते हैं, तो वे जन्म ही ऐसे समय लेते हैं जब ग्रह—नक्षत्रों की स्थिति शुभ होती है। श्रीराम ने भी ऐसे ही समय में जन्म लिया, जब ग्रहों की स्थिति सुन्दर थी व ऋतु एवं समय सुहावना था।

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम के जन्मदिन का विवरण इस प्रकार है—

ततो यज्ञेतु ऋतुनां शट् समत्ययुय।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौं।।

अर्थात यज्ञ समाप्ति के पश्चात जब छह ऋतुएं बीत गई, तब बारहवें मास में चैत्र शुक्ल नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र व कर्क लग्न में माता कौशल्या ने दिव्य लक्षणों से युक्त, सर्वलोकवंदित राम को जन्म दिया।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम जन्म का मनोहारी वर्णन इस प्रकार किया है—

नौमी तिथि मधुमास पुनीता ।
सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।
मध्य दिवस अति सीत न धामा।
पावन काल लोक बिश्रामा।।

भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम के व्यक्तित्व से भारतीय जनता भलिभाँति परिचित है। रामनवमी के दिन सभी धर्मिक कर्मकाण्ड यही सोचकर किए जाते हैं कि राम की तरह ही हम भी अपने जीवनकाल में आदर्श प्रस्तुत करें।

अवश्य पढ़ें
''सृजक''
का आगामी अंक
अध्यात्म विशेषांक

कथालोक

अनकहा प्यार

कहानी

● कृष्ण कुमार यादव

सुबह का अखबार पढ़ते हुये अचानक मेरी निगाह अपनी नई पड़ोसन से टकरा गई। मैंने सुना तो था कि मेरे बगल वाले फ्लैट में कोई महिला अधिकारी शिफ्ट होने वाली है, पर आमने–सामने का यह हमारा पहला वास्ता था। हैलो– हाय से शुरू हुआ परिचय कब प्रगाढ़ता में बदल गया, पता ही नहीं चला। मेरी पड़ोसन मैडम जिले में ही एक उच्च पद पर पदस्थ थीं और उनके पति अन्य किसी जिले में तैनात थे। उनके पति का आना–जाना कभी–कभार ही सम्भव हो पाता था, सो पड़ोसी होने के कारण वे मुझसे काफी घुल–मिल गयीं और एक दिन उन्होंने टोक ही दिया कि तुम मुझे हमेशा मैडम कहकर बात न किया करो। मैंने कहा– मैडम मैं अभी एक विद्यार्थी हूँ और आप इस जिले में तैनात एक वरिष्ठ अधिकारी, आखिर हमारा क्या रिश्ता हो सकता है? वह कुछ देर तक शान्त रहीं और फिर अपनी चुप्पी तोड़ते हुये बोलीं– अगर तुम बुरा न मानो तो मुझे भाभी कहकर बुला सकते हो। आपकी बात सही है मैडम, पर मात्र भाभी कह देने भर से तो रिश्ता नहीं जुड़ जायेगा। वैसे भी यह बड़ा नाजुक व प्यार भरा रिश्ता है, इस रिश्ते को निभा पायेंगी आप? उन्होंने अपनी आँखें ऊपर उठायीं व मेरी आँखों में आँखें डालकर बोलीं– यह जरूरी तो नहीं कि हर रिश्ते खून से ही बनते हों। रिश्तों की परिभाषा अपनत्व, स्नेह एवं प्यार में छुपी हुयी है और अगर हम एक–दूसरे को समझ सके तो ये रिश्ता हम भी आसानी से निभा सकते हैं। उस दिन के बाद से हम मुँहबोले देवर–भाभी के रिश्ते में बँध गये।

कृष्ण कुमार यादव
निदेशक डाक सेवा
इलाहाबाद परिक्षेत्र
मो0 08004928599
kkyadav.y/redffimail.com
http://kkyadav.blogspot.com/

वक्त अपनी चाल चलता रहा। एक दिन सुबह–सुबह उन्होंने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी– गुड मॉर्निंग जनाब! विद्यार्थी जीवन में घोड़े बेच कर सोना अच्छी बात नहीं है। अच्छे विद्यार्थियों की तरह अपने करियर पर ध्यान दीजिए और अध्ययन–कार्य में जुट जाईये। इससे पहले कि मैं कुछ कहता, एक अपरिचित पर मधुर सी आवाज मेरे कानों से टकरायी– नमस्ते अंकल! मेरा नाम प्रिया है और मैं कक्षा ग्यारह में पढ़ती हूँ। मैं अपकी भाभी की इकलौती प्यारी बिटिया रानी हूँ और अब यहीं पर रह कर आगे की पढ़ाई करूंगी। अच्छा भाभी! तो आपने इन्हें हमारे बारे में पहले से ही बता रखा है। चलिये अच्छा हुआ, अब हमें अपना परिचय देने की जरूरत नहीं पड़ेगी।....तो ठीक है, हाथ मिलाइये और आज से हम दोस्त हुये। अच्छा अंकल! अब आप बताइये कि कैडबरी चॉकलेट पसंद है न आपको, हाँ.. ...हाँ क्यों नहीं? तो फिर शाम को आप कैडबरी चॉकलेट लेकर आइएगा..... चल हट बदमाश कहीं की, अभी अंकल से कायदे से परिचय भी नहीं हुआ और तेरी फरमाइशें शुरू हो गयीं। आप इसकी बातों में मत आइएगा क्योंकि खाने–पीने के मामलों में दोस्ती करने में यह काफी पाजी स्वभाव की है। अरे! तुम दोनों के चक्कर में मेरी चाय भी ठंडी हो गयी। अच्छा तुम जल्दी से फ्रेश होकर आ जाओ तो एक–एक कप गर्मागर्म चाय हो जाय।.... वक्त के साथ प्रिया मुझसे काफी घुल–मिल गयी। मेरे खाने से लेकर बाहर जाने तक का हिसाब–किताब रखती। जब कभी भी मैं देर से आता तो प्रिया दरवाजे पर खड़ी मेरा इन्तजार करती रहती और जब तक मैं खाना नहीं खा लेता, अन्न का कौर मुँह में नहीं डालती। उसकी मम्मी भी खुश थीं कि प्रिया को बोर नहीं होना पड़ता। पर प्रिया के दिल में क्या चल रहा था, उससे मैं और उसकी मम्मी पूर्णतया अनजान थे व ऐसा सोचने का कोई कारण भी नहीं

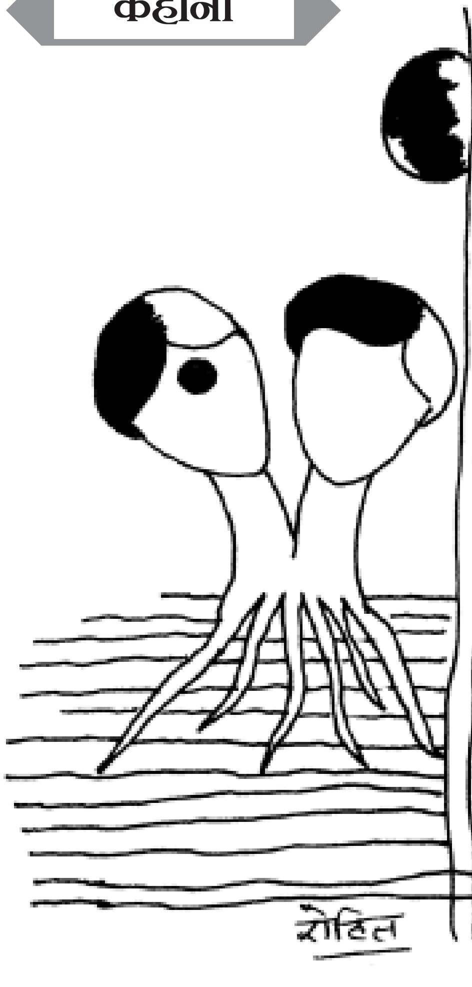

बनता था।

वो दिसम्बर की सर्द रातें थीं जब गाँव जाने हेतु मैं पैकिंग कर रहा था। रात के करीब 11 बजे थे कि दरवाजे पर खट..खट सुनकर मैंने दरवाजा खोला तो सामने प्रिया खड़ी थी। अरे! तुम इतनी रात गए यहाँ क्या कर रही हो, नींद नहीं आ रही? वह तेजी से आगे बढ़ी और एक झटके में दरवाजे को बंद कर मुझे आलिंगनबद्ध कर लिया व फूट–फूट कर रोने लगी। मैंने उसे चुप कराने की काफी कोशिश की पर वह चुप होने का नाम ही नहीं ले रही थी। रोते हुए उसके स्वर मेरे कानों से टकराये–प्लीज! मुझे इस तरह अकेला छोड़कर मत जाईये, मुझे आपके बिना यहाँ अच्छा नहीं लगेगा। यह क्या बचपना है प्रिया, मैंने उसे अपने से अलग करते हुए कहा......आप मुझे समझने की कोशिश क्यों नहीं करते, मैं आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। प्रिया कुछ ही दिनों की तो बात है, फिर मैं वापस आ जाऊँगा। आखिर इसमें इतना नाराज होने की क्या बात है?.....गुस्से से पाँव पटकते हुए वह मुड़ी और बोली कि लगता है आपने ''कुछ–कुछ होता है'' फिल्म ध्यान से नहीं देखी, वरना आपको समझ में आता कि मैं क्या कहना चाहती हूँ और फिर तेजी से दरवाजा बन्द करके चली गई। रात भर मैं प्रिया के बारे में सोचता रहा। कभी–कभी लगता कि वह मुझसे प्यार कर बैठी है, फिर अगले ही पल इस विचार को झटक देता। आखिर उसकी मम्मी को मैं भाभी कहता था और वह मुझे अंकल कह कर पुकारती थी...... फिर यह कैसे संभव हो सकता है? अगर कहीं उसकी मम्मी को ऐसा कुछ एहसास हुआ तो वह मेरे बारे में क्या सोचेंगी..... आखिर कुछ तो रिश्तों की मर्यादा होती है। यही सोचते–सोचते कब नींद आ गयी पता ही नहीं चला। सुबह गाँव जाने से पहले मैं भाभी और प्रिया से मिलने गया तो प्रिया ने बिना आँख मिलाये ही मुझे नमस्ते कहा व अंदर कमरे में चली गई।

करीब एक महीने बाद मैं गाँव से लौटकर आया तो उस समय भाभी और प्रिया कहीं बाहर गयी हुई थीं। शाम को जब वे लौटकर आयीं तो मेरा फ्लैट खुला देखकर अंदर चली आयीं....अरे तुम कब आये? घर पर सभी लोग कुशलता से हैं न। बस भाभी! अभी एकाध घण्टे पहले ही आया हूँ। तभी उनके पीछे से प्रिया भी आ गयी और धीरे से कहा–नमस्ते अंकल जी। इससे पहले कि मैं कुछ कहता, भाभी बीच में ही बोल पड़ीं–अरे हाँ! मैं तो बताना भूल ही गई कि तुम्हारे जाने के बाद प्रिया इतना रोई कि पूछो मत। मैंने लाख समझाने की कोशिश की पर एक ही रट लगायी रही कि अंकल को बुलाकर लाओ। इसकी आँखे रोते–रोते इतनी सूज गयीं कि मैं भी डर गयी थी, किसी तरह समझा–बुझाकर इसे शान्त कराया। तभी पीछे से प्रिया की आवाज आई–जरा इनसे भी पूछिये कि इन्हें हम लोगों की याद आयी कि नहीं? एक महीना तो पूरा आराम से कटा होगा गाँव में। मैं समझ रहा था कि वह क्या कहना चाह रही है पर भाभी की उपस्थिति में चुप रहना ही मुनासिब समझा। तब तक मेरे कुछेक दोस्त आ गए थे और मैं उनके साथ बाहर निकल गया। रात को करीब 9 बजे मैं अपने फ्लैट में लौटा तो प्रिया दरवाजे पर कुर्सी लगाकर बैठी थी। मैंने ज्यों ही आगे कदम बढ़ाया तो मुस्कुराते हुये धीमे से बोली–अच्छा! तो अब जनाब को दोस्तों से फुर्सत मिल गयी। हम भी आपके पड़ोस में रहते हैं, कभी–कभी हमें भी याद कर लिया कीजिये। मैने हँसते हुए कहा–क्या बात है, आज मुझ पर काफी तीखे बाण छोड़े जा रहे हैं। धीमे से फुसफुसाकर उसने कहा–जो लोगों के दिलों को जख्म देते है, उन्हें भी कभी–कभी जख्म सहने की आदत डाल लेनी चाहिये।.... क्या बात है आज काफी दार्शनिक अंदाज में बोल रही हो..... बस आपका पड़ोसी होने का असर है। इतना कहकर वह अपने फ्लैट में चली गयी।

कुछ देर बाद वह फिर से मेरे फ्लैट में आयी। उस समय मैं कोई किताब पढ़ने में मशगूल था। आते ही उसने मेरे हाथ से किताब छीन ली और नाराजगी जताते हुये कहा– एक तो आप इतने दिन बाद आये व उस पर मुझसे बात करने के लिए आपके पास दो मिनट का समय भी नहीं है। बस मैं ही पागल हूँ, आप तो कोई चीज समझना नहीं चाहते.....लीजिये मेरी डायरी पढ़कर शायद कुछ समय में आ जाये। इतना कहकर वह अपनी डायरी मेज पर छोड़ कर चली गयी। उसके जाने के बाद मैंने दरवाजा बन्द कर ट्यूबलाइट बुझा दी और टेबल–लैम्प जलाकर डायरी के एक–एक पन्ने को उत्सुकता से पलटने लगा। डायरी में लिखे एक–एक शब्द मेरे जेहन में उतरते गये। बार–बार मैं अपनी आँखों को छूकर आश्वस्त होता कि यह कोई सपना नहीं वरन सच्चाई है। प्रिया मुझे इस हद तक प्यार करती है, मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मैं यह सोचकर भी चिन्तित हो उठा कि यदि भाभी को इस सम्बन्ध में कुछ पता चल गया तो वे क्या सोचेंगी। यद्यपि मेरे और प्रिया के बीच उम्र का फासला बहुत ज्यादा नहीं था, पर अन्ततः उसकी मम्मी को मैं भाभी कहकर सम्बोधित करता था और वे भी मुझ पर अगाध विश्वास करती थीं। प्रिया ने तो मुझे एक बहुत बड़े धर्मसंकट में डाल दिया था। प्यार का यह मेरा पहला अनुभव था, पर यह इस रूप में सामने आएगा, मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। कभी मेरे सामने भाभी का चेहरा घूमता तो कभी प्रिया का। दोनों में से मैं किसी को भी दुखी नहीं करना चाहता था, पर हालात यूं बने कि दोनों को एक साथ खुश रखना भी सम्भव नहीं था। यह जीवन का वो फलसफां था, जो किसी से कहा भी नहीं जा सकता था और मैं भी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पा रहा था।

इस बीच भाभी से तो मेरी बातें पूर्ववत होती रहीं, पर प्रिया जरा कम ही बातें करती। जब भी मैं उसके घर में बैठता वह कनखियों से मुझे देखती और नजर मिलते ही निगाहें फेर लेती। आखिर हारकर मैंने एक दिन प्रिया को अपने फ्लैट पर बुलाया और बहुत प्यार से ऊँच–नीच समझाने की कोशिश की। उसे मैंने स्पष्टतः बताया भी कि उसे मैं उस निगाह से नहीं देखता और अभी उसकी उम्र भावनाओं में बहकर जीवन बर्बाद करने की नहीं वरन् पढ़ाई–लिखाई करने की है। पर उस पर तो मानो प्यार का भूत सवार हो चुका था। उसने स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर डाली कि– मुझे उम्र में इतनी भी छोटी मत समझिये कि मैं चीजों का फर्क नहीं समझती। आपकी मेरे प्रति क्या भावना है, यह तो मैं नहीं जानती पर मैं आपसे सच्चा प्यार करती हूँ और आपके सिवा मेरी जिन्दगी में कोई नहीं आ सकता। इतना कहकर मेरे कन्धे पर अपना सर रखकर वह फूट–फूट कर रोने लगी. मैं आपका धर्मसंकट समझती हूँ, पर अपने दिल को कैसे समझाऊँ! आपके बिना हरपल कुछ अधूरा सा लगता है। क्लास में भी पढ़ाई में मन नहीं लगता, बस पन्नों पर आपका और अपना नाम लिखा करती हूँ, अब आप ही बतायें मैं क्या करूँ? अनायास ही मेरी अंगुलियाँ उसके सर को सहलाने लगी थीं। कुछ देर बाद उसने अपना चेहरा मेरे कन्धे पर से उठाया और भावावेश में आकर मेरे गालों पर अपने होंठ रख दिये। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता वह मुझे अकेले छोड़ चली गई थी। जाते–जाते मेज पर उसने एक पत्र छोड़ दिया था। मैंने उसे उठाया और पढ़ना आरम्भ किया– 'मैं जानती हूँ कि मैंने आपको एक अजीब धर्मसंकट में डाल दिया है पर इस सच्चाई को स्वीकारिये कि आपके दिल में भी मेरे लिए जज्बात हैं। आप खुद सोचिये कि जिस दिन मैं आपसे बात नहीं करती, आपको कैसा लगता है.. ... आपको खुद ही जवाब मिल जायेगा। मैं नहीं चाहती कि आपके लिए दुःख का कारण बनूँ, मैं आपको हमेशा सुखी देखना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि आप जिन्दगी में सफलता की उन ऊँचाइयों को छुएं जहाँ मैं गर्व से महसूस कर सकूँ कि आप मेरे प्यार हैं। जरूरी नहीं कि हम समाज को दिखाने के लिए एक बन्धन में बंधे हीं, पर हमारी आत्मा एक दूसरे को स्वीकार कर चुकी है। उसके लिए शारीरिक मिलन का कोई अर्थ नहीं...... आप यह क्यूँ भूलते हैं कि राधा ने भी कृष्ण से प्यार किया था, पर दोनों किसी वैवाहिक बंधन में नहीं बँध सके। इसके बावजूद भी आज लोग राधा–कृष्ण को पूजते हैं। कृष्ण जी ने कितनों से ही रासलीला रचायी, रूकमणी

से शादी की, कितनों के उद्धार हेतु उनसे विवाह किया पर आज भी जब कृष्ण का नाम आता है तो अपने आप ही राधा का चेहरा भी उनके साथ एकाकार हो जाता है....... ऐसा ही रिश्ता मेरा और आपका भी है। मैं आपको किसी भौतिक बन्धन में नहीं बांधना चाहती पर जिन्दगी के किसी भी मोड़ पर अपने को अकेला मत समझियेगा। आपकी प्रिया सदैव आपके साथ होगी.....

सिर्फ आपकी

प्रिया

पहली बार लगा कि प्यार व्यक्ति के वजूद को कितना महान बना देता है। मैं सोच भी नहीं सकता था कि इतनी कम उम्र में प्रिया इतना दार्शनिक और आध्यात्मिक विचार भी रखती होगी। वैसे भी प्यार किसी उम्र का मोहताज नहीं होता। धीमे–धीमे प्रिया के व्यवहार में गम्भीरता और मेरे प्रति अधिकार भावना आती गई। वह मेरी हर छोटी–बड़ी बात का ख्याल रखने लगी थी। कभी–कभी जब मैं उसे रोकता तो हँसकर कहती– 'पता नहीं हम इस शहर में कितने दिन के मेहमान हैं। जब मैं चली जाऊँगी तो जैसे रहना होगा, वैसे रहियेगा। तब कोई रोकने वाला नहीं होगा' ऐसा कहते समय उसकी आँखों से आँसू छलक पड़ते थे।

वक्त भी कभी–कभी बहुत बेरहम हो जाता है। कुछ ही दिनों बाद पता चला कि प्रिया की मम्मी का दूसरे जिले में स्थानान्तरण हो गया है। उन्होंने अपना स्थानान्तरण रूकवाने के लिए बहुत कोशिश की पर सब बेकार। उन लोगों ने धीमे–धीमे अपने सामान की पैकिंग करना आरम्भ कर दिया। प्रिया और उसकी मम्मी दोनों की ही आँखों में मुझसे बिछुड़ने का गम था..... आखिर एक परिवार के जैसा रिश्ता जो बन गया था। प्रिया को अक्सर आँखों ही आँखों में रोते देखता पर अपने दिल को मजबूत किये हुए था। आखिर वह दिन भी आ गया जब उनके जाने का समय आ गया। काफी देर तक मैं उनके साथ बैठा रहा। कुछ देर के लिए प्रिया की मम्मी किचन की ओर गईं तो प्रिया मेरे करीब आकर बैठ गई। मेरे दोनों हाथों को अपने हाथों मे लेकर बोली–याद है न वह राधा–कृष्ण वाली बात, भूलियेगा नहीं..... जिन्दगी में जब भी किसी मुकाम पर पहुँचियेगा तो हमें भी याद कर लीजियेगा। फिर हँसते हुए बोली आखिर हमारा भी कुछ अंश आपमें है। इतना कहकर वह मुझसे पागलों की तरह लिपट गयी, उसकी आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे....... शायद वह रात भर रोई थी क्योंकि उसकी आँखें सूजी हुयी थीं।

उनका सारा सामान ट्रक से जा चुका था। मैं उनके साथ रेलवे स्टेशन तक गया था। प्रिया एक क्षण के लिए भी मेरा हाथ नहीं छोड़ रही थी। ट्रेन छूटने को तैयार थी और प्रिया मेरे हाथों को जोर से भींच रही थी, शायद कुछ खोने का एहसास था। ट्रेन चली तो उसके साथ मैं भी प्रिया का हाथ पकड़ कर कुछ देर तक दौड़ता रहा पर ट्रेन की रफ्तार तेज होते ही हमारा हाथ छूट गया। मैं जड़वत खड़े होकर उसके हिलते हाथों को दूर जाते देख रहा था मानो वे दोनों हाथ फैलाये मुझे बुला रही हो। जब दिलो–दिमाग थोड़ा शान्त हुआ तो ऑटो करके अपने फ्लैट की ओर चल दिया। अचानक उस हाथ को जिसे प्रिया ने थाम रखा था देखा तो कागज का एक मुड़ा–तुड़ा टुकड़ा नजर आया। खोलकर देखा तो प्रिया के लिखे शब्द थे– 'खुश रहियेगा। मेरे जाने पर उदास होकर मत रोइएगा, मेरी कसम है आपको।' फ्लैट पर पहुँचते–पहुँचते मेरे सब्र का बाँध टूट चुका था, दरवाजा अन्दर से बन्द करके तकिये में मुँह रखकर मैं काफी देर तक रोता रहा। ऐसा लगा जैसे एक अनकहा दर्द उभर कर बाहर आ रहा हो....। मैं प्रिया की आखिरी कसम की लाज नहीं रख पाया था।

साहित्य प्रेमी संघ के तत्वावधान में प्रकाशित काव्य पुस्तकें

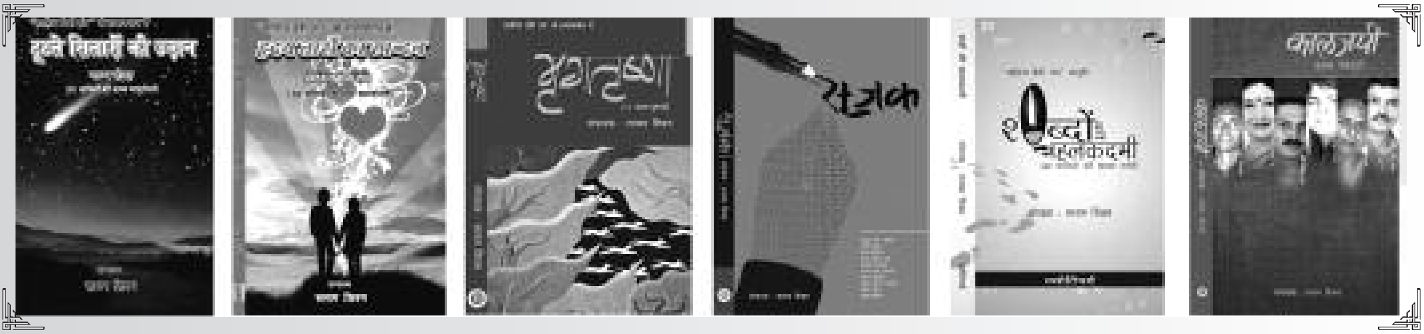

क्रय हेतु ऑनलाइन सभी ई स्टोर्स पर सम्पर्क करें- फ्लिपकार्ट, इनफीबीम, ईबे आदि

आगामी गद्य संग्रहों एवं अन्य उत्कृष्ट काव्य संग्रहों से जुड़ने हेतु 'साहित्य प्रेमी संघ' पे आज ही सम्पर्क करें-
सत्यम शिवम (संस्थापक, संयोजक व सम्पादक) मो0 9031197811
''साहित्य प्रेमी संघ''
website: www.sahityapremisangh.com,
Email: contact@sahityapremisangh.com,
Facebook: https://www.facebook.com/Srijakhindi

समसामयिक मुद्दा

भारत हो या इंडिया बेटियाँ तो हमारी ही हैं

निशा मित्तल
सम्पर्क सूत्रः
मुजफ्फरनगर
फोनः 9411276755
Email:nisha.mittal2003@gmail.com

भारत में जन्म लेकर, यहीं के अन्नजल से बड़े हुए आधुनिकता का चश्मा पहने लोगों से यदि उनके देश का नाम पूछा जाये तो वो इंडिया कहकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं, जो निश्चित रूप से एक अपमानजनक सत्य है, परन्तु इसके लिए उनको दोषी ठहराना न्यायसंगत कैसे माना जाय जबकि हमारे संविधान में लिखा गया है इण्डिया दैट इज भारत. अर्थात संवैधानिक रूप से जिस तथ्य को हम स्वीकार कर रहे हैं, आज तक भी हमारी सरकारें स्वयं को आज तक 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया' लिखती हैं तो ये प्रश्न उठाने का क्या औचित्य शेष रह जाता है...हमारे से श्रेष्ठ तो श्रीलंका और म्यांमार है, जिनको उनकी स्वाधीनता से पूर्व सीलोन और बर्मा के नाम प्रदान किये गए थे परन्तु अपनी राष्ट्रीयता का सम्मान करते हुए उन्होंने अपनी मौलिकता को अपनाया. जबकि हमारा देश, जो सभी क्षेत्रों में अपनी समृद्ध धरोहर के लिए सम्पूर्ण विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र था आज भी उसी नाम को, अपमान को गले से लगाये हुए है. निश्चित रूप से इसके लिए दोषी मान जाता है, ब्रिटिश शासन को, परन्तु क्या कोई भी स्वदेश प्रेमी या विचारक मन से इस तथ्य को स्वीकार कर सकता है कि अंग्रेजों को भारत छोड़े हुए साढे छह दशक से अधिक समय हो गया और संविधान में अद्यतन ११७ संशोधन हो चुके हैं परन्तु यह महत्वपूर्ण संशोधन नहीं हुआ. तो दोषी कौन हैं? आखिर किसको विरोध है भारत को 'भारत' कहने में ?

हमारी सभ्यता–संस्कृति और मानसिकता के आमूल चूल परिवर्तन के लिए निश्चित रूप से दोषी शिक्षा पद्धति है जिसके जनक लार्ड मैकाले ने इस तथ्य को पहचाना और कहा कि भारतीय संस्कारों पर प्रहार करके ही हम अपना राज्य स्थायी कर सकते हैं, जिसका प्रमाण उसका ये प्रस्ताव जो उसने ब्रिटिश संसद के समक्ष १८३५ में प्रस्तुत किया.

मैंने भारत के कोने–कोने की यात्रा की है और मुझे एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई दिया, जो भिखारी हो या चोर हो। मैंने इस देश में ऐसी संपन्नता देखी, ऐसे ऊंचे नैतिक मूल्य देखे कि मुझे नहीं लगता कि जब तक हम इस देश की रीढ़ की हड्डी न तोड़ दें, तब तक इस देश को जीत पायेंगे और ये रीढ़ की हड्डी है, इसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत, इसके लिए मेरा सुझाव है कि इस देश की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था को इसकी संस्कृति को बदल देना चाहिए. यदि भारतीय यह सोचने लग जाए कि हर वो वस्तु जो विदेशी और अंग्रेजी, उनकी अपनी वस्तु से अधिक श्रेष्ठ और महान है, तो उनका आत्म गौरव और मूल संस्कार नष्ट हो जाएंगे और तब वो वैसे बन जाएंगे जैसा हम उन्हें बनाना चाहते है एक सच्चा गुलाम राष्ट्र. लार्ड मैकाले ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपनी शिक्षा नीति बनाई, जिसे आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार बनाया गया ताकि एक मानसिक रूप से गुलाम कौम तैयार किया जा सके, क्योंकि मानसिक गुलामी, शारीरिक गुलामी से बढ़कर होती है. उसका ये स्वप्न पूर्ण हुआ और आज वो हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं,भले ही अंग्रेज शासक नहीं परन्तु पाश्चात्य जीवन शैली, भाषा अपनाने के लिए एक होड है, जिसके परिणाम स्वरूप सब भाग रहे हैं कि कहीं हम पीछे न रह जाएँ.

वास्तव में देखा जाय तो वर्ग विहीन समाज दुनिया के किसी भी कोने में नहीं, यहाँ तक कि ऐसा दिखावा करने वालों के लिए भी यह एक स्वप्न ही बनकर रह गया.अतः समाज में किसी न किसी रूप में वर्ग सदा विद्यमान रहे हैं. चाहे वह वर्ग आर्थिक आधार पर बने हों, शासक–शासित, शिक्षित–अशिक्षित. परन्तु आज हमारे देश में वैचारिक, आर्थिक सभी स्तरों पर भारत और इंडिया के रूप में विभाजन दिखता है. समय के साथ परिवर्तन अवश्यम्भावी और अपरिहार्य है, परन्तु आज स्थिति पूर्णतया भिन्न है. आज इंडिया का स्वरूप किसी विचारक के शब्दों में.'इंडिया वो है जो महानगरों की अट्टालिकाओं में बसा करता था और अब तेजी से छोटे शहरों में भी दिखने लगा है. इंडिया विकसित है. इसमें देश की जनसंख्या का इतना प्रतिशत है जिसे अँगुलियों पर गिना जा सके. उच्च आय वर्ग वाला तमाम सुख सुविधाओं से लैस. इनके शहर योजनाओं के अनुसार बसते हैं और अगर बिना योजनाओं के बदलते हैं तो उसे योजना में शामिल कर लिया जाता है. इतना ही नहीं नित नूतन ब्रांड की गाडियां, विलासिता के साधन, बच्चों को साहबी बनाने वाले इंटरनेशनल पद्धति का अनुसरण करने वाले शिक्षण संस्थान, पिता–पुत्री, बहिन–भाई के रिश्तों को तिलांजली देते हुए, पब, अश्लील नृत्यों और गानों पर शराब और अन्य नशीली वस्तुओं की गिरफ्त में फंसे युवा.....डौसी का पडौसी को जानना– पहचानना केवल स्वार्थ वश.

भारत की यदि बात करें.......भारत, यह विकाससील है. इसमें आबादी का वो हिस्सा रहता है जो ऊपर वर्णित इंडिया की रोजमर्रा की जरूरतों की आपूर्ति करता है. मसलन घरेलू काम करने वाली बाई, कार की सफाई करने वाला, दूध वाला, धोबी, महाअट्टालिकाओं के गार्ड, इलेट्रिशियन और प्लंबर आदि–आदि. भारत में रहने वाले के पास न अपना कहने को जमीं होती है और न कोई छत. वो झुग्गियों में रहता है, अवैध बस्तियों में या फिर शहर

के कोने में बच गये पुराने किसी शहरी से गांव में. इसके अतिरिक्त सक्षेप में प्रतिदिन कुआँ खोदना और पानी पीना इनकी नियति है. अवसर आने पर एक दूसरे के काम आना, सुख–दुःख को अपना मानना. उपरोक्त वर्णित इंडिया और भारत के मध्य एक चिर परिचित मध्यम वर्ग है जो उस शिखर को तो छूने में समर्थ नहीं और न ही भारतीय संस्कारों से स्वयम को पृथक रख पा रहा है, और न ही केवल भारतीय बन कर रहना चाहता है. बलात्कार का जहाँ तक संबंध है कि वो इंडिया में होते हैं भारत में नहीं, पर विचार करने के लिए मेरे विचार से ये अंतर, इसके पीछे मानसिकता को समझना आवश्यक है. बलात्कार, अपहरण लड़कियों को विवाह मंडप से उठा लेना आदि प्रचलन में तो भारत इंडिया सर्वत्र हैं, बस स्वरूप में अंतर है.अंतर है उस मानसिकता का जो भारत की जनता पर स्पष्ट है और वहाँ लड़की के साथ ऐसा होने पर शेष समाज उसको पचा नहीं पाता अतः उस लड़की या महिला का जीना दूभर हो जाता है, यहाँ तक कि इस पीड़ा को सहन करने के साथ, उसके परिजन ही उसको दोषी मान बैठते हैं. यहाँ तक कि वो कभी नींद की गोलियाँ खाकर चिर निंद्रा में सो जाती है, तो कभी चुन्नी या साड़ी बांधकर पंखे से लटककर अपनी जान दे देती है और कई बार तो उसको उसके परिजन ही उसको विवश करते हैं, या उसको निर्दयता से मौत की नींद सुला देते हैं.अतः स्वयं लड़की या उसके परिजन लड़की का जीवन बर्बाद होने पर, अपराधी का पता होने पर भी मुहं सिल लेते हैं. प्राय लड़की को धमकी दी जाती है कि ऐसा करने पर उसके परिवार को ही समाप्त कर दिया जाएगा. मरता क्या न करता. शिक्षा की कमी, जानकारी का अभाव, परिवार की सुरक्षा, बदनामी, दबंगों का भय आदि कारणों से ये घटनाएँ सामने बहुत कम आती हैं. वैसे भी अस्पृश्यता का चलते हरिजनों को मंदिर और कुँए पर जाने की अनुमति न देने वाले दबंगों को हरिजनों की सुन्दर बेटियां को बर्बाद करते समय उनकी सोच बदल जाती है, कोई परहेज छुआछूत आड़े नहीं आती. और यही कारण है कि कभी वहाँ निर्वस्त्र महिलाओं की परेड कराई जाती है, तो कभी उनके पति का वध कर दिया जाता है, कभी उनके घरों में आग लगा दी जाती है.उपलब्ध आंकड़ों को यदि सही माना जाय तो क्रिमिनल ला जनरल के अनुसार कुछ हाई कोर्ट में ८० प्रतिशत और सुप्रीम कोर्ट में ७५ प्रतिशत केसेज ग्रामीण क्षेत्रों में पंजीकृत है, इसी प्रकार गेंग रेप के मामलों का अधिक प्रतिशत भी ग्रामीण क्षेत्रों से है.

इंडिया में रहने वाले अधिकांश जन अपेक्षाकृत ऐसी घटनाओं से प्रभावित नहीं होते और घटनाएँ भी आम हैं अतः प्राय देख कर भी आँखें बंद रखी जाती हैं. आपाधापी, भागदौड के चलते उनको इतनी फुर्सत नहीं कि व्यर्थ में किसी के मामले में टांग अड़ाए. वैसे भी पड़ोसी ही पड़ोसी को नहीं पहचानता. पढ़ाई या नौकरी के कारण परिवारों से बाहर रहते हुए लड़के–लड़कियां स्वयं को स्वतंत्र अनुभव करते हैं, और बुराई में सदा आकर्षण होता है, उधर फिल्में, इंटरनेट, मोबाइल का दुरूपयोग, कुछ साथियों का उन्मुक्त जीवन, लिव इन रिलेशनशिप में रहना, मौज–मस्ती कोई झंझट नहीं आदि भी प्रभावित करते हैं, अतः भटकाव अधिक है. परिणामस्वरूप जहाँ आम आँखें बुराई खोजती हैं, वो सामान्य दिखने लगता है और मीडिया भी इस संदर्भ में अधिक सक्रिय रहता है, अतः प्राय घटनाएँ प्रकाश में अधिक आती हैं.

हाँ सत्यता इतनी अवश्य है कि शराब का आम होता चलन सर्वाधिक उत्तरदायी है इन घटनाओं के लिए, जिसके चलते व्यक्ति अपना तन तो खोखला करता ही है,उसको उचित–अनुचित में कोई अंतर नहीं दिखता और शैतान हावी रहता है उस पर. और यह कारण भारत और इंडिया दोनों में प्रभावकारी है. इसके अतिरिक्त भी अश्लील–भद्दे गीत, संवाद दृश्य कुत्सित भावनाओं को जगाते हैं. इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रोनिक और प्रिंट मीडिया में अधिकांश समाचार और दृश्य ऐसे ही होने के कारण भारत में भी यह प्रचलन बढ़ रहा है. थोडा बहुत अंतर मिल सकता है तो उस भारत में जहाँ आधुनिक सुविधाओं के नाम पर कुछ भी नहीं,न वहाँ फिल्में है, न अश्लील गीत और संवाद, न मोबाइल जहाँ पहले पेट भरने को रोटी चाहिए और जहाँ हम आप कोई नहीं पहुँच पाते.

बुराई का रोग पनपना आसान है,परन्तु उसको समूल नष्ट करना असंभव और वो भी हाँ, त्वरित, कठोर, निष्पक्ष न्याय के रूप में रोक लगा सकते हैं. शेष तो परिवार के संस्कार ही तारणहार हैं. उत्तम है समस्या का निवारण न कि भारतीय पुलिस की तरह ये देखना कि किसका क्षेत्र है. क्षेत्र चाहे जो भी हो बहिन बेटियां तो हमारी ही हैं, देश की नागरिक हैं. अतः बेटियों को सदाचार की शिक्षा देने के साथ लड़कों को भी संस्कारित करना और उत्तरदायित्व सौंपना अनिवार्य है.

जीतिए इनाम

प्रथम पुरस्कारः 1100 रुपए
द्वितीय पुरस्कारः 800 रुपए
तृतीय पुरस्कारः 500 रुपए
तीन रचनाकारों को सांत्वना पुरस्कार 200/-

सृजक पत्रिका के आगामी अंक में परिचर्चा में भाग लेकर जीतिए इनाम। परिचर्चा के विषय निम्नवत होंगे-

1. क्या आज के आधुनिक युग में दैविक कृपा को वैज्ञानिक चमत्कारों ने प्रतिस्थापित कर दिया है ? (अध्यात्म बनाम विज्ञान)
2. ईश्वर का कौन सा अस्तित्व सार्थक है....निराकार या साकार ? या मूर्ति पूजा श्रेयस्कर है या निर्गुण ब्रह्म की उपासना।
3. धर्म व्यक्ति व समाज को तोड़ता है या जोड़ता है ?
4. ईश्वर को प्राप्त करने का कौनसा मार्ग श्रेष्ठ है.... भक्ति मार्ग या कर्मकांड मार्ग ?

अधिक जानकारी हेतु पृष्ठ 89 देखें।

'सृजक' का आगामी अंक

अध्यात्म विशेषांक

सम्पादकीय कार्यालयः
'ॐ शिव माँ प्रकाशन'
श्री साई राम शिवम निवास,
शिवपुरी, बेलबनवा, मोतिहारी,
पूर्वी चम्पारण, बिहार
पिन-845401
Email: contact@sahityapremisangh.com
website: www.sahityapremisangh.com
Facebook:
https://www.facebook.com/Srijakhindi

मैं, तुम और वो

एक प्रेम कहानी

सुनील कुमार

दोस्तों

नमस्कार आज मैं आप लोगों के सामने एक प्रेम कहानी रखने जा रहा हूँ। अब जैसा की लाजमी हैं कहानी प्रेम की हैं तो एक लड़का और लड़की तो होगी ही, तो पहले हम क्यों ना पात्र परिचय करवा दें। इस कहानी में दो लोग हैं एक हैं "मैं" और एक "तुम", चलो मान लेते हैं की, 'मैं' जो हैं वो एक लड़का हैं और 'तुम' जो हैं वो एक लड़की हैं।

पात्र परिचय–:

मैं–: 'मैं' एक मैंगो मैन है, जो किताबें पढता हैं, कहानी लिखता हैं, घंटों अकेले बात करता हैं, अपने आप में खोये हुए हर वक्त कुछ सोचता रहता हैं। कभी खुद से बाते करता हैं, कभी खुद से शिकायत करता हैं, जो यमुना किनारे बैठा रहता हैं, घंटों अकेले, कभी भीड़ में खो जाता हैं पुराने सूटकेस की तरह, कभी भीड़ से अलग दिखता हैं नए गिटार की तरह, एक ओल्ड फैशन लड़का जो गुरुदत्त को देखता हैं और गुलाम अली को सुनता हैं। धुपद और धमार भी जिसे बहुत पसंद हैं। जो मूंगफली खाता हैं, और दूध पीता हैं। साफ शब्दों में कहे तो "मैं" एक मैंगो मेन है यानी आम आदमी।

तुम–: 'तुम' एक महत्वाकांक्षी लड़की है, जो नए फैशन की है, जिसे शॉपिंग पसंद है, नए कपडे और ज्वैलरी जिसे खुद से भी ज्यादा प्यारे हैं। जो हिरोइनों की नकल करना चाहती हैं। जो ब्रिटनी और शकीरा से भी आगे निकलना चाहती हैं। जिसे सिर्फ इससे मतलब है कि वो क्या है, लोग उसे किस नजरों से देख रहे हैं। वो सुन्दर दिखना चाहती है और सुन्दर। शायद अपने आप से भी। उसे नए जमाने की चीजे पसंद हैं, आइसक्रीम, पिज्जा, बर्गर, हॉटडॉग उसे बहुत पसंद हैं। पता नहीं लेकिन कभी–कभी वो वोडका भी पी लेती हैं। फुल टू नए जमाने की जिसे सिर्फ और फैशन पसंद है। कोस्टा की कॉफी, डोमिनोज का पिज्जा उसके प्रिय हैं। चलने की लचक, और बोलने की अदा सब अलग हैं उसकी, एकदम अलग।

वो–: वो सिर्फ एक छलावा है, एक ऐसा छलावा जिसने "मैं" और "तुम" की जिन्दगी में वो तूफान ला दिया जिसकी उसने अपेक्षा भी नहीं की थी।

प्रेम कहानी–:

इस प्रेम कहानी में पुराने जमाने की तरह कोई राजा या रानी नहीं हैं, ना ही शिरी और फरहाद की तरह कोई पहाड़ तोड़कर नदी ला रहा हैं। ये कहानी हैं बस एक ऑफिस के दो लोगों की जो एक दूसरे के संग रहते–रहते पता नहीं कब प्यार कर बैठे। ये घटना हैं 2 दिसंबर 2010 की है, आम आदमी ने अपने पुराने ऑफिस को छोड़कर एक नए ऑफिस को ज्वाइन किया। नए लोग नया काम। नए संगी साथी। पुराने सब छुट गए, बढ़ते वक्त के साथ। 'मैं' को नया काम मिला, दो नए प्रोजेक्ट, दो नए प्रोसेस, सोचा चलो काम में इतना मशगुल हो जाऊंगा की पुराने दोस्तों की याद नहीं सताएगी, लेकिन मैं गलत था, कहने को तो दो प्रोसेस थे लेकिन काम कुछ भी नहीं। पूरा दिन खाली बैठना पड़ता था। उसके कुछ दिनों बाद "मैं" के सामने वाली प्रोसेस में एक लड़की आई "तुम" जैसा की पहले ही लिख चुका हूँ, तुम बिल्कुल वैसी ही थी। संयोगवश दोनों साथ ही में बैठते थे। नया ऑफिस दोनों के लिए नया था और दोनों नए एक दूसरे के दोस्त बन गए और ये दोस्ती पता नहीं कब प्यार में बदल गई, पता ही नहीं चला ना 'तुम' और ना हीं 'मैं' को। दोनों एक दूसरे को टूट कर

चाहने लगे..... रुकिए शायद मैं गलत था, टूटकर तो सिर्फ "मैं" चाहता था। ''तुम'' के लिए तो ये प्यार सिर्फ खेल था एक ऐसा खेल जो दिलों के संग खेला जाता हो। हम साथ में ऑफिस जाने और साथ में ऑफिस से आने लगे। कुछ दिनों बाद हम दोनों ने एक दूसरे को प्रपोज कर दिया। दिन था 11 दिसंबर। प्यार का इजहार रविवार के दिन हुआ था वो भी सन्देश में हम दोनों दूर थे एक दूसरे से बहुत दूर। लेकिन कहते हैं न प्रेम किसी स्थान विशेष में नहीं बांध सकता, ठीक यही हुआ हमारे साथ। एक दूसरे से बहुत दूर होते हुए भी एक दूसरे के हो गए। फिर हम साथ–साथ ऑफिस जाने लगे आने लगे, एक दूसरे के संग टाइम स्पेंड करने लगे, बड़े अच्छे दिन थे कमबख्त, बड़े अच्छे दिन थे। लेकिन कहते हैं ना अच्छे दिन ज्यादा दिन तक नहीं चलते, कुछ ऐसा ही हुआ मेरे साथ अचानक से मेरे प्यार को नजर लग गई, कोई और आ गया शायद उसकी जिन्दगी में, या पता नहीं क्या हो गया, वो अचानक से एक दूसरे लड़के की तारिफें करने लगी, वो होता तो ऐसा करता, वो होता तो वैसा करता से मेरी बहुत फिकर रहती थी। वो मेरे कहे बिना ही मेरी जरूरतें समझ जाता था वगैरह–वगैरह....! फिर तो हमदोनों के बीच "हम" कम और वो ज्यादा रहने लगा। उसे ये पसंद हैं, वो रहता तो मेरे लिए ये लाता, उसे और मुझे लाल और काला रंग पसंद हैं वगैरह–वगैरह। फिर क्या किसी भी मैंगो मेन को ये बुरा लगेगा की उसके रहते उसकी प्रेमिका किसी और के गुण गाये। "मैं" को भी बहुत बुरा लगा, वो भी एक मैंगो मेन था उसके पास भी एक दिल था जो सिर्फ उसके लिए धड़कता था। एक दिन 17 मार्च 2011 को उसने एक लड़के के बारे में बताया एक लड़का था मेरी जिन्दगी में नाम उसका "वो" है। "वो" मुझे बहुत प्यार करता था, वो मेरा ख्याल रखता था, वो ऐसा है, वो वैसा है। "मैं" को बुरा तो लगा लेकिन उसने सोचा की क्यों न वो "वो" से ज्यादा प्यार "तुम" को करने लगे ताकि वो "वो" को भूल सके। उसने उसे और प्यार करना शुरू कर दिया। ''तुम'' के लिए "मैं" ने अपने पुराने दोस्तों को छोड़ दिया नए ऑफिस में जो उसके दोस्त बने थे उनसे किनारा कर लिया। "मैं" को यह भी पसंद नहीं था कि "मैं" ऑफिस में किसी और लड़की से बात करे जबकि वो सारी लड़कियां उसे भाई बोलती थी। फिर भी "तुम" की खुशी के लिए ''मैं'' ने वो सब छोड़ दिया। अपने दोस्त, अपने, रिश्तेदार, अपने घर और यहाँ तक की खुद को भी। "मैं" को लगा की हो सकता हैं की उसके प्यार में ही कोई कमी हैं। उसे ही बदलना चाहिए उसेही कुछ ऐसा करना चाहिए हक "तुम" सिर्फ उसकी बन कर रह जाए। लेकिन "मैं" को क्या पता था की "तुम" के मन में क्या चल रहा हैं और एक दिन आखिरकार वो दिन भी आया जब "मैं" के सारे अरमान टूट–टूट कर बिखर गए। एक झटके में उसने अपने प्यार का महल गिरा दिया। एक शब्द ने उस सारी दुनिया में आग लगा दी जिसके सपने वो सजा कर बैठा था। उसने अपने पुराने दोस्त से 'पैच–अप' कर लिया हैं। वो अब वापस लौट आया हैं और मुझे कभी ना छोड़कर जाने के साथ पहले से भी ज्यादा प्यार करने का वादा किया हैं। ''मैं'' जा रही हूँ। और इसी शब्द के साथ "तुम" चली गई। "मैं" की सपने की दुनिया चूर–चूर हो गयी। वो एक शब्द "मैं जा रही हूँ" तुम के कानों में पिघले शीशे की तरह बन कर गिरा। मैं टूट चूका था, हद से ज्यादा, अपने आप से, खुद से, और दुनिया से। उसे बेगानी लग रही थी ये प्यार मोहब्बत की बातें, ये इश्क का नाम, नफरत हो गयी थी उसे खुद से और दुनिया से। फिर जैसा की हरेक प्रेम कहानी में होता हैं, मजनू वाला हाल हो गया "मैं" का ना किसी से ज्यादा बोलना, ना कुछ सुनना, सिर्फ खुद में रहना और खुद की सुनना.. ..लेकिन कहते हैं न भगवान जब एक रास्ता बंद करता हैं तो दूसरा खोल देता हैं, ठीक ऐसा ही हुआ "मैं" के साथ उसने कलम उठा ली, और उकेर दिए अपने दिल के जज्बात कोरे कागज पर, पाट दिया अपने अरमानों को काले, नीले कलम से, डूब गया वो लेखन और कविता में। कहते हैं ना इश्क में सब शायर बन जाते हैं, लेकिन "मैं" इश्क के बाद शायर बन गया। कई कहानियाँ और कई आलेख लिख डाले, कुछ तो अच्छे अखबारों में प्रकाशित भी हो गए, और इस तरह से मशगुल हो गया वो अपनी दुनिया में की भूल गया अपनी पिछली जिन्दगी। पुनर्जन्म लिया जैसे उसने और अपने जज्बातों को कागज पर सजा कर खुश हो गया और इसी तरह खतम हो गई "मैं" की प्रेम कहानी।

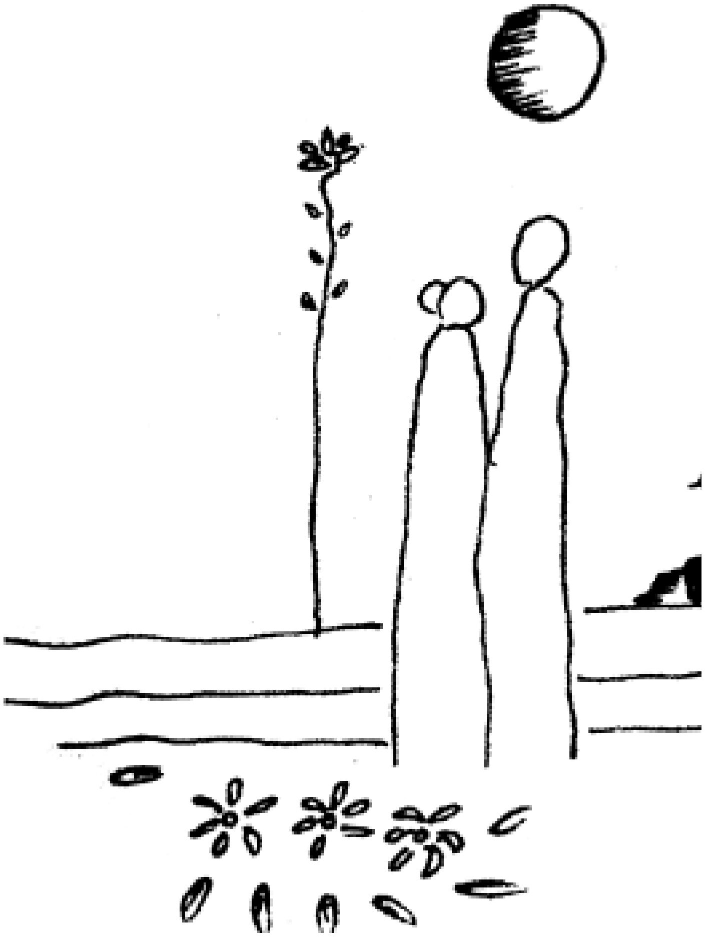

"मैं" और "तुम" आपके हर घर हर शहर में हैं, हर गली नुक्कड़ पे आपको एक "मैं" और "तुम" दिखाई पड़ जाएंगे, जो किसी "वो" के इन्तजार में होंगे। "वो" आज भी हैं हमारे बीच ही जो "तुम" को "मैं" से छीन ले रहा हैं। अगर आपके साथ भी कुछ ऐसा ही लग रहा हैं तो सावधान हो जाइए , क्योंकि "वो" जब आता हैं तो "मैं" की कोई अहमियत नहीं रह जाती। "मैं" बेचारा अकेला सा सिर्फ कहानी ही लिखता रह जाता हैं, और "तुम" आज भी "वो" के साथ अपने जिन्दगी के हसीन सपने देखने में व्यस्त हो जाती हैं। लेकिन क्या पता अगला नंबर उस "वो" का हो जो "तुम" के लिए अपने आप को "मैं" समझ रहा हो। क्या पता उस "वो" के लिए भी कोई दुसरा "वो" तैयार हो रहा हो। जरा सोचिये.....?

◆

कुछ खासः अंक विशेष

वेलेंटाइन डे पर प्यार की पढ़ाई

मोतीझील की सूखी झील के टूटे पेड़ों के झुरमुटों के इर्द-गिर्द, दिलों के मंदिर में बदलते विद्यामंदिर में अपने भविष्य को चमकाने की जगह, अपने वर्तमान में ही मग्न या मंदिर में राधा-श्याम को पूजने के बहाने अपने-अपने राधा-श्याम संग कुछ लोग दो होते हुए भी एक लग रहे हैं। लगता है जैसेः हीर-रांझा,, रोमियो-जूलियट, लैला-मजनूं आदि वैलेंटाइन डे के बहाने इस धरती को पुनः प्रेम मय करने आ गए हैं। कभी विद्यालय का मुंह न देखने वाले आज फिल्मी नायक-नायिकाओं की भांति कटे-छटे,छोटे-छोटे, रंग-बिरंगे परिधानों में सज-संवरकर इस चौदह फरवरी के महाकुंभ के प्रेम पावन पर्व पर शाही अंदाज में इन संगम तटों पर महामिलन हेतु पधार रहे हैं। चहुंओर इत्र और गुलाब के गुलाबी फूलों की महक, इधर-उधर होते कीमती तोहफों की खनक, महामिलन के यात्रियों से भरी बिना रोशनी की ऊबढ़-गाबढ़ गढ्ढों वाली सड़क, कुछ दिलों के कनेक्ट ना हो पाने की कसक और कुछ लोगों के इस मुहब्बत रूपी कबाब में हड्डी बनने की ठसक से सारा वातावरण गुलाबी-गुलाबी और लाल पीला हो रहा है।

उधर हमारे पढ़ाकू प्रोफेसर शेखू, जो थ्योरी पढ़ाने हेतु छात्रों को खोज रहे हैं। मगर छात्र हैं कि सन्त श्री श्री वेलेंटाइन के विशेष सेमिनार में प्रो० मटोक थान के संग ढाई अक्षरों का मटक-मटक कर पूर्ण प्रेक्टिकल ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं और कुछ चांद और फिजा की जिन्दगी के नाटकीय पात्रों की तरह एक दूसरे के साथ इश्क के खट्टे मीठे स्वाद चख रहे हैं।

महापर्व वेलेंटाइन डे सप्ताह भर मनाया जाने वाला प्यार, मोहब्बत और इश्क का अनूठा त्योहार है। सर्व प्रथम सात फरवरी को रोज डे मनाया जाता है; इस दिन दिल की फुलवारी में प्यार के फूल खिलते हैं। फिर आठ फरवरी प्रपोज डे मनाया जाता है; यह दिन उस खिले हुए फूल को कबूलने वाला दिन होता है। नौ फरवरी को चॉकलेट डे होता है; इस कबूलनामे की खुशी में देशी लड्डू छोड़कर विदेशी चॉकलेट खाकर मुंह मीठा किया जाता है। दस फरवरी को टेडी डे के रूप में मनाया जाता है। इस दिन जोड़े एक दूजे को टेडी के रूप में अपनी प्रेम संवेदनायें भेंट करते हैं। ग्यारह फरवरी प्रॉमिस डे के रूप में मनाने का प्रावधान है, किन्तु ये प्रॉमिस, कस्में, वादे सिर्फ कहने के लिए होते हैं। निभाने के लिए नहीं। बारह फरवरी किस डे के रूप में जगप्रसिद्ध है। इस डे पर क्या होता है ये सबको पता रहता है; ना पता हो तो इमरान हाशमी की फिल्म किस दिन काम आयेगी। तेरह फरवरी को हग डे आता है इस दिन गले लगकर आनंदित होने का प्रावधान है। तब कही जाकर अंत में इतने सारे कस्में वादे निभाने और प्यार वफा के गीत गाने के बाद इतने इंतजार और तड़प के बाद, महाचाहत वाला चौदह फरवरी का महापर्व वेलेंटाइन डे आता है। यह त्योहार भी बहुतों को हंसाता है, बहुतों को रुलाता है। क्योंकि इस त्योहार का आनंद भी इश्क कला के होनहार विद्यार्थी ही उठा पाते हैं बाकी तो सल्लू मियां की तरह इधर-उधर ही डोला करते हैं।

एक हमारे प्रो० शेखू हैं जो सफेद बाल व तमाम डिग्रियां समेटे हुए भी इस मूल तत्व इश्क ज्ञान से अपरिचित हैं वो सोचते हैं; क्या भारतीय समाज में इस तरह के पर्व उचित हैं ? क्या विद्यालयों का इश्कालयों में बदलना उचित है ?

बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'
समपर्क सूत्रः 206, टाइप-2,
आई.आई.टी. कानपुर, उ.प्र.
मो. 9956171230
E-mail:kaviutkarsh@gmail.com

समसामयिक मुद्दा

एक लड़की का अन्त

यशवंत कोठारी
सम्पर्क सूत्रः 86,
लक्ष्मीनगर, ब्रह्मपुरी
बाहर जयपुर-2
Email:
ykkothari3@gmail.com

एक लड़की को जो गिद्धों और भेड़ियों के सहारे जी रही हो,कोई भी कभी भी कहीं भी मार सकता है। कभी भी उसकी आंतें निकाल सकता है। सरिया उसके शरीर में घुसा कर पैशाचिक अट्टहास कर उसे मरने के लिए ठण्डी सर्द रात में सड़क पर फेंक सकता है। व्यवस्था केवल जुगाड कर कार के काले पर्दे उतारने के आदेश दे सकती है। व्यवस्था जानती है कि लड़की घायल है तन, मन और धन से। वह बच नहीं सकती है। उड़ नहीं सकती है। हँस नहीं सकती है। केवल रो सकती है। उसके पंख नोच लिए गये है। उसका अन्त तय है, आज नहीं तो कल या शायद परसों तरसों या नरसों।

कभी कभी व्यवस्था उसे सुरक्षा देने के पहले सड़क से उठा कर लाती है। उसे गिद्धों के हवाले कर के चली जाती है। व्यवस्था उसे एक सम्पूर्ण आकाश, शुद्ध हवा, पानी और थोड़ी सी जमीन देने का वादा करती है, मगर लड़की इन सब को पाने के पहले ही गिद्धों, भेड़ियों, की मांद में घसीट ली जाती है। गिद्ध, भेड़िये उसे बताते है कि उसे उनकी शर्तों पर जीना पड़ेगा। सम्पूर्ण व्यवस्था का आकाश हमारे पांवों के नीचे है। पर लड़की का मन कुछ उंचा उड़ने के लिए बेताब होता है। लड़की एक चिड़िया की तरह चहकना चाहती थी, गिद्धों भेड़ियों को यह ना मंजूर था। भेड़ियों को एक लड़की का लड़कपना, हँसना, बोलना, मुस्कराना सब गैर वाजिब लगता था।

कल लड़की को चोंचों से गोद–गोद कर मार डाला गया। वे सब इस बात से दुखी थे कि इतने दिन लड़की को क्यों बचाये रखा वे तो कभी भी नाश्ते में, भोजन में या किसी पार्टी में उसे चखकर पेट भर कर खा सकते थे।

लड़की के पंख नोच लिए गये। अन्तिम कराह भेडिघ्यों की मनहूस आवाज और गिद्धों के हँसी–ठट्टे में दब गई। एक प्रतिभा का करुण, त्रासदायक अन्त। अपना आकाश तलाश्ना कितना मुश्किल है यह लड़की ही नहीं उसकी सभी नस्लें जानती है। लेकिन लड़की ने मरते–मरते भी अन्त में एक जोरदार –शानदार–मजेदार बात कहीं कि आकाश, धरती, हवा, पानी, रोशनी और जीवन की खुशियां, इन भेडियों, गिद्धों के बाप की नहीं है। महा भोज के बाद भी गिद्ध मस्ती में घूम रहे है। भेड़िये टहल रहे है। गूंगी, बहरी, लूली, लंगड़ी व्यवस्था यह सब देख सुन रही है। हम सब उस लड़की की खबरों को देख–सुन रहे है। सिहर रहे है। चौनल टी आर पी बढ़ा रहे है। अखबार बिक्री बढ़ा रहे है, लेकिन लड़की का अन्त कभी गिद्धों और भेड़ियों में दया, ममता, जगायेगी ? कभी भेड़िये सोचेगे कि इन जश्नों में हमारी हिस्सेदारी खत्म होगी। गिद्ध–भेडिये हंस रहे हैं। लड़की की नस्ल मातम मना रही है। व्यवस्था मौन है। मगर आम आदमी मुखर हैं। यही मुखरता भवितव्य है।

कथालोक

सॉरी सर

–सतीश मापतपुरी

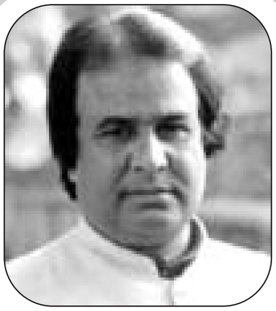

सतीश मापतपुरी
ई–12, पीसी कॉलोनी,
कंकरबाग, पटना
मो. 09334414611
E-mail:mapatpurisatish@gmail.com

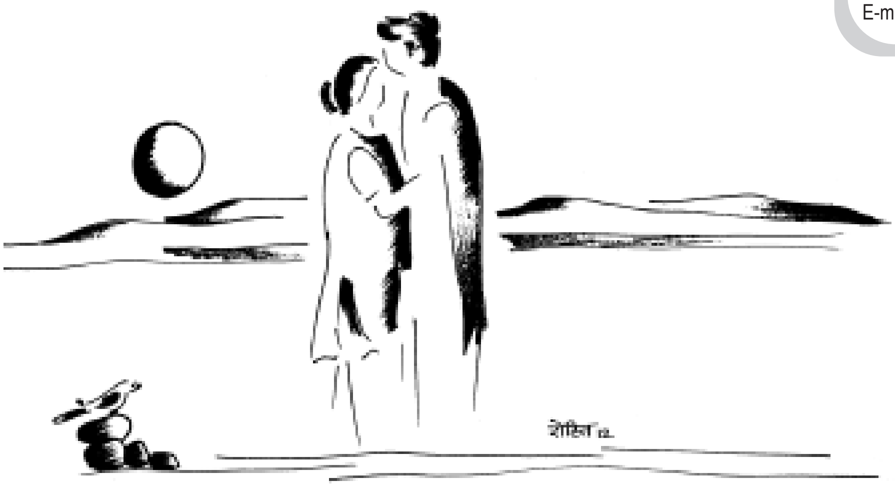

कहानी

मनोविज्ञान का ज्ञाता होना अलग बात है, अपनी मनोदशा पर नियंत्रण पा लेना बिल्कुल अलग बात. शायद मन का भाव चेहरे पर लिख जाता है अन्यथा प्रो. सिन्हा से प्रो. वर्मा यह नहीं पूछ बैठते– ''कुछ परेशान दिख रहे हैं, सिन्हा साहेब, क्या बात है ?''

''नहीं तो, परेशानी जैसी कोई बात नहीं है.'' और एक मरियल सी मुस्कान प्रो. सिन्हा के सूखे होठों पर अलसाई सी पसर गई. संभवतः आदमी ही सृष्टि का एकमात्र वो अजीबोगरीब जीव है जो एक साथ सैकड़ों झूठ ओढ़े भी जी सकता है. प्रो. सिन्हा अच्छी तरह जानते थे कि उनकी मनःस्थिति से लोग अनिभिज्ञ नहीं हैं. कॉलेज में दबी जुबान लोग उनके सम्बन्ध में तरह–तरह की बातें करने लगे थे. अंग्रेजी के प्रो. एम. के. वर्मा, जो अपनी मजाकियां शैली और हंसोड़ प्रवृति के कारण काफी चर्चित थे, भला इस दुर्लभ अवसर को अपने हाथों से कैसे जाने देते? जार्ज बर्नाड शा और शेक्सपीयर के नाटकों का चरित्र–चित्रण पढ़ाते–पढ़ाते किसी का चरित्र–चित्रण करने की एक अनोखी एवं अद्भुत कला प्रो. वर्मा में विकसित हो चुकी थी. प्रो. सिन्हा की परेशानी को आधार बनाकर उन्होंने कुछ काल्पनिक कहानियां गढ़ ली थी और सबसे अलग–अलग ढंग से कहकर प्रो.सिन्हा को अच्छा–खासा मजाक बना दिया था. एक दिन इसी प्रकरण पर प्रो. वर्मा का धाराप्रवाह व्याख्यान चल ही रहा था कि अचानक प्रो. सिन्हा अंग्रेजी विभाग में आ धमके. वर्मा जी उन्हें देखकर झेंप गए. प्रो.सिन्हा ने शालीनता के साथ सिर्फ इतना ही कहा– ''जीवन के कुछ पहलू ऐसे भी होते हैं वर्मा साहेब, जिन पर हंसी–मजाक शोभा नहीं देता. मैं आप पर टीका–टिप्पणी नहीं कर रहा हूँ, आप न सिर्फ मुझसे उम्र में बड़े हैं बल्कि मेरे लिए सम्मानित भी हैं'' फिर प्रो. सिन्हा वहाँ एक पल भी नहीं ठहरे. वर्मा साहेब को पहली बार अनुभूति हुई कि ''अति सर्वत्र वर्जते'' मनोविज्ञान विभाग में आने के बाद भी प्रो. सिन्हा को लग रहा था कि वे अंग्रेजी विभाग में ही हैं और सब उन पर हँस रहे हैं. वे पूरी शक्ति लगाकर चिल्ला उठे– ''चुप हो जाइए आप लोग. ''बाहर स्टूल पर बैठा चपरासी दौड़ा हुआ आया– ''कुछ कह रहे हैं साहेब'' ''नहीं, तुम जाओ'' चपरासी सर हिलाकर बाहर चला गया. प्रो. सिन्हा ने जेब से मुड़ा–तुड़ा एक छोटा सा पत्र निकाला और खोलते–खोलते न जानें क्या सोचकर पुनः जेब में रख लिया. शायद एक बार फिर पढ़ने का साहस नहीं जुटा सके, पढ़कर भी क्या होता? अब तक वे सैकड़ों बार इस पत्र को पढ़ चुके थे और हजारों बार अपनी नजरों से गिर चुके थे. उन्हें अपना कद बौना नजर आने लगा था. प्रो. सिन्हा यह सोचकर ग्लानि से भर उठे थे कि न जाने उनके भीतर यह विकार कब से फलता– फुलता आ रहा था. मनोविज्ञान के अनेक संवेदनशील पक्षों पर सारगर्भित तर्क प्रस्तुत करने वाले प्रो. भवेश चन्द्र सिन्हा अपने भीतर के विकार को क्यों नहीं पहचान सके........ यह बात उन्हें भीतर ही भीतर खाए जा रही थी. औरों की नजरों से गिरकर तो इंसान संभल भी सकता है पर अपनी नजरों से गिरकर संभलना कष्टप्रद भी होता और लज्जास्पद भी. उन्हें अपनी प्रतिभा, विद्वता, क्षमता, दक्षता सब बेमानी लगने लगी थी. सामने वाले का चेहरा देखकर मन का भाव पढ़ने में दक्ष माने जाने वाले प्रो. भवेश चन्द्र सिन्हा इक्कीस वर्ष की युवती के मन का भाव पढ़ने में क्यों चूक गए?.......... सौन्दर्य की चकाचौंध में उनका ज्ञान–चक्षु क्यों चौंधिया गया?........ उनकी सारी प्रतिभा, सारी विद्वता यौवन की धरातल पर क्यों फिसल गयी? क्या उनके ज्ञान में मात्र ऊंचाई है, गहराई नहीं ? इसी तरह की बातें इन दिनों प्रो. सिन्हा को परेशान कर रही थी, अन्यथा दर्जनों मोटी–मोटी पुस्तकों के लेखक के जीवन में किसी की चार पंक्तियाँ यूँ भूचाल न ला देती........................ इस छोटे से पत्र के समक्ष उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रामाणिक व्याख्या प्रस्तुत करने वाली अपनी हर पुस्तकें ओछी एवं छिछली लगने लगी थी. प्रो. सिन्हा चहलकदमी करते–करते एक कुर्सी पर थक कर निढाल हो गए. थोड़ी देर आँखें मूंद कर कुछ सोचते रहे, फिर जेब से वही पत्र निकाल कर आँखों के आगे फैला दिया. प्रो. भवेश चन्द्र सिन्हा मनोविज्ञान के कुछ इने–गिने प्रोफेसरों में से एक थे. अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों में उनके व्याख्यानों की भूरि–भूरि प्रशंसा हो चुकी थी. पत्र पत्रिकाओं, जर्नलों आदि में उनके सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा जा चुका था. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रो. सिन्हा के अनेक टॉक प्रसारित हो चुके थे. ज्ञान, प्रतिभा एवं विद्वता का तेज–पुंज उनके चेहरे पर स्पष्ट दृष्टिगोचर था. पचपन की वयस में भी चेहरे की कांति एवं आभा यौवन का आभास दिलाती थी. प्रो. सिन्हा के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी खास बात थी कि लोग बरबस उनकी तरफ आकर्षित हो जाते थे. विषम से विषम परिस्थिति को भी सहज एवं स्वाभाविक ढंग से झेल लेना प्रो. सिन्हा की विशेषता थी. अपनी जान से प्रिय अपनी पत्नी सोनाली सरकार की मौत को अपने इकलौते पुत्र राक.

कहानी

ेश के लिए खामोशी से झेल गए थे प्रो. सिन्हा. उस दिन बी.ए. पार्ट–2 के क्लास में सामाजिक अभिवृतियों पर व्याख्यान देते हुए आगे की बेंच पर बैठी एक लड़की को देख कर प्रो. सिन्हा बुरी तरह चौंक पड़े थे. वह लड़की अजीब नजरों से अपलक उन्हें घूर रही थी. फिर उस दिन प्रो. सिन्हा को बीच में ही अपना व्याख्यान स्थगित कर देना पड़ा था.मनोविज्ञान विभाग में आकर भी प्रो. सिन्हा उसी लड़की के बारे में घंटों सोचते रहे. यदि इस लड़की के गाल पर मस्सा होता और उसके बाल लम्बे होते तो वह बिल्कुल सोनाली दिखती, सोचते–सोचते बुदबुदा उठे प्रो. सिन्हा. अचानक उनकी नजर दरवाजे पर गयी और उसी लड़की को पर्दा हटाकर अपनी तरफ देखते हुए देखकर प्रो. सिन्हा उछल पड़े. प्रो. सिन्हा कुछ कहते इसके पहले ही वह लड़की जा चुकी थी.................. कौन है यह लड़की ? .... मुझे ऐसे क्यों देखती है?............ और एक दिन क्लास में प्रो. सिन्हा ने उस लड़की से उसका नाम पूछ दिया......... ''सोनाली''...... .... सोनाली सुनते ही प्रो. सकते में आ गए, अनायास उनके मुंह से निकल पड़ा......... ''सोनाली सरकार?''

''जी नहीं, सोनाली घोष.'' प्रो. सिन्हा ने आज बड़े गौर से उस लड़की की आँखों में देखा. मनोविज्ञान के विशेषज्ञ के लिए उस लड़की की आँखों की भाषा एवं भाव का अर्थ समझना कौन मुश्किल बात थी? अपने लिए उस लड़की के मन में विशेष स्थान देखकर प्रो. सिन्हा असमंजस में पड़ गए. आखिर कौन है यह लड़की?............... मेरे लिए उसके मन में क्या है?............... श्रद्धा............... या?..... अपने मन में उठ रहे दूसरे विचार को उन्होंने तत्काल झटक दिया.

प्रो. सिन्हा जितना ही उस लड़की के बारे में सोचते, वह उन्हें उतना ही रहस्यमय प्रतीत होती. अपने शयन–कक्ष में अधलेटे वह उसी लड़की के बारे में सोच रहे थे कि अचानक टेलीफोन की घंटी बज उठी. प्रो. सिन्हा अधलेटे ही फोन का चोंगा उठाकर बोले – ''हैलो, प्रो.सिन्हा स्पीकिंग'' उधर से आवाज आई......''सर, मैं सोनाली बोल रही हूँ''

प्रो. सिन्हा बिस्तर पर लगभग उछल पड़े. फोन पर उधर से आवाज पूर्ववतः आ रही थी..... ''सर, आपसे एक रिक्वेस्ट है......... यहाँ की पढ़ाई कुछ समझ में नहीं आ रही है........ ...... आप मुझे साइक्लोजी में गाइड कर देते तो........... ''प्रो. सिन्हा ने बीच में ही बड़ी रुखाई से कहा–'' मैं ट्यूशन नहीं लेता और फोन पटक दिया. किन्तु फोन पटक कर भी प्रो.सिन्हा अपने ख्यालों से सोनाली को झटक नहीं पाए. सोनाली घोष के बारे में सोचते–सोचते अनायास उन्हें अपनी दिवंगत पत्नी सोनाली सरकार का स्मरण हो आया.... .... उस दिन भी टेलीफोन की घंटी बजी थी.....................

प्रो. सिन्हा के फोन उठाते ही उधर से आवाज आई थी......... ''मैं आपको एक बहुत बुरी खबर दे रहा हूँ प्रो. साहेब, जिस प्लेन से सोनाली सरकार आ रही थीं........ वह क्रैश कर गया............ शी इज नो मोर................ ''टेलीफोन का बेजान चोंगा उनके हाथों में झूल कर रह गया. बगल में बैठ कर होमवर्क कर रहे अपने आठ वर्षीय पुत्र पर एक नजर डालते हुए वह बाथरूम में जा घुसे थे. परिवार वालों ने उन पर दूसरी शादी के लिए काफी जोर डाला, यहाँ तक कि उनके बाल –सखा एवं सहकर्मी, हिंदी के प्रोफ़ेसर वेणुगोपाल त्रिपाठी से भी उन पर दवाब डलवाया पर प्रो. सिन्हा टस से मस नहीं हुए. प्रो. सिन्हा ने यह कहकर प्रो. त्रिपाठी का मुँह बंद कर दिया था कि मैं तो अपने बेटे का मुँह देखकर जिंदा हूँ अन्यथा सोनाली के बिना जीने की कल्पना भी नहीं करता.

प्रो. त्रिपाठी सिन्हा और सोनाली के प्रेम–प्रसंग के राजदार थे और सिन्हा साहेब की मनःस्थिति को भली भांति समझते थे, लिहाजा वे चुप्पी साध लिए. प्रो. सिन्हा जब भी तनाव में होते तो प्रो. त्रिपाठी के पास चले जाते. त्रिपाठी जी ही एकमात्र व्यक्ति थे जिनसे सिन्हा साहेब अपने दिल की बात खोलकर कह सकते थे. वह प्रो. त्रिपाठी के यहाँ जाने के लिए घर से निकलने ही वाले थे कि किसी ने कॉलबेल बजाया. दरवाजा खोलते ही प्रो. सिन्हा चौंक पड़े............. सोनाली एक अधेड़ आदमी के साथ दरवाजे पर खड़ी थी.............. ''मैं डॉक्टर देवव्रत घोष हूँ''.....................साथ आये सज्जन ने नमस्कार करते हुए अपना परिचय दिया. डॉक्टर घोष एक जाने–माने सर्जन थे, लिहाजा सिन्हा साहेब को उनका नाम मालूम था. शिष्टाचारवश ने उन्होंने डॉक्टर घोष का आवभगत किया. बातचीत में डॉक्टर ने बताया कि सोनाली उनकी भांजी है. हम मंदिर से लौट रहे थे. इसकी इच्छा हुई कि आपको प्रसाद देते हुए चलें.सोनाली अपने पापा से बहुत प्यार करती थी. आज उनकी पुण्यतिथि है. सोनाली अपनी माँ के साथ कलकत्ता में रहती थी.पिछले साल माँ का भी निधन हो गया तो मेरे पास यहाँ चली आई. सोनाली अनाथ है यह जानकर प्रो. सिन्हा के मन में पहली बार उसके लिए सहानभूति पैदा हुई और फिर सोनाली उनके यहाँ एक घंटा के लिए शाम को पढ़ने आने लगी. प्रो. सिन्हा बड़े लग्न से सोनाली को साइक्लॉजी पढ़ाने लगे. धीरे–धीरे उन्होंने महसूस किया कि सोनाली के व्यवहार में एक बदलाव सा आता जा रहा है. वह अब पढ़ने में कम और उनके करीब आने और उन्हें स्पर्श करने में ज्यादा रूचि लेने लगी है. वह किसी न किसी बहाने प्रो. सिन्हा के बिल्कुल करीब आकर सट जाती थी.

एक बार पेन्सिल छिलते वक्त ब्लेड से प्रो.सिन्हा कि अंगुली कट गयी तो सोनाली झट से उनकी अंगुली अपने मुँह में लेकर चूसने लगी. अपनी दिवंगत पत्नी की हमशक्ल एवं हमनाम नवयुवती के सामीप्य का असर धीरे–धीरे प्रो. सिन्हा पर होने लगा. यौवन का धरातल फिसलन भरा होता ही है. धीरे–धीरे प्रो. सिन्हा के मन में सोनाली के लिए अनुराग पैदा होने लगा. सोनाली घोष की सूरत में अब अक्सर प्रो. सिन्हा को सोनाली सरकार की सूरत नजर आने लगी. धर्म–अधर्म, सही–गलत, पाप–पुण्य दरअसल हमारी सोच एवं नजर में होता है. जिस चीज को जिस सोच एवं नजर से देखते हैं, हमें वह चीज वैसी ही दिखने लगती है. इंसान जो करता है उसे सही और उचित सिद्ध करने के लिए हजार तर्क और उदाहरण खोज लेता है. प्रो. सिन्हा ने भी यह तर्क देकर कि ईश्वर ने उनकी सोनाली को सोनाली घोष के रूप में लौटा दिया है. सोनाली घोष सोनाली सरकार की स्मृति को सजीव रखने का सबसे अच्छा माध्यम हो सकती है.

सोनाली घोष का उनके जीवन में आना एक कुदरती संयोग है, सोनाली से प्यार करने को उचित मान लिया. प्रो. सिन्हा की उजाड़ जिन्दगी में सोनाली घोष बहार बनकर आ गयी थी. अब उन्हें अपनी नीरस जिन्दगी सरस लगने लगी थी. औरतों की अपेक्षा पुरुषों में अधिक उतावलापन होता है. एक दिन सोनाली को पढ़ाते–पढ़ाते प्रो.सिन्हा उसका हाथ पकड़ लिया. सोनाली उनका यह अप्रत्याशित व्यवहार देखकर हक्का–बक्का रह गयी. प्रो. सिन्हा सोनाली का हाथ पकड़ कर कहने लगे.....''सोनाली! तुम्हारे प्यार ने मेरे खुश्क जीवन को हरा–भरा बना दिया है. तुम्हारे स्पर्श ने मेरे अपाहिज दिल को फिर से धड़कना सिखा दिया है................. मैं तुम्हें अपना जीवन साथी बनाना चाहता हूँ.''

प्रो. सिन्हा की बातें सुनकर सोनाली हैरान रह गयी. इसके पहले कि प्रो. सिन्हा सोनाली को अपनी तरफ खींच पाते वह अपना हाथ झटके से छुड़ा ली और बिना उनकी तरफ देखे कमरे से बाहर निकल गयी. दूसरे दिन कॉलेज में सोनाली नजर नहीं आई. जब प्रो. सिन्हा शाम को कॉलेज से घर लौटे तो उनकी मेज पर मनोविज्ञान की वह पुस्तक रखी हुई थी जो उन्होंने सोनाली को पढ़ने के लिए दी थी. प्रो. सिन्हा किताब उठाकर देखने लगे. किताब के बीच में एक चिठ्ठी रखी हुई थी. वह चिठ्ठी खोलकर पढ़ने लगे. चिठ्ठी सोनाली की थी........ लिखा था......

''सॉरी सर, मुझे अफसोस है कि आपके प्रति मेरे लगाव ने आप जैसे महापुरुष को इतने नीचे स्तर पर ला खड़ा किया. पता नहीं क्यों, हर मर्द औरत से एक ही रिश्ते की कल्पना करता है. औरत, बेटी और बहन भी हो सकती है ऐसा क्यों नहीं सोचा जाता? मैं आपके करीब आना चाहती थी, आपके प्रति मेरे मन में आकर्षण था, यह सच है. किन्तु, आप जैसे उच्चकोटि के मनोवैज्ञानिक मेरे मनोभाव को गलत समझ बैठेंगे ऐसा नहीं सोचा था. मैं अपने पापा को बहुत प्यार करती थी, आपकी शक्ल मेरे पापा से बहुत मिलती है. आपके करीब आने का यही कारण था.''

सोनाली............

बम सदृश एक धमाका हुआ और प्रो. सिन्हा को लगा कि उनकी प्रतिभा, ज्ञान, विद्वता सबकी नींव हिल गयी है. उनको अचानक अपना कद बौना नजर आने लगा. पत्र उनके काँपते हाथों से छिटक कर नीचे गिर गया. प्रो. सिन्हा फटी नजरों से पत्र को घूर रहे थे. उन्हें महसूस हो रहा था कि पत्र के एक–एक शब्द हजार–हजार बिच्छू बन कर उन्हें डंक मारने लगे हैं.

◆

प्रेम की उत्पत्ति: एक विश्लेषण

“ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होई”

‘ढ़ाई आखर प्रेम का,
पढ़े सो पंडित होई’

विस्तृत प्रेम को सीमित शब्दों में परिभाषित करना असम्भव है। यह एक एहसास है... अथाह..... असीम..... शब्दातीत.......

एहसास है ये
अभिव्यक्ति नहीं
शब्दों में वह
शक्ति नहीं
अच्छा है
निःशब्द रहे
एक शब्द
हाँ
एक शब्द !

(मेरी प्रकाशाधीन पुस्तक..... ‘स्पर्श’...से)

अनेक विद्वानों ने इसे परिभाषित करने की कोशिश की है। जहां तक मैं प्रेम को समझ पाया हूं तो यह कि कोई बेहद ‘प्रिय’ लग जाता है। हमारा मन उस प्रियवर का ‘सानिध्य’ चाहता है। वह प्रियवर का सामीप्य चाहता है ताकि उसे देख सके..... निर्निमेश निहार सके। प्रिय की तस्वीरों का आलम्बन भी इस सामीप्य की अनुभूति के लिये किया जाता है। अगर शारीरिक रूप से सामीप्य सम्भव न हो तो वह चाहता है कि सामीप्य का अनुभव संचार के किसी भी माध्यम से होता रहे। उसके साथ होने से जो आन्तरिक आनंद की अनुभूति होती है। उसका सुख वह प्राप्त कर सके। परन्तु सानिध्य के लिये मर्यादाओं का उल्लंघन प्रेम का अपमान है। अतः सानिध्य की इच्छा उत्कृष्ट हो सकती है, लेकिन ‘यथासम्भव’ हो श्लाघ्य है। ‘यथासम्भव’ शब्द केवल मर्यादासूचक ही नहीं है। बल्कि यह कर्त्तव्य बोधक भी है। सीमा पर लड़ते हुए सिपाही में सामने देश-प्रेम भी है और महबूब से प्रीति भी। स्पष्ट है अपने महबूब से भी मिले लेकिन...... .. यथासम्भव। अर्थात् अपने कर्त्तव्य को निभाने के बाद। फिर मन में एक ‘चाहत’ होती है उसे खुश देखने की। उसे खुश देखकर मन में एक खुशी होती है। उसकी खुशी के लिये एक प्रेमी कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता है। लेकिन चाह चाहे उसकी खुशी की हो या सामीप्य का, जो भी हो निःशर्त हो। क्योंकि प्रेम का एक अहं शर्त........ ‘निशर्त’ है। यह एक पक्षीय त्याग की अपेक्षा रखता है। देश-प्रेम, मां का अबोध शिशु-प्रेम, ईश्वर-प्रेम आदि एकपक्षीय निःशर्त प्रेम के अनुपम उदाहरण हैं। प्रेम में अगर शर्त आ गई तो फिर तो वह एक समझौता है...... व्यापार है, प्रेम नहीं। इसी तरह प्रेम का एक अन्य अभिन्न अवयव ‘समर्पण’ है जो अपने प्रेम के प्रति एक निष्ठा की मांग करता है। प्रिय के लिये कुछ भी करें तो समर्पित भाव से करें। अपने प्रिय के तन, मन और धन न्यौछावर करने की भावना हो। समर्पित भाव से प्रिय को कुछ भी अर्पित करने से जो खुशी हासिल होती है उसका अंदाजा एक समर्पित प्रेमी ही लगा सकता है। इन अवयवों को देखते हुए प्रेम को यादि परिभाषित करने का प्रयास करें तो कह सकते हैं कि

प्रिय का निःशर्त-समर्पित भला चाहना और यथा संभव सानिध्य की इच्छा प्रेम है।

प्रेम के लिये सभी भाषाओं में न जाने कितने शब्द हैं। कभी कभी प्रेम के लिये प्रयुक्त भिन्न भाषाओं के शब्दों में एक अद्भुत साम्य भी दिख सकता है। जैसे- अंग्रेजी के ‘लव’ (love), सैक्सन के ‘लुफु’ (Lufu), लैटिन के ‘लुबेट’ (Lubet), प्रोटो-जर्मन के ‘लुबो’ (Lubo), का साम्य संस्कृत के ‘लोभ’ या ‘लुभ्’ धातु से विसिमित करता है।

प्रेम की पहली कड़ी है किसी का अच्छा लगना और उसके प्रति चाह जगना। रोचक तथ्य है कि यही मनोदशा ‘लोभ’ में भी होती है। विचारणीय होगा कि आप किसी का लोभ करते है या किसी से प्रेम करते हैं। दोनों ही स्थिति में आप ‘इच्छित’ की इच्छा रखते हैं और उसे पाना चाहते हैं। इस बात का संवरण करना थोड़ा मुश्किल है कि प्रेम में लोभ का एक तत्व समाहित रहता है। कोई वस्तु या व्यक्ति आपको लुभाता है और आपको उसके लिये लोभ उत्पन्न हो जाता है। उसकी लुभावनी सूरत, लुभावनी अदा, लुभावनी बातें.... बस मन को लुभा गईं। अर्थात उसकी लुभावनी सूरत, अदा व बातों के प्रति मन में लोभ पैदा हुआ। इसी तरह मोहक छवि देखकर व्यक्ति मोहित हो जाता है और उससे मोह हो जाता है। मोह वस्तु से भी हो सकता है और व्यक्ति से भी। यही बातें तो प्रेम में भी होती हैं। फिर प्रेम और लोभ में विभेद क्या है?

विभूति कुमार
निरीक्षक,
केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क,
पटना, बिहार।
ईमेल- vibhuti69@gmail.com
facebook.com/vibhuti69
फोन- 09661100507

लोभ एक सामान्य स्थिति है। जो भी अच्छा लगता जाये उसे पाने की इच्छा ‘लोभ’ है। कोई वस्तु अच्छा लगे उसे प्राप्त करते हैं, फिर उससे भी अच्छी चीज दिख जाये, उसे पाने की इच्छा करना लोभ है। यह एक सतत् प्रक्रिया है। मगर प्रेम एक विशेषोन्मुख मनोवृति है। कोई व्यक्ति इतना अच्छा लग जाये कि उसके बाद किसी और की

प्राप्ति की इच्छा ही न बचे, चाहे वह कितना भी बेहतर हो, प्रेम है। मेरा एक शेर है....

बस देख जिनको न हो हसरत और को देखने की
उस हमनशीं को नहीं औ' कुछ बस मोहब्बत समझिए।

जहां लोभ नई-नई इच्छाएं पैदा करता है, वहीं प्रेम इच्छाओं पर विराम लगा देता है, इच्छाओं का दमन कर देता है। प्रकारान्तर से इच्छाओं का दमन ही तो अध्यात्म है। इसलिए प्रेम अपने चरम पर अध्यात्म को छू लेता है।

प्रेम और लोभ में एक अन्तर और है। सामान्यतः प्रेम किसी से भी हो सकता है। जैसे- देश-प्रेम, ईश्वर-प्रेम, सम्बन्धियों से प्रेम, दाम्पत्य-प्रेम आदि। लेकिन लोभ वस्तुपरक होता है। कभी कभी लोभ को व्यक्तिपरक भी देखा जा सकता है, जहां 'व्यक्ति' को 'वस्तु' समझा जाता है। जहां कोई पुरुष भिन्न-भिन्न स्त्रियों को बदलकर प्रेम दर्शाता हो तो वह प्रेम नहीं है, बल्कि नारी को वस्तु समझकर उसका 'भोग' है। दोनों मनोभावों का उद्देश्य आनंद का प्राप्ति है। किसी वस्तु या व्यक्ति को हम इसलिए पाना चाहते हैं कि उसकी प्राप्ति से आनन्द का सुख मिलता है। लेकिन लोभजनित प्राप्ति का सुख क्षणिक होता है, प्रेमजनित प्राप्ति का सुख शाश्वत। लोभ क्षरा प्राप्त 'वांक्षित' से प्रत्युत्तर में उपभोग से संतुष्टि की इच्छा रखते हैं; जबकि प्रेम में वांक्षित से कोई इच्छा नहीं रखते। अगर प्रेम के बदले प्रेम न मिले तो उसे चाहते रहना प्रेम है। असर साहब का एक शेर है...

इश्क है इक निशाते-बेपायां
शर्त यह कि आरजू न रहे

(निशाते-बेपायां-
स्थायी सुख)

वैसे प्रेम को समझना मुश्किल है. .... 'पोथी पढ़ी-पढ़ी जग मुआ, पण्डित भया न कोय'। प्रेम को समझना और मुश्किल तथा जिसके जीवन में प्यार नहीं आया हो, उसे समझना असम्भव। यहां दो सिद्धान्तों के अर्न्तगत हम प्रेम की उत्पत्ति को समझने का महज एक प्रयास करते हैं.......

१- वैज्ञानिक सिद्धान्त
२- मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त

विज्ञान के अनुसार, प्रेम का होना एक सामाजिक जैविक प्रक्रिया है। जैसे हमारी ज्ञानेन्द्रियां भूख-प्यास, निद्रा की पूर्ति चाहती हैं। वैसे ही यौनिक संतुष्टि। विरीत लिंगी के प्रति हमारे अन्दर एक सहज स्वाभाविक आकर्षण होता है। सरल शब्दों में इसे हम यौनिक इच्छा कह सकते हैं। इसकी पूर्ति के लिये हम किसी के प्रति आकर्षित होते हैं। चूंकि यौन के लिये साहचर्य से गुज़रना पड़ता है। इसलिए सौन्दर्य एक प्रभावी कारक हो जाता है। सौन्दर्य के प्रति एक स्वाभाविक मानवीय रुझान होता है। और यह यौनिक इच्छा के साथ मिलकर एक-दूसरे के प्रति आकर्षण पैदा करता है। यही आकर्षण प्रेम की पहली सीढ़ी है। यह आकर्षण जब एकनिष्ठ और समर्पित हो जाये तो उसे 'प्रेम' कहते हैं।

प्रेम की जैव-रसायनिक व्याख्या में हमारे शरीर में बनाने वाले सैक्स-हार्मोन्स...... पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन (testosterone) और स्त्रियां में इस्ट्रोजेन (estrogen) की भूमिका अहं भूमिका होती है। इस हार्मोन के स्त्रवण से यौन इच्छा जागृत होती है और हम साहचर्य के प्रति आकर्षित होती है और साहचर्य के प्रति आकर्षित होते हैं। इस सिद्धान्त की पुष्टि इस बात से होती है कि इस अधिकांश प्रेम युवावस्था में होता है क्योंकि ये सैक्स-हार्मोन्स युवावस्था में बहुलता से स्त्रावित होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ इसका स्त्रवण घटता जाता है।

प्रेम होने के एहसास भर से या प्रेम-प्राप्ति की अनुभूति से व्यक्ति को असीम खुशी का अनुभव होता है। इस खुशी का भी जैव वैज्ञानिक आधार है। न्यूरोविज्ञान में हुए आधुनिक शोध बतलाते हैं कि जब व्यक्ति प्रेम में होता है तब मस्तिष्क से विशिष्ट रसायन जैसे- फेरोमोन्स (pheromones), डोपामाइन (dopamine), नोर्पिनेफ्राइन (norepinephrin) एवं सेरोटोनिन (Serotonin) स्त्रावित होता है जो मस्तिष्क के प्रसन्नता केंद्र को उत्तेजित करता है और व्यक्ति खुशी का अनुभव करता है। यह वैसी ही एक प्रक्रिया है जैसे दर्द निवारक रसायन का सेवन मस्तिष्क में दर्द की अनुभूति समाप्त कर देता है। या जैसे व्यक्ति नशा का सेवन का मस्ती का अनुभव करता है। आखिर प्यार भी तो एक 'नशा' है। इन हार्मोन्स का सीधा असर हमारी खुशियों से है और उपप्रभाव (side effect) के रूप में यह हृदय-गति, क्षुधा-क्षीणता, अनिद्रा एवं प्रबल उत्तेजना को बढ़ाता है। इस वैज्ञानिक घटना को हम प्रेम में 'बेखुदी' कह डालते हैं।

विश्लेषक प्रेम की व्याख्या को 'विकासवाद' से भी जोड़कर देखते हैं। 'योग्यत्तम की उत्तरजीविता' (survival of the fittest) का सिद्धान्त भी प्रेम के विकास को आधार प्रदान करता है। मानव शिशु को आत्मनिर्भर होने में अन्य प्राणियों की अपेक्षा ज्यादा समय लगता है। इसलिए शिशु के विकास के लिये माता-पिता की सहायता एवं सम्बल आवश्यक हो जाते हैं। इसके लिये माता-पिता का आपसी तादात्मय आवश्यक है और इसको आपसी प्रेम एक मजबूत आधार प्रदान करता है। वहीं दूसरी ओर यौन-संक्रमित रोग, जिससे बांझपन भी आ सकता है, से बचने के लिये बहु-विवाह की जगह एकल-विवाह के प्रचलन के कई और मानवशास्त्रीय पहलू भी है। इस तरह एकनिष्ठ प्रेम को सर्वमान्य आधार मिला जिसकी नींव वैज्ञानिक तथ्यों पर पड़ी हुई है।

इसलिये हम कह सकते हैं कि किसी को देख दिलों का धड़कना, रात-रातभर जगना या किसी के लिये जान देने की तमन्ना आदि मस्तिष्क के अन्दर स्त्रावित होने वाले रसायनों का प्रभाव मात्र है। इसकी पुष्टि इस पुरुष में एक उत्कट खिंचाव रहता है, जो सैक्स के बाद खत्म हो जाता है। इससे पहले खिंचाव फिर दुराव रसायनिक स्त्रवण द्वारा ही तो नियन्त्रित होता है।

प्रेम होने की मेरी अपनी एक **मनोवैज्ञानिक व्याख्या** है। इसे निम्न दो घटकों में समझने का प्रयास करते हैं..

१- आन्तरिक घटक
२- बाह्य घटक

आन्तरिक घटक की व्याख्या अवचेतन मन में स्थित 'प्रतिरूप' के संदर्भ में की जा सकती है। हर इंसान के दो मन होते हैं.......... चेतन मन और अवचेतन मन। मनुष्य के अवचेतन मन में बहुत सी धारणायें, स्वप्न, ग्रंथियां आदि सुषुप्तावस्था में रहते हैं। मेरा मानना है कि इन्हीं अवधारणाओं में अपने प्रेम के प्रति भी एक सुषुप्त अवधारणा होती है। सरल शब्दों में कहें तो अपने प्यार के प्रति एक धुंधली तस्वीर होती है। कोई कोई इस अवचेतन तस्वीर को समझ पाता है तो कोई नहीं भी समझ पाता है। वह तस्वीर इतनी स्पष्ट नहीं होती कि आप किसी को यह कह सकें कि जिसमें ये-ये विशेषण मिल जायेंगे, मुझे उससे प्यार हो जाएगा। कभी-कभी इस धुंधली तस्वीर का प्रतिरूप जीवनभर नहीं मिलता.... और जिन्दगी कट जाती है। होना तो यह चाहिये कि किसी से मिलें और लगे कि यही तो है वो जिसके साथ जिन्दगी जिन्दगी... सी हो जायेगी और इसके बगैर ज़िन्दगी क्या है बस गुजार देने का नाम है

लेकिन अवचेतन मनवाला अस्पष्ट प्रतिरूप कभी-कभी एक 'रूप' के रूप में सामने मिल जाता है..... और प्रथम मिलन में ही लगता है कि इसे तो मैं जमाने से..... या जन्मों से जानता हूं। इसे पाश्चात्य साहित्य में... .. love at first shight कहा गया है। अगर वो अजनबी शीघ्र खुलनेवाला नहीं हो तो अवचेतन-प्रतिरूप से तादात्य बैठने में कुछ समय लग भी सकता है। इसलिये यह जरूरी नहीं कि प्यार पहली नजर में ही हो। ऐसी स्थिति में प्यार धीरे-धीरे दिल में घर करता है। अगर पहली नजर में प्यार हो भी जाये तो इसकी अभिव्यक्ति में मानवीय संकोच भी तो एक पहलू है। यहां सौन्दर्य की भूमिका हो ही, यह आवश्यक नहीं है। कभी-कभी तो सौन्दर्य की भूमिका द्वितीयक हो जाती है। कैस को काली लैला से प्यार हो जाता है। देह की भाषा मौन हो जाती है। अवचेतन मन में कोई रूप ही नहीं बसता बल्कि कोई गुण भी हो सकता है, रूप भी एक गुण ही तो है। जब आप ऐसे ही किसी गुणवाले किसी इंसान से मिलते हैं तो उसका यह गुण आपको इतना आकर्षित करता है कि आप खिंचें चले जाते हैं और खिंचाव अंततः 'प्रेम' में परिवर्तित हो

जाता है। यही कारण है कि किसी से लम्हों में प्यार हो जाता है जबकि किसी के साथ उम्र गुजर जाती है और प्यार नहीं होता है। स्मरण रहे कि यह जरूरी नहीं कि सामने वाले के अवचेतन में भी आपके रूप-गुण जैसी ही अस्पष्ट रेखाएं हों। इसकी परिणति एक पक्षीय प्यार में होती है। एकतरफा ही सही यह भी प्यार है। कोई एक गुण भी काफी होता है प्यार होने के लिए यह एक गुण उन कई अवगुणों पर भी भारी पड़ सकता है। जो भी हो मगर ज्यों ही यह तादात्म्य बैठा, समझिए प्यार हुआ।

बाह्य घटक का आशय बाह्य परिस्थिति से उत्पन्न सानिध्य है। कभी-कभी परिस्थिति हमारे मनःस्थिति पर ऐसा प्रभाव छोड़ती है कि हमें उनसे प्यार हो जाता है। जब हम किसी के सानिध्य में एक अरसे तक रहते हैं तो उनके प्रति प्रेम का जग जाने की सम्भावना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जहां बचपन गुजरता है वहां से ज्यादा सुविधा सम्पन्न जगह पर जाने के बावजूद जन्म-भूमि या उस स्थान के प्रति प्रेम उमड़ता रहता है। सानिध्य का असर प्रथम प्यार में स्पष्ट झलकता है। प्रेमवश जिसके सानिध्य में आप पहली बार आते हैं उससे बेहतर साथी मिलने के बावजूद प्रथम सानिध्य को 'पहला प्यार' कहकर अपनी यादों संजोकर रखते हैं।

बाह्य परिस्थिति का एक रोचक पहलू भी ध्यातव्य है....... 'बाध्य प्रेम'। इसकी उत्पत्ति सामाजिक- पारम्परिक दबाव से होती है। खासकर भारतीय परिपेक्ष्य में वयस्क होते ही विवाह के लिये एक पारिवारिक दबाव बनने लगता है। हमें विवाह के लिये बाध्य होना पड़ता है। दाम्पत्य का अनिवार्य तत्व प्रेम तो गौण हो जाता है। हम किसी से विवाह करने के लिए लाचार हो जाते हैं और फिर उससे ही प्रेम करने के लिए बाध्य। एक ऐसे व्यक्ति से प्रेम करने लिए बाध्य हो जाते हैं जिससे जीवन में कभी मिले तक नहीं हों। मतलब बाध्य प्रेम के लिये अभिशप्त, समाज के सामने सुंदर प्रेम प्रस्तुत करने के प्रयास में दम्पति की उम्र गुजर जाती है। बाध्य प्रेम में कभी कभी तालमेल बैठ भी जाता है मगर अधिकांश स्थितियों में यह केवल 'निर्वाह' बनकर रह जाता है। इसका दूसरा पक्ष भी है...... वयस्क होते ही विवाह के लिए एक पारिवारिक दबाव बनने लगता है और हम मानसिक रूप से विवाह के लिये तैयार या बाध्य हो जाते हैं। उम्र के इस मोड़ पर विवाह के जो विकल्प सामने आते हैं, उनमें से ही किसी एक विकल्प को चुनकर हम विवाह जनित प्रेम के लिए बाध्य हो जाते हैं। सम्भव है कि सामने प्रस्तुत सारे विकल्प अग्राह्य हों लेकिन आपकों उन्हीं अग्राह्य विकल्पों में एक विकल्प से बाध्य प्रेम करना पड़ता है।

एक अन्य स्थिति होती है जब कोई सम्वेदनात्मक रूप से अपनी ओर से कमजोर होता है तब ब्राह्य घटक के प्रभावी होने की सम्भावना बढ़ जाती है, ठीक वैसे की जैसे शरीर की रोग-निरोधक क्षमता (immune system) के कमजोर पड़ते ही रोग के ब्राह्य घटक प्रभावी हो जाते हैं और शरीर में रोग घर कर जाता है। कहते भी तो है कि उसे 'प्रेम रोग' हो गया है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जब व्यक्ति प्यार में टूट जाता है या उसके अपने वर्तमान साथी से प्रेम की ऊष्मा शिथिल पड़ने लगती है, उस समय बाह्य घटक के रूप में किसी का सम्बल सानिध्य के रूप में अधिक आकर्षित करता है। इसकी अनुभूति हो-न-हो लेकिन एक दोस्त के सहारे की जरूरत पड़ती है। यदि यह घटक विपरीत लिंगी है तो यह आकर्षण यदि प्रेम में बदल जाये जो आश्चर्य कैसा? मेरी इस सोच की पुष्टि 'प्रेम त्रिकोण' के विश्लेषण्ण से की जा सकती है। कोई भी व्यक्ति अपने विवाह के प्रथम सप्ताह में अपने साथी को छोड़ किसी अन्य के साथ गैर वैवाहिक सम्बंध (extra marital relation) क्यों नहीं बना पाता.......? इसकी सम्भावना तब बनती है जब विवाह की एक अपेक्षित अवधि गुजर जाती है। अर्थात् जब जीवन साथी के प्रति खिंचाव शिथिल होने लगता है (कारण कुछ भी हो सकता है) तब प्रेम में त्रिकोण की सम्भावना बढ़ जाती है। त्रिकोण प्यार का आवश्यक पहलू नहीं है बल्कि यहां इसका आशय सम्भावना मात्र से है। यही स्थिति प्रेम में टूटे हुए व्यक्ति के साथ होती है। इस कमजोर घड़ी में किसी की सहानुभूति एक सम्बल का काम करती है। इस सम्बल के प्रति आकर्षित होना एक स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है और आकर्षण प्रेम की पहली सीढ़ी होती है।

प्रेम के इस मनोवैज्ञानिक आयाम का रोचक पहलू यह है कि इस व्याख्या में हार्मोन्स की भूमिका नहीं है। इसलिए प्रेम की इस व्याख्या का सम्बंध उम्र से नहीं है चूंकि हार्मोन्स-स्त्रवन का सम्बंध उम्र से होता है। इसलिए इस व्याख्या के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि प्रेम में उम्र में अनपेक्षित अंतर की स्थिति में भी कभी-कभी प्रेम उभरकर सामने आ जाता है। यद्यपि हमारी सामाजिक-धार्मिक, मान्यताएं, पारम्परिक मूल्य, निर्वाह के प्रति निष्ठा, जीवन अवधि आदि कई कारक हैं जो प्रेम में उम्र निर्धारक की भूमिका का काम करते हैं।

प्रेम की उत्पत्ति की दोनों व्याख्याएं अपने आप में अर्थपूर्ण है। कभी कोई कारक तो कभी कोई अकारक जीवन में प्यार लेकर आता है। कभी कभी कई कारक एक साथ प्रभावी हो जाते हैं फिर हमें पास प्यार के अलावा कोई विकल्प ही नहीं बचता। इसके अलावा हमारे शास्त्रों में प्यार की एक और आध्यात्मिक व्याख्या भी है... .... जन्मों का रिश्ता........ पुनर्जन्म. ...... हाथों की लकीरें।

कबीर के ढाई आखर पर दो शब्द कहने के प्रयास में चार शब्द छूट गए। यथा प्रेम के प्रकार, प्रेम का व्यक्तित्व पर प्रभाव, प्रेम और तन, प्रेम और नैतिकता, प्रेम-निर्वाह, प्रेम-विच्छेदनः कारण और निराकरण, प्रेमः कितना अनिवार्य.... आदि पर फिर कभी विमर्श करेंगे। अन्त में इतना कहना चाहेंगे कि प्रेम किसी से मिलने और बस हो जाने की चीज है। नफ़ा-नुकसान सोचकर तो तिजारत की जाती है, मुहब्बत तो बिना सोचे समझे बस हो जाने का एहसास है। मेरा एक शेर देखिये...........

सोचे बिना बस किसी से हो जो
मुहब्बत समझिए
गर सोचकर करते हो तो उसको
तिजारत समझिए

....

प्रेम की 'मनोवैज्ञानिक व्याख्या'

◆

कुछ खासः अंक विशेष

प्यार, अनुराग, मुहब्बत, इश्क

अनुराग त्रिवेदी
'अहसास'

सम्पर्क सूत्रः जबलपुर
फोनः 9893071315
Email:
ehsaascreation@gmail.com

'इन लफ्जों में भटक कर पैच–अप ब्रेक–अप की तंग गलियाँ बन गई हैं। सभी ने अपनी सुविधानुसार प्रेम को परिभाषित भी कर लिया, पर भूल बैठे कि प्रेम एक आत्मिक अनुभूति है,ना कि शारीरिक! जिधर एक का कष्ट दूजे को सोने नही देता या दूजे की विजय कामना में कोई अपनी पलकों में ख्वाब पनपा लेता और हर वक्त को बस, अगले के लिए मन्नत, दुआ में ही खर्च किया करता।

प्रेम अपनी अपूर्णता में भी पूर्ण हुआ, जिसका साक्षी युग युगांतर से ही समय रहा है। जैसे राधा का प्रेम ! जिन्होंने कृष्ण की बाकी संगिनियों की गिनती भुला कर सदा कृष्ण से पहले स्थान लिया। सभी के स्मरण में रहा नाम राधा–कृष्ण! किसी ने इस बात के महत्व पर ध्यान नही दिया। प्रेम के कोमल भाव का आदर और सम्मान तो दानव कुल में जन्मी हिडिम्बा ने भी किया, जिसने सच्चा प्रेम कर नारी सतीत्व को पावन किया और देवी तुल्य पूज्य स्थान प्राप्त किया। अपनी प्रेम वेदना में भक्ति रस में ढल कर उन्होंने भी समग्र प्रेम का दर्शन दिया और अमर हो गई।

प्रेम विषय संगत तब होगा जब वो आत्मीय होकर जुड़ें और जिसका संचालन पूरे आदर, स्नेह, समतुल्यता से होकर एक दूजे के भाग्येश को पूर्ण फलदायक बना कर कुंडली के हेर–फेर भी मिटा दे। संत तुलसीदास, कालीदास की आंख से आकर्षण की प्रेम पट्टी उतरते ही उन्होंने नया सृजन काल जी लिया। तुलसी ने राम–भक्ति में डूबकर, महाकाव्यों की रचना से प्रेम को नई ऊर्जा से अलंकृत किया। यथार्थ यही है कि गहन भावनाओं का समग्र आशय एक छोटे से शब्द 'प्रेम' में छुपा है। ये वो अनमोल मोती है जिसे उथले अर्थ की सतह पर नही, गहराई में डूब कर लेना होगा क्योंकि प्रेम अपनी अनंत गहराईयों को समेटे हुए एक छोटा सा शब्द मात्र नहीं है।

आकर्षण से वशीभूत होकर जो मन में इन्द्रिपाश से बन्धता है वो दीर्घकालीन रिश्ता कायम नहीं कर सकता। प्रेम चपल नहीं हैं ! सरस है, सहज है ! अपितु इसे पाने को कठिनत्तर गिरिश्रृंग ऊचाइयों का प्रमाप लेना पड़ता है, जबकि मनुष्य क्षितिज की तरह पा लेना चाहते हैं इस सतरंगी आभा को, किंतु लम्बा सफर तय करके भी प्रश्न फिर भी कदाचित खड़ा ही रह जाता है कि ''क्या... यही प्रेम है ?''

“जिन्दगी” तेरी मेरी कहानी है...

अंशु हर्ष
सम्पर्क सूत्रः
जयपुर
मो0 9413401555

मैंने इस जीवन का आनंद महसूस किया है मैं जिया हूँ और मैंने प्यार किया है, कुछ इसी तरह की भावनाओं को दिल में रख कर 75 वर्षीय राम स्वरुप जी चाय बना रहे हैं। बड़े प्यार से चाय के साथ थोड़ा बिस्किट नमकीन टोस्ट भी रख लिए है ट्रे में। ट्रे हाथ में ले कर अपने कमरे के तरफ जाते हुए रेडिओ पर बजते हुए गाने के साथ साथ गाना भी गुनगुना रहे हैं... 'हो चांदनी जब तक रात देता है हर कोई साथ, तुम मगर अँधेरे में ना छोड़ना मेरा हाथ।' लीजिये सीता आप की चाय तैयार है और याद है ना आज डॉक्टर आने वाला है आपकी खिदमत में। उनकी पत्नी जिनका असली नाम तो रूपा है पर अपने नाम के अनुसार वो उन्हें सीता कहकर बुलाते हैं और उम्र में दोनों के कोई पांच साल का फर्क है यानी सीता राम स्वरुप जी से पांच साल छोटी है पर फिर भी पूरी जिन्दगी उन्होंने कभी तू और तुम्हारा से बात नहीं की हमेशा आप कहकर ही बुलाया जबकि दोस्त कई बार मजाक बनाते पत्नी को आप कहने वाला तो ये अलग ही प्राणी है।

ज्यादा सर मत चढ़ाओ वरना बाद में पछताना पडेगा और भी ऐसे कई मजाक उड़ाने वाले शब्द... पर राम स्वरुप जी को कोई फर्क नहीं पड़ता वो पढ़े लिखे समझदार इंसान थे और सरकारी नौकरी भी अच्छी पोस्ट वाली थी रिटायर होने के बाद दोनों पति पत्नी अपने जीवन का आनंद ले रहे थे कि अचानक एक दिन सुबह बाथरुम में सीता का पैर फिसल गया और गिरने की वजह से पैर की हड्डी टूट गयी और इस उम्र में हड्डी टूटना .. बहुत ही मुश्किल हो जाता है रीकवरी होना.. फिर भी चार महीनों से राम अपनी सीता का पूरी तरह ख्याल रख रहे हैं आज सीता ने राम को कहा मुझे बहुत बुरा लगता है आप को मेरी इतनी सेवा करनी पड़ रही है, यूं आप रोज सुबह मेरे लिए चाय नाश्ता लाते हैं और बैठे–बैठे पीने में मुझे शर्म आती है। ये क्या कह रही हो सीता.... इतने सालों तक मैं तो जब कभी बीमार भी नहीं हुआ तो भी तुमने मुझे हमेशा बेड टी पिलाई है और मेरा हर काम बड़ी कुशलता और प्यार के साथ किया है मुझे तो कभी बुरा नहीं लगा की तुम मेरा काम कर रही हो......... फिर मेरा और तुम्हारा ओहदा बराबरी का है.... मैं पति हूँ तो तुम पत्नी हो .....हम दोनों का काम हमारा काम है तुम्हारा या मेरा नहीं चलो चलो अब फालतू बातें सोचना बंद करो....... और चाय पीयो... इन्हीं चार महीनों में इन दोनों की दुनिया एक दूसरे तक सिमट कर रह गयी है। राम ने दोस्तों के पास आना जाना छोड़ दिया और सीता का भी सत्संग और आस पड़ोस की सखी सहेलियों के पास बैठना–उठना बंद सा हो गया है अब कोई अन्दर आकर मिल जाता है तो ठीक है नहीं तो दोनों अपनी दुनिया में मस्त राम का काम सिर्फ सीता का ख्याल रखना और सीता भी यही चाहती है कि राम उसके पास बैठे रहे... एक काम वाली कमला घर की साफ–सफाई और खाना बना जाती है जिससे घर का काम सही तरीके से हो जाता है बस कमला की ज्यादा बोलने की आदत है हमेशा आस पड़ोस की बाते करने बैठ जाती है सीता के पास कभी पड़ोस वाले गुप्ता जी की बुराई तो कभी सामने वाले शुक्ला जी की कंजूसी की बातें और खूब मजाक बनाती राम यदि आस–पास ही होते तो टोक देते थे कमला को ये क्या तुम बे सर पैर की बातें करती हो अच्छी बातें किया करो थोडा सीता के पास बैठ कर भजन सत्संग सुना करो नहीं तो पूरा जन्म यूं ही लोगों के घर के काम करते ही बीत जायेगा....इस पर कमला राम से कहती "अरे साब जी अब हमको क्या करना है यही तो हमारी रोजी रोटी है और आप जैसे लोगों के घर में काम करने से ही मुझे तो पुण्य मिल जाता है...... राम सीता की जोड़ी की सेवा कर के मुझे तो हनुमान होने का सुख मिल गया है अब आप बताये और क्या चाहिये इस जीवन में राम बोले ...कमला बातें बनाने में तो तुम बहुत माहिर हो, कोई नहीं जीत सकता तुमसे बातों

में. जाओ अब खाना बना लो काफी बातें हो गयी हैं कहीं आगे के काम करने में तुम्हें देर ना हो जाये...।

पूरा जीवन भाग दौड़ में गुजार देने के बाद अब भी दोनों एक दूसरे के लिए जी रहे हैं, और हर दम यही सोचते हैं ईश्वर ने प्यार, पैसा, सम्पन्नता सब दिया है पर फिर भी बेऔलाद रख दिया काफी सालों तक इस बात का अफसोस था दोनों को पर दो चार साल पहले जब पड़ोस के वर्मा जी का दर्द देख कर ये तकलीफ भी कम हो गयी क्योंकि अपने इकलौते बेटे को बड़े अरमानो के साथ विदेश पढ़ने भेजा था वर्मा जी ने, सोचा था जो सपने उनकी जवानी में घर की जिम्मेदारियों की बीच दफन हो गए थे अपने बेटे की आँखों से देख कर पूरे करेंगे पर बेटा तो वही का होकर रह गया, वहीं शादी भी कर ली और वहां से अपने बूढ़े माँ बाप की कोई खोज खबर भी नहीं ली तब राम सीता ने सोचा इस से तो हम बेऔलाद ही अच्छे कम से कम ये दुःख तो नहीं है के बेटा हमें छोड़ कर चला गया है। आज सुबह की चाय के साथ दोनों अपने जीवन के पुराने दौर में चले गए,....जवानी की दहलीज पर कदम रखते ही परंपरागत तरीके से लड़का लड़की देखना ओर फिर सगाई शादी कर के किस तरह से दोनों के जीवन की डोर बंधी जीवन की शुरुआत में घर परिवार के प्रति सबकी जिमेदारी होने के बावजूद रिश्ते नाते रीति रिवाज घर परिवार से दूर हमारी दिलों की अलग दुनिया थी जिसे हम अपने तरीके से जीते थे और हमारी बातें सिर्फ हमारे लिए होती थी अनगिनत वो खुशनुमा लम्हें जो हमने अपने लिए जीयें वो आज भी हमारी जिंदगी की यादगार सौगात हैं और आज भी हम सिर्फ अपने लिए जी रहे हैं।

तभी राम बोले.. वैसे सीता अगर में बीमार होता तो तुम्हें मेरी सेवा करने में कोई परेशानी नहीं होती क्योंकि तुम औरत हो और हर काम करने की तुम्हारी आदत और क्षमता है लेकिन मुझे भी कोई तकलीफ नहीं है तुम्हारी सेवा करने में बल्कि यही तो वक्त है उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने का जो उस अग्नि को साक्षी मान कर फेरे लेते हुए ली थी। वैसे सीता जिंदगी की धूप से दूर अपने प्यारे छोटे से आशियाने में हर छोटी बड़ी खुशी को जीते हुए इतने साल कब निकल गए पता ही नहीं चला, ऐसा नहीं है की जीवन में कोई दुख कभी आया ही नहीं अगर लोगों की नजरों से सोचे तो बेऔलाद होना सबसे बड़ा दुःख है, पर हमने इसे भी स्वीकार किया। उन लोगों को देखकर जो औलाद होते हुए भी ओल्ड एज होम में रह रहे हैं या दुखी हो कर पल पल अपने बच्चों के आने का इंतजार करते हैं जो उन्हें छोड़ कर कही और बस गए हैं।

आज भी उम्र के इस मोड़ पर हम एक दूसरे के साथ है ये क्या कम खुशी की बात है लो आज मैंने तुम्हारे लिए एक खत लिखा है चार दिन बाद हमारी शादी की सालगिरह है पर तब तक में इन्तजार नहीं कर सका ..

हजारों पल खुशियों के दिए,
लाखों पल मुस्कराहट के,
दिल की गहराईयों में छुपे
वो लम्हें प्यार के,
जिस पल हर छोटी बड़ी
ख्वाहिश पूरी हुई,
हर पल मेरे दिल को
शीशे सी हिफाजत मिली।
पर इन सबसे बड़ा एक पल
एक वो लम्हा...
जहां मैं और तुम नहीं
हम बन जाते हैं।

सीता उस खत को ले कर अपनी आँखों से लगाती है तभी डॉक्टर आते हैं आज उनका प्लास्टर खुलने वाला है.....दोनों को मन ही मन ये चिंता है की पता नहीं अब डॉक्टर चलने–फिरने की अनुमति देगा या नहीं ?

डॉक्टर कहता है ‘‘माता जी अब आप घर में थोड़ा–थोड़ा चलना शुरू कर सकती है.. लेकिन ज्यादा भी नहीं वरना पैर में दर्द की शिकायत हो सकती है... मैं आपको कैल्शियम की दवाई लिख देता हूँ जिससे इस उम्र में हड्डियों में थोड़ी मजबूती बनी रहेगी। बहुत अच्छी और आश्चर्य की बात ये है कि इस उम्र में आप ने काफी अच्छी रिकावरी कर ली है’’ और मैं जानता हूँ ये सब बाबाजी के सकारात्मक विचार और प्यार का कमाल है’.. भगवान करे आप लोगों का प्यार और साथ हमेशा बना रहे और जो भावी पीढ़ी को त्याग, प्रेम और समर्पण की सीख देता रहे। अब मैं चलता हूँ आप लोगों से मिलने आता रहूँगा। ज दोनों खुश थे जीवन की एक बड़ी परीक्षा पास कर ली थी अपने अमर प्रेम के बूते पर और सहनशीलता के साथ ......।

गज़ल

–प्रेम रंजन अनिमेष

बिछड़ के भी कहीं अपनी
वफाओं में रखना
अगर भुला भी दो
दिल की दुआओं में रखना।
वो आशना हो या
अनजान कोई रस्ते पर
गुलों का काम है
खुशबू हवाओं में रखना।
हुई है शाम चलो
डूब जाने दो अब तो
मगर सवेरे की पहली
शुआओं में रखना।
कहा था किसने कि
सपनों में कोई नाम कहो
तुम्हें पसंद है खुद को
सजाओं में रखना।
बहुत सम्भाल के
पौधे ये सूख जायेंगे
हाँ सींचना इन्हें लेकिन
न छाँवों में रखना।
गुजर गया है जो
तस्वीर मत बना उसको
बिखेर कर उसे मौजों
घटाओं में रखना।
है जीती जागती औरत
न कैद कर ऐसे
हया के परदों बनावों
अदाओं में रखना।
दुखों से ही है भरा
तन गरीब लड़की का
न और दुख मगर
उसके भरावों में रखना।
हो दोस्ती या मुहब्बत
हो हाथ हाथों में
कभी न भूले से
जंजीर पाँवों में रखना।
वो बचपना था हमारा कि बस दीवानापन
दिये जला के यूँ कागज की
नावों में रखना।
जरा सी जिन्दगी हर पल को
बाँटते जाना
जरा सी मंजिलें जैसे
पड़ावों में रखना।
बढ़े जो आगे कहीं पीछे छोड़ आये उन्हें
वो गाँव यादों में और यादें
गाँवों में रखना।
तू बूढ़ी हो गयी है माँ हूँ फिर भी मैं बच्चा
सहेज कर मुझे आँचल की छाँवों में रखना।
तमाम बंदिशों को तोड़ता चला आऊँ
मत इस तरह मुझे दिल की
सदाओं में रखना।
हुआ न ठीक अगर नजरे इश्क ये
‘अनिमेष’
मिला के ज़हर भी कोई दवाओं में रखना।

तुमने क्या मुझे याद किया है अभी

सत्यम शिवम
सम्पर्क सूत्रः
मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण,
बिहार
मो0 9031197811
Email:
satyamshivam95@gmail.com

अभी अभी मिली है खबर मुझे तुम्हारे ना होने की और मेरा वजूद कुछ क्षण बिल्कुल सन्न सा हो गया है यह जानकर कि अब तक बस तुम्हारे बिना जी रहा था वो। कुछ अलग हो गया है उससे। शायद कोई वजनदार चीज थी वो। जो कभी कभी कोमल दिल पर भी आघात कर देती थी। पर अब उसके जाने के बाद सब कुछ बेहतर है। अब वो भावनाओं की जमीन नहीं है, जिन पर प्यार की खेती होती थी कभी। पर अब बस मन के विस्तृत आकाश में कुछ यादों के बादल बचे हुये है। जो मेरी छत से ज्यादा दूर नहीं है। कभी कभी तो हाथों से ही हिला देता हूँ उनको और बरस बरस कर वे भींगो देते हैं मुझे बेमौसम ही अक्सर।

इन आँखों का खोजना न जाने कब पूरा होगा जब आराम से इन्हें मूँद सो सकूँगा मैं। कभी तुम्हारे घर के बहुत करीब जाकर लौट आते हैं ये। शायद शर्म आती हो इन्हें। कहीं कोई देख ना ले। पर जब कभी भी खोजते खोजते थक जाते हैं तुम्हें सागर के किनारे जाकर अपनी कुछ मोतियाँ सौंप आते हैं उसे तुम्हारी यादों के सीप का। और इनकी अभिव्यक्ति की सार्थकता तब होती है जब तुम्हारी खामोश तस्वीर से दो बात कर लेते हैं आँखों ही आँखों में। कहीं यह पूछते हैं शायद 'तुमने क्या मुझे याद किया है अभी।'

अक्सर रात को जब प्यास लगती है मुझे और पानी पीने के बाद सरकती है तब लगता है कि हो ना हो पर जरूर तुमने याद किया है अभी। साँसों का अटकना तेज हो जाता है और ऐसा लगता है साँसों के कई विभाजनों में विभक्त हो कर रह गया है तुम्हारे यादों का हर एक मंजर। और कभी कभी बड़ी देर तक आती रहती है हिचकी सी। उसी क्षण भेजता हूँ मैं तुम्हारे पास एक सवाल 'तुमने क्या मुझे याद किया है अभी।' और तुम्हारे जवाब की राह देखते देखते कब नींद आ जाती है पता ही नहीं चलता। नींद टूटने पर फिर महसूस होती है वही प्यास जो मन में कोई प्रश्न लाया था और तुम याद आ गयी थी फिर आज की रात।

जल रहा है मद्धम सा प्रकाश कोने में। बहुत अँधेरी रात है और मैं अकेला चला जा रहा हूँ कहीं। शायद दीप लिये तुम ही खड़ी हो राह में क्या? जो मेरा इंतजार कर रही है और मैं तो रौशनी की चकाचौंध में तुम्हारा चेहरा ही नहीं देख पा रहा। पर, बस तुम्हारी दो घूरती आँखें दिख जाती हैं मुझे। उन्हीं आँखों से होकर उतरना है तुम्हारी धड़कनों में और आज खुद कैद हो जाना है तुम्हारी कम्पनों में। कभी कभी धड़कना भी है संग उनके और कभी तड़पना भी है याद में तुम्हारे। वैसा कोई निश्चित समय नहीं है जो हमारे द्वारा रखा गया था याद करने का और ना ही सीमित ही हैं सीमाएँ उसकी। पर अब भी तुम्हारी प्यास कुछ सीमित है, जो बस तुम्हारे आने से पूरी हो सकेगी।

बल्ब जल रहा है दीवार पे अड़ा और पँखा चल रहा है छत से टँगा। उसका हर बार घूमना मेरी परिक्रमा को नया आयाम देता है और उसे एकटक देखता देखता मैं कुछ पल पीछे हो आता हूँ कभी कभी। कभी कभी यह अनुभव सुख देता है पर कभी खुद पे ही गुस्सा आता है मुझे अपने पीछे जाने पर और पुरानी अलमारी में बँद फटे हुये कपड़ों सी तुम्हारी यादों को बार बार सीने से। पर नाइट बल्ब का मद्धम प्रकाश फिर सूचित करता है शांत हो जाने को। देर रात तक जागने की यह आदत सही नहीं है शायद तुम्हारे जाने के बाद। कड़कड़ाती ठंड में भी कम्बल में दुबका मैं बस यही सोचता रहता कि काश ऐसा होता आज का दिन कुछ इस तरह आता कि सारे छाये हुये कुहासों को चीर देता वो। और धुँधली होती तुम्हारी छवि फिर मेरे अंतरमन में बस जाती आजीवन के लिए। और जीवन का गुजारा इस ख्वाब के संग हो जाता कि यह सच होगा एक दिन। महकती रहती अब भी मेरी हथेली जैसे मानों तुम्हारे चंदन से तन का स्पर्श कर लिया हो उन्होंने।

एक कश्मकश सी है दबी अब भी दिल में कि 'तुमने क्या मुझे याद किया है अभी' या यूँही आती है हिचकियाँ मुझे। तुम याद करती हो शायद तभी तो हम भी हँसते हैं कभी वरना उदासी भरी राहों में कभी मुस्कुराहट होती ही नहीं। कल मिला था मैं तुमसे वहीं अपने छत की बालकनी में खड़ी तुम किसी का इंतजार कर रही थी। क्या वह इंतजार मेरे लिए था या यूँही मैं खुद को तुम्हारा प्यार समझ बैठा था। पर यह मेरा सपना नहीं है कि तुम अब नहीं हो। यह सच है जिस पर चलता चलता मैं बहुत मजबूत हो गया हूँ। चट्टानों सा कठोर हो गया है मेरा वजूद पर अब भी पत्थरों में तरासता है वो तुम्हारे कुछ अनकहे अक्षर जो लब्जों पे आकर न जाने कब से रुके हुये हैं। कुछ अजीब से एहसासों से भरे हैं वे जो ना मुझे चैन से हँसने देते हैं और ना रोने बस मौन रहने को कहते हैं।

तोहफा प्यार का

शील निगम

जब भी अपने किसी क्लाइंट के साथ रजनी ग्रीन वेली क्लब जाती, एक जोड़ी आँखों से उसका सामना अवश्य होता. न जाने कौन था वो जो हमेशा उसे बड़ी आत्मीयता के साथ निहारता था, पर बड़ी सफाई से नजरें चुरा कर अनदेखा सा कर देती थी. पदोन्नति के बाद वो कभी–कभी ही क्लब जाती जब उसकी कंपनी की और से कोई खास मेहमान बुलाये जाते, पर वो हमेशा ही क्लब में दिखाई दे जाता था शायद क्लब का ही कोई अधिकारी था।

एक बार वो लॉबी में किसी की प्रतिक्षा कर रही थी, वो किसी बैरा के साथ वहाँ से गुजरा. रजनी को देख कर बैरे को रोक कर अपने हाथ से पानी और शरबत मेज पर रख कर अभिवादन की मुद्रा में सिर झुका कर बोला, "मुझे राकेश कहते है. मैं इस क्लब का मेनेजर हूँ. आप शायद किसी की प्रतीक्षा कर रही है. कुछ स्नेक्स भिजवा दूँ?" "नहीं–नहीं" अचानक ही रजनी के मुँह से निकला. पर प्यास लगी थी सो पानी का गिलास हाथ में ले कर राकेश को धन्यवाद दिया. तभी मेहमान आ गये जिनकी रजनी प्रतीक्षा कर रही थी. वो उन्हें ले कर क्लब के अन्दर चली गयी.

रजनी ने विवाह नहीं किया था. एक फिल्म कंपनी में पी.आर.ओ. के पद पर काम कर रही थी. उसका बेटा राहुल उसके प्रेम की निशानी था जिसको उसके होने वाले पति संजय ने मरने से पहले उसकी कोख में संजो दिया था. संजय और रजनी में कॉलेज के पहले वर्ष से ही नजदीकियाँ प्रेम का रूप लेने लगी थीं. उन्हें पूरा विश्वास था कि पढ़ाई पूरी होने के बाद दोनों विवाह के सूत्र में बंध जायेंगे पर ऐसा हुआ नहीं. संजय के घरवाले अंतरजातीय विवाह के लिए राजी न हुए. फिर भी दोनों ने निश्चय किया कि एक बार दोनों किसी नौकरी में लग जायें फिर अपना घर बसा लेंगे. रजनी के घर में केवल माँ थीं जिन्हें इस विवाह से कोई ऐतराज नहीं था वह बेटी की खुशियों को ही ज्यादा महत्व देती थीं, वह स्वयं बाल विधवा थीं बड़ी मुश्किल से पाल पोस कर उन्होंने रजनी को अपने पैरों पर खड़ा किया था.

रजनी और संजय ने बड़ी उमंगों के साथ अपना घर बसाने के सपने संजो रखे थे, हालाँकि संजय के परिवार के लोग इस रिश्ते के लिए राजी नहीं थे फिर भी दोनों ने तय कर लिया था कि अच्छी नौकरी मिलते ही दोनों शादी करके अलग अपना संसार बसा लेंगे. पर विधि को यह मंजूर नहीं था. एक बार साक्षात्कार के लिए जाते समय एक भयानक दुर्घटना में संजय की मौत हो गयी. संजय के परिवार वालों ने रजनी को इस बात की सूचना तक नहीं दी. जब तक उसे संजय के दोस्तों से पता चला सब कुछ खत्म हो चुका था, यहाँ तक कि वह संजय के पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन तक न कर सकी.

संजय की तेरहवीं के दिन रजनी अपनी माँ के साथ संजय के घर बिन बुलाये मेहमान की तरह पहुँची. वहाँ पर दोनों का बहुत तिरस्कार किया गया यहाँ तक कि संजय की माँ ने तो रजनी से कह दिया कि उसी से शादी करने की जिद में संजय नौकरी के लिए दर–दर भटक रहा था वरना जितना वेतन उसे नौकरी से मिलता उतने पैसे तो वह लोग अपने नौकरों पर ही खर्च कर देते है. इस दुःख की घड़ी में रजनी को सांत्वना तो नहीं मिली पर अपमान का बोझ लिए दोनों माँ–बेटी वहाँ से चले आये. अगर माँ का सहारा न होता तो रजनी कब की टूट चुकी होती. अब उसे संजय की निशानी का ही सहारा था जो उस की कोख में पल रही थी. और वही हुआ. जैसे ही नर्स ने अस्पताल में नन्हे से शिशु को उसकी गोद में दिया रजनी की आँखों में खुशी के आँसू छलक पड़े. नन्हा राहुल हू–ब–हू संजय का ही प्रतिरूप था. यहाँ तक कि उसने अपने होंठ भी वैसे ही सिकोड़ रखे थे जैसे की कभी–कभी संजय सिकोड़ता था. रजनी ने प्यार से उसके माथे को चूम लिया. माँ की देखरेख में राहुल बड़ा होने लगा था. वैसे तो रजनी अपने ऑफिस के कामों में बहुत व्यस्त रहती थी, पर जब से राकेश से उसकी मुलाकात हुई थी उसका मन उससे कुछ कह रहा था जिसे वह अनसुना कर रही थी. वह अक्सर ग्रीन क्लब में मिलता. बड़ी शालीनता से अभिवादन करता. हाल–चाल भी पूछता. पर रजनी ने उससे दूरी ही बना रखी थी.

शील निगम

सम्पर्क सूत्रः

बी, 401/402, मधुबन
अपार्टमेन्ट, फिशरीस
यूनिवर्सिटी रोड, सात बंगला
के पास, वर्सोवा, अंधेरी
(पश्चिम), मुंबई-61
मो0 9987464198,
फोनः 022-26364228

संजय के बाद वह किसी को भी अपने करीब नहीं आने देना चाहती थी.

एक दिन रजनी अपनी माँ और राहुल के साथ समुद्र तट पर गयी. राकेश भी वहाँ अपने दोस्तों के साथ आया हुआ था. जैसे ही उसने रजनी को वहाँ देखा अपने दोस्तों को छोड़ कर उसके पास आ गया. माँ से अभिवादन कर राहुल को अपनी गोद में ले लिया. सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि रजनी कुछ समझे बिना ही माँ से उसका परिचय करते हुए बोली, "माँ ये राकेश है." तभी राकेश के दोस्त भी वहाँ आ गए और बोले, "संजय का दोस्त है राकेश, रजनी भाभी". भाभी शब्द सुन कर रजनी सिहर उठी. राकेश की आँखों में झाँकते हुए बोली, "पर आपने कभी बताया ही नहीं कि आप संजय के मित्र हैं." "कैसे बताता आपने कभी बात करने का मौका ही नहीं दिया?" राकेश मुस्कुराता हुआ बोला..... राहुल अभी भी उसकी गोद में था और टुकुर–टुकुर देख रहा था जैसे सब समझ रहा हो. तभी राकेश का ध्यान अपनी कलाई पर गया. शाम के सात बज चुके थे. "अरे बाप रे, सात बज गए बीस मिनट में ड्यूटी पर ग्रीन वैली क्लब पहुँचना है, अच्छा फिर मिलेंगे." राहुल के गाल को चूमते हुए रजनी की गोद में दे कर राकेश अपने मित्रों साथ वहाँ से चला गया. राहुल को पहली बार किसी पुरुष का स्पर्श मिला था एक प्यार भरे चुम्बन के साथ. रजनी आत्मविभोर हो गयी. राकेश के प्रति उसके मन में आत्मीयता पनपने लगी पर उसने कभी भी उसे उजागर नहीं होने दिया.

अब तो क्लब में जब भी मुलाकात होती राकेश राहुल के बारे में अवश्य पूछता. राहुल के जन्मदिन पर माँ ने संजय के दोस्तों के साथ राकेश को भी निमंत्रण देने का आग्रह किया. रजनी टाल न सकी. राहुल ने सभी के साथ खूब मस्ती की. हर कोई उसे अपने पिता की कमी महसूस नहीं होने देना चाहता था और बहुत ही लाड़–प्यार के साथ सबने उसके लिए प्यारे–प्यारे तोहफों का ढ़ेर लगा दिया था. पर राकेश का तोहफा सबसे अलग था. वह वही बड़ा सा 'टेड्डी बिअर' लाया था जिसे एक बार विंडो–शॉपिंग करते समय संजय ने खरीदने की चाह की थी.

अब अक्सर राकेश राहुल से मिलने घर आने लगा था दोपहर में. उस समय रजनी घर पर नहीं होती थी. जब तक लौटती राकेश अपनी शाम की ड्यूटी पर क्लब चला जाता. माँ भी उसे बहुत पसंद करने लगी थी. शाम को अक्सर चाय पीते समय बताती कि राकेश के आने से राहुल कितना खुश रहने लगा है. एक बार तो माँ ने हद ही कर दी. राकेश के साथ विवाह करने की सलाह रजनी को दे डाली. बस, रजनी का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया. बिफरते हुए बोली, "आज के बाद कभी भी इस तरह की बात न करें तो अच्छा होगा. मैं कह दूँगी कि वह हमारे घर न आये तो अच्छा है." पहली बार बेटी को इतने आवेश में देख कर माँ सकपका गयीं. घबराहट में चुपचाप अपने कमरे में चलीं गयीं.

माँ रात को खाना खाने भी नहीं उठीं. रजनी ने कमरे में जा कर देखा. माँ बेहोश पड़ी थीं. पहला मौका था कि किसी के सहारे की जरूरत आ पड़ी. रजनी को कुछ समझ में नहीं आया कि किसे मदद के लिए बुलाये. बिना कुछ सोचे समझे क्लब में फोन लगाया. उस दिन राकेश छुट्टी पर था. क्लब से उसका मोबाइल नम्बर ले कर फोन किया. वो फौरन डॉक्टर को लेकर घर पहुँचा. माँ की हालत नाजुक थी. उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा राकेश ने उनकी सेवा में रात–दिन एक कर दिया. उसने वह सब किया जो एक बेटा अपनी माँ के लिए करता. माँ स्वस्थ हो कर घर आ गयीं. थोड़ी कमजोरी बाकी थी. अब भी रोज दिन में आकर माँ को जूस पिला जाता, राहुल को खाना खिला जाता. पर अब माँ रजनी के सामने राकेश की तारीफ न करतीं. रजनी सब समझती थी पर मुँह से कुछ कह नहीं पाती थी. वह आत्मग्लानि की आग में जली जा रही थी. आत्मग्लानि की आग में जलते हुए भी रजनी सदा यह सोचा करती कि राकेश उसके संपर्क में आया ही क्यों.सोचा उससे छुटकारा पाने के लिए इस शहर से कहीं दूर चली जाए. बहुत कोशिशों के बाद भी यह संभव नहीं हुआ. आखिर कुछ निश्चय करके एक दिन छुट्टी लेकर शाम को अकेली ही क्लब पहुँच गयी. देखा तो राकेश ने कई दोस्तों को वहाँ बुलाया हुआ था किसी के जन्मदिन की पार्टी चल रही थी. रजनी को वहाँ आया देख राकेश दोस्तों को छोड़ कर उसके पास आ गया. रजनी के तेवर देख कर पूछ बैठा, "सब कुशल तो है रजनी जी?" "कुछ भी कुशल नहीं है वह भी तुम्हारी वजह से." रजनी तुम का संबोधन न जाने किस अधिकार से कर बैठी. "म म मैंने क्या किया?" हकलाते हुए उसने पूछा. "तुमने मेरी जिन्दगी में उथल–पुथल मचा दी है." रजनी गुस्से से बोली.

"आपको गलतफहमी हुई है रजनी जी, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया." राकेश घबराते हुए बोला. तभी एक दोस्त निरंजन वहाँ आ गया. रजनी को देख कर बोला, "अरे रजनी भाभी आप? आइये हमारे साथ आज हम पार्टी के मूड में हैं."

"नहीं नहीं मुझे घर जाना है." और वो पीछा छुड़ाने के अंदाज में वहाँ से उठ कर चली गयी. रात को नींद नहीं आ रही थी. करवटें बदलते बदलते अचानक फोन की घंटी बज उठी. राकेश का फोन था. रजनी ने बात नहीं की. दूसरी तरफ से माँ ने फोन उठा लिया था. राकेश उनसे रजनी की तबियत बारे में पूछने लगा. माँ को रजनी के मन की हालत के बारे में कुछ जानकारी नहीं थी. वो उसे कुछ न बता सकीं. माँ की बीमारी के बाद रजनी और माँ के बीच की दूरियाँ आ गयीं थी. माँ एकदम खामोश हो गयीं थी और रजनी भी अपने मन की बात माँ से नहीं कह पाती थी.

वैलेंटाइन डे के दिन सुबह से ही रजनी उदास थी संजय से बिछुड़े तीन साल हो चुके थे. हर साल इस दिन संजय उसे एक लाल गुलाब के साथ खूबसूरत सा तोहफा देता था. उन गुलाबों की पंखुड़ियाँ अभी भी उसने अपनी लाल चुनरी में सहेज रखी थीं जिसे उसने अपने विवाह के दिन पहनने के लिए तैयार की

थी. उसने अपनी चुनरी को खोल कर देखा, गुलाब की सूखी पंखुड़ियों को प्यार से चूमा. उसके गालों पर दो आँसू ढुलक पड़े. आँसुओं को पीते हुए दुखी मन से चुनरी सहेज कर वापस रखी और माँ को बताये बिना ही अकेली समुद्र–किनारे बीच पर जा कर बैठ गयी, उसी पत्थर पर जहाँ कभी वह संजय के साथ बैठा करती थी. समुद्र की उठती–गिरती लहरों के साथ उसका मन भी ऊपर–नीचे हो रहा था. वह अपने आप में इतना खोयी हुई थी कि उसे पता ही नहीं चला कब से एक जोड़ी आँखें उसे प्यार से निहार रहीं थीं. उनमें इतनी आत्मीयता थी कि रजनी देखती ही रह गयी. उसकी जुबान तालू से चिपक गयी और वह कुछ कह भी न सकी.

''रजनी मेरी आँखों में देखो, कुछ नजर आता है तुम्हे? इन नजरों में केवल तुम ही बसी हो'' एक आवाज ने उसे वास्तविकता के धरातल पर ला खड़ा किया. वहाँ राकेश एक लाल गुलाब लिए खड़ा था. ''नहीं नहीं मेरे दिल में केवल संजय ही बसा है उसकी जगह कोई नहीं ले सकता.'' रजनी ने सोचा. ''रजनी मेरी आँखों में देखो, इसमें संजय की ही परछाई बसी है.''

राकेश रजनी के करीब आकर बोला. ''संजय की परछाईं? यह कैसे संभव है?''

रजनी थोड़ा दूर हटते हुए बोली, ''ध्यान से देखोगी तो दिखाई देगा संजय, इनमें क्योंकि ये संजय की ही आँखें है जिन्हें वह मरने के पहले मुझे दान कर गया था.

कुछ साल पहले एक दुर्घटना में मेरी आँखों की रोशनी चली गयी थी. विश्वास न हो तो यह देखो उसका वसीयतनामा जो आज ही मुझे नीरव ने दिया है. नीरव आज ही विदेश से लौटा है. रजनी अपनी साँस रोके यह सब बड़े ही अविश्वास के साथ सुन रही थी कि नीरव भी वहीं आकर खड़ा हो गया और रजनी से बोला, ''भाभी आप मुझे नहीं जानतीं, एक्सीडेंट के समय संजय मेरे साथ ही था. मैं ही उसे अस्पताल ले गया था. मरने से पहले उसने अपने बयान के रूप में यह वसीयत की थी. जिसमें अपनी आँखें अपने बचपन के दोस्त राकेश के नाम और अपने हिस्से की सारी संपत्ति आपके और आपके होने वाले बच्चे के नाम कर दी थी.'' ''अगर यह सही है तो अब तक मुझे क्यों नहीं बताया?'' रजनी ने हैरानी से पूछा.

''उस समय सब कुछ इतना अचानक हुआ कि सारी औपचारिकताएं निभाने और राकेश की आँखों के ऑपरेशन में ही सारा वक्त निकल गया और फिर अचानक ही मुझे तीन साल के लिए विदेश जाना पड़ा. आज ही लौटा हूँ. ''नीरव वसीयतनामा रजनी के हाथों में देते हुए बोला. ''अच्छा चलता हूँ बहुत से काम निबटाने हैं.'' कह कर नीरव वहाँ से चला गया. रजनी ने राकेश की आँखों में झाँक कर देखा. वही मासूमियत थी उन आँखों में जो संजय की आँखों में थी. उसने राकेश के हाथों का लाल गुलाब स्वीकार कर लिया. अब राकेश की आँखों में रजनी और लाल गुलाब का अक्स साफ नजर आ रहा था.रजनी को वैलनटाइन डे का सबसे हसीन तोहफा मिला था. जिसमें प्यार का एक त्रिकोण था, राकेश की आँखों में रजनी के लिए संजय का प्यार बसा था.

गज़ल

–हीरालाल प्रजापति

उनकी तो मेहरबानियाँ
भी कहर लगती है ।।
यूं पिलाती हैं दवाएँ
कि ज़हर लगती है ।।
सींचती है कुछ इस तरह से
अपनी बगिया वो,
तुलसियाँ नीम के,
बरगद के शज़र लगती है ।।
दिल्ली, कलकत्ता, मुम्बई भी
उसको गाँव लगें,
हमको अदना सी बस्तियाँ भी
शहर लगती है ।।
न सुबह सा है न उनका है
शाम जैसा मिजाज,
वो देर रात या फिर
भरी दोपहर लगती है।।
माँगकर खाती है वो,
माँगकर पहनती है,
शक्लो सूरत से,
मालदार लगती है।।
यूं हमेशा ही वो लगती है
चाँद का टुकड़ा,
जब वो सजती हैं संवरती है
क़मर लगती हैं ।।

विज्ञापन

'साहित्य प्रेमी संघ' की नई पहल

'सृजक'

शब्दों की नई दुनिया के निर्माता

पत्रिका के लिए विज्ञापन आमंत्रित

स्कूल, कॉलेज, कम्पनी, संस्था, प्रकाशन, प्रेस, ब्रांडेड प्रोडक्ट या अन्य किसी भी तरह का विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क करें–

विज्ञापन का आकार व दरें–

फ्रन्ट इनर पेज-15,000/-(रंगीन)
बैक इनर पेज-15,000/-(रंगीन)
बैक पेज-20,000/- (रंगीन)
1 पेज पूरा- 8,000/- (ब्लैक एण्ड व्हाईट)
1/2 पेज- 4,000/- (ब्लैक एण्ड व्हाईट)
1/4 पेज- 2000/- (ब्लैक एण्ड व्हाईट)

इस सम्बंध में अधिक जानकारी के लिए हमारे प्रबन्धन विभाग से सम्पर्क करें–

मो० 9031197811

Email: contact@sahityapremisangh.com
website: www.sahityapremisangh.com
Facebook: https://www.facebook.com/Srijakhindi

व्यंग्यबाण

सच्चे प्यार की निशानी, गर्म कानों की कहानी है

अविनाश वाचस्पति
सम्पर्क सूत्रः
साहित्यकार सदन,
195, पहली मंजिल,
संत विहार, निकट ईस्ट ऑफ
कैलाश, नई दल्ली-110065
फोनः 9213501292
Email:
nukkadh@gmail.com

प्रेम शब्द ज़ेहन में आते ही कईयों के कान गर्म हो जाना सहज है। कान गर्म न हों तो भी आदमी खुद से बेखबर तो हो ही जाता है। सब कुछ मन में घुमड़ता रहता है पर उमड़ कर बाहर नहीं निकलता। इसे प्रेम की सहज अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। चाह कर भी कान गर्म नहीं किए जा सकते हैं जबकि किसी को छलने के लिए प्रेम का प्यारा सा नाटक किया जा सकता है और सामने वाले के कान गर्म हो जाते हैं। नाटक को प्यारा सा तभी माना जाएगा जब प्रेम छलने में सफल हो जाएगा। प्रेम के साथ ही शरीर और मन का ध्यान मानस में समाता ही है।

आजकल कुर्सी से प्यार की मनोहारिता में तीव्र बढ़ोतरी हो रही है। इसकी चरम अवस्था तब ही मानी जाती है, जब उसके जरिए खूब सारा काला धन और चाहे तनिक सा ही हो, गोरा धन भी हासिल हो जाए। जैसे गाय का दूध कितना ही उपयोगी हो, सहज में उपलब्ध नहीं होता और सिर्फ गाय के दूध के बूते सफलता पाना भी संभव नहीं है। भैंस का दूध, भैंसों की तरह बहुतायत में उपलब्ध होता है, न उपलब्ध हो तो सिंथेटिककर्म से पा लिया जाता है। गाय के दूध को आप गोरा धन समझ लीजिए और भैंस के दूध को काला धन। अब आप ही सोच लीजिए कि जिस प्रकार गाय संकट में है, और उसका दूध पाने के लिए झूठमूठ के पापड़ भी बेलने पड़ते हैं। काला धन भैंसों और उसके दूध के मानिंद खूब मिलता है। अंग्रेज गोरे थे तो हमारा काला धन विदेशों में गया और हम काले हैं इसलिए हमारे पास गोरा ही रह गया। काले गोरे का यह ड्रामा जाने कब से चल रहा है। गोरे कम हैं, काले की बहुतायत है। पर गोरे के लिए सबके मन में चाहत बहुत है। मंदिरों में भी खूब सारा काला धन है, जो मंदिर में पहुंच कर गोरा हो जाता है। जिसका कोई हिसाब किताब नहीं है, अथाह है लेकिन कोई नहीं चाहता है कि उसका हिसाब किताब लगाया जाए। वैसे मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारे और अन्य धार्मिक स्थल बेशुमार दौलत से लबालब हैं। वहां भी गोरा धन कम है। अंग्रेज गए तो लगता है कि गोरा धन भी साथ ही ले गए। और काला हमने खुद ही विदेशों में जमा कराना शुरू कर दिया है जिससे वहां खूब सारा हो गया। फिर जो निर्धन होना शुरू हुए तो पब्लिक ही निर्धन हुई और निरेधन का वाहक नेता बने। उनके पास खूब है काला भी है और गोरा भी। काले धन के जरिए काले कारनामे खूब चर्चा में रहे हैं। आजकल तो चारों तरफ काले का ही बोलबाला है। गोरे का मुंह तो काला है। चाहे बाकी शरीर धवल है। बस कोयला अब काला नहीं रहा है, वह फेयर एंड लवली के असर से गोरा हुआ जाता है।

प्यार पुश्तैनी नहीं होता परंतु कुर्सी से दुलार पुश्तैनी होता है। न चाहते हुए, न होते हुए भी कुर्सी से प्यार हो ही जाता है। कुर्सी चाहे बस की हो, खूब भाती है। अवाम को तो टूटी हुई भी पसंद आ जाती है। कुर्सी का संसार खूब लुभावना है। सब इसके जरिए आत्ममुग्धता को प्राप्त होते हैं। प्यार में आगा पीछा, मान-अपमान, सोचने-विचारने की परंपरा नहीं रही है। प्यार सिर्फ घास ही नहीं छीलता। प्यार में घास छीलने का कार्य सिर्फ इंसान द्वारा किया जाता है। गधे को घास से बेइंतहा प्यार होता है पर वो उससे यारी नहीं करता है। उसे भूखा थोड़े ही मरना है, गधा है, फिर भी खा पीकर ही मरेगा न। अब भले कितने ही रसगुल्ले उसके सामने रख दिए जाएं पर वो घास पर ही मुंह मारेगा, रसगुल्ले की ओर आकर्षित ही नहीं होगा। घास ही लुभाएगी, चाहे घासगुल्ले न हों, पर घास के लच्छे गधे को खूब भाते हैं। कहते हैं कि प्यार अंधा होता है परंतु घास के सूखे लच्छे हों तो गधे को हरे शीशे का चश्मा पहनाकर उसे हरियाली के भ्रम में छल लिया जाता है। गधे और घास की यारी पर, मैं इसे प्यार कहता हूं इनके प्यार पर तो खूब सारी मिसालें बनाई गई हैं, पर वे मिसाइलें नहीं बन पाई हैं। गधे को आंखें चाहिए, घास के मुंह में पहुंचने तक, हरे शीशे का चश्मा पहना दो।

पैसे से प्रेम नहीं होता, लालच होता है जबकि प्यार में सर्वाधिक लूट इंसान दैहिक स्तर पर मचाता है, जिसे वासना कहा जाता है। पिछले दिनों दिल्ली और देश में इसके वीभत्सीकरण की पराकाष्ठा सामने आई है। लालच और वासना के वशीभूत सब कुछ लूटने के लिए इंसान सदैव उद्यत रहता है। कार, बस, पार्क, सुनसान, भीड़, सब जगह लूट लेता है। मां, पिता, चाचा, मामा किसी को नहीं छोड़ता। अस्मत लूटने पर आता है तो सब नाते, रिश्ते, अपनापे भूल जाता है। बहन, बेटी, बुआ, मौसी-नजर को जिधर भी डालता है, हरी डाली भी सूख जाती है। इसे राम का रावण या रावण का रावण बनना माना जाता है, आप ही बतलायें क्या इसे ही प्यार कहा जाता है ?

कथालोक

हमसफर बावर्ची

डॉ.रागिनी मिश्र

ट्रिंग–ट्रिंग.......खूब जोर की आवाज के साथ अलार्म बज उठा और साथ ही मोहिनी भी हड़बड़ाकर उठ बैठी।

घड़ी में पूरे 5 बजे थे सुबह के, वह रजाई हटाकर बाथरूम की ओर बढ़ गयी। फ्रेश होकर सीधे दौड़ किचन की तरफ ही लगती है उसकी। सिलेंडर का नोब ऑन करके चूल्हे को जलाकर चाय का पानी रख वह फ्रिज से सब्जी निकालती हुई सोचने लगी कि आज क्या स्पेशल बनाया जाए... आज बड़ा–पाव बना देती हूँ, सुदीप कितना खुश हो जायेगा... सोचकर कुछ गुनगुनाते हुए तुरंत उसने आलू उबलने को दूसरे चूल्हे पर रख दिए। 2 कप में चाय छानकर वो अपने कमरे में आ गयी। सुदीप अभी भी खर्राटे भर रहा था। वह बड़े ही प्यार से उसको निहारती रही। अचानक चाय की याद आने पर वह सुदीप को उठाते हुए बोली, ''गुड मॉर्निंग...... आज ऑफिस नहीं जाना क्या? उठो, वरना देर हो जाएगी।''

'ऊहू, अभी नहीं।'

'अरे चाय ठंडी हो रही है बाबा'

'दूसरी बना देना'.....

'मेरे साथ भी तो पी लो एक चाय'

'सोने दो.... तुम पी लो'

'प्लीज........'

'मोहिनी'.........

वह लगभग चिल्ला उठा और वह सिटपिटा गयी।

सुदीप करवट बदलकर चादर सर तक खींचकर फिर सो गया....... रोज की ही तरह। मोहिनी एक लम्बी सांस लेकर रह गयी और चाय के दोनों प्याले उठाकर रसोई की तरफ बढ़ चली। आज 24 साल हो गए हैं शादी को..... लेकिन कभी भी उसने सुबह की चाय सुदीप के साथ बिस्तर पर उसके बगल में बैठकर नहीं पी है, जबकि जेठानीजी आज भी जेठजी के ही बगल में बैठकर अखबार पढ़ते हुए चाय का आनंद उठाती हैं। उसका भी कितना मन करता है कि पिताजी जैसे माँजी के जगाने पर ''डार्लिंग! उठ गयी तुम?'' कहते हुए जागते हैं वैसे ही उनका बेटा भी जागे, माँजी और पिताजी का प्रेम तो आज भी घर में मुस्कराहट का कारण बन जाता है. .... लेकिन......... सूऊऊउ..........

कूकर की सीटी बज उठी। उसकी तन्द्रा भंग हो गयी। बड़े ही मनोयोग से वह नाश्ता बनाने में जुट गयी। खूब बढ़िया लहसुन मिर्च की चटपटी चटनी और इमली की मीठी चटनी दोनों के ही साथ बड़ा पाव सुदीप को कितना पसंद है। यह सोचते ही वह मुस्कुरा उठी। जब उसने पहली बार ससुराल में सबके सामने ये नाश्ता बनाया था तो सुदीप ने बिना किसी झिझक के सबके सामने उसके हाथ चूम लिए थे, जेठानी जी ने कितना अजीब सा मुंह बनाया था तो पिताजी ने उसे 'बेस्ट' करार दिया था। माँजी ने तुरंत नेग में अपने हाथ की अंगूठी निकालकर पहना दी थी और ननद रानी ने घोषणा कर दी थी कि, ''जब उसकी फ्रेंड्स आएँगी तो भाभी यही बनाकर खिलाएँगी। ''उसका मन तो मानों नाचने का करने लगा था। फिर तो रोज नयी–नयी फरमाइश..... ''आज क्या बन रहा है?''..... वाक्य सुनते–सुनते वह कब 'सुहानी' और 'शौर्य' की माँ बन गयी, पता ही ना चला। बच्चे दादी और बाबा के स्नेह और संस्कारों में बड़े हो गए लेकिन वह उनको अपना वह लाड़ नहीं दे पाती थी, वह उनको अपनी छाती से लगाकर दूध पिलाने वाली धाय माँ बनकर ही रह गयी। उसको इतने बड़े परिवार की रसोई सम्भालने से ही फुर्सत नहीं मिल पाती थी या फिर कोई फुर्सत देता ही ना था। वह जब भी सुहानी और शौर्य को पढ़ाने बैठती तो पिताजी आवाज लगा देते.

''बहू ! उन दोनों को मेरे पास भेज दो और तुम जरा मेरे लिए एक कड़क चाय बना दो और अपनी माँ के लिए एक कप कॉफी ......रोमांटिक बुढ़िया है तेरी माँ, चाय नहीं पीयेगी इस समय।''

वह कुछ उदास और कुछ मुस्कुराते हुए बच्चों को उनके बैग सहित पिताजी के कमरे में छोड़ आती और खुद किचन की राह लेती। उसे पता था कि अब इसके बाद भाईसाहब और भाभी ऑफिस से आ रहे होंगे, फिर सुदीप..... उसे अब अपने बच्चों के लिए समय नहीं। रात में भी बच्चे अक्सर उसके बिस्तर में आने से पहले सो चुके होते थे। वह तो बस उनको स्कूल के लिए तैयार करने और खाना खिलाने वाली मेड बनकर रह गयी थी। जाड़े के मौसम में जब घर के सब लोग बैठकर मूंगफली खाते हुए ठहाके लगा रहे होते तब सबके लिए वह कभी चाय तो कभी गरम पानी ला रही होती। अचानक भाईसाहब बोल उठते, ''अम्मा! तिल के लड्डू बनाओ ना, जाड़े में फायदा करेंगे''.....................''बहूऊऊउ....... सुन लिहोउ ना, भैया का कह रहे

डॉ0 रागिनी मिश्र
सम्पर्क सूत्रः
लखनऊ, उ.प्र.
फोनः 9454723720
Email:
Dear.ragini@yahoo.co.in

हैं, कल जाय के तिल लै आओ और धुल दिहो..... अच्छा मोर बच्चा”...... फिर पिताजी बोल उठते, “छोटी दुल्हन न होती तोउ सब सवाद भूल जाइत, तुमते तो अब कछु होत नाय जुग–जुग जियो मोर बच्चा”..और वह इन्ही स्नेहिसंचित शब्दों के तले दबती जाती और अपनी समस्त इच्छाओं को ताक पर रखकर सबकी लाड़ली बनी रहने की कवायद में जुट जाती। सुदीप मुस्कुराते हुए अपनी भाभी की तरफ देखते हुए बोल उठते, “भाभी! देखा.... कहा था न, मत परेशां हों आप, एक बावर्ची ले आऊंगा एक दिन”........और उनकी भाभी थोडा टेढ़ा सा मुस्कुरा कर कहती, “हाँ भैया! वो भी बिना तन्ख्वाह के।”........ अचानक समवेत ठहाका उसके कानों में पड़ता। वह समझ ही नहीं पाती कि उसका मजाक उड़ाया जा रहा है या फिर सब प्रेम में हंस रहे हैं .... ‘बावर्ची।’ जैसे कान में शीशा पिघल गया। आज सब भूल चुके हैं की वह भी एमएससी गणित है और वो भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, गोल्ड मेडलिस्ट। सारी टीचर्स की लाडली। पूरा कॉलेज मुरीद था उसकी खूबसूरती, अच्छे व्यवहार और दिमाग का। सोचती थी कि इंजीनियर बनूंगी या फिर लेक्चरर। लेकिन अचानक इतना अच्छा घर–वर देख पापा ने फटाफट शादी कर दी। मम्मी तो सबसे कहते नहीं थकती थीं, “राजरानी बनकर रहेगी मेरी बिटियारानी.... लाखों में एक है मेरा दामाद, खुद ही हाथ माँगा है आकर, कोई डिमांड भी नहीं, रोज ही अमरीका और लन्दन घूमता है” वह भी यह सुनकर हवा में उड़ने लग पड़ी थी, खुद पर इतराने लगी थी, सहेलियां जल रही थीं। सब कितना खुशगवार था। भूल गयी थी अपना करियर बनाने की इच्छा। शादी करके जब हनीनून के लिए सुदीप उसे मलेशिया ले गया तो उसका दिमाग सातवें आसमान पर था। “पिया ऐसो जिया में समय गयो रे......”गाते नहीं थकती थी। लौटकर भी सास– ससुर बलैया लेते नहीं थकते थे। “कितनी गुणवान बहू है” सुनते हुए जाने कितने साल गुजर गए। सुदीप जब भी अमरीका गए उसे घरवालों की सेवा के लिए छोड़ गए।

“सबको तकलीफ हो जाएगी, तुम अभी मत जाओ। फिर कभी चले चलेंगे”..

जब फिर मौका आया, तो...

“अरे! ऐसी हालत में नहीं, पहले मुझे पापा कहने वाला ले आओ ....कुछ गड़बड़ हो गया तो ......”

जब पापा बुलाने वाला आ गया तो,

“अरे! इतने नन्हे बच्चे के साथ परदेश में? ना बाबा ....तुम अपने लोगों के बीच रहो”

फिर तो बच्चों की पढाई और माँ पिताजी के बुढ़ापे और भाभी की नौकरी जाने क्या–क्या आता रहा सुदीप के साथ विदेश जाने के रास्ते में। कई बार तो वह सोचने लगती कि, कहीं कोई और चक्कर तो नहीं सुदीप का “लेकिन फिर खुद को ही कोसती,” इतना प्यारा, कर्मठ पति पर शक करके पाप किया है उसने, भगवान् माफ करे”.......सच सुदीप बहुत अच्छे बेटे, भाई, देवर, दामाद, पिता और पति तो थे पर ?

शादी के बाद मुश्किल से तीन बार ही मायके जा पायी है और ना ही किसी को उसकी याद ही आती है। मम्मी–पापा तो जैसे गंगा नहा लिए उसे ब्याहकर। आगे कोई चिंता ही नहीं उसकी। एक बार जब उसने अपने दिल की बात अपने भैया को बताना शुरू किया था तो वो बोला, “हुंह! इतना अच्छा घर मिल गया है न, तब भी तुम्हारा दिमाग नहीं सुधरा, पता नहीं क्या चाहिए था ?”

बस..... वह समझ गयी कि शादी के बाद घर की देहरी भी पराई हो जाती है। उस दिन के बाद से शायद बहुत ही introvort हो गयी थी वह। मायके भी नहीं गयी कभी। बस, “बावार्चीगिरी” में ही लगी रही और सबका आशीष पाती रही। सुदीप का प्रमोशन पर प्रमोशन होता रहा और वह भी गौरवान्वित होती रही। लेकिन अगर किसी का ओहदा नहीं बदला तो उसका... ‘बावर्ची’..... अक्सर सुदीप उसको चिढ़ाने के लिए उसके कान में फुस फुसाकर कहते, “बावर्ची कहीं की”...........वह मन ही मन तिलमिलाकर रह जाती और वह मुस्कुराकर निकल जाते।....... “मोहिनी चाय कहाँ है? जल्दी करो देर हो रही है।” अचानक सुदीप की आवाज ने उसे वापस रसोई में लौटा दिया। उफ्फ्फ कितनी देर हो गयी। अब फटाफट सब काम निबटाना होगा। जल्दी से चाय के लिए पानी रखा। “बहू...... चाय”..... पिताजी की आवाज पर वह जल्दी–जल्दी अदरक कूट, पत्ती डाल गैस तेज कर दी, दूध डालकर जल्दी से दो कप फीकी चाय ट्रे में रखकर माँ–पिताजी को भागकर दे आई, वापस आ चीनी मिलाकर सुदीप के लिए ले चली। “उफ कितनी देर कर दी, प्रेशर बन रहा है। खैर जल्दी लाओ और आज जल्दी जाना है फटाफट नाश्ता भी लगाओ मैं बस आया”, कहते हुए दो घूँट चाय गले के नीचे उतार सुदीप बाथरूम में घुस गए और वह मुंह बनाए देखती रह गयी। आजकल बच्चों के प्रैक्टिकल चल रहे हैं 3 दिन बाद वह भी आ जायेंगे हॉस्टल से एक हफ्ते की छुट्टी पर। दोनों इंजीनियरिंग कर रहे हैं, मानों उसका सपना पूरा कर रहे हैं।सोचते हुए वह खिल उठी और गुनगुनाते हुए रसोई की तरफ बढ़ गयी। आधे घंटे बाद उसका सारा परिवार नाश्ता कर रहा था और उसकी तारीफ में कसीदे पढ़े जा रहे थे, “वाह ! क्या वटाटा है और चटनी तो पूछो ही मत”.....भाईसाहब तारीफ के साथ–साथ नाश्ता करके उठ गए और भाभीजी भी रोज की तरह “थैंक्यू” के साथ पर्स लहराती, खुशबू उड़ाती उनके साथ ऑफिस के लिए निकल गयीं। सुदीप भी जल्दी–जल्दी खाकर उठे और कान के पास मुंह लाकर एक पल रुके, उसकी सांस रुक गयी, दिल अजीब–अजीब सा करने लगा सबके सामने उनको इतना करीब पाकर, सारे रोयें खड़े हो गए कि अब बस किस हुई। उसकी आँखें मुंद सी गयी कि कान में आवाज पड़ी, “बावर्ची”..उफ्फ्फ..... और सुदीप निकल गए। उसका अब नाश्ता करने का मन नहीं हो रहा था। गले में मानों कुछ अटक सा गया था। रुलाई आ रही थी।

“हा हा हा हा” हॉल बच्चो, और बड़ों सबके ठहाकों से गूँज रहा था। सब आ गए थे। सुहानी बस दादी के गले में झूल रहे थी और ताऊजी शौर्य से उसकी पढ़ाई और परीक्षा के बारे में पूछ रहे थे। पिताजी, भाभी और सुदीप कुछ सरगोशी के अंदाज में बतिया रहे थे। उसे देखते ही तीनों एकदम खामोश हो गए.....

“क्या हुआ? आप लोग मुझे देखकर चुप क्यों हो गए? मुझसे क्या छुपा रहे हैं?”

“अरे! तुम्हारी बुराई तुम्हारे सामने थोड़े ही करेंगे”

“हा हा हा”..... समवेत ठहाका गूँज गया और वह खिसिया गयी।

अब तो बच्चे भी..... उसका गला भर आया।

“ट्रिंग–ट्रिंग” .....अभी तो सुबह की चाय भी नहीं बनी, इतनी सुबह कौन आ गया? वह लगभग भागती हुई दरवाजे पर पहुंची। खोला तो सन्न रह गयी,....मम्मी, पापा, भैया, भाभी, चीनू और गोद में नन्ही गुड़िया। कल की रुकी हुई रुलाई मम्मी के गले लगकर बह निकली।

“अचानक कैसे? कोई फोन भी नहीं किया?”

“अरे! वो कपूर के यहाँ शादी है ना, उसी में शामिल होने के लिए आये हैं।”

“कौन कपूर?”

“नानीईई, नानाआआ” सुहानी और शौर्य चीखते हुए आ गए। मामा के गले लिपट गए दोनों और गुडिया तो इस हाँथ से उस हाँथ होने लगी। सब लोग उठकर हॉल में आ गए थे। पैर छुए जा रहे थे और हंसी का दौर चल रहा था। उसका प्रश्न अनुत्तरित रह गया था।

“चाय बनाओ भाई”

“हाँ”

“तुम मम्मी के पास बैठो, मैं बनाती हूँ”, बड़े ही प्यार से भाभीजी आकर बोली।

चाय पीते–पीते सब कुछ–कुछ इशारों में भी बात कर रहे थे और अचानक सब हँस भी पड़े .

“नाश्ता आज बड़ी बहू बनाएगी”... माँजी का आदेश हुआ।

“क्यूँ? क्या हुआ? वह क्यूँ?”......तुरंत वह हकबकाकर बोल उठी, और जेठानीजी के साथ उसकी भाभी भी रसोई में घुस गयीं।

नाश्ता काफी भारी हो गया था .... पकौड़ी, हलवा, दही–जलेबी। अब आज खाना तो कोई भी नहीं खायेगा ये वह जानती थी। मम्मी–पापा माँ–पिताजी के कमरे में बैठे जाने कहाँ–कहाँ की बातें कर रहे थें। भैया, भाईसाहब और सुदीप घर से गायब थे। शौर्य अपनी दीदी को लेने उनके ससुराल गया था।

“आज क्यूँ बुला रही हैं नीलम को भाभीजी? कितनी भीड़ है घर में। फिर कभी फुर्सत में बुला लेती।” चिढ़ सी उठी थी वह।

“चलो सब पार्लर चल”

“क्यूँ?”

"अरे! सुन्दर बनने और क्या"

"हा हा हा हा"

"अरे! घर में कित्ता काम है। मैं नहीं जाउंगी"

"मम्मी! चलो भी"

"चलो न दीदी"

"नहीं..... अभी सब आ रहे होंगे किसी को चाय चाहिए होगी तो किसी को कुछ, और नीलम, वो भी तो आ रही है...फिर ?"

"नहीं न बावर्ची..... अब चलो भी....उसे पार्लर ही बुला लूंगी"

"बावर्ची! हा हा हा हा"

वह कुढ़ गयी फिर भी जेठानी की बात काटना उसके बस की बात नहीं। संस्कार नहीं थे उसके ऐसे। सब चल पड़े।

"आज मम्मी का अच्छा सा मेकअप करना आंटी एकदम दुल्हनवाला।"

"क्यूँ भाई?" वह फिर हडबडा गयी।

"अरे! आज हम आये हैं इसलिए," भाभी बोल पड़ी।

"नहीं .....आज वो मिस्टर कपूर की बेटी की शादी है न, वह अपनी बीबी की बहुत तारीफ करते रहते हैं, आज दिखा देंगे कि हमारी मोहिनी आज भी अच्छो–अच्छों को मात देती है".....जेठानीजी बोल पड़ी .

सब लोग मेकअप करवा मिस्टर कपूर के यहाँ जाने के लिए तैयार होने लगे।

"मोहिनी! ये लो तुम्हारे लिए फिश कट वाला लहँगा लायी थी ...जरा देखो तो पहनकर"

हैं...... क्यूँ जीजी ? हाय राम कितना सुन्दर है। महँगा भी बहुत होगा ना। नहीं मैं नहीं लूंगी इसे। आप नीलम को या सुहानी को दे दें"

"नहीं मोहिनी! इसे तुम्ही पहनोगी, इतने सालों से कितना बढ़िया–बढ़िया पकाकर खिला रही हो, ये उसका मेहनताना, बावार्चीजी"

"हा हा हा हा"..... समवेत ठहाका। वह फिर कुढ़ गयी। तब तक सुहानी ने उसके ब्लाउज की डोरी पीछे बाँध दी थी।

"हाय मम्मी! सो ब्यूटीफुल"

"मेरी दीदी को काला टीका लगा दो" "हाँ–हाँ... बिल्कुल" अचानक नीलम पहुँच गयी। "वंडरफुल चाची"

सब नीलम को घेर उठे। "कैसी हो दीदी? जीजाजी कहाँ हैं?"

"वह शाम को आयेंगे न"....वह एक आँख दबाकर बोली।

"ओह!हाँ,"......जैसे सुहानी को कुछ याद आ गया हो और कुछ छुपाना चाह रही हो।

दो घंटे पार्लर में ब्यूटीशियन के कुशल हाथों से सब सज गए। जैसे घर की शादी हो, ऐसे सजे थे सब। उसका कुछ खास ही श्रृंगार किया गया था..... लहंगा, चुन्नी, गहने, गजरा.... सब। आईने में खुद को देख शरमा गयी मोहिनी। सच एकदम नयी–नवेली लग रही थी। ऐसे जायेगी सुदीप के सामने, हाय राम! क्या कहेंगे?, "बावर्ची इतना क्यूँ सजी हो?" कुछ चिढ़ के साथ मुस्कुरा भी उठी वह। आखिर हर नारी सुन्दर दिखना चाहती है और वह तो भगवान की कृपा से है भी। सबको लेने शौर्य कार से आया।

"मम्मी डार्लिंग! आज तो पापा गए"

"चल, हट.... बदतमीज"....वह लाल पड़ गयी। कार अचानक "क्लार्क–अवध के गेट में घुस कर पार्किंग में लग गयी।

"अरे! यहाँ क्यूँ? बाकी सब लोग?"

"सब पहुँच गए होंगे मम्मी"....

सब उसको ऐसे लेकर चलने लगे जैसे किसी दुल्हन को वरमाला के लिए ले जाया जाता हो। वह लहंगा संभाले धीरे–धीरे चल भी बिल्कुल दुल्हन की तरह रही थी।

"हैप्पी मैरिज एनिवर्सरी" "शादी की 25वीं सालगिरह मुबारक हो ...मोहिनी !"

एक साथ ढेरों आवाजों ने उसको चौंका दिया। जब तक वह संभल पाती और कुछ समझती कि जाने कितने फूलों की पंखुडियां उसके ऊपर और वह......हतप्रभ ....

अचानक शाहरुख खान की तरह कहाँ से सुदीप सूट में सुसज्जित सामने आ गए। एक पैर मोड़ बड़े ही स्टाइल में घुटने पर आकर उन्होंने उसकी तरफ हाँथ बढ़ा दिया। सारा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। कितनी सीटियाँ, और ठहाके...... उसका हाथ अपने आप ही सुदीप के हाथ में जा पहुँचा। वह उसे ले स्टेज की तरफ बढ़ चले, जहाँ वरमाला का इंतजाम था। कौन है दूल्हा–दुल्हन? .....अब वह समझ चुकी थी। आँखें पनिया आयीं, शरीर कांपने लगा की सुदीप ने भाँप लिया और उसे अपनी दायीं बाजू से सहारा देकर खड़ा कर लिया। सुहानी और नीलम मेरी तरफ और शौर्य और भैया सुदीप की तरफ हो गए।

"झुकना नहीं', 'झुकना नहीं' का शोर पच्चीस साल पहलेवाला कान में पड़ने लगा।

उसके हांथों की माला दोनों बेटियों की सहायता से सुदीप के गले की ओर बढ़ी कि शौर्य ने अपने पापा को और लम्बा हो जाने के लिए कहा। चारों ओर ठहाके ही ठहाके। सुदीप ताने जा रहे थे और वह शर्म से झुकी जा रही थी, जयमाला पड़ने का नाम ही नहीं ले रही थी। अब भाभीजी आगे आकर उसकी तरफ हो लीं .....

"देखो! मेरी बहनिया को सताओ मत। हम लौट जायेंगे" "अरे! नहीं, नहीं भाभी! ऐसा जुल्म न करना, इसके बिना तो मैं अपनी साँसों की कल्पना भी नहीं कर सकता"

बोलते हुए सुदीप ससम्मान उसके आगे गर्दन झुकाकर खड़े हो गए और वरमाला उनके गले में पड़ गयी उन्होंने भी बड़े ही प्यार से उसके गले में भी माला डाल दी... हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। आँखें उठाकर देखा.... सारे रिश्तेदार, सुदीप के दोस्त, ऑफिस वाले, पड़ोसी, माँ–पिताजी के सत्संगवाले, नीलम की ससुराल वाले, बच्चों के दोस्त और सहेलियां और उसके मायकेवाले सभी मौजूद थे। खूब–बढ़िया सजावट, चारों तरफ फूल ही फूल थे। कब कर लिया इन लोंगों ने इतना इंतजाम और उसको खबर ही नहीं लगी। अचानक उसकी जेठानी की आवाज ने उसको चौंका दिया। वह एक स्क्रीन के सामने माइक लेकर खड़ी थीं...।

"यहाँ उपस्थित सभी दोस्तों, रिश्तेदारों और बच्चों को मेरा नमस्कार और प्यार! आज हमारे घर की सबसे मजबूत कड़ी मेरी प्यारी देवरानी और देवर की शादी की 25वीं सालगिरह है। अपने देवर से पहले मैं अपनी देवरानी का नाम लेना इसलिए पसंद करूंगी क्यूंकि आज उसी की बदौलत हम सभी एक सूत्र मैं बंधे हैं। मोहिनी जैसी देवरानी बड़े ही नसीब से मिलती है। उसने हमारे घर को एक ऐसा प्यार और समर्पण भरा माहौल दिया ..... मैं भगवान से ये कामना करती हूँ कि मुझे हर जन्म में मोहिनी का किसी न किसी रूप में साथ दे"

साथ ही स्क्रीन पर उसकी गोद–भराई से लेकर विवाह की सभी रस्मों के कुछ चित्र, बच्चों के साथ, घर में सभी के साथ के कुछ न कुछ चित्र संस्मरण के रूप में चल रहे थे और सभी मन्त्र–मुग्ध से देख रहे थे और वह तो मानों वहां होकर भी वहां नहीं थी। जेठानीजी द्वारा सार्वजनिक रूप से उसकी प्रशंसा..... कहीं ये सपना तो नहीं?.... "नहीं, सच है, मोहिनी हर रूप में मोहिनी है" वह बोले जा रहीं थीं, भावावेश के कारण उनका गला रुंध गया। उसे लगा कि वह दौड़कर उनसे लिपट जाए कि अचानक सुदीप की आवाज से वह अपनी ख्यालों की दुनिया से बाहर आ गयी। अब माइक सुदीप के हाँथ में था......

"मोहिनी! आज तक मैंने तुम्हे कभी भी 'वैलेंटाइन डे' पर विश नहीं किया, तुम्हें क्या लगा कि मैं इस दिन को जानता नहीं या मैं तुमसे प्यार नहीं करता? मोहिनी! वह कोई जिन्दा इंसान नहीं होगा जो तुमसे प्यार ना करे। तुम तो हर रूप में प्यार की देवी हो। बेटी, बहन, बहू, पत्नी, माँ,..... और तुम मुझे हर रूपों का निर्वहन करती अच्छी लगती फिर कैसे मैं तुमको सिर्फ एक रूप के लिए विश कर सकता था? लेकिन याद करो, मैं तो तुम्हे हर दिन विश करता था...'बावर्ची' कहकर,... आप सभी ने 'संजीव कुमार' की फिल्म 'बावर्ची' तो देखी ही होगी ना..... जैसे उसमें वह अच्छा–अच्छा खाना बनाकर पूरे घर को जोड़ने के लिए, सबको एक साथ करने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता था और उसमें सफल भी हुआ, ठीक उसी प्रकार मेरी मोहिनी ने हमारे घर को एक सूत्र में पिरो रखा है। मेरी जिंदगी में, मेरे कैरिअर में मेरी सफलता मेरी नहीं बल्कि मेरी "हमसफर बावर्ची" की है... हमारा पूरा परिवार आज तहे दिल से उसे बधाई देता है, मैं शुक्रिया कहकर उसके समर्पण की तौहीन नहीं करूँगा बल्कि मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा...... किसी राह में किसी मोड़ पर, मुझे चला ना जाना तू छोड़कर मेरे हमसफर मेरे हमसफर... 'बावर्ची'. .सभी मेहमानों की आँखें गीली हो आयीं, तालियाँ लगातार बज रही थीं और वह स्टेज से उतर सुदीप के हाथों से माइक लेकर गाने लग गयी..........."पिया ऐसो जिया में समय गयो रे"......।

◆

'राधा कृष्ण अमर प्रेम'....

स्वाति वल्लभा राज
सम्पर्क सूत्रः
सीवान, बिहार
Email: swati.ash2@gmail.com

जब कभी भी प्रेम पर चर्चा हो रही हो तो मानस पटल पर सबसे पहले कृष्ण–राधा की युगल छवि अंकित होती है। हमारे संस्कारों में, पूजापाठ में, ध्यान में, प्रेरणा में, सर्वत्र उनका प्रेम विद्यमान है। जहां कहीं भी पूर्ण आस्था और विश्वास है, वहाँ राधा हैं और जहां कहीं भी उस विश्वास की लाज रखी जाये, वहाँ श्री कृष्ण हैं। यह समझना काफी मुश्किल है कि उनका प्रेम परकाष्ठा पर था या एक–दूसरे के प्रति समर्पित भाव की ही परकाष्ठा उनका प्रेम। राधा–कृष्ण के सम्बन्ध पर कई विचार–धाराएं हैं। कुछ का मानना है उनका विवाह हुआ था। दोनों के सम्बन्ध दो तरह से वर्णित हैं– स्वकीय रास और परकीय रास। स्वकीय उनके शादीशुदा सम्बन्ध का वर्णन करते हैं जबकि परकीय अलौकिक परम सम्बन्ध को। गर्ग संहिता के अनुसार राधा–कृष्ण का विवाह स्वयं ब्रह्मा जी ने संपन्न कराया था। कान्हा उस समय महज दो वर्ष सात माह के थे तब नन्द बाबा उनके साथ खेलते–खेलते भांडीर वन पहुँच गए। अचानक तेज आंधी–तूफान उठ गया और हर तरफ घुप्प अँधेरा छा गया। तभी राधा रानी प्रकट हुई। नन्द बाबा कान्हा को उनकी गोद में देकर चले गए। तब श्रीकृष्ण किशोरावस्था में आ गए। श्रीकृष्ण को इस रूप में राधा रानी के साथ देख कर बह्माजी प्रकट होते हैं और उन दोनों के युगल छवि की स्तुति करने लगते हैं। श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न होते हैं तब ब्रह्मा जी उन्हें याद दिलाते हैं कि ६० हजार वर्षों तक उन्होंने इसी युगल छवि के दर्शन हेतु तप किये हैं और उन दोनों का विवाह कराने की इच्छा व्यक्त करते हैं। दोनों की सहमति से स्वयं ब्रह्मा जी उन दोनों का विवाह संपन्न कराते हैं। शादी के बाद कई दिनों तक राधा कृष्ण वन में विहार करते हैं और रास रचाते हैं। फिर जब श्री कृष्ण को नन्द बाबा की याद आती है तो वे वापस बाल्यावस्था में आ जाते हैं। राधा रोने लगती हैं फिर आकाशवाणी द्वारा उनके अवतार का कारण याद दिलाने पर कान्हा को वापस नन्द बाबा के पास छोड़ देती हैं।

जिस प्रकार शिव की शक्ति पार्वती हैं उसी प्रकार श्री कृष्ण की शक्ति राधा हैं। राधिका को आदि शक्ति का अंश मानते हैं। श्री कृष्ण और राधा साथ मिलकर पूर्ण सत्य बनते हैं। महाभारत और भगवत पुराण में कहीं पर भी "राधा" नाम का जिक्र नहीं है। सिर्फ यह वर्णन मिलता है कि श्रीकृष्ण गोपियों में किसी एक के काफी नजदीक थे। निम्बार्क सम्प्रदाय और गौडीय वैष्णव पंथ के अनुसार राधा कृष्ण का सम्बन्ध पारकीय है। इसी वजह से उनके संबंधों का ज्यादा वर्णन पुरणों में नहीं मिलता। श्रीकृष्ण, मधुबन में गोपियों के निःस्वार्थ प्रेम के प्रति विशेष अनुराग रखते थें। उन गोपियों में राधा रानी सर्व प्रमुख थीं।

राधा को कृष्ण की सहचारिणी, प्रेरणा और शक्ति के रूप में देखा गया है। उनका प्रेम दिव्य है जो किसी भी सम्बन्ध से ऊपर है और किसी भी दैहिक रिश्ते से परे। श्रीकृष्ण और राधा एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। एक–दूसरे के बिना अपूर्ण और अस्तित्वहीन।

श्री कृष्ण की परालौकीक अंतहीन भक्ति को पाना असाध्य है परन्तु उस भक्ति मार्ग को सहज मोड़कर श्रीकृष्ण को पाने की धारा है–राधा। प्रेम के विशुद्ध प्रतिरूप हैं राधा–कृष्ण। निःसंदेह इनका प्रेम किसी भी सम्बन्ध से ऊपर है। प्रेम और भक्ति में समर्पण, त्याग, साथ और की जाग्रत रूप हैं राधा–कृष्ण। दो आत्माओं का मिलन हैं राधा–कृष्ण। जीवन–मरण के चक्रव्यूह और जड़–चेतन की गति से मुक्त हैं राधा–कृष्ण। उस आनंदमयी शक्ति, भक्ति, प्रेम, बलिदान के रूप को नमन।

कहानी

"वर्जना"

काल....

यह इक्कीसवी सदी के पूर्व का वह कालांश है, जब मल्टी नेशनल कंपनियों ने देश की अर्थ व्यवस्था के मार्फत समाज पर अपना शिकंजा कस लिया है। कार्पोरेट दुनिया के लोग शेष लोगों के लिए, आदर्श हैं, सिर्फ वे ही लाखों में खेल रहे हैं, मजे में हैं, उन को छोड़कर बाकी वर्ग दास वर्ग में है। आर्थिक संसाधन जुटाने के लिए, अधिकांश पति–पत्नी ? घर से बाहर निकल रहे हैं। कई जोड़े तो अलग–अलग शहरों में जॉब करते हैं। सन्तान के मुद्दे पर कोई समझौता नहीं।. ... प्रजनन की दारूण यातना और शिशु पोषण के झंझट से बचने के लिए, ज्यादातर पति–पत्नी निसंतान रहना पसंद करते हैं। उनके अंदर निहित पितृत्व और मातृत्व के स्रोत सूखते जा रहे हैं....... और टेलीविजन के चैनल दिन रात इसका समर्थन कर रहे हैं।

गाँवों से पलायन नई बात नहीं। लेकिन पहले वे लोग भागते थे जो भूमिहीन थे, अब बड़े किसान भी भाग रहे हैं। ज्यादा लोग, सो ज्यादा मकानों की जरूरत। शहर तो बहुमंजिला इमारतों से पट गए हैं और कस्बे बेतरतीब बसाहट से। खेत और यहाँ तक कि जंगल भी, कंकरीट के जंगलों का रूप धारण करते जा रहे हैं। भव्यता और चमक दमक ही इस काल में युवा पीढी की चाहत बन गई है।

देश.........

यह उस कस्बे की बात हैं जहाँ अर्द्ध नगरीय सभ्यता से लदी–फदी, एक नई कॉलोनी में खेत की जमीन मकानों में तब्दील हो चुकी हैं। सब की तरह यहाँ भूमण्डलीकरण और आयातित सभ्यता कस्बाई आदमी की जिंदगी में अतिक्रमण करती जा रही हैं। जीवन मूल्य तिरोहित हो चुके हैं। उचित अनुचित, स्वीकार्य अस्वीकार्य, अच्छे बुरे की परिभाषायें परिवर्तित हो गई हैं। साधन और साध्य की शुद्धता की अपेक्षा सिर्फ इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति पर नई पीढ़ी अधिक बल दे रही हैं।

खाली प्लॉट........

कॉलोनी की पहली सडक पर दायीं ओर जो पहला मकान है, उसके मेन गेट पर एम0 कुमार की नेम प्लेट लगी है। इस सड़क पर कतार में सारे मकान बन चुके और बस चुके हैं, सिर्फ एम0 कुमार के सामने एक चालीस बाई साठ का सपाट–समतल प्लॉट कुछ दिन पहले तक मूल स्थिति में मौजूद था, जिसे बडी हसरत से एम0 कुमार देखते और कल्पना करते कि इस पर कैसा मकान बनेगा। कैसे लोग रहने आये...... उनके क्या अंदाज होंगे।

कॉलोनी में बाकी के तमाम मकान उन ग्रामीणों के हैं जो खेती को? घाटे का सौदा मानकर खेत बटाई पर या ठेके पर देकर शहर में बस गये हैं। एम0 कुमार साहब के सामने का प्लॉट जो खाली है और फिलवक्त लावा. रिस भी..... उसे कॉलोनी भर के लोगों ने कूड़ा फेंकने की जगह में तब्दील कर दिया है। वह खाली प्लॉट जो किसी के सपनों और कल्पनाओं की जमीन था सुअरलैण्ड बन कर रह गया है।

.......होनी की बात कि दूसरे कस्बों की तरह इस कस्बे में भी चिकनगुनिया नामक बुखार फैला, सो जिला प्रशासन और स्वास्थ्य महकमा चेत गया। नगर पालिका ने कॉलोनी में इस वायरस जनित बीमारी का स्त्रोत इसी खाली प्लॉट को अधिकृत किया, सो आरंभ हुई भूखण्ड के असली मालिक की तलाश और खोज।

पुराने कागज पत्तर पलटे गये। कॉलोनी बसाने वाले ट्रस्ट ने खोज कर बताया कि इसके मालिक हैं मिस्टर पी0 रस्तोगी जो बिजली विभाग में इंजीनियर हैं। एक दिन वे अपना प्लॉट देखने आये तो लोगों ने जाना कि वे भोपाल के निवासी हैं जहाँ उनके दो पैतृक मकान हैं और फिलहाल इस कस्बे में किराये से रह रहे हैं।

मकान और दोस्ती की शुरूआत....

नगर पालिका का सम्मन आया तो मि0 पी0 रस्तोगी ने अपना मकान बनवाना शुरू कर दिया। किसी का मकान बनना आरंभ होते ही अलग–अलग प्रतिक्रियायें होती हैं। पड़ोसी आकुल तो सामने वाला यानी अड़ोसी प्रफुल्ल। पड़ोसी को चिन्ता यह कि मेरे मकान के छज्जे से आगे छज्जा निकल गया तो हमारी शोभा खत्म। चिन्ता तो और भी कई... ... मसलन पड़ोसी की खिडकी कहाँ खुलेगी? लॉन कहाँ तक बनेगा ? पहली मंजिल की हाईट क्या होगी ? जबकि अड़ोसी सिर्फ इसी से खुश कि सामने की गंदगी तो खत्म हुई।

मि0 पी0 रस्तोगी को भी कई चिन्तायें सता उठीं..... कि सीमेन्ट और सरिया कहाँ रखा जाएगा। टी0एन0पी0 यानी फावड़े–तसला और तगारी कहाँ रैन बसेरा करेंगी ?...... सबसे बडी फिफ्र यह कि राज मिस्त्री और मजदूरों के काम की निगरानी कहाँ बैठ के करेंगे और वक्त जरूरत चाय कॉफी कहाँ? इन सब चिंताओं से मुक्त किया मि0 कुमार ने निश्चिंत होकर रस्तोगी जी ने

पद्मा शर्मा
एम.ए., पी-एचडी.
सम्पर्क सूत्रः
फ-1, प्रोफेसर कॉलोनी,
शिवपुरी म0प्र0 473551
दूरभाष- 07492225725,
मो. 09406980207
ईमेल-
dr.padma_sharma@rediffmail.com

भूमि पूजन कर दिया। इस तरह मकान और दोस्ती की नींव बड़ी गहरी खुदी। न लागत का झंझट था न तकनीकी परामर्श का पचड़ा, सो मकान निर्माण तेजी से चल उठा।

मि0 पी0 रस्तोगी ने बताया कि वे पाँच साल पहले शादी तो कर चुके हैं, लेकिन अभी बच्चों की चिल्ल पों से दूर हैं....... उन्होंने भी जाना कि मि0 एम0 कुमार वाटरवर्क्स में सुपर वाइजर हैं, उनकी शादी को भी तीन साल हो चुके है और वे भी बच्चों की झंझट से कतई मुक्त हैं।

दोनों व्यक्ति सज्जन, दोनों युवा, दोनों फ्री! उनमें सहज प्रारंभिक परिचय के बाद मेलजोल बढ़ गया....... और रस्तोगी जी की दो चाय मि0 एम0 कुमार के यहाँ पक्की हो गईं। एक सुबह साढ़े दस बजे दफ्तर जाते वक्त मि0 कुमार अपने हाथों पिलाकर जाते, दूसरी ठीक साढ़े चार बजे उस वक्त जब मिस्टर रस्तोगी की दूसरी विजिट होती और ठीक वही वक्त होता मिसिज कुमार का दोपहर की नींद के बाद की चाय का।

यूं कभी–कभी मिसेज पी0 रस्तोगी भी अपने मकान का कंस्ट्रक्शन देखने आ जाती, तो मिसेज कुमार के घर में बैठकर उनकी छककर बातें होतीं। दोनों स्त्रियाँ पर्याप्त पढ़ी–लिखीं, कमसिन, फैशनेबल, बातूनी और दोनों भावी पड़ोसिन।.......... और सबसे बढ़कर दोनों अपने–अपने मायकों को रईस बतातीं। मध्यवर्गीय आधुनिक स्त्री जो टेलीविजन के चैनलों पर चलने वाली कथा सरित्सागर और किस्सा गुल बकावली जैसी अनंत विस्तार की कथाओं की नियमित व दत्तचित्त दर्शक जिन्हें अधिकांश चालाक और रंगीन मिजाज स्त्री चरित्र गुदगुदाते यानी लुभाते व स्पृहा से भर देते। सो, दोनों में खूब

पटने लगी। चर्चा में अचार–मुरब्बे पड़ते, साड़ियों की पसंद देखी जाती, ज्वेलरी के डिजाइन पर बहस होती और..... कुछ अंत. रंग किस्से बांटे जाते।

मिस्टर रस्तोगी और कुमार बार–बार मिलते। उनकी रुचियाँ मिलती थी, विचार मिलते थे। सो, घनिष्ठता खूब बढ़ गई। मिसेज कुमार अब रस्तोगी दम्पत्ति के लिए, ''भाभी जी'' बन गईं और मिस्टर एम0कुमार हुए कुमार साहब। उधर मिस्टर एण्ड मिसेज कुमार के लिये मिसेज रस्तोगी ''भाभी जी'' हुई और मि0 पी0 रस्तोगी को संबोधन मिला रस्तोगी साहब। त्योहारों–उत्सवों पर दोनों पुरुष अपनी–अपनी भाभियों के बेहिचक पैर छूते।

साल भर के अरसे में भवन निर्माण पूरा हुआ और आनन–फानन में उद्घाटन का भव्य आयोजन भी......... जिसमें कॉलोनी के दीगर वासियों से रस्तोगी दंपति का ''परिचय'' और ''हलो–हाय'' का मौका मिला। पर दोस्ती हुई तो कुमार दंपति से ही। दोनों मर्द एक सी कद काठी के। दोनों हट्टे–कट्टे। दोनों स्मार्ट और हैण्डसम। दोनों पुरुष ड्रिंक के शौकीन। जल्दी ही हम प्याला हमनबाज और हमराज बन गए। प्रत्येक शनिवार दावतें होती। कभी इनके यहाँ कभी उनके। दोनों सज्जन थियेटर भी साथ जाते तो साइबर कैफे भी। अचरज यह कि मिस्टर रस्तोगी को इंटरनेट पर भारतीय मिथ कथाओं और पुराणों की अनेक नई व्याख्यायें और क्षेपक कथायें पढ़ने को मिलती और दोनों ड्रिंक के वक्त उन पर विमर्श करते। दोनों का दूध वाला, इस्तरी वाला, किराने वाला और कामवाली बाईयाँ एक ही थीं।

इस तरह एक–दूसरे की फेमिली का ध्यान भी रखा जाने लगा। कभी मिसेज रस्तोगी को बाजार तक जाना होता और रस्तोगी जी व्यस्त होते तो कुमार साहब स्कूटर पर बैठा ले जाते। मिसेज कुमार की ब्यूटी पार्लर की ड्यू–डेट होती और कुमार साहब नदारद तो मि0 रस्तोगी हाजिर होते अपनी बाइक के साथ। इनकी रसोई की गंध उनके यहाँ तो उनकी डिश का स्वाद इनके यहां मिल जाता। कटोरी संस्कृति कुछ भी नहीं, थाली संस्कृति अपनाई जाने लगी। बीच की सड़क तो मानो आंगन बन गई। मिस्टर रस्तोगी की बाइक कुमार साहब के दौरे के वक्त गाँव का चक्कर लगाती, बदले में रस्तोगी साहब स्कूटर उठा ले जाते। लैदर की जैकेट, कश्मीरी टोपी और एयरगन का तो असली मालिक ही पता नहीं चलता था। महिलाएं भी एक–दूसरे की साडियाँ, कॉस्मेटिक, सेण्डिल और पर्स ही नहीं ज्वैलरी की भी अदला–बदली कर पहन लेतीं।

गर्मी का उत्ताप और पर्यटन.....

यूँ तो गर्मी का आरंभ अप्रैल से होता है, लेकिन इस बरस मार्च से ही सूरज का प्रचण्ड ताप उत्पात मचाने लगा। सब दूर त्राहि–त्राहि मच गई। गर्मी का उत्ताप बदन में ही नहीं मन और मस्तिष्क में भी चढने लगा, तो ठण्ड की चाह पैदा हुई। अब तक सही संग साथ न मिला था, सो रस्तोगी और कुमार लोग कही घूमने न निकले थे, अब संग भी सही था और साथ भी।

एक दिन कुमार साहब ने सहज भाव से किसी हिल स्टेशन पर जाने की चाह प्रकट की, तो फटाफट तीनों सहमत हो गए। मई–जून में तो सब जाते हैं लेकिन इन दोनों घरों में न बच्चे थे न पढ़ने का झंझट, सो समय और पैसे की थोड़ी बहुत इफरात भी, इसलिए अप्रैल में ही कार्यक्रम बन गया। आनन–फानन पर्यटन की योजना बनी। प्रमुख स्थानों को लेकर विचार विमर्श हुआ, अन्ततः नैनीताल के नाम पर सबकी मुहर लगी। बंधी दिनचर्या से हटकर दो–चार दिन बेपरवाह और मौजमस्ती में बिताने की ललक से दोनों जोड़े हँसी खुशी रवाना हो गए।.......... लाल. कुआं रेलवे स्टेशन तक रेल फिर एक टैक्सी से नैनीताल। नैनीताल में झील बने होटल में पढ़ाव। रूम नम्बर एक सौ चार में कुमार दम्पत्ति और एक सौ पांच में रस्तोगी लोग। पहले दिन थोडा विश्राम कर माल रोड पर घूमने निकले तो नजारा कुछ और ही था। ज्यादातर युवा जोड़े। सब गलबहियाँ डाले। सब एक–दूसरे में खोये। सब उन्मादित। चारों ओर हरीतिमा। ऊँचे पहाड़। नैनी झील का शांत सौन्दर्य। पहाड़ी मौसम। कमनीय माहौल... ऐसी कमनीयता जिसे ऊर्ध्वगामी किया जाये तो सुमित्रानंदन पंत का छायावाद साकार हो जाये और अधोगामी हो जाये तो 'राम तेरी गगां मैली' की फिल्मी पटकथा मुकम्मल !

माल रोड पर किसी ने बताया यहाँ की सबसे ऊँची पहाड़ी पर जाने के लिए शानदार रोप–वे बनाया गया है। अलआइटम, अलग अहसास और अनूठी जगह। मि0 रस्तोगी ने फटाफट चार टिकट लिए और रोप–वे के आरंभिक केन्द्र पर हाजिर हो गये चारों। एक ट्रिप में बारह लोग बैठाये जा रहे थे। अपनी बारी पर वे चारों ट्रॉली में चढ़े तो नीचे फैली हरियाली और दूर तक पसरी घाटी ने महिलाओं के बदन में फुरहरी पैदा कर दी।....... और ट्रॉली ने ज्यों ही झटके के साथ अपना सफर शुरू किया मिसेज कुमार अचानक घबरा उठीं। अकबकाईं तो आँखे मूंद लीं। कुछ न सूझा तो सहारे के लिये हाथ बढ़ाया एक मजबूत बांह का स्पर्श हुआ। मिसेज कुमार ने रोमावली से भरी यह बांह कसकर थाम ली। कुछ क्षण बाद संयत हुई तो आँखें खोल दीं। वे चौंक उठीं। अब तक उन्होंने कुमार साहब का हाथ समझकर जो हाथ थाम रखा था, दरअसल, वह पड़ोसी रस्तोगी जी का था। बिजली–सा झटका लगा। शर्मसार हो आईं यकायक। झटके से हाथ छोड़ नजरें फेर लीं उन्होंने। कनखियों से देखा, सब बाहर झांक रहे थे। उनकी ओर देखने की किसी को फुरसत कहाँ थी, सिवाय रस्तोगी साहब के ! अजीब सी सनसनाहट भर गई थी सारी देह में...... यूं तो पहले कई दफा रस्तोगी साहब के साथ बाइक पर बैठी हैं! स्पीड ब्रेकर या झटके से लिए गए ब्रेक पर असंतुलित हो टकराई भी है, रस्तोगी साहब की पीठ से, लेकिन आज, आज–सा तो पहले कभी नही लगा। दिल वेकाबू था, इस कदर कि अगर कोई तनिक–सा चीर दे तो उछलकर बाहर गिर पड़े। दूसरों की तरह वे भी बाहर झांकने लगी। ट्रॉली धीरे–धीरे पहाड़ी के शिखर की तरफ ऊँची उठ रही थी।

अचानक नजरें उठी तो पाया, रस्तोगी साहब कनखियों से उन्हीं पर नजरें गढ़ाये थे। वे झेंप गईं। मिसेज रस्तोगी को देखा तो हठात् उनके वे शब्द याद हो आये, जो उन्होंने कभी कहे थे, ''रस्तोगी जी बड़े रोमांटिक तबियत के हैं, पहली रात में ही मेरी सारी झिझक निकाल दी........ अभी भी जब शुरूआत करते हैं तो पूरे बदन पर चुम्बनों से अपनी अधर मुद्रा अंकित करते हैं। सारा बदन थरथरा उठता है, एक अलग अहसास होता है यह!''

झटके के साथ ट्रॉली रुकी तो विचारों को झटका लगा। सब हड़बड़ी में उतर रहे थे। वे बैठी रह गईं। देखा रस्तोगी साहब एक सुदर्शन और आकर्षक व्यक्ति हैं एक मोहक व्यक्तित्व। आखिर में उतरीं तो कुमार साहब ने हाथ बढ़ाकर उनकी हथेली को बड़ी कोमलता से थाम लिया और बड़े कमनीय अंदाज में उन्हें ट्रॉली से उतरने में मदद की।

अब वे पहाड़ी के छत जैसे शिखर पर थे और सामने बने रेस्तराँ की ओर बढ़ रहे थे। मिसिज कुमार को लगा कि रस्तोगी साहब के अन्तरंग क्षणों और पत्नी के साथ किये जाने वाले खास क्रिया–कलाप के बारे सोचना न केवल नैतिक दृष्टि से वरन् अपने दाम्पत्य के हिसाब से भी गलत है, अपने पार्टनर के साथ अंश मात्र में विश्वासघात भी। रस्तोगी जी उनके देवर हैं! उनको लेकर इस तरह सोचना....छि–छि !

सब बैठे थे। वेटर गर्म कॉफी के मग लिए खड़ा था कि अचानक मिसेज कुमार ने पलटकर अपने पति को देखना चाहा और उनका हाथ टकरा गया, वेटर के हाथ की ट्रे से। जो पलट गई और मिसेज कुमार का बायां हाथ गर्म कॉफी से उबल गया! तीखी जलन और तुरंत फफोले पड़ गए मुलायम चमड़ी पर। असहय पीड़ा से वे कराह उठीं। मिस्टर रस्तोगी ने जग उठाकर बर्फ का ठण्डा पानी हाथ पर उड़ेल दिया। कुछ राहत तो मिली पर पूरा दिन मिसेज कुमार तड़पती रहीं।

दूसरे दिन व्यस्त कार्यक्रम था।....... अन्य प्वाइंट देखने थे।

जानकी ताल में उन सबने एक बोट तय कर ली और नाविक से ताल का चक्कर लगवाने को कहा। मंद गति से बहती वोट अभी ताल के बीचों बीच पहुँची थी कि अचानक तेज हवायें चल उठीं। नाव के पीछे लगी छतरी फड़फड़ाने लगी तो नाविक बैचेन हुआ, ''बाबूजी अगर छतरी बंद नहीं करी तो नाव पलट जायेगी...... दया करके कोई एक जन उठ के जाओ, बहनजी से छतरी बंद कराओ। एक जन मेरी मदद करो चप्पू चलाओ हजूर।''

मिस्टर रस्तोगी ने लपक कर चप्पू उठा लिया। छतरी के नीचे दोनों महिला, थीं वे उठीं और छतरी बंद करने का प्रयास करने लगीं....... लेकिन मिसिज कुमार के हाथ में घाव था, सो वे असफल रहीं। तब संतुलन बनाते हैं, मिसिज कुमार नाव के अगले हिस्से की ओर बढ़ीं और मिस्टर कुमार को पीछे जाने का इशारा किया।

मिस्टर कुमार ने छतरी बंद करने का असफल प्रयास किया। मिसिज रस्तोगी की मदद की और फैली हुई छतरी को दोनों हाथ फैला कर समेट लिया नाव संतुलित हुई। नाविक ने नाव मोड़ी और किनारे की तरफ ले चला।

मिसिज रस्तोगी अभी भी छतरी को दोनों हाथों से दबाये खड़ी थीं और उनके हाथों के ऊपर थे मिस्टर कुमार के हाथ। सहसा मिसिज रस्तोगी के हाथों में फुरहरी आई और फिर पूरा शरीर चींटियों की मीठी चुभन से भर उठा। हठात् उन्हें ध्यान आया, मिसिज कुमार बता रही थीं, ''हर शनिवार की रात ये सबसे पहले मेरे हाथ अपने हाथों में लेते हैं और फिर आरंभ होती है इनकी डेढ़–दो घण्टे लम्बी प्राय–लीला। रोम–रोम इस कदर उत्तेजक स्पर्श से भर देते हैं कि समर्पण के सिवा फिर कोई चारा नहीं रह जाता।.........''

वोट किनारे लगने तक मिसिज रस्तोगी बेसुध–सी मिस्टर कुमार को निहारती रहीं।

कहानी

अलमोड़ा, रानीखेत और कोसानी........

उन लोगों के बनाये प्लान अनुसार अलमोड़ा–कोसानी के लिए तीसरा दिन और रानीखेत घूमकर लौटने के लिए चौथा दिन नियत था। वे लोग बस में सवार हुए। घुमावदार रास्तों ने दोनों महिलाओं का जी हलकान कर दिया, उन्हें चक्कर आने लगे और जी उमछा उठा। अलमोड़ा में बस एक रेस्तरां पर रूकी तो दोनों पुरुष लपक कर नीचे उतरे।

मिस्टर रस्तोगी ने आम के स्वाद वाले कोल्ड ड्रिंक की बोतल ली– उन्हें पता था कि यह मिसिज कुमार की पसंद है। मिस्टर कुमार कोक ले आये जो मिसिज रस्तोगी को बेहद प्रिय था। अलमोड़ा घूमकर वे लोग थके–मांदे कोसानी पहुंचे। होटल मैनेजर ने बताया कि यहाँ का सनराइज बेहद सुंदर होता है। सुबह जल्द ही वे लोग सनराइज प्वांइट पहुंचे और एक चट्टान पर जमकर बैठ गए। सुरक्षा के लिहाज से बीच में महिलाएं थीं और दोनों तरफ दोनों मर्द। जल्दबाजी में बैठने का क्रम गड़बड़ा गया था। मिसिज कुमार के निकट मि0 रस्तोगी थे और मिस्टर कुमार के पास मिसिज रस्तोगी। तब सनराइज क्षितिज पर नहीं, चारों के भीतर हुआ। वे अंदर ही अंदर एक सुखद अहसास की अनुभूति से लबरेज थे। दोनों कमनीय महिलाएं, अपने मनपसंद पुरुषों के कंधों से टिकी अभिभूत हो रही थीं और दोनों हैण्डसम पुरुष पराई स्त्रियों को पा उनके नर्म स्पर्श से उत्तेजित। जीवन में सिर्फ एक बार कैसे भी उन्हें पाने की चाह में पागल।

सो, नैनीताल लौटते हुए चारों अपने आप में गुम थे।

उनके होटल में कोई जश्न–सा दिख रहा था। मैनेजर ने बताया कि होटल की एनिवर्सिरी है, इसलिये रात को सारे ग्राहक डांस फ्लोर और डाइनिंग हॉल में आमंत्रित हैं।

रूम नम्बर एक सौ पांच में मिस्टर रस्तोगी का मन मचल गया। वे पत्नी के निकट आये, उन्हें लग रहा था बगल में मिसिज कुमार लेटी हैं। अपने अनूठे अंदाज में वे शुरू हो गये। उधर रूम नम्बर एक सौ चार में मिसिज कुमार इंतजार कर रही थी कि मि0 कुमार पूरे बदन पर अधर मुद्रा अंकित करना शुरू करें। लेकिन वे थके हुये थे। मिसिज कुमार खुद सक्रिय हो गईं। मि0 कुमार में उन्हें रस्तोगी साहब जो दिख रहे थे।

डांस फ्लोर..........

तब सांझ ढ़ल रही थी जब वे चारों सज–संवर के नीचे पहुँचे। डांस फ्लोर पर जलती बुझती लाइट और तेज लय के संगीत की जुगलबंदी थी। ग्राहक आ रहे थे और मैनेजर इन्हें डांस फ्लोर पर आने की दावत दे रहा था। आज की थीम थी 'पार्टनर चेंज'।

मिस्टर कुमार और रस्तोगी को बुलाया गया तो तुरंत उठ खड़े हुए,। लेकिन उन्हें तुरंत बैठ जाना पड़ा, दोनों की श्रीमतियाँ सन्नाटे में जो थीं। मिस्टर कुमार ने अपनी मिसेज को समझाया ''देखो भाई अब इस कल्चर में आये हैं तो यहाँ के एटीकेट भी सीखने होंगे। देखो सब लोग हम लोगों को कैसी नजरों से देख रहे हैं...... चलो उठो, वेकअप।''

दोनों महिलाओं ने झिझक के साथ सिर हिलाया। एक–दूसरे को देख उदासीन भाव से अपने–अपने पति को देखा और उनकी आँखों में मनुहार देखकर उठ खडी हुईं।..........

पांच मिनट बाद दोनों जोड़े डांस फ्लोर पर थे। डे–थीम के मुताबिक पार्टनर बदलना जरूरी था। सो, मिस्टर कुमार उस वक्त मिसेज रस्तोगी की कमर में हाथ डाले कदम से कदम मिला कर डांस कर रहे थे और मिस्टर रस्तोगी के साथ मिसिज कुमार थीं।

मि0 कुमार के कदम बेहद उताबले

से थे। उनकी तेज हो आई सांसें मिसिज रस्तोगी के दायें कंधे से टकरा के एक नई तान छेड़ रही थीं। नई.....सी तान.....। यूँ तो उन्होंने चोट में छतरी बंद करने से पहले कभी कुमार साहब के हाथ के स्पर्श का अनुभव नहीं किया था, लेकिन आज तो कोहनी से लेकर अंगुलियों के पोर तक समूचा हाथ कमर के इर्द–गिर्द लिपटा हुआ– जिसकी रग–रग से करंट निकल रहा था। सिहरन पैदा करता जीरो वॉट का करंट। अचानक मिसिज रस्तोगी को याद आयी मिसिज कुमार की मादक अनुभूति, ''हर शनिवार की रात ये सबसे पहले मेरे हाथ अपनी हाथों में लेते हैं फिर आंरभ होती है इनकी डेढ दो घण्टे लम्बी प्रायलीला– हौले–हौले थपथपाते हुए पूरा बदन स्पर्श करते है, बड़े सुनियोजित ढंग से। रोम–रोम इस कदर जगा देते हैं कि फिर............''

मिसिज रस्तोगी का सीना धोंकनी के समान उठने–गिरने लगा। एक अव्यक्त, अपरिभाषित चाहत जन्म ले रही थी, गोया।

उधर मि0 कुमार अजीब स्थिति में थे। नई देह, नया अहसास, गर्म सांसें, मादक छुअन। मिसिज रस्तोगी के चेहरे पर एक चोर नजर डाली तो पाया, आँखें बंद थीं उनकी। गुलाबी सर्दी के पहाड़ी मौसम में भी पसीने की नन्हीं बँदें ! तब टकटकी लगाकर देखा और पाया कि वे आज पहले से अधिक सुन्दर, अधिक मोहक और अधिक कमनीय दिख रही

थीं। और उनसे रहा न गया। अपना मुँह मिसिज रस्तोगी के कान से सटाकर वे फुसफुसाये, "मौसम है आशिकाना........।" और मिसेज रस्तोगी हठात् हड़बड़ा गईं। तनिक असंतुलित हुई तो हाई हील की सैण्डिल स्लिप मार गई और वे कुमार साहब पर गिर पड़ीं! मिस्टर कुमार को यह उम्मीद न थी। उन्हें तो रपट पड़े पर हर–हर गंगे ! औचक बाजुओं में उनका गदराया बदन समेट लिया उन्होंने।

फिर दोनों संभले और झेंप भरी मुस्कराहट के साथ फिर से नाच उठे। लेकिन अनायास आलिंगनबद्ध) हो जाने का वह एहसास भीतर तक घर कर गया था। गाना बज रहा था– 'दूरी न रहे कोई आज इतना करीब आओ।.....'

उधर मिस्टर रस्तोगी तो वैसे भी पहले से ही मिसिज कुमार के फैन थे उनकी तारीफ करते नहीं थकते थे। अनायास आज जैसे उनके हाथ लॉटरी लग गई। मिसिज कुमार को रोप–वे की ट्रॉली का स्पर्श याद आ रहा था और वे शर्म से गड़ी जा रही थी। मि0 रस्तोगी का बायां हाथ उनके कंधे पर था और दायां कमर से कुछ ऊपर लिपटा हुआ। एक अलग ही सुर्ख कामुक वातावरण था, एक आनोखा नशा रग–रग में समाया हुआ। मि0 रस्तोगी की नजर मिसिज कुमार के सीने पर टहलती हुई........ और जुबां पर ऐसा प्रश्न जो कि खुद में एक प्रस्ताव भी, "ये नंबर तो थर्टी सिक्स है ना"?

सुनते ही सकपका गईं मिसेज कुमार। चेहरा शर्म से सुर्ख हो आया। मिसेज रस्तोगी ने बताया था कि पहले उन्हें चौंतीस नंबर का ही ब्रा आता था। लेकिन इन्होंने बढ़ा दिया ! सभीत हिरणी की भाँति नजरें झुका लीं उन्होंने। फिर काँपते गात के साथ चोर निगाहों से दूसरे जोड़ों को देखा।....... डांस फ्लोर पर सब एक–दूसरे में खोए हुए! यहाँ तक कि एक कोने में मि0 कुमार और मिसेज रस्तोगी भी। तभी यकायक बत्तियां बुझीं और संगीत तेज हो गया और सुअवसर जान, मि0 रस्तोगी का दायां हाथ मिसेज कुमार की कमर से फिसल कर नितंब पर आ गया और बायां कंधे से सीने पर।

धड़कने तेजी से बढ़ गईं उनकी। बदन उत्ताप से भरने लगा। जैसे, मोम और आग एक–दूसरे को अपनी चपेट में ले ही लेते हैं! वे अवश सी मि0 रस्तोगी के ऊपर ढह गईं! वक्ष उनके सीने से सट गया, होंठ होंठों से.......। मन के अनजान कोने से उठे काम के बादल यकायक विस्फोट जो कर उठे थे।

फिर हॉल रोशनी से जगमगा उठा। संगीत थम गया। सारे जोड़े वापस अपनी टेबिलों पर लौट आए। लौटे तो किसी ने कोई बात नहीं की। सब अपनी ही धुन में थे। सबके मन में अलग ही किस्म की खदबहाहट थी। नये प्रकार का सुरूर सबकी आँखों में था। पाँच मिनट बाद होटल मैनेजर फिर माइक पर था, वह निवेदन कर रहा था एक नये कंपटीशन में शामिल होने का। इसमें भी पार्टनर बदल के डांस करना था, लेकिन थीम थी लेडी पार्टनर के सिर पर गोल फल साधे रखने की। रस्तोगी और कुमार ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। लेकिन कई नयी उम्र के जोड़ें फटाफट तैयार हो गये और सुर में बजती धुन पर कदम थिरकने लगे। इस प्रतियोगिता में एक विदेशी जोड़ा सबसे ज्यादा देर तक नाचता रहकर माथे पर संतरा साधे रहा।

रात के ग्यारह बज रहे थे। वेटर ने आकर खाने का ऑर्डर पूछा तो महिलाओं ने एक स्वर में इंकार कर दिया। पुरुष लोगों ने बाद में खाने की इच्छा व्यक्त की। वे ड्रिंक लेना चाहते थे। दोनों महिलाएं उठ खड़ी हुईं। वे अब विश्राम करना चाहती थीं। शरीर तो थके ही थे। मन भी बोझिल दिख रहे थे दोनों के। पतियों की सहमति पाकर दोनों अपने अपने रूम में आ गईं। दोनों पुरुष बार में चले गये।

रूम नम्बर एक सौ चार और पांच

अपने रूम नम्बर एक सौ चार में पहुँच कर मिसिज कुमार ने कपड़े बदले और बिस्तर पर लेट गईं। मन फिर से मिस्टर रस्तोगी की और दौड़ने लगा। उनकी नजदीकी, उनकी छुअन, गर्म साँसें और वह प्रश्न याकि प्रस्ताव. ...! सब कुछ रह–रह कर याद आने लगा। देह की सुप्त स्वर लहरियाँ अपनी अनोखी तान छेड़ बैठीं। मिसिज रस्तोगी के कहे शब्द आग में घी का काम कर रहे थे, "मिस्टर रस्तोगी बडे रोमांटिक तबियत के हैं।.... अभी भी जब शुरूआत करते हैं तो बदन के हर हिस्से पर चुम्बन चिपका देते हैं! देह थरथरा उठती है।" और रस्तोगी दंपति की केलिक्रीड़ा में फंसा मिसेज कुमार का मन सचमुच ही उनके बदन को थरथराने लगा......। फिर जैसे, झटका लगा। अंतर्मन जाग्रत हुआ और वे सोचने लगीं कि मैं पर–पुरुष की कामुक हरकतों को याद करके कितना पाप कर रही हूँ... पाप क्या, बल्कि अनैतिक काम है ये तो।"

और तभी उनका दूसरा मन जाग उठा...... जिसने सुझाया कि प्रकृति ने सिर्फ दो जातियाँ बनाई हैं नर और मादा। दोनों के बीच की यह विवाह संस्था तो बाद में बनी। हमारे ग्रंथ–पुराणों में काम चिंतन और प्रणय संबंधों को कही भी वर्जित नहीं किया गया। यहाँ तक कि हमारे यहां तो सगे भाई बहन यम और यमी का समागम विषयक संवाद कम स्पृहणीय नहीं है, जिसमें कामातुर यमी अपने सगे भाई यम से संसर्ग के लिए आग्रह करती है– अपनी उदग्र देह, व्यग्र कामना को यमी जिस भाषा में व्यक्त करती है, उसे पढ़कर कोई भी लाज–हया त्याग कामाकुल हो उठे। जब खून के रिश्तों में काम भावना नहीं रुक पाई तो मुँह बोले रिश्तों और दीगर संबंधों में यह रोक भला कहाँ संभव हैं ?"

यह समाधान पाकर मिसिज कुमार का मन असाधारण रूप से शांत हो गया। उन्हें लगा वे कहीं भी गलत नहीं हैं।

रूम नं0 105 में मिसिज रस्तोगी भी बडी पसोपेश में थीं। कई बार प्रयास किया कि मि0 कुमार के संबंध में न सोचें लेकिन जितना अधिक इच्छाओं और भावनाओं को प्रतिबंधित किया जाये वे उतनी ही तेजी से उत्तुंग हो उठती। गर्म तेल में पड़ी पूड़ी को जितनी दबाओ उतनी अधिक फूलती है। सहसा उन्हें डांस फ्लोर पर आज हुए, अहसास याद हो आये और इसी से जुड़े मिसिज कुमार के शब्द, "हर शनिवार की रात ये सबसे पहले मेरे हाथ अपने हाथ में लेते हैं. .. और फिर आरंभ होती हैं डेढ़ दो घण्टे लम्बी प्रणयक्रीडा"....... मिसिज रस्तोगी को जिज्ञासा थी कि जो क्रिया–कलाप महज पन्द्रह–बीस मिनट के हो, उनमें इतना समय...... इतने लंबे समय तक क्या–क्या होता होगा! सोचते–सोचते शरीर में सिहरन दौड़ने लगी। तकिया उन्होंने सीने से दबा लिया। उन्हें एहसास होने लगा कि मि0 कुमार के अधर उनके माथे से शुरू होकर गर्दन, कपोलों और अधरों पर से होते हुए उरोजों और नाभि तक पहुँच गए हैं... और वे एक असहय प्रेम–यातना के मधुर अहसास से गुजर उठी हैं।

एक जमाना था जब उन्हें अपने रूप यौवन और उसके दर्प का अहसास था। कितने ही लोगों ने उन्हें चाहा लेकिन आज तक कोई उनकी उंगली भी नहीं छू पाया और आज कितना कुछ हो गया ! कदाचित वे पूर्व–सी सख्त हो गई होती तो मिस्टर कुमार की क्या हिम्मत थी कि... किंतु अब तो उनकी काल्पनिक छुअन से ही वे पिघलती जा रही थीं। मि0 कुमार का स्पर्श......वह मीठी छुअन.. .. और उनकी फुसफुसाहट, "मौसम हैं आशिकाना....." उन्हें अंतरिक्ष–यात्रा पर लिए जा रही थी। तप्त होठों पर किसी ने दो गीली पंखुड़ियां रख दी थीं। वक्ष और कटि पर दहकते शोले! और अब लग रहा था कि इसके आगे की कल्पना से पहले वे ढ़ह जाएंगी। धरती में सूराख हो जाएगा और वे पेंच पड़ी पतंग–सी कट जायेंगी नाहक।

मगर थोड़ी देर में सचेत हुई तो वही द्वंद फिर उभर आया। पहले आत्म ग्लानि महसूस होने लगी, कि– किसी गैर मर्द के बारे में इस तरह सोचते हुए वे अपने पति के साथ विश्वासघात कर रही हैं। कितनी घिनौनी बात है ये।" किंतु फिर हठीले हो आ, कामुक मन ने तर्क दिया कि– हमारे यहाँ तो नारी को सदा से स्वयंवर का अधिकार दिया गया है। स्वयंवर का अर्थ जीवन भर के लिए वरण कर लेना नहीं, वरन् वह कुछ क्षणों का भी हो सकता हैं। कौन नही जानता कि सुभ्रद्रा यानी कृष्ण की बहन ने अपनी सगी बुआ के लड़के अर्जुन को अपनी देह सौंपी तो विष्णु ने अपने साले जलंधर की पत्नी वृंदा की देह किसी तरह प्राप्त कर ही ली! कुन्ती ने तो छह देवताओं का आह्वान किया और हरेक के साथ यौन संबंध बनाकर संतान पाई।...... प्यास लगने पर जो कुआं पास हो उसी से प्यास बुझाते रहे हमारे पुरखो ने किसी बरसात का इंतजार नहीं किया। जिस तरह प्यास पानी से बुझती है खाने से नहीं, उसी तरह देह–क्षुधा मन के मीत से बुझती है, थोपे गए वर से नहीं......।"

सोचते सोचते मन प्यास से आकुल हो उठा था, मिसेज रस्तोगी का। अपराध बोध सिरे से शांत हो गया था और मि0 कुमार को लेकर वे मीठी नींद में चली गईं।

बार रूम..........

मि0 कुमार और मि0 रस्तोगी होटल के बार हाऊस में जाकर ड्रिंक करने लगे। समीप की टेबल पर कई जोड़े बैठे थे, दो–दो और तीन–तीन के ग्रुप में। एक वही विदेशी जोड़ा था, जिसने संतरे को माथे पर रखकर सबसे ज्यादा देर तक डांस किया था। ताज्जुब कि

वहाँ बैठी महिलाएं भी हाथ में गिलास लिए बेझिझक ड्रिंक कर रही थीं। भारतीय जोड़े भी मस्ती के मूड में थें। एक फैशनेबल युवक अपने हाथ में लिये गिलास से कभी एक युवती को पिलाता तो कभी दूसरी को। पहनावे से सब युवतियाँ विवाहित दिखती थी, पर कौन किस की पत्नी है, यह समझ में नही आ रहा था।

फैशनेबल युवक बेलिहाज ऊँची आवाज में बोला, ''यार तेरी तो आज बडी नमकीन लग रही है।'' तो दूसरा भी तुर्की–बेतुर्की बोला ''और तेरी भी आज बड़ा गजब ढा रही है।''

जिन युवतियों के बारे में कहा जा रहा था वे लजाने के बजाय इतराने लगीं। लड़के बहक रहे थे। पहला युवक बोला ''यार, आज तो मैं तेरे कमरे में जा रहा हूँ।'' दूसरे ने अपने सामने बैठी महिला को छेड़ा, ''क्यों जानेमन, आज मेरे साथ डांस करके मजा आया ना।.......'' इस पर युवती ने इठलाते हुए कहा कि. ....''खाक आया... पलक झपकते तो बत्तियाँ जल गईं! रातभर सिखाओ तो जानें।'' सुनकर पहला युवक घबरा गया, ''.......फिर मेरा क्या होगा?'' इस पर दूसरा चहका, ''तू तो मेरे कमरे में जा रहा है ना?''

कहना न होगा कि कोई मर्यादा न थी। कोई झिझक नहीं। लाज–शर्म का तो नामोनिशान नहीं। सब नशे में डूबे थे। सब पराई पत्तल के जुगाड़ में। फैशनेबल युवक उठा, अपने आगे बैठी युवती का हाथ पकड़ा और हँसता हुआ बोला ''अच्छा यार, मैं चलता हूँ।''

युवती ने कृत्रिम विरोध प्रदर्शित किया, फिर बेशर्मी से मुस्कराती हुई उठकर खडी हो गई। युवक उसकी कमर अपनी बाँह में लपेट चल पड़ा तो दूसरा युवक संजीदगी से बोला, ''मेरी बीवी का ख्याल रखना यार ! माँगे की छतरी पाकर आँधी में उड़ा मत देना।''

''श्योर–श्योर,'' कहता वह युवक भी चिन्ता जतला गया कि– ''देखना, तू भी मेरी वाइफ को डिस्को सिखाते–सिखाते कहीं बेडिंग मत सिखा देना यार।''

सुनकर दूसरा युवक भी हँसा और उठकर दूसरी युवती को आलिंगन में ले उसके रूम की ओर चल पड़ा। मि0 कुमार और मि0 रस्तोगी अभी तक जिसे मजाक समझ रहे थे, वह हकीकत में बदल गया था।. .... उजबक की तरह वे एक–दूसरे को घूरते हुए खामोशी में बैठे रह गये थे। नशा हिरन हो गया था। मन में घृणा, खीज और चिंता व्याप गई थी। अंततः मि0 कुमार ने चुप्पी तोड़ी, ''क्या आधुनिकता है यार। पूरा वेस्टर्न कल्चर ?ुस आया हैं इन टूरिस्ट प्लेसों पर। ये...... ये..... छोकरे किस दुनिया में रह रहे हैं, रस्तोगी साहब!''

जवाब देने के पहले रस्तोगी साहब ने वेटर को एक बोतल शराब लाने का इशारा किया और मि0 कुमार को दो मिनट रूकने का संकेत। तब पांच मिनट बाद जब नई बोतल खोली जा चुकी थी और लार्ज साइज का पैग अपने गिलास में डाल कर मि0 रस्तोगी ने आधे से ज्यादा गले के नीचे उतार लिया था और मि0 कुमार के गले के नीचे भी, वे बोले, ''दुनिया की शुरूआत से लेकर अब तक यही किस्सा चल रहा है कुमार साहब। ब्रह्मा की संतान मनु सतरूपा तो आपस में सगे भाई बहन थे। वे यौन संबंध में प्रवृत्त हुए। उधर दूसरे धर्म में ईव और एडम या हौआ और आदम जिन्हें कहा गया है, वे क्या रहे होंगे आपस में, सोचिए! तो इस तरह खास चीज है नेचर की बनायी देह––– एक मर्द, एक औरत! बस।'' और मि0 कुमार दुविधाग्रस्त हो गए, कि– ''रस्तोगी साहब! मनु स्मृति पढ़ी थी कभी मैंने। उसमें एक लिस्ट दी है मनु ने, जिनसे विवाह यानी यौन संबंध वर्जित हैं।.... वे तो सिर्फ पति–पत्नी को अलाउ करते हैं, बाकी सब को नाजायज करार देते हैं।''

''मनु स्मृति तो बहुत बाद की किताब है, कुमार साहब!'' रस्तोगी साहब ने डकार लेते हुए फरमाया, ''वो सिर्फ इसलिए लिखी गई कि जो ऐश करता है सदा ऐश करता रहे और जो वंचित है सदा वंचित रहे। चाहे वो दलित जाति का आदमी हो या स्वेच्छा से देह संबंध बनाने वाला कोई व्यक्ति।.... आपने यम और यमी नाम के सगे भाई बहन का किस्सा पढ़ा होगा। जहाँ देह की ताप से जल रही यमी को अपने सहोदर भाई में एक भरा पूरा मर्द नजर आता है। ब्रह्मा की दशा तो और ज्यादा खराब है। वे अपनी बेटी सरस्वती के साथ रमण करते हैं। इंद्र गौतम का वेश धारण कर अहिल्या से सहवास करता है... और मजे की बात यह कि इन चरित्रों की कभी कोई आलोचना नहीं करता। तो क्या ये चरित्र वाकई मिथ्या हैं? इनकी कामुक कथाएँ, कपोल–कल्पित हैं? ऐसा नहीं है। यह तो हमारा सामाजिक यथार्थ है। प्राकृतिक रूप से कामेच्छाओं की पूर्ति ही सर्वोपरि मानी गई है। रांगेय राघव ने अपनी प्रागैतिहासिक पुस्तक 'महायात्रा' में बताया है कि आरंभ में व्यक्ति अपने परिवार में ही काम–वासना की पूर्ति किया करता था। सबसे बड़ी बात तो यह है कि कामेच्छा की तृप्ति न होने पर वह अनुचित रूप से अभिव्यक्त होती है। कुमार साहब को रस्तोगी साहब ठीक से समझाते हुए बोले, ''पिछले माह तुमने एक समाचार पढ़ा होगा कि पिता ने अपनी ही पुत्री के साथ........।''

''हाँ– लिखा तो फ्रॉयड ने भी है,'' मि0 रस्तोगी हाँ में हाँ मिलाते हुए बोले, ''अतृप्त काम–वासना, अचेतन में बैठ जाती हैं। फिर हमें क्यों लगता है कि ये युवक–युवतियाँ नीचता पर उतर आए हैं? सबसे बडी है देह की भूख, जो मनचाहे साथी के साथ मिटाना किसी भी दृष्टि से गलत नहीं।''

मि0 रस्तोगी की आवाज से लग रहा था कि वे नशे में पूरी तरह धुत्त हो चुके हैं फिर भी जारी हैं, ''हिन्दू दर्शन में विवाह के जितने भी प्रकार बताये गये हैं, उनमें सबसे अच्छा गंधर्व विवाह हैं जिसे देवताओं से लेकर मनुष्यों तक सभी ने अपनाया और समाज ने बकायदा उसे जायज करार दिया।''

...और मुंह बाये मि0 रस्तोगी को ताकते बैठे मिस्टर कुमार पर भी अब रस्तोगी का जादू चढ़ रहा था। एकाएक वे सक्रिय हुए और लगभग खाली हो चुकी बोतल की तलछट में बची बाकी सारी शराब अपने गिलास में डाली और एक ही घूंट में पूरी की पूरी खींच गए। फिर लटपटाती जुबान से बोले, ''उस दिन इंटरनेट पर मैंने भारतीय त्योहार की साइट क्लिक की तो होली के त्योहार को मदनोत्सव यानी काम देवता का त्योहार लिखा पाया...... रस्तोगी साहब! वाह भई मान गए आपको। आप तो चलती फिरती इन्साईक्लोपीडिया हो गुरु! फिकर नॉट। दुनिया में सिर्फ दो रिश्ते होते हैं नर और मादा... दुनिया में सिर्फ दो जाति औरत और मर्द। वाह गुरु वाह।''

बारह बज चुके थे। वेटर ने आकर उन्हें टोका, वे होंठों में मुस्काते उठ खड़े हुए। मि0 कुमार इस वक्त भी आदम और हौआ के निर्वस्त्र चित्रों की याद कर रहे थे तो मि0 रस्तोगी अभी भी जाने किस चैनल से महर्षि पाराशर और धीवर कन्या मत्सय गंधा के आकस्मिक समागम का लाइव देख रहे थे। नशे में लड़खड़ाते हुये दोनों गैलरी में बेसाख्ता बढ़े जा रहे थे। लेकिन अपने–अपने कमरे के आगे आकर न सिर्फ ठिठक गए बल्कि एकाएक एक–दूसरे को ताकने लगे। तमाम पल यों ही गुजर गए। फिर जैसे, अनंग की प्रबल प्रेरणा से मि0 रस्तोगी मि0 कुमार के कमरे के दरवाजे पर आ खड़े हुए तो मि0 कुमार चलकर मि0 रस्तोगी के कमरे के दरवाजे पर और ताज्जुब कि दोनों कमरों के गेट सिर्फ उढ़के हुए थे! सो, दोनों धड़कते दिल से अंदर पहुंचे तो दोनों ने पाया कि उनके डांस पार्टनर बड़ी बेसब्री से उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे थे। मकान और दोस्ती से हुई शुरूआत अल्मोड़ा, रानीखेत और कोसानी से गुजरते हुए देशकाल के परिप्रेक्ष्य में डांस फ्लोर पर सघन हो रूम नंबर एक सौ चार और पाँच में मदमस्त हो नाच रही थी।

अपने शहर में ....

दोनों परिवार वापिस अपने शहर आ गये। मन का नशा मानों इच्छापूर्ति के बाद मन के एक कोने में दुबककर बैठ गया था। वातावरण का नशा वातावरण के खत्म होते ही समाप्त हो गया । शहर में अपने गौरव, अपनी स्थिति को देख मि0 रस्तोगी और मि0कुमार मन में पश्चाताप कर रहे थे, उन्हें लग रहा था कि उनसे बहुत बड़ी भूल हो गयी है। मिसेज कुमार और मिसेज रस्तोगी तो एक दूसरे से आँख भी नहीं मिला पा रहीं थीं। उन्हें महसूस हो रहा था वातावरण ने उन पर इतना प्रभाव डाला कि वे अपने संस्कार ही भूल गयीं। दोनों परिवार एक दूसरे से कतराने लगे। न वो रोज की बैठक रही, न मिलना जुलना, न ही वो दोस्ती–यारी। ऐसा लग रहा था कि नैनीताल में दोस्ती दफ़न कर आये हैं वो लोग।

जल्दी ही मि0 रस्तोगी के मकान के आगे 'मकान बिकाऊ है' की तख्ती लटक गयी, आने वाले रविवार को दैनिक समाचार पत्र में उसके बिकने का विज्ञापन भी निकल गया।

वैचारिक और संस्कारिक स्तर पर कमजोर पड़ोसी और दोस्ती की मौत हो चुकी थी।

◆

कुछ खासः अंक विशेष

'सात वचन'

सुखी जीवन के सात आधार स्तम्भ

पं. डी.के. शर्मा 'वत्स'

विवाह समय पति द्वारा पत्नी को दिए जाने वाले सात वचनों के महत्व को देखते हुए यहाँ उन वचनों के बारे में कुछ जानकारी देने का प्रयास कर रहा हूँ. यदि आज भी इनके महत्व को समझ लिया जाता है तो दाम्पत्य सम्बन्धों में उत्पन अनेक समस्यायों का समाधान स्वतः ही हो जाएगा.

1. तीर्थव्रतोद्यापन यज्ञकर्म मया सहैव प्रियवयं कुयारू !

वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति वाक्यं प्रथमं कुमारी !!

(यहाँ कन्या वर से कहती है कि यदि आप कभी तीर्थयात्रा को जाओ तो मुझे भी अपने संग लेकर जाना. कोई व्रत–उपवास अथवा अन्य धर्म कार्य आप करें तो आज की भांति ही मुझे अपने वाम भाग में अवश्य स्थान दें. यदि आप इसे स्वीकार करते हैं तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ.)

किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्यों की पूर्णता हेतु पति के साथ पत्नी का होना अनिवार्य माना गया है. जिस धर्मानुष्ठान को पति–पत्नी मिल कर करते हैं, वही सुखद फलदायक होता है. पत्नी द्वारा इस वचन के माध्यम से धार्मिक कार्यों में पत्नि की सहभागिता, उसके महत्व को स्पष्ट किया गया है.

2. पुज्यौ यथा स्वौ पितरौ ममापि तथेशभक्तो निजकर्म कुर्याः !

वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं द्वितीयम !!

(कन्या वर से दूसरा वचन मांगती है कि जिस प्रकार आप अपने माता–पिता का सम्मान करते हैं, उसी प्रकार मेरे माता–पिता का भी सम्मान करें तथा कुटुम्ब की मर्यादा के अनुसार धर्मानुष्ठान करते हुए ईश्वर भक्त बने रहें तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ)

यहाँ इस वचन के द्वारा कन्या की दूरदृष्टि का आभास होता है. आज समय और लोगों की सोच कुछ इस प्रकार की हो चुकी है कि अमूमन देखने को मिलता है–गृहस्थ में किसी भी प्रकार के आपसी वाद–विवाद की स्थिति उत्पन होने पर पति अपनी पत्नी के परिवार से या तो सम्बंध कम कर देता है अथवा समाप्त कर देता है. उपरोक्त वचन को ध्यान में रखते हुए वर को अपने ससुराल पक्ष के साथ सदव्यवहार के लिए अवश्य विचार करना चाहिए.

3. जीवनम अवस्थात्रये मम पालनां कुर्यात !

वामांगंयामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं तृतीयं !!

(तीसरे वचन में कन्या कहती है कि आप मुझे ये वचन दें कि आप जीवन की तीनों अवस्थाओं (युवावस्था, प्रौढावस्था, वृद्धावस्था) में मेरा पालन करते रहेंगे, तो ही मैं आपके वामांग में आने को तैयार हूँ)

4. कुटुम्बसंपालनसर्वकार्य कर्तु प्रतिज्ञां यदि कातं कुर्याः !

वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं चतुर्थं !!

(कन्या चौथा वचन ये माँगती है कि अब तक आप घर–परिवार की चिन्ता से पूर्णतः मुक्त थे. अब जबकि आप विवाह बंधन में बँधने जा रहे हैं तो भविष्य में परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ती का दायित्व आपके कंधों पर है. यदि आप इस भार को वहन करने की प्रतीज्ञा करें तो ही मैं आपके वामांग में आ सकती हूँ)

इस वचन में कन्या वर को भविष्य में उसके उतरदायित्वों के प्रति ध्यान आकृष्ट करती हैं. विवाह पश्चात कुटुम्ब पौषण हेतु प्रयाप्त धन की आवश्यकता होती है. अब यदि पति पूरी तरह से धन के विषय में पिता पर ही आश्रित रहे तो घ्सी स्थिति में गृहस्थी भला कैसे चल पाएगी. इसलिए कन्या चाहती है कि पति पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर होकर आर्थिक रूप से परिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ती में सक्षम हो सके. इस वचन द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया है कि पुत्र का विवाह तभी करना चाहिए जब वो अपने पैरों पर खडा हो प्रयाप्त मात्रा में धनार्जन करने लगे.

5. स्वसद्यकार्ये व्यवहारकर्मण्ये व्यये मामापि मन्त्रयेथा !

वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रूते वचरू पंचमत्र कन्या !!

(इस वचन में कन्या जो कहती है वो आज के परिपेक्ष में अत्यंत महत्व रखता है. वो कहती है कि अपने घर के कार्यों में, विवाहादि, लेन–देन अथवा अन्य किसी हेतु खर्च करते समय यदि आप मेरी भी मन्त्रणा लिया करें तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ)

यह वचन पूरी तरह से पत्नि के अधिकारों को रेखांकित करता है. बहुत से व्यक्ति किसी भी प्रकार के कार्य में पत्नि से सलाह करना आवश्यक नहीं समझते. अब यदि किसी भी कार्य को करने से पूर्व पत्नि से मंत्रणा कर ली जाए तो इससे पत्नि का सम्मान तो बढता ही है, साथ साथ अपने अधिकारों के प्रति संतुष्टि का भी आभास होता है.

6. न मेपमानमं सविधे सखीनां द्यूतं न वा दुर्व्यसनं भंजश्चेत !

वामाम्गमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं च षष्ठम !!

(कन्या कहती है कि यदि मैं अपनी सखियों अथवा अन्य स्त्रियों के बीच बैठी हूँ तब आप वहाँ सबके सम्मुख किसी भी कारण से मेरा अपमान नहीं करेंगें. यदि आप जुआ अथवा अन्य किसी भी प्रकार के दुर्व्यसन से अपने आप को दूर रखें तो ही मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ)

वर्तमान परिपेक्ष्य में इस वचन में गम्भीर अर्थ समाहित हैं. विवाह पश्चात कुछ पुरूषों का व्यवहार बदलने लगता है. वे जरा जरा सी बात पर सबके सामने पत्नि को डाँट–डपट देते हैं. ऐसे व्यवहार से बेचारी पत्नी का मन कितना आहत होता होगा. यहाँ पत्नी चाहती है कि बेशक एकांत में पति उसे जैसा चाहे डांटे किन्तु सबके सामने उसके सम्मान की रक्षा की जाए, साथ ही वो किन्हीं दुर्व्यसनों में फँसकर अपने गृहस्थ जीवन को नष्ट न कर ले.

7. परस्त्रियं मातृसमां समीक्ष्य स्नेहं सदा चेन्मयि कान्त कुर्या !

वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रूते वचरू सप्तममत्र कन्या !!

(अन्तिम वचन के रूप में कन्या ये वर मांगती है कि आप पराई स्त्रियों को माता के समान समझेंगे और पति–पत्नी के आपसी प्रेम के मध्य अन्य किसी को भागीदार न बनाएंगे. यदि आप यह वचन मुझे दें तो ही मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ.)

विवाह पश्चात यदि व्यक्ति किसी बाह्य स्त्री के आकर्षण में बँध पगभ्रष्ट हो जाए तो उसकी परिणिति क्या होती है–ये आप सब भली भान्ती से जानते हैं. इसलिए इस वचन के माध्यम से कन्या अपने भविष्य को सुरक्षित रखने का प्रयास करती है.

देखा आपने कि किस प्रकार ईश्वर को साक्षी मानकर किए गए इन सप्त संकल्प रूपी स्तम्भों पर सुखी गृहस्थ जीवन का भार टिका हुआ है........।

◆

चलचित्र दृष्टि

काई पो चे

(दोस्ती की अनोखी कहानी)

फिल्म समीक्षा

दोस्ती से बढ़कर कोई रिश्ता नहीं होता. गर्लफ्रेंड के छोड़ जाने पर, मां-बाप की डांट पर और किस्मत की ठोकर पर भी जो शख्स आपके चेहरे पर मुस्कान की लकीर खींचता है वह कोई और नहीं दोस्त ही होता है. सच्ची दोस्ती के रिश्ते का कोई सानी नहीं होता. यह रिश्ता जिंदगी में भी हिट होता है और बॉलीवुड में भी. शोले जैसे सुपरहिट फिल्म को सफलता बसंती के जलवे नहीं जय और वीरू के दम पर मिली. इसी हिट फॉर्मूले को एक बार फिर निर्देशक अभिषेक कपूर ने अपनाया और एक सुपरहिट कहानी दी है.

'काई पोचे' दरअसल एक गुजराती स्लैंग है जो पतंगबाजी के दौरान इस्तेमाल किया जाता है. जब कोई अपने प्रतिद्वंदी की पतंग को काट देता है तो खुशी का इजहार करने के लिए काई पो चे यानि मैंने पतंग काट दी बोलता है.

निर्देशक अभिषेक कपूर वहीं शख्स हैं जिन्होंने 'काई पो चे' से पहले रहृक अहृन जैसी सुपरहिट फिल्म दी है. इस सप्ताह रिलीज हुई उनकी फिल्म काई पो चे में एक बार फिर रहृक अहृन की तरह दोस्ती के खट्टे-मीठे रिश्ते को उन्होंने पर्दे पर जीवित किया लेकिन एक संजीदगी भरे तरीके से.

कलाकारः सुशांत सिंह राजपूत, अमित साध, राज कुमार यादव, अमृता पुरी

निर्माताः रॉनी स्क्रूवाला, सिद्धार्थ रॉय कपूर

निर्देशकः अभिषेक कपूर

गीतः स्वानंद किरकिरे

संगीतः अमित त्रिवेदी

स्टोरीः

'काई पो चे' तीन मध्यम वर्गीय दोस्तों की कहानी है जो जिंदगी में कुछ बड़ा करने की चाहत रखते हैं. गोविंद (राजकुमार यादव), ईशान (सुशांत सिंह राजपूत) और ओमी (अमित साद) की दोस्ती को गोधरा दंगों और गुजरात के भूकंप की अग्नि परीक्षा से होकर गुजरना होता है.

Based on the Novel of
CHETAN BHAGAT's
Mistakes Of My Life
kai po che!

ईशान भारत की नेशनल टीम का हिस्सा ना बन पाने की चिंता में खुद को हारा हुआ महसूस करता है. ओमी एक पुजारी का लड़का है और हमेशा सही राह पर चलने की कोशिश करता है. वहीं गोविंद जिंदगी में बड़ा पैसा बनाना चाहता है. अपने सपने को पूरा करने के लिए वह खेल का सामान बेचता है. इसी दौरान ईशान को अली नामक एक प्रतिभावान छात्र में बड़ा क्रिकेटर बनने की आस नजर आती है और वह उसकी प्रतिभा को निखारने की राह पर निकल पड़ता है.

इसी दौरान ओमी के चाचा की मदद से ईशान एक स्पोर्ट्स एकेडमी खोलता है जिसका नाम रखता है साबरमती स्पोर्ट्स एकेडमी. सभी चीजें सही राह पर ही होती हैं कि एक दिन गुजरात में दंगे शुरू हो जाते हैं और तीनों दोस्त एक-दूसरे के आमने-सामने आ जाते हैं. क्या नफरत की इस आग में इनकी दोस्ती कायम रहेगी यह जानने के लिए आपको फिल्म देखनी चाहिए.

फिल्म समीक्षाः

अभिषेक कपूर ने फिल्म की कहानी और उसके किरदारों पर इतना काम किया है कि कुछ दृश्यों में तो आप भावनाओं से सराबोर इस कहानी में खुद को ही फिल्म का किरदार समझने लगेंगे. आपको यह फिल्म अपने दोस्तों की याद दिलाने वाली है. फिल्मी दुनिया में असली जिंदगी के रंग भरने के लिए अभिषेक कपूर ने बहुत मेहनत की है और उनकी यह मेहनत रंग भी लाई है.

अगर अभिनय की बात करें तो सुशांत सिंह राजपूत ने साबित किया है कि छोटे पर्दे के अलावा वह बड़े पर्दे पर भी अपना जादू बिखेरने का दम रखते हैं. राजकुमार यादव ने भी अपने किरदार को बखूबी निभाया है. अमित साद ने तो अपने अभिनय से फिल्म को जैसे एक नई जान दी है. फिल्म में काम कर रही अकेली अभिनेत्री अमिता पुरी ने भी तीन मेल एक्टर के होते हुए अपनी पहचान बनाई जो एक अच्छी बात है.

संगीतः

'काई पो चे' का संगीत अमित त्रिवेदी ने दिया है. फिल्म के सभी गीत संगीतमय और बेहद सुरीले हैं जिनमें ना तो अधिक तड़क-भड़क है और ना ही अधिक दुखभरे एहसास.

<http://jagranreviews.jagranjunction.com/>

गज़ल

-विजय वर्मा

आज फिर दिल उदास है,
कोई गज़ल तो सुनाओ
किसी की याद आस-पास है,
कोई गज़ल तो सुनाओ।
क्यूँ बेतरह याद आते हैं वो
बीते दिनों के किस्से
उन्हीं दिनों की कोई पाश है,
कोई गजल तो सुनाओ।
जो टूट चुकी है डोर,
मन क्यूँ थामता उसी को
अब फिर ये कैसी आस है?
कोई गज़ल तो सुनाओ।
ये क्या बला है इश्क ?
ये जिंदगी क्या शै है ?
ये मन क्यूँ बदहवास है ?
कोई गज़ल तो सुनाओ।
कभी सुनकर मेरी सदायें
पास आ जाते थे सदा
अब किन्हें अवकाश है !
कोई गज़ल तो सुनाओ।
मजबूर हूँ मैं कि
आकाशकुसुम है वो बने हुए
इतनी दूर क्यूँ आकाश है?
कोई गज़ल तो सुनाओ।
लो आखिरी है शेर,
पेशे-खिदमत है ये मकता
ये आखिरी ही श्वांस है,
कोई गज़ल तो सुनाओ।

काव्य सिंधु

सिलसिला

-ध्रुव गुप्ता

जब मैंने प्यार किया
चांद में उसके अक्स देखे
हवा में सुनी उसकी आहट
गीत लिखे उसके होंठों और
आंखों के
और एक दिन मैंने महसूस किया
मैं बेचैन हो रहा हूं
जब मैंने प्यार किया
मैंने उसे बहुत सारे ख़त लिखे
उसने मुझे
मैं उसके ख़त सिरहाने डालकर
गहरी नींद सोता रहा
एक सुबह उठकर मुझे लगा
ख़त के लफ़्ज असर खो चुके हैं
जब मैंने प्यार किया
मैंने उससे एक बोसा मांगा
उसने दिया
वह बोसा कितनी कितनी रात
सुलगता रहा मेरे भीतर
और एक दिन आग बन गया
जब मैंने प्यार किया
मैंने उससे एक पूरी रात मांगी
उसने दी
और एक समूची रात
उसके बदन की आंच में तपने
पिघलने और बह जाने के बाद
अलस्सुबह मैंने पाया
मैं इस सिलसिले से ऊब गया हूं
जब मैंने प्यार किया
मैंने उससे जुदाई मांगी
उसने दी
और जुदाई के साथ एक बेचैन
समंदर
उतार दिया मेरे भीतर
अरसे से मैं इस बेचैन समंदर में
तलाश रहा हूं एक पुरसुकून जजीरा
जिसका भूगोल धीरे धीरे
उसके चेहरे में तब्दील हो चुका है
मैं फिर उसे प्यार करूंगा
फिर सुनूंगा हवा में उसकी आहट
चांद में देखूंगा उसके अक़्स
लिखूंगा उसे ख़त
उससे एक बोसा मांगूंगा
और एक रात
फिर से जुदाई मांगने के पहले
ऐसे ही, बिल्कुल ऐसे ही
मैं उसे प्यार करता रहूंगा तमाम उम्र
और कभी न जान पाऊंगा
मैं उससे क्या चाहता हूं ।

वृक्ष मुझसे बात करता है

-दीपक अरोड़ा

बहुत सारे साल बीत गये,
पौधे पेड़ हो गये, पेड़ तख्तपोश,
स्मृतियों की थकान से थका, मैं
जब भी पीठ सीधी करने को लेटता
हूँ इस पर,
वृक्ष मुझसे बात करता है।

हम दोनों के पास कहने के लिए,
अब भी कुछ नहीं होता, जो
एक बार वृक्ष के नीचे खड़े हो,
अपनी तर्जनी के नाखून से कुरेद
नहीं लिखा होता,
मेरा और तुम्हारा नाम तुमने हरी
छाल पर,
पेड़ को तुम्हारी तर्जनी के नाखून
की चुभन,
अब भी है, बताता है वह अक्सर।

पेड़ बहुत बातूनी है,
पतझड़ के जिक्र करते हुए जाने क्यों,
हर बार तुम्हें पेड़ और
मुझे पत्ता कहता है,
गहन विस्मृति में हो तो कह देता है,
इससे बिलकुल उलटा भी।

पेड़ को याद है,
उसके पुराने पड़ोस में बसती
चरागाहें,
उसे अब भी प्यार है,
घास चरती, भेड़ों, बकरियों और
अशांत गायों से,
उसे याद है आरी के दांतों की
गिनती, और
रेते जाते हुए, भोगा हुआ दुःख।

पेड़ फलदार मौसमों के साथ आते,
पत्थरों से दुखी नहीं था,
बच्चों का छूना, लपकना, और
फुनगी तक जाना,
उसे याद आता है।
पिछली रात भी किसी सपने में
बड़बड़ाते हुए,
उसने डांटा कुछ बच्चों को
नाम लेकर।

हम अकेले होते हैं मेरे कमरे में
हर रात,
पिछली बार मेरे लेटते ही पूछा उसने,
'तुम जमीन पर नहीं सो सकते ?'
(यकीनन ! वह कह रहा था जरूरी
नहीं हर रात तख्तपोश रखा जाए
तख्तपोश पर ही)

आवाज देता है कोई उस पार

-सुधा ओम ढींगरा

सुन सोहणी उसे,
उठा माटी का घड़ा,
तैर जाती है,
चनाव के पानियों में,
मिलने अपने महिवाल को
खड़ा है जो नदी के उस पार.....
सस्सी भटकती है
थलों में
सूनी काली रातों में,
छोड़ गया था पुन्नू
सोती हुई सस्सी को,
पुन्नू-पुन्नू है पुकारती
शायद सुन ले उसकी आवाज
खड़ा है जो मरू के उस पार.....
फरहाद ने तोड़ा पहाड़
नदी दूध की निकालने,
शर्त प्यार की पूरी करने,
तड़प रहा है मिलने शीरीं से
पहुँच न पाया उस तक
खड़ी है जो पहाड़ों के उस पार....
साहिबा ने छोड़ा घर-बार
छोड़े भाई और परिवार,
भाग निकली मिर्जा संग
गीत में हेक जब लगाई उसने
खड़ा है जो झाड़ियों के उस पार...
हीर पाजेब अपनी दबा
ओढ़नी से मुँह छुपा,
चुपके से मिलने निकल पड़ी
मधुर स्वर राँझे का जब उभरा
खड़ा है दूर जो घरों के उस पार..

जहां मेरी याद बैठी है

-प्रेमचन्द गांधी

उस कमरे में मेरी याद बैठी है
जहां शाम के वक्त खिड़की से
हल्दी जैसा पीला प्रकाश भर जाता है
तुम्हारी देह को और कान्तिवान
करता हुआ
रसोई के दरवाजे के ठीक सामने की
उसी खिड़की में
तुम्हारे केशों में वेणी बनने को आतुर
मोगरे के फूल महकते हैं
सोफे पर बैठी मेरी याद
देखती रहती है तुम्हें
मोगरे की खुशबू को
मसालों के साथ छौंकते हुए
मेरी याद के पहलू में
जब तुम बैठ जाती हो तो
खिलखिलाने लगता है मोगरा
और हंसते हुए कहता है
लो, इसने तो प्यार में
मेरी महक भी छौंक दी
और ठठा कर हंस पड़ती है
मेरी याद।

वसंत ने लिखी एक कविता

-प्रसाद रत्नेश्वर

सूखे विटप की शाखों पर
वसंत ने हरियाली की कलम से
लिखी एक कविता...तरुवर की
रग-रग में भर उठा मदन रस
खिल उठे उसके अंग-अंग
कोंपलों ने किया स्वीकार
वसंत का प्रेम निवेदन
वासंती संग में नहायी
सुकोमल पत्तियों ने लिया आकार
और विरहणी स्वर में
ऋतुराज से पूछा
उसके देर से आने का सबब
तब वसंत ने पत्तियों के
अधरों पर रख दिये अपने अधर
चटख उठा कोमलांगी का पोर-पोर
वसंत से हो रस विभोर
उभर आई, फलों की गोलाईयाँ
तब बहुत पास से छेड़ गई कोयल।

ढलती उमर का प्रणय निवेदन

-मदन मोहन बाहेती 'घोटू'

मैं जो भी हूँ, जैसा भी हूँ,
तुमसे बहुत प्यार करता हूँ,
मेरी ढलती उमर देख कर,
तुम मुझको ठुकरा मत देना
माना तन थोड़ा जर्जर है, लेकिन
मन में जोश भरा है
इन धुंधली आँखों में देखो,
कितना सुख संतोष भरा है
माना काले केश घनेरे,
छिछले और सफेद हो रहे,
लेकिन मेरे मन का तरुवर,
अब तक ताजा, हरा-भरा है
तेरे उलझे बाल जाल में,
मेरे नयना उलझ गए है,
इसीलिये श्रृंगार समय तुम,
उलझी लट सुलझा मत लेना,
मैं जो भी हूँ, जैसा भी हूँ,
तुमसे बहुत प्यार करता हूँ,
मेरी ढलती उमर देख कर,
तुम मुझको ठुकरा मत देना,
चन्दन जितना बूढ़ा होता,
उतना ज्यादा महकाता है,
और पुराने चांवल पकते,
दाना दाना खिल जाता है
जितना होता शहद पुराना,
उतने उसके गुण बढ़ते हैं,
'एंटीक' है चीज पुरानी,
उसका दाम सदा ज्यादा है,
साथ उमर के, अनुभव पाकर,
अब जाकर परिपक्व हुआ हूँ,
अगर शिथिलता आई तन में,
उस पर ध्यान जरा मत देना,
मैं जो भी हूँ, जैसा भी हूँ,
तुमसे बहुत प्यार करता हूँ,
मेरी ढलती उमर देख कर,
तुम मुझको ठुकरा मत देना,
साथ उमर के, तुममे भी तो,
है कितना बदलाव आ गया,
जोश, जवानी और उमंग में,
अब कितना उतराव आ गया,
लेकिन मेरी नजरों में तुम,
वही षोडसी सी रूपवती हो,
तुम्हें देख कर मेरी बूढी
नस नस में उत्साह आ गया,
बासी रोटी, बासी कढ़ी के,
साथ, स्वाद, ज्यादा लगती है,
सच्चा प्यार उमर ना देखे,
तुम इतना बिसरा मत देना
मैं जो भी हूँ, जैसा भी हूँ,
तुमसे बहुत प्यार करता हूँ,
मेरी ढलती उमर देख कर,
तुम मुझको ठुकरा मत देना।

प्रेम क्या है ?

-माहेश्वरी कानेरी

प्रेम समर्पण है,
भावों का अर्पण है,
प्रेम कोई अभिलाषा नहीं,
सिर्फ न्योछावर है ।
प्रेम सिर्फ प्रेम के लिए है,
न कुछ माँगता है न देता है,
वह तो अपने में ही पूर्ण और
पर्याप्त है
प्रेम में कोई आडम्बर नहीं,
कोई आवरण नहीं,
प्रेम सिर्फ आनंद और उन्माद नहीं
एक करुण दर्द भी है,
जिसे स्वेच्छा और प्रसन्नता से
अनुभव कर सकें
और उसे अपना कर
स्वयं को पूर्ण बना सकें ।
प्रेम में स्वयं को इतना पिघला दो
कि वह झरना बन बह निकले
उसमें से निकलता संगीत ही
निश्छल प्रेम की अमृत धारा है
जो स्वयं ही भीतर धीरे-धीरे
प्रवाहित होकर
सब कुछ अपने अंदर समा लेती है
तभी निर्मल प्रेम का
एक सुन्दर रूप खिलता है
बस...यही प्रेम है-
शाश्वत प्रेम ।

प्रेम...

-वीरेन्द्र जैन

क्या प्रेम से बढ़कर हो सकता है कुछ,
शायद कुछ नहीं
क्योंकि प्रेम सब कुछ से बढ़कर होता है
जीवन में,
गर किया जाए बिना किसी स्वार्थ से
पूरी पवित्रता और पूरी सच्चाई से,
अगर हम अपनाएं उसे
जैसे जल अपनाता है मृदुता को,
जैसे चांदनी अपनाती है
शीतलता को,
जैसे हवा अपनाती है छूअन को
और मन अपनाता है गति को,
हम घटित होने दे सकते हैं
प्रेम को अपने भीतर,
उस एक पल की तरह
जिसमें ईश्वर घटित होता है,
जिसमें उजाला घटित होता है
हमारे अंदर...
या फिर बिता सकता है कोई
अपना सारा जीवन
बिना अनुभूति किये प्रेम की,
किसी नीरस कविता की तरह...।

प्रेम की सरगम

-उपासना सियाग

कोई आँखों से दिल की
बात कहता रहा,
और कोई पलके मूंदे
ख्वाब ही बुनता रहा...
रहा अनजान उन आँखों की
इबारत से,
बस अपनी ही धुन में रहा
हो कर मगन...
कोई पुकारता रहा आँखों से,
अपने गीतों से...
और कोई
सुर में ही खोया रहा...
रहा अनजान उन प्रेम भरे
सुरों की सरगम से,
अचानक ये सुर कैसे बदले किसी के,
कोई ऐसा क्या कह बैठा,
और कोई क्या समझा गया...
किसी की आँखों से
प्रेम के अश्रु और मन प्रेम की सरगम
में बह निकला...

शब्द

-सुमन कपूर

शब्द, शब्दों में तलाशते हैं मुझे
और मैं...उन शब्दों में तुम्हें !
रात जर्द पत्ते सी
शबनम को टटोलती
चाँद जुगनू सा मंद मंद बुझा सा
नदी खामोश किनारों को
सहलाती हुई
तब दूर कहीं सन्नाटे के जंगल में
सुनाई देता है मुझे दबा सा
कुछ अनकहे अनसुने शब्दों का शोर
धूमिल सी अधकच्चे विचारों की
पगडंडी
उस शोर की तरफ बढ़ते अनथक दो
कदम
कदम, कदमों में थामते हैं मुझे
और मैं...उन कदमों में तुम्हें !
शब्द, शब्दों में तलाशते हैं मुझे
और मैं...उन शब्दों में तुम्हें ।

प्रेमः एक तुम्हारा इंतजार

-अर्चना ठाकुर

साहिल को छू कर
लौटती लहरों सा मेरा इंतजार
विचारों को
एक छोर से
दूसरे छोर तक ले जाता है
और अहसासों में
तुम्हारे होने से न होने का
अहसास
मुझको लड़कपन से
परिपक्वता तक ले जाता है
तिस पर
पथराई अखियों के
झरोखों से
झाँकती प्रसून उमंगे
अनजाने कदमों को
अश्व वेग देती है
और पीछे छूटते
कदमों के निशान
फिर मन में प्रवाह लाते हैं
तब ख्वाबों में होता है
एक तुम्हारा इंतजार ।

एहसास तुम्हारे होने का

-सत्यम शिवम

तुम चली गयी, पर गया नहीं,
एहसास तुम्हारे होने का।
दिल के खाली उस कोने का,
वो दर्द तुम्हारे खोने का।

गुमसुम हूँ, चुप हूँ, खोया हूँ,
एकाकीपन में रोया हूँ,
कभी शाम ढ़ले फिर आओगी,
पलकों पे सपने बोया हूँ।

अब बीत गयी है रात,
नहीं तुम पास, पहर ये रोने का।
तुम चली गयी, पर गया नहीं,
एहसास तुम्हारे होने का।

सूनापन मन में छाया है,
पतझड़ का रुत फिर आया है,
खाली, खाली तुम बिन आँगन,
आँसू ने साथ निभाया है।

कुछ बूँद गिरे, बन याद तेरे,
ये वक्त है कल में खोने का।
तुम चली गयी, पर गया नहीं,
एहसास तुम्हारे होने का।

मन वीणा के हर तार से,
झंकृत होती तेरी आहट,
हर मौन मुखरित हो जाता है,
लहरे जो बुलाती सागर तट।

कुछ कदम बढ़े, कुछ ठहर गये,
टूटे सपनों को बोने का।
तुम चली गयी, पर गया नहीं,
एहसास तुम्हारे होने का।

नभ जो है समाया आँखों में,
तारों से सपने दिखते हैं,
कोरे पन्नों पे मन व्याकुल,
आकुल अंतर का लिखते हैं।

तेरी राह तके, सदियों जागे,
कुछ देर तो हक है सोने का।
तुम चली गयी, पर गया नहीं,
एहसास तुम्हारे होने का।

दिल के खाली उस कोने का,
वो दर्द तुम्हारे खोने का।
तुम चली गयी, पर गया नहीं,
एहसास तुम्हारे होने का।

काव्य सिंधु

बस एक शाम

-पंकज द्विजेन्द्र

एक शाम फिर से उधार दे दो
सारे शिकवे गिले मिटा दूंगा
तेरे सामने तुझसे वादा करूंगा
तेरे सामने तुझे भुला दूंगा
वो एक लम्हा जिंदगी पे भारी है
तुम गईं थीं जब मेरा साथ छोड़कर
होठों पे चीखता सन्नाटा लिए
रस्मों की वो जरा सी हया ओढ़कर
काश कि वो वक्त जरा रुक जाता
काश कि उस वक्त मैं ही झुक जाता
काश वो होता तो ये ना हुआ होता
बेजार तुम ना होतीं....
रुसवा मैं ना हुआ होता
मैं जानता हूं तुमसे भी मैं
भुलाया ना गया
लब खुले ही नहीं...
मुझसे भी आया ना गया
इससे पहले कि वो
आखिरी शाम हो जाए
इससे पहले कि मेरी जिंदगी भी
खो जाए
आ... मेरी जान...फिर से वो
बहार दे दो
हो सके तो...
एक शाम फिर से उधार दे दो।

प्रेम-प्रेरणा

-ई.अर्चना नायडू

प्रेम त्याग और समर्पण है,
प्रेम उज्ज्वल मन दर्पण है,
प्रेम दया क्षमा का कण कण है,
प्रेम ! तुझे, तन मन अर्पण है,
प्रेम सात्विक सत्य निराकार है,
प्रेम पुण्यों का आधार है,
प्रेम आस्था का चमत्कार है,
प्रेम की महिमा अपरम्पार है,
प्रेम गीता और कुरान है,
प्रेम बाइबिल और
शबद का मान है,
प्रेम मंदिर का दीप सहरी का
अजान है,
प्रेम भक्ति और
इबादत का आह्वान है,
प्रेम विकारों की पूर्णाहुति है,
प्रेम ऋचाओं में बसी श्रुति है,
प्रेम उज्ज्वल दिप्त ज्योति है,
प्रेम तपस्या की अनुभूति है,
प्रेम सूर्य का तेज चन्द्र की
मधुरिमा है,
प्रेम अनंत अपरिमित असीमा है,
प्रेम शाश्वत सत्य की गरिमा है,
प्रेम जीवन की पावन महिमा है,
प्रेम निर्वाण निश्छल है,
प्रेम शिवेन्दु का गंगा जल है,
प्रेम तुलसी के राम का
पुण्य फल है,
प्रेम हर निर्बल का संबल है,
प्रेम ही सत्यं है!
प्रेम ही शिवम् है!
प्रेम ही सुन्दरम है!
इसे प्रेम ही रहने दीजिये,
कुंठित मनोविकारो से
कलंकित नहीं कीजिये।

नए प्यार का मौसमी गीत

-नवनीत नीरव

जाने कैसे तुमसे मिलके,
अरमां जगे कुछ हल्के-फुल्के,
सूने घर में आकर कोई,
छेड़ गया हो सरगम खुद से,
हाल-ए-दिल मेरा,
फिर बेकरार हुआ,
यकीं हुआ खुद को,
मुझे अब प्यार हुआ।

गीत नए कुछ बनने लगे हैं,
खोये सुर भी मिलने लगे हैं,
आकर फिर तुम
छू कर साजों को,
भर दो नए धुन,
खामोश बेसुरों में,
सुने बिना जिसको,
ये दिल बेजार हुआ।

रिमझिम बूंदें जिसको गाएं,
मौसम सुनके रीझ-सा जाए,
शरमाये गुलमोहर,
अमलतास दमके,
मंथर मेरे ख्यालों को,
उड़ने खातिर पर मिल जाएँ,
सुनकर मेरी नज्मों को,
कहें सब प्यार हुआ।

जुस्तजूं

-शैफाली गुप्ता

बाजारों दुकानों में
सज गए प्यार के साजो-सामान,
गुलाबी-लाल गुब्बारे
भर रहे होठों पर मुस्कान,
लगता वेलेंटाइन भी अब
जैसे एक त्योहार,
सन्देश प्यारे प्यारे
जो कहते हम हैं तुमसे दिल गए हार,
दिमाग में उठता एक सवाल
मन कहता लेकिन न पूछ,
प्यार का एक दिन, नफरत के हजार
क्या यह है हमारी सूझ-बूझ ?
प्यार है अँधा और भरा इसमें जुनून
कैसे बाँध लू इस बंधन को
दिन में एक, जबकि जानू मैं जलते
ख्वाबों-ख्वाहिशों के दीये हर पल
हर सांस में अनेक,
तुमसे जुड़ कर लगता मुझे
जैसे प्यार ही जिंदगी की सीरत,
हर क्षण, हर लम्हा
जैसे हो बढती हुई तुम्हारी जरुरत,
प्यार एक दिन नहीं,
एक हफ्ता-साल नहीं
एहसास ऐसा जो खत्म न हो कभी,
एक जन्म लगता कम मुझे
जतलाऊं बताऊँ जितना भी,
कम फिर भी,
शब्द-दर-शब्द पिरोती जाऊं
जैसे हो माला 'उसकी',
हर मोती संग पाती जाऊं तुम्हें
जैसे हो 'उसकी' छवि-सी,
हर साँस-साँस तुम्हारा ख्याल
हर धड़कन तुम्हारी आरजू,
कैसे संभालूं ये मन के जज्बात
तुम शब्द नहीं मेरे,
बस आत्मा की जुस्तजू ।

कामवासना और प्रेम-ओशो

अंतरमंथन

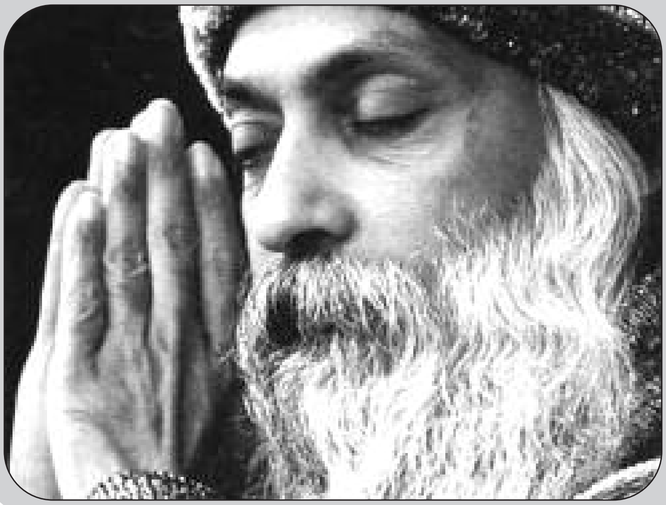

कामवासना अंश है प्रेम का, अधिक बड़ी संपूर्णता का। प्रेम उसे सौंदर्य देता है। अन्यथा तो यह सबसे अधिक असुंदर क्रियाओं में से एक है। इसलिए लोग अंधकार में कामवासना की ओर बढ़ते है। वे स्वयं भी इस क्रिया का प्रकाश में संपन्न किया जाना पसंद नहीं करते है।

तुम देखते हो कि मनुष्य के अति. रिक्त सभी पशु संभोग करते है दिन में। कोई पशु रात में कष्ट नहीं उठाता; रात विश्राम के लिए होती है; सभी पशु दिन में संभोग करते है; केवल आदमी संभोग करता है रात्रि में। एक तरह का भय होता है कि संभोग की क्रिया थोड़ी असुंदर है और कोई स्त्री अपनी खुली आंखों सहित कभी संभोग नहीं करती है। क्योंकि उनमें पुरूष की अपेक्षा ज्यादा सुरुचि–संवेदना होती है। वे हमेशा मूंदी आंखों सहित संभोग करती है। जिससे कि कोई चीज दिखाई नहीं देती। स्त्रियां अश्लील नहीं होती है, केवल पुरूष होते है ऐसे।

इसीलिए स्त्रियों के इतने ज्यादा नग्न चित्र विद्यमान रहते है। केवल पुरूषों का रस है देह देखने में; स्त्रियों की रूचि नहीं होती इसमें। उनके पास ज्यादा सुरुचि संवेदना होती है। क्योंकि देह पशु की है। जब तक कि वह दिव्य नहीं होती, उसमें देखने को कुछ है नहीं। प्रेम सैक्स को एक नयी आत्मा दे सकता है। तब सैक्स रूपांतरित हो जाता है– वह सुंदर बन जाता है। वह अब कामवासना का भाव न रहा, उसमें कहीं पार का कुछ होता है। वह सेतु बन जाता है।

तुम किसी व्यक्ति को प्रेम कर सकते हो। इसलिए क्योंकि वह तुम्हारी कामवासना की तृप्ति करता है। यह प्रेम नहीं, मात्र एक सौदा है। तुम किसी व्यक्ति के साथ कामवासना की पूर्ति कर सकते हो इसलिए क्योंकि तुम प्रेम करते हो। तब काम भाव अनुसरण करता है।

छाया की भांति, प्रेम के अंश की भांति। तब वह सुंदर होता है। तब वह पशु–संसार का नहीं रहता। तब पार की कोई चीज पहले से ही प्रविष्ट हो चुकी होती है और यदि तुम किसी व्यक्ति से बहुत गहराई से प्रेम किए चले जाते हो, तो धीरे–धीरे कामवासना तिरोहित हो जाती है। आत्मीयता इतनी संपूर्ण हो जाती है कि कामवासना की कोई आवश्यकता नहीं रहती। प्रेम स्वयं में पर्याप्त होता है। जब वह घड़ी आती है तब प्रार्थना की संभावना तुम पर उतरती है।

ऐसा नहीं है कि उसे गिरा दिया गया होता है। ऐसा नहीं है कि उसका दमन किया गया, नहीं। वह तो बस तिरोहित हो जाती है।

जब दो प्रेमी इतने गहरे प्रेम में होते है कि प्रेम पर्याप्त होता है और कामवासना बिल्कुल गिर जाती है। तब दो प्रेमी समग्र एकत्व में होते है। क्योंकि कामवासना, विभक्त करती है। अंग्रेजी का शब्द 'सैक्स' तो आता ही उस मूल से है जिसका अर्थ होता है, विभेद। प्रेम जोड़ता है। कामवासना भेद बनाती है। कामवासना विभेद का मूल कारण है।

जब तुम किसी व्यक्ति के साथ कामवासना की पूर्ति करते हो, स्त्री या पुरूष के साथ, तो तुम सोचते हो कि सैक्स तुम्हें जोड़ता है। क्षण भर को तुम्हें भ्रम होता है एकत्व का, और फिर एक विशाल विभेद अचानक बन आता है। इसीलिए प्रत्येक काम क्रिया के पश्चात एक हताशा, एक निराशा आ घेरती है। व्यक्ति अनुभव करता है कि वह प्रिय से बहुत दूर है। कामवासना भेद बना देती है। और जब प्रेम ज्यादा और ज्यादा गहरे में उतर जाता है तो और ज्यादा जोड़ देता है तो कामवासना की आवश्यकता नहीं रहती। तुम इतने एकत्व में रहते हो कि तुम्हारी आंतरिक ऊर्जाएं बिना कामवासना के मिल सकती है।

जब दो प्रेमियों की कामवासना तिरोहित हो जाती है तो जो आभा उतरती है तुम देख सकते हो उसे। वह दो शरीरों की भांति एक आत्मा में रहते है। आत्मा उन्हें घेरे रहती है। वह उनके शरीर के चारों और एक प्रदीप्ति बन जाती है। लेकिन ऐसा बहुत कम घटता है।

लोग कामवासना पर समाप्त हो जाते है। ज्यादा से ज्यादा जब इकट्ठे रहते है। तो वे एक दूसरे के प्रति स्नेहपूर्ण होने लगते है– ज्यादा से ज्यादा यही होता है। लेकिन प्रेम कोई स्नेह का भाव नहीं है, वह आत्माओं की एकमायता है– दो ऊर्जाएं मिलती है और संपूर्ण इकाई हो जाती है। जब ऐसा घटता है। केवल तभी प्रार्थना। संभव होती है। तब दोनों प्रेमी अपनी एकमायता में बहुत परितृप्त अनुभव करते है बहुत संपूर्ण कि एक अनुग्रह का भाव उदित होता है। वे गुनगुनाना शुरू कर देते है प्रार्थना को।

प्रेम इस संपूर्ण अस्तित्व की सबसे बड़ी चीज है। वास्तव में, हर एक चीज हर दूसरी चीज के प्रेम में होती है। जब तुम पहुंचते हो शिखर पर, तुम देख पाओगे कि हर एक चीज हर दूसरी चीज को प्रेम करती है। जब कि तुम प्रेम की तरह की भी कोई चीज नहीं देख पाते। जब तुम घृणा अनुभव करते हो– घृणा का अर्थ ही इतना होता है कि प्रेम गलत पड़ गया है। और कुछ नहीं। जब तुम उदासीनता अनुभव करते हो, इसका केवल यही अर्थ

होता है कि प्रेम प्रस्फुटित होने के लिए पर्याप्त रूप से साहसी नहीं रहा है। जब तुम्हें किसी बंद व्यक्ति का अनुभव होता है, उसका केवल इतना अर्थ होता है कि वह बहुत ज्यादा भय अनुभव करता है। बहुत ज्यादा असुरक्षा– वह पहला कदम नहीं उठा पाया। लेकिन प्रत्येक चीज प्रेम है।

सारा अस्तित्व प्रेममय है। वृक्ष प्रेम करते है पृथ्वी को। वरना कैसे वे साथ–साथ अस्तित्व रख सकते थे। कौन सी चीज उन्हें साथ–साथ पकड़े हुए होगी? कोई तो एक जुड़ाव होना चाहिए। केवल जड़ों की ही बात नहीं है, क्योंकि यदि पृथ्वी वृक्ष के साथ गहरे प्रेम में न पड़ी हो तो जड़ें भी मदद न देंगी। एक गहन अदृष्य प्रेम अस्तित्व रखता है। संपूर्ण अस्तित्व, संपूर्ण ब्रह्मांड घूमता है प्रेम के चारों और। प्रेम ऋतम्भरा है। इसलिए कल कहा था मैंने सत्य और प्रेम का जोड़ है ऋतम्भरा। अकेला सत्य बहुत रूखा–रूखा होता है।

केवल एक प्रेमपूर्ण आलिंगन में पहली बार देह एक आकार लेती है। प्रेमी का तुम्हें तुम्हारी देह का आकार देती है। वह तुम्हें एक रूप देती है। वह तुम्हें एक आकार देती है। वह चारों और तुम्हें घेरे रहती है। तुम्हें तुम्हारी देह की पहचान देती है। प्रेमिका के बगैर तुम नहीं जानते तुम्हारा शरीर किस प्रकार का है। तुम्हारे शरीर के मरुस्थल में मरू धान कहां है, फूल कहां है? कहां तुम्हारी देह सबसे अधिक जीवंत है, और कहां मृत है? तुम नहीं जानते। तुम अपरिचित बने रहते हो। कौन देगा तुम्हें वह परिचय? वास्तव में जब तुम प्रेम में पड़ते हो और कोई तुम्हारे शरीर से प्रेम करता है तो पहली बार तुम सजग होते हो। अपनी देह के प्रति कि तुम्हारे पास देह है।

प्रेमी एक दूसरे की मदद करते है अपने शरीरों को जानने में। काम तुम्हारी मदद करता है दूसरे की देह को समझने में– और दूसरे के द्वारा तुम्हारे अपने शरीर की पहचान और अनुभूति पाने में। कामवासना तुम्हें देहधारी बनाती है। शरीर में बद्धमूल करती है और फिर प्रेम तुम्हें स्वयं का, आत्मा का स्वयं का अनुभव देता है– वह है दूसरा वर्तुल, और फिर प्रार्थना तुम्हारी मदद करती है अनात्म को अनुभव करने में, या ब्रह्म को या परमात्मा को अनुभव करने में।

ये तीन चरण है: कामवासना से प्रेम तक, प्रेम से प्रार्थना तक और प्रेम के कई आयाम होते है। क्योंकि यदि सारी ऊर्जा प्रेम है तो फिर प्रेम के कई आयाम होने ही चाहिए। जब तुम किसी स्त्री से या किसी पुरूष से प्रेम करते हो तो तुम परिचित हो जाते हो अपनी देह के साथ। जब तुम प्रेम करते हो गुरु से, तब तुम परिचित हो जाते हो अपने साथ। अपनी सत्ता के साथ और उस परिचित द्वारा, अकस्मात तुम संपूर्ण के प्रेम में पड़ जाते हो। स्त्री द्वार बन जाती है गुरु का, गुरु द्वार बन जाता है परमात्मा का अकस्मात तुम संपूर्ण में जा पहुंचते हो, और तुम जाते हो अस्तित्व के अंतरतम मर्म में। **ओशो**

पतंजलिः योग–सूत्र, भाग–2, प्रवचन–8

8 मार्च, 1975 पूना।

लघुकथा

पाणी दा रंग वेख

–विकि आर्य

कल तक जून की दोपहर में झुलसाती हुई लू के थपेड़ों में घर से बाहर निकलते हुए सभी सोचा करते थे, मगर अब नहीं। थैंक्स टू मैट्रो।

हुडा सिटी सेंटर, गुड़गांव, मेट्रो का पहला और लास्ट स्टॉप है। यहां से येलो लाइन मेट्रो पकड़ने का सबसे बड़ा बेनिफिट ये है कि आपको बैठने के लिये सीट तो शर्तिया मिल ही जाती है।

तब भी... दोपहर दो बजे के हिसाब से भीड़ कम नहीं थी ज़्यादातर युवा चेहरे... कमोबेश उसी की उम्र के। टाइट जींस, मैचिंग टॉप, कंधे पर बैग और हाथ में सैल फोन लिये वो निर्लिप्त भाव से 'केवल महिलाओं वाले' पिंक स्टिकर के पास खड़ी थी। मेट्रो आ गई डोर ओपन होते ही सबसे पहले वह चढ़ी और अपनी पंसदीदा कॉर्नर वाली सीट पर बैठ गई. मेट्रो के डोर बंद हो ही रहे थे कि उसके मोबाइल की रिंगटोन गुनगना उठी। 'पानी दा रंग वेख के..'

'हैलो !' उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा एक नजर उसने अपने आसपास सहयात्रियों पर डाली. सभी के कानों में या तो हैडफोन पर म्यूजिक चल रहा था या फोन पर बातें. वह निश्चिन्त हो गई 'मै, मैट्रो में हूं! वही... जॉब और क्या..? तुम भी ना ! नहीं! और कोई बात नहीं! रखूं?' उसने पूछा फिर उधर से जवाब का इंतजार किये बिना ही कहा

'मैं अभी बात नहीं कर सकती' फोन काट दिया ।

'पाणी दा रंग...' उस ने अभी फोन कान से हटाया भी नहीं था कि उसका मोबाइल फिर बज उठा ।

'क्यूं तंग कर रहे हो? मैंने कहा ना। अभी बात नहीं कर सकती!'

'देखो ! प्लीज फोन मत काटना ! मुझे ... जरुरी बात करनी है...'कोई वहां से मनुहार कर रहा था ।

'कौन सी बात? वो ?... भूल जाओ!' उसने बिना किसी भाव के फोन काट दिया

'पानी दा रंग वेख के...' फोन कुछ देर बजता रहा । लडकी ने फोन उठाया 'हैलो! क्या बात है? कौन सी बात? नहीं! मुझे तुमसे कोई बात नहीं करनी!'

'पानी दा रंग वेख के..' उसका मोबाइल फिर बज उठा ।

'क्या है? तुम मुझे भूल क्यूं नहीं जाते?' कट!

'पाणी दा... रंग...' फोन फिर बज उठा, 'मुझे भूल जाओ! खुद भी जियो और मुझे जीने दो!' कट !

'पाणी दा... रंग...' मोबाइल बज उठा... 'क्या है? क्या कर रहे हो? क्यूं कर रहे हो? क्या कर लोगे? हां ?'

'पाणी दा... ' मोबाइल बजा 'तो कर लो जो करना है! मुझे परवाह नहीं!' उसने कहा ।

कट!

'पाणी दा... रंग वेख के...' लड़की ने गुस्से में फोन उठाया 'कहा ना! हमारे रास्ते अलग हैं मुझे तुमसे कोई मतलब नहीं। मरना हो मरो! जाओ भाड़ में! फोन करना बंद करो वरना... मैं फोन बंद कर रही हूं! ' उसने गुस्से में फोन काटा। हाथ में मोबाइल देर तक कांपता रहा।

'पाणी दा... रंग वेख के...' फोन बजता रहा... लड़की ने अपने को समेटा और कड़वे लहजे में कहा, 'हैलो! अब क्या है?'

फिर अचानक ही उसकी टोन बदल गई.

'अरे नहीं! नहीं! फोन मत रखना प्लीज!'

'बिजी? नहीं तो? मेट्रो में हूं! फोन?

अरे वो फोन...? बॉस का था मेरे! लड़कों को तो तुम जानते ही हो... सारे एक जैसे! जरा हंस के क्या बोल लिया कि बस! अरे रे रे नॉट यू! यू आर एन एक्सेप्शन! रात को फोन करुं? उसने गहरी आवाज में कहा... इतनी जल्दी सो जाते हो? आज जरा देर जागोगे तो क्या हो जायेगा..? उ ऊं मेरे लिए...प्लीज 'उसकी आवाज में शहद घुल रहा था।'

मेट्रो के दरवाजे हर स्टेशन पर बंद और खुलते रहे और ऐसे ही ना जाने कितने युवा चेहरों की कहानियां हुडा सिटी सेंटर से राजीव चौक तक की यात्रा में कितनी बार खुलती और बंद होती हैं।

आज रिश्तों के पानी का रंग क्या है... कोई मेट्रो से पूछे।

प्रेम विवाह की सफलता या असफलता के लिये जिम्मेदार स्थितियाँ

सितारे और भविष्य

जैसे––जैसे बच्चों की आयु बढ़ने लगती है, त्यों–त्यों माता–पिता को उनकी विवाह–शादी की चिन्ता सताने लगती है. भारतीय समाज में अधिकाशंतः निर्धारित शादियां करने की ही परम्परा रही है. हालाँकि, पुरातन काल में विवाह की कई प्रकार की परम्परायें प्रचलन में थी. इच्छित विवाह एवं स्वयंवर तथा गंधर्व विवाह भी हुआ करते थे. कुछ राजा लोग अपनी पुत्री की शादी के लिये किसी बात का प्रण ले लेते थे और उस प्रण को पूरा करने वाले का वरण कन्या को चाहे अनचाहे करना ही पडता था. भगवान राम एवं सीता जी का विवाह भी इसी परंपरा मे हुआ था.

आज के समय में जब लड़का और लड़की दोनों ही पढ़े लिखे हैं और समान रूप से कामकाजी हो गये हैं. घर, शहर और विदेश में अकेले रह कर काम कर रहे हैं तभी से प्रेम विवाह का चलन बढ़ा है. लेकिन यह बात भी उतनी ही सत्य है कि आज के समय में पालक प्रेम विवाह को अच्छी नजर से नहीं देखते हैं और यथा संभव प्रेम विवाह में रोड़े ही अटकाने की कोशिश करते हैं. लेकिन अगर जन्मकुंडली में प्रेम विवाह के योग बने हुये हैं तो वो रोकने की लाख कोशिश करले उसको रोक नहीं पाते. इसी वजह से कई जोड़े घर से भागकर मंदिर में शादी कर लेते हैं.

यहां एक बात कहना उचित होगा कि अगर जन्मकुंडली में प्रेम विवाह का योग परिलक्षित हो रहा हो तो पालकों को चाहिये कि शांत दिमाग से काम लेकर किसी योग्य ज्योतिषी से बच्चों की कुंडली का अध्ययन अवश्य करवा लेना चाहिये जिससे यह पता लगाया जा सके कि ये प्रेम संबंध सफल होकर सुख शांति बनी रहेगी या ये प्रेम संबंध सिर्फ अनैतिक संबंधों तक ही सीमित होकर कलह का कारण बनेंगे.

प्रेम संबंध और प्रेम विवाह के लिये लड़का लड़की की कुंडली के पंचम भाव का भलिभांति अध्ययन कर लेना चाहिये. प्रेम का संबंध पंचम भाव से होकर जीवन साथी का भाव सप्तम होता है. विवाह का कारक शुक्र होकर भोग विलास का दायित्व भी शुक्र का है. इन भावों के अध्ययन से ही स्पष्ट होगा कि ये प्रेमी जोड़ा सुखपूर्वक जीवन यापन करेगा या एक दुखी जीवन का निर्माण करेगा.

कुंडली के पंचम भाव से स्वाभाविक प्रेम और संतान के बारे में जाना जाता है. सप्तम भाव से इसके तादाम्य के अनुसार ही प्रेम विवाह की सफलता असफलता का निर्धारण किया जाता है. पंचमेश और सप्तमेश का कुंडली में एक दूसरे से त्रिकोण या केंद्र में होना अति आवश्यक है. यदि ये ग्रह लग्न, नवम भाव, दशम भाव या एकादश भाव में युति करें अथवा केंद्र त्रिकोण में हों तो प्रेम विवाह की प्रबल संभावना बनती है. पंचमेश सप्तमेश और नवमेश और इन भावों की स्थिति मजबूत हो तो एक सफल और सुखद वैवाहिक जीवन व्यतीत होता है. इसके विपरीत पंचमेश, नवमेश और सप्तमेश का संबंध किसी भी तरह कुंडली के छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो प्रेम विवाह में विफलता एवं निराशा ही उठानी पडती है.

निम्नलिखित योग कुंडली में अगर विद्यमान हों तो प्रेम विवाह की संभावना प्रबल होती हैः ....

1. युति अथवा दृष्टि द्वारा पंचम, नवम और सप्तम भावो ए भावेशों का संबंध बन रहा हो.

2. सातवे भाव में शनि और केतु की उपस्थिति भी प्रेम विवाह में अति सहायक होती है.

3. जब नवम और सप्तम भाव और उनके अधिपति और गुरू अशुभ भावों से घिरे हों.

4. सप्तमेश एवं शुक्र यदि शनि या राहु से युति करें या उनसे दृष्ट हों तो भी प्रेम विवाह हो सकता है.

जब द्वादश भाव चर राशि का नहीं हो एवं उसका संबंध लग्नेश और सप्तमेश के साथ हो जातक घर की परंपराओं के विपरीत अंतर्जातीय विवाह करता है.

5. लग्न और सप्तम के अधिपति आठवें या पांचवे भाव में हो अथवा लग्नेश पंचमेश सातवें हों, पंचमेश एवं सप्तमेश लग्न में हों तो मर्यादाओं को लांघते हुये जातक बेधड़क प्रेम विवाह करता है.

6. लग्न में चंद्र हो या कर्क राशि हो, अथवा मंगल हो या उसकी राशि हो तो निश्चित तौर पर अंतर्जातीय प्रेम विवाह होता है.

7. पंचमेश, लग्नेश और सप्तमेश का संबंध द्वादश भाव से बने तब भी प्रेम विवाह होता है. जन्मकुंडली का विस्तृत अध्ययन करके प्रेम विवाह की सफलता या असफलता का निश्चित तौर पर पता लगाया जा सकता है.

लोक ज्योतिष

http://www.lokjyotish.com/

गज़ल

–प्राण शर्मा

नाम उसका तेरे लब पर आया
तेरे मुँह में घी-शक्कर ।
तूने कैसा जादू जगाया
तेरे मुँह में घी-शक्कर ।

खुशखबरी साजन की लाया
तेरे मुँह में घी-शक्कर ।
तू जैसे रब बन कर आया
तेरे मुँह में घी-शक्कर ।

तेरे बोल जिसे सुनने को
कान तरसते थे मेरे
लगा कि तूने सुर को सजाया
तेरे मुँह में घी-शक्कर ।

ऐ मेरे हमदर्द हमेशा
तूने मेरे साजन का
मुझ तक संदेशा पहुँचाया
तेरे मुँह में घी-शक्कर ।

क्यों न ढ़िंढ़ोरा पीटूँ
जग में तेरे मीठे बोलों से
मन को क्या-क्या रास न आया
तेरे मुँह में घी-शक्कर ।

बाल कहानी

राक्षस का लड़का

एक थी राजकुमारी। नाम था सोनबाई। उसका एक भाई था। भाई–बहन रोज तालाब के किनारे खेलने जाते थे वहां बहुत से मोर रहते थे। सोनबाई को मोर बहुत प्यारे लगते थे। वह सारा दिन मोरों के साथ ही खेला करती थी। दो बार भोजन के लिए घर जाती थी।

सोनबाई मोरों को रोज नहलाती धुलाती, खिलाती, पिलाती और उनके साथ मौज करती। मोर सोनबाई के सामने ठुमुक–ठुमुक कर नाचते, टीटू–टीटू की ऊंची आवाज में बोलते और नाचते–नाचते अपने पंख फैलाकर अपनी नृत्यकला का सुन्दर प्रदर्शन करते।

तालाब के अन्दर एक महल था। महल में राक्षस का एक लड़का रहता था। उसने चाहा कि वह सोनबाई के साथ ब्याह करे। उसने सोनबाई को बहुत मनाया और समझाया, पर उसने कहा, ''मैं तुमसे ब्याह नहीं करूंगी।'' सोनबाई तो राजा की बेटी थी। बड़ी ही रूपवती थी। ऐसी सुन्दर राजकुमारी बदसूरत लड़के से ब्याह कैसे करती?

एक दिन सोनबाई मोरों के साथ खेल रही थी। इतने में राक्षस का लड़का भी वहां आ पहुंचा। सोनबाई का भाई और राक्षस का लड़का दोनों जुआ खेलने बैठे। सोनबाई ने भाई को बहुत मना किया, लेकिन भाई माना नहीं। खेलते–खेलते भाई अपने सब कपड़े हार गया, घोड़ा हार गया, तलवार हार गया और अन्त में सोनबाई को भी हार गया।

सोनबाई फूट–फूटकर रोने लगी। भाई भी बहुत पछताने लगा, लेकिन अब वह कर ही क्या सकता था? राक्षस के लड़के ने कहा, 'तुमको मुझसे ब्याह न करना हो तो न करो। मैं इस तालाब में कमल बन जाता हूं। बस, तुम मुझे छू–भर लेना। मैं मान लूंगा कि हमारा ब्याह हो चुका है।'

सोनबाई बोली, 'ठीक है।'

राक्षस का लड़का पानी में कूदा और कमल का फूल बनकर पानी पर तैरने लगा। सोनबाई उसे छूने चली। पानी टखनों तक पहुंचा, पर कमल को छुआ न जा सका। सोनबाई ने भाई से कहाः

भैया मेरे, पानी टखनों तक आ पहुंचा है, और कमल का फूल आगे ही आगे जा रहा है। भाई बोला, 'बहन, तुम थोड़ी और आगे बढ़ो।'

सोनबाई तो घुटनों तक पानी में गई। कमल का फूल और आगे बढ़ गया। सोनबाई ने कहाः भैया मेरे, पानी घुटनों तक आ पहुंचा है, और कमल का फूल तो आगे ही आगे जा रहा है।

भाई बोला, 'बहन तुम थोड़ा ओर आगे बढ़ो न!'

सोनबाई तो कमर तक पानी में पहुंच गई। कमल और आगे बढ़ गया। सोनबाई ने कहाः भैया मेरे, पानी कमर तक आ पहुंचा है, और कमल का फूल तो आगे ही आगे जा रहा है।

भाई बोला, 'बहन, थोड़ा और आगे बढ़ जाओ। अबकी तुम उसे जरूर छू सकोगी।'

सोनबाई छाती तक पानी में पहुंच गई। कमल आगे–ही–आगे बढ़ता रहा। सोनबाई ने कहाः भैया मेरे, पानी छाती तक आ पहुंचा है, और कमल का फूल आगे ही आगे जा रहा है।

भाई बोला, :बस अब थोड़ा और चली जाओ।' सोनबाई कुछ आगे बढ़ी तो पानी गले तक पहुंच गया।

सोनबाई ने कहाः भैया मेरे, पानी गले तक आ पहुंचा है, और कमल का फूल आगे ही आगे जा रहा है।

भाई बोला, 'बहन, तुम अपना हाथ थोड़ा बढ़ाओ। वह अभी तुम्हारे हाथ ही में आ जायगा। अब तो वह बिलकुल ही पास आ गया है।' ज्योंही सोनबाई ने अपना हाथ फैलाया कि वह पानी में डूब गई। इसी बीच कमल के फूल से बदल वहां राक्षस का लड़का प्रकट हो गया, और वह सोनबाई को पानी के अन्दर खींच ले गया।

पानी के नीचे एक महल था। लड़का सोनबाई को उसी महल में ले गया। महल बहुत ही सुन्दर था। वहां खाने–पीने की कोई कमी नहीं थी। लेकिन सोनबाई को तो एक मिनट के लिए भी

वहां रहना सुहाता न था। वह तो अपने मोरों को और भाई को याद करके रोती रही।

एक दिन सोनबाई महल की छत पर खड़ी होकर रो रही थी कि अचानक उसे एक आवाज सुनाई दी। तालाब के किनारे से कोई बोल रहा था:

बहन सोनबाई, बहन सोनबाई!
गरम पानी से नहलाती थी।
ठण्डा पानी पिलाती थी।
मल–मलकर चूरमा खिलाती थी।

अब तो आंगन में भाभी–झाडू से मारती है। पनियारे पर जाते हैं, तो पानी छिड़कती है। पास पहुंचते हैं, तो घूंसो से मारती है। रसोई घर में जाते हैं, तो बेलन से मारती है। सोनबाई बोली, 'अरे! यह तो मेरे मोर की ही आवाज है। वह यहां कैसे आया होगा?' इतने में मोर फिर बोला।

छत पर बैठे–बैठे ही सोनबाई बोली:

भैया मोर, मैं क्या करूं? भैया मोर, मैं क्या करूं?
भाई ने मुझे राक्षस को सौंप दिया।
राक्षस मुझसे सूप बनवाता है।
मुझे सूप बनाना आता नहीं है।
राक्षस मुझे सड़ासड़ छड़ी से मारता है।

मोर ने सुना। बोला, 'ओ हो, यह तो हमारी बहन सोनबाई की ही बोली है। ऐसा लगता है कि सोनबाई के दिन भी बहुत दुख में बीत रहे हैं।'

मोर ने सोचा– 'चलें, हम सब राजा के पास चलें।'

मोर राजा के पास पहुंचे। उन्होंने राजा को सारी बातें सुनाईं। राजा बोला, क्या कहते हो? मेरी सोनबाई को इतने दुःख सहने पड़ रहे हैं?' उसने सिपाहियों से कहा 'जाओ,।

'तालाब के पानी को उलीच डालो, और राक्षस के लड़के को पकड़कर ले आओ।' सब लोग जुट गए। कुछ ही देर में तालाब का सारा पानी उलीच डाला और राक्षस के लड़के को महल में से पकड़कर राजा के सामने हाजिर कर दिया। राजा ने राक्षस के लड़के को देश निकाला दे दिया। उसका महल जलवा डाला और सोनबाई को अपने पास बुला लिया। सोनबाई तो अपने मोरों से गले लग–लगकर मिली। बहुत खुश हुई।

लेखक गिजुभाई बधेका

(अनुवाद काशीनाथ त्रिवेदी)

'सृजक' के आगामी अंक 'अध्यात्म विशेषांक' हेतु रचनाएं आमंत्रित...

स्वागत

कहानी, कविता, ग़ज़ल, लघुकथा और अन्य सभी स्थायी स्तम्भों के लिए आपकी मौलिक रचनाएं आमंत्रित हैं। साथ ही अध्यात्म से सम्बन्धित आलेख भी। उत्कृष्ट आलेख को पुरस्कृत भी किया जायेगा। रचना यूनिकोड में अपने संक्षिप्त परिचय व तस्वीर के साथ ईमेल करें या डाक से हमारे सम्पादकीय कार्यालय के पते पर भेजें।

अन्तिम तिथिः 15 मई 2013

लघुकथा

होनी

–सुरेन्द्र कुमार पटेल

'बाबूजी, कुछ रुपयों की मदद कर दो । बहू को सात माह का गर्भ है । कसाई पीलिया उसके प्राण लेना चाहता है । मंगल ने अपने रईस रिश्तेदार से याचना की ।

'तुम्हारा बेटा कुछ इंतजाम नहीं किया ?' रिश्तेदार ने सवाल किया।

'इंतजाम में ही परदेश गया है । कुछ रुपए भेजा भी था । उसे क्या मालूम था ये आफत आ जाएगी।'

'तो उसके भेजे रुपए कहां चट कर दिए ।' एक पाई नहीं उजाड़ा बाबूजी । सब बहू के दवा-दारू में लग गए ।

'मुझसे हजार रुपए से अधिक की मदद न होगी। मेरे भी दिन इस समय अच्छे नहीं चल रहे हैं ।'

'लेकिन मैं आपके पास बड़ी उम्मीद लेकर आया था । पाई-पाई चुका दूंगा बाबूजी । फिर मेरे जान-पहचान, नाते-रिश्तेदारों में आप सा सबल कोई 'और नहीं है ।'

रईस रिश्तेदार ने पांच-पांच सौ रुपए के दो नोट थमाए और चुपचाप अपने दूसरे कामों में लग गया । यह उसका मौन उत्तर था जिसे मंगल ने भी समझ लिया था ।

अगले दो दिन बाद मंगल के घर दिवंगत के नाम पर इकट्ठी हुई साड़ियों में उसकी दी साड़ी सबसे महंगी थी । उसे मंगल को सौंपते हुए उस रईस रिश्तेदार ने मंगल को सीने से लगा लिया और कहा, 'मंगल, होनी को कौन रोक सकता है ?'

बाल कविता

स्कूल में लग जाए ताला

जय प्रकाश मानस
सम्पर्क सूत्रः एफ–3, छगमाशिम, आवासीय परिसर, रायपुर, छग
मो. 09424182664
jayprakash.manas@facebook.com

अब से ऐसा ही हो जाये
भले किसी को पसंद न आये ...

स्कूल में लग जाये ताला
दें बस्तों को देश निकाला
होमवर्क जुर्म घोषित हो,
कोई परीक्षा ले न पाये ...

दिन भर केवल खेलें खेल
जो डाँटे उसको हो जेल
खट्टा–मीठा खारा–तीता,
जो चाहे जैसा वह खाये ...

हरदम चले हमारी सत्ता
हो दिल्ली चाहे कलकत्ता
हम मालिक अपनी मर्जी के,
हर गलती माँ–बाप को भाये ...

मौसी–मामी, नाना–नानी
रोज सुनायें नयी कहानी
हम पंछी हैं, हम तितली हैं,
गीत हमारा ही जग गाये ...

अब से ऐसा ही हो जाये
भले किसी को पंसद न आये ...

बनीं रहे सदा जवान

निशा ठाकुर

हमेशा जवां दिखना एक ख्वाब की तरह है... सदियों से इसके लिए प्रयोग किए जाते रहे हैं। समय के साथ जुड़ी तकनीकी सुविधाओं तथा कॉस्मेटिक्स में हुए ढेर सारे प्रयोगों के कारण आज काफी हद तक बढ़ती उम्र की रेखाओं को छुपाया या थामा जा सकता है।

एंटी एजिंग उत्पाद इस क्षेत्र में सबसे प्रचलित और आकर्षक नाम बन गए हैं। सवाल यह है कि इतने सारे ब्रांड्स और उत्पादों के बीच क्या चुनें और क्या न चुनें? बाजार में मिलने वाली हर चीज पर तो भरोसा नहीं किया जा सकता। चलिए इस मामले में कुछ पड़ताल करते हैं।

इस बात को विशेषज्ञ भी मानते हैं कि एंटी एजिंग प्रोडक्ट काफी हद तक कारगर हो सकते हैं लेकिन अव्वल तो इनका प्रयोग बहुत सोच-समझकर किया जाना चाहिए, दूसरे यूं ही किसी भी उत्पाद को खरीदने से पहले उससे संबंधित पर्याप्त मार्गदर्शन अवश्य लेना चाहिए और पूरी तरह उस उत्पाद पर ही निर्भर रहने की बजाय खान-पान तथा व्यायाम पर भी ध्यान देना चाहिए।

बढ़ती उम्र के चिन्हों को आप धीमा जरूर कर सकते हैं लेकिन इन्हें रोक नहीं सकते। इसलिए सबसे पहले तो इस बात को दिमाग से हटा देना चाहिए कि उम्र बढ़ने के साथ आप बुरे दिखने लगेंगे। आप मानें या न मानें, झुर्रियों और ग्रे बालों का भी अपना एक आकर्षण हो सकता है, यदि आपमें जीवन के प्रति उत्साह है तो।

लेकिन हां, समय पर एंटी एजिंग उत्पादों का प्रयोग शुरू करके आप अपनी त्वचा को अच्छी हालत में रख सकती हैं और लंबे समय तक खूबसूरत त्वचा पा सकती हैं। तो सबसे पहले सही समय पर यानी 30 वर्ष के बाद इन उत्पादों का प्रयोग शुरू कर दें। जो भी उत्पाद आप चुन रही हों, वह स्थापित अच्छे ब्रांड का हो यह ध्यान रखें।

उम्र बढ़ने के जो निशान त्वचा पर दिखते हैं उनमें नमी का खत्म होना, त्वचा पर दाग-धब्बों का बढ़ना, झुर्रियों का आना, आंखों के आस-पास क्रो फीट का बनना, मुंह के पास लाफ लाइन्स का बनना तथा त्वचा का ढीला हो जाना मुख्य हैं।

जैसे ही आपको ये लक्षण दिखाई देने लगें, आप एंटी एजिंग क्रीम्स का प्रयोग शुरू कर सकती हैं। उस क्रीम को अपनाएं जो आपकी त्वचा को सूट करे। याद रखें कि इन उत्पादों का लंबे समय तक नियमित प्रयोग ही फायदा देगा। एंटी एजिंग उत्पाद त्वचा की रेखाओं को हल्का करने के साथ ही झुर्रियों को भरने का भी काम कर सकते हैं। डे और नाइट क्रीम का भी अंतर समझें।

कुछ क्रीम्स में एक्सफोलिएटिंग एजेंट्स हो सकते हैं। ऐसी क्रीम्स को रात में ही तथा सही मात्रा में लगाएं। दिन में अथवा ज्यादा मात्रा में लगाने से ये त्वचा को नुकसान भी पहुंचा सकती हैं।

इसके अलावा असमय पड़ने वाले उम्र के चिन्हों से भी त्वचा को बचाएं। त्वचा को सूर्य की किरणों से प्रोटेक्शन दें। अच्छे सन्सक्रीन लोशन का प्रयोग जरूर करें। प्रोटीन को अपने भोजन में अवश्य शामिल करें। विटामिन ई, सी तथा बीटा कैरोटिन जैसे एंटी-ऑक्सीडेंट्स भी त्वचा तक पहुंचाएं। मीठे का प्रयोग कम से कम करें और अच्छी नींद लें।

पुस्तक परिचय

बुन्देलखण्डी ईसाईयत का कड़वापन

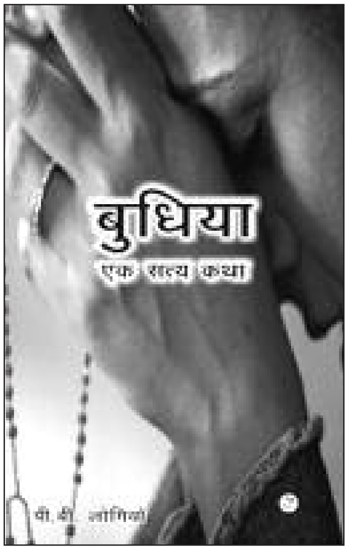

'बुधिया एक सत्य कथा' पुस्तक, एक बुधिया की सत्य कथा ही नहीं बल्कि कई अंतर्कथाएं अपने–आप में समेटे है, जो तथ्यात्मक हैं, प्रमाणिक हैं। एक भुक्तभोगी, प्रताड़ित, संघर्षरत वरिष्ठ कैथोलिक ईसाई विचारक पी.बी.लोमियो द्वारा लिखी गई यह पुस्तक उन शडयंत्रों, आर्थिक व यौन भ्रष्टाचारों, शोषण–उत्पीड़न का दस्तावेज है, जो चर्च और उसके आस–पास ईसाई धर्म के पुरोहितों द्वारा अपने अहंकार और आर्थिक दबंगी के बल पर गढ़े और अपने नव–ईसाइयों और विरोधियों पर थोपे।

यह पुस्तक कथात्मक और रिपोर्ताज रोचक शैली में लिखी गई है। एक चर्च और उसके आस–पास दिखाई देने वाला शांत वातावरण अपने भीतर कितनी घुटन, दमन और उत्पीड़न भरा कोलाहल लिए होता है, इस पुस्तक के पढ़ने से मालूम होता है। सिस्टर और ब्रदर, फादर के बीच यौनाचार है। जब सिस्टर उपलब्ध नहीं होती तो हॉस्टल की किशोरियों को शिकार होना पड़ता है। ऐसे कुकृत्यों के लिए यूरोप और अमेरिका में कैथोलिक प्रीस्टो पर मुकदमा करके बच्चों से किए गए 'यौनाचार' का भारी मुआवजा चर्च से वसूला गया है। लेखक को अफसोस है कि काश! भारत में भी ऐसा होता।

इसमें जिन घटनाओं का उल्लेख है, वे रोंगटे खड़े कर देने वाली हैं। यह कल्पना सामान्य रूप से नहीं की जा सकती कि जिन ईसाई मिशनरियों ने हमारे देश में रहन–सहन, पहनावे, शिक्षा, चिकित्सा आदि का विकसित वातावरण दिया, उनके पीछे कितना स्वार्थ और दंभ भरा दमनचक्र था। बुन्देलखण्ड, खासतौर पर झांसी और उसके आस–पास चल रही ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों पर पुस्तक केंद्रित हैं। घटनाओं का समय आजादी के दस–पांच साल पहले और बाद का है। बुधिया को एक प्रतीकात्मक इकाई के रूप में देख सकते हैं, जो आदिवासी, नट, कोल, निर्धन, दलित, दबंगों से पीड़ित परिवार की सदस्या है। लोकशैली में गाकर, नाटक कर अपने परिवार को पालती है। उसकी एक जवान होती बेटी है, जिस पर ब्रदर की निगाह पड़ती है। वह उसे षडयंत्र से फादर के सामने प्रस्तुत करता है। चर्च की चहारदीवारी में बुधिया के परिवार को प्रवेश मिलता है। पूरे परिवार को ईसाईयत स्वीकार करवाई जाती है। माँ–बेटियां अपनी इच्छा से शोषण का शिकार होती हैं। बेटे और पति को भी षडयंत्रों का शिकार होना पड़ता है।

इस तरह अनेक बुधियाओं और उनकी बेटियों का शिकार कर चर्च की चहारदीवारी में रखा जाता। बेटों और पति से खेती, चौकीदारी और चर्च के बाहर का काम कराया जाता है। लोभ में वे धर्मांतरण तो स्वीकार कर चुके हैं। परंतु वे यहां भी ऊंच–नीच की दीवार को पाते हैं।

केरल के क्रिश्चियन उन्हें हेय समझते हैं। हालांकि वे भी नये धर्मातरित होते हैं। अपने अंदर एक छटपटाहट महसूस करते हैं। पूरे परिवार सहित अपने जाति–धर्म में वापसी चाहते हैं लेकिन वे मानसिक रूप से अपने को असहाय महसूस करते हैं। बुधिया को ब्रदर–फादर की यौन लोलुपता अच्छी लगती है। वह वहीं रहना चाहती है और जो स्घ्त्रियों समझदार हैं, वे छल को समझ चुकी हैं। वे पलायन करना चाहती हैं। वे जान चुकी हैं कि उनके ही नाम पर विदेशी धन व सामग्रियां आती हैं और उसका घोटाला यहां होता है।

चर्च की शोषण व दमन की नीतियों के विरोध में उत्साही युवकों द्वारा 'उत्तर प्रदेश कैथोलिक संघ' का गठन किया गया। 'झांसी कैथोलिक यूथ यूनियन' ने भी शांतिपूर्ण ढंग से विरोध करने व आंदोलन खड़ा करने की गुपचुप तैयारी की थी, जिसमें लेखक की सक्रिय भागीदारी है। पोस्टर, झण्डे, पर्चे वगैरह उनके उसके आवास पर हैं। अगले दिन प्रदर्शन की पूरी तैयारी थी। लेकिन झांसी के बिशप और अन्य धर्माधिकारियों को इसकी भनक लग चुकी थी। लेखक प्रातः अपनी रेलवे की ड्यूटी पर निकलने वाला ही होता है। तभी उसे संदेशा मिलता है कि उसकी माता जी ने उसे गिरजाघर में बुलाया है। उसका माथा ठनकता है कि उसकी मां 300 किलोमीटर दूर से आई और उसे पता भी नहीं और वह भी गिरजारघर में बुला रही है। वह समझ गया कि उसे प्रताड़ित किया जाने वाला है।

सबके सामने मां ने उसे गुस्से में तमाचे जड़े और आगाह किया कि तू जेल जाने वाला है। लेखक इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। एक धार्मिक अदालत के सामने उसने समर्पण किया और माफीनामा लिखने को मजबूर हो गया। उसे लगता है कि जैसे वह किसी गर्म भट्टी में खड़ा है और खाक हो जाएगा। परन्तु माफीनामा में जो बारह बातें लिखता है और प्राप्ति–स्वीकार मांगता है, तो धार्मिक अदालत के जजों के पैरों तले जमीन खिसक जाती है। वे तिलमिला जाते हैं। उसे और उसकी मां को छोड़ देते हैं। यही पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री की पराकाष्ठा है। आजादी के पहले सन् 1940–45 के फादर ऑस्टिन आल्वा की प्रशंसा की गई है। उन्होंने जो ईसाई बनाए, वे पूर्णतः दयाभाव पर बनाए गए। एक घटना का जिक्र है। पाक दिलपुर यमानिकपुरद्ध में मिशन की गऊशाला में मवेशी थे। उनके गोबर से कम्पोस्ट खाद बनाई जाती थी। खन्तियों में गोबर इकट्ठा किया जाता था। फादर आल्वा ने देखा कि खन्तियों में ताजा गोबर नहीं हैं। उन्हें ज्ञात हुआ कि नदी पार के चर्मकारों की औरतें गोबर उठा ले जाती हैं। साबुत बालियां खा जाने से मवेशी अन्न के दानों को पचा नहीं पाते। अवशेष अन्न गोबर में आ जाता है। ये औरतें बांस की डलियों में गोबर धोकर अन्न के दाने प्राप्त करती हैं। उन्हें सुखा कर महुओं के सूखे फूलों के साथ उबाल कर अपने परिवार के सदस्यों के पेट की भूख मिटाती हैं। दूसरे दिन फादर खुद नदी पर गए तो देखा कि जानवरों के मल वे कैसे अन्न इकट्ठा करती हैं। उनका दिल भर आया। उन्होंने दलितों के उद्धार के लिए प्रार्थना की और उस दिन उपवास रखा। उनके पतियों को बुलाकर बात की और अनाज दिया। ईसाई बनाकर उद्धार किया। फादर आल्वा के जाने के बाद दक्षिण भारतीय ब्रदरों–फादरों का आगमन हुआ। वे यहां के परिवर्तित ईसाइयों से बहुत भेदभाव रखते थे। अपने को श्रेष्ठ समझते थे। उनके उद्धार के नाम पर विदेशों से खूब धन मंगाते और दुरुपयोग करते थे। पुस्तक में ज़्यादातर घटनाएं छल और शडयंत्र की हैं, जो चर्च में व्याप्त भ्रश्टाचार को तथ्यों सहित उजागर करती है। पाठक के मन में वितृश्णा जागती है। हालांकि पूर्व में ऐसी एक–दो अनुभव भरी पुस्तकें आई हैं, जो आंखे खोलती हैं।

बृजमोहन बुधिया
सम्पर्क सूत्रः 1, कछियाना,
पुलिया नं. 9, झांसी–284003
मो. 9415614552
Email: mohanbrij27@gmail.com

कृति– "बुधिया एक सत्य कथा"
लेखक– पी.बी. लोमियो
प्रकाशक– जे.के.एन्टरप्राइजेज
डब्ल्यू.बी–27, जीएफ
शकरपुर, दिल्ली–110092
मूल्य– रूपए 80/–
पृष्ठः 112

शिक्षा दीप

नारी-शिक्षा अनिवार्य

डॉ. प्रीत अरोड़ा

सम्पर्क सूत्रः मोहाली, पंजाब

मो. 08054617915

Email: arorapreet366@gmail.com

भारत का प्राचीन आदर्श नारी के प्रति अतीव श्रद्धा और सम्मान का रहा है। प्राचीन काल से नारियाँ घर–गृहस्थी को ही देखती नहीं आ रहीं, अपितु समाज, राजनीति, धर्म, कानून, न्याय सभी क्षेत्रों में वे पुरुष की संगिनी के रूप में सहायक व प्रेरक भी रहीं हैं, परन्तु समय के बदलाव के साथ नारी पर अत्याचार व शोषण का आंतक भी बढ़ता रहा है। नारी पारिवारिक ढ़ाँचे की यथास्थिति से समझौता करती रही है या फिर सन्तानविहीन व बन्ध्या जीवन व्यतीत करने को मजबूर हुई है। यहाँ तक कि नारी शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक सभी स्तरों पर उपेक्षित जीवन व्यतीत करती है। जब बात शैक्षणिक शोषण की होती है तो एक ही सवाल मन में उठता है कि अगर नारी को शोषण और अत्याचारों के दायरे से मुक्त करना है तो सबसे पहले उसे शिक्षित करना होगा चूंकि शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं होता अपितु शिक्षा का अर्थ जीवन के प्रत्येक पहलू की जानकारी होना है व अपने मानवीय अधिकारों का प्रयोग करने की समझ होना है। शिक्षा सफलता की कुँजी है। बिना शिक्षा के जीवन अपंग है। जीवन के हर पहलू को समझने की शक्ति शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त होती है। ऐसा माना जाता है कि शिक्षा एक विभूति है और शिक्षित विभूतिवान। जहाँ आज समाज का एक नारी–वर्ग शिक्षित होकर समाज में अपनी एक अलग पहचान बना रहा है, परन्तु वहाँ एक वर्ग ऐसा भी देखने को मिलता है जो आज भी अशिक्षा के दायरे में सिमट कर मूक जीवन व्यतीत कर रहा है, और सवाल यह उठता है कि उनकी स्थिति में कितना सुधार हो रहा है? हम प्रत्येक वर्ष महिला दिवस बहुत धूमधाम और खुशी से मनाते हैं पर उस नारी–वर्ग की खुशियों का क्या जो अशिक्षा के कारण अपने मानवीय अधिकारों से वंचित महिला दिवस के दिन भी गरल के आँसू पीती है। ऐसे समाज में पुरुष स्वयं को शिक्षित, सुयोग्य एवं समुन्नत बनाकर नारी को अशिक्षित, योग्य एवं परतंत्र रखना चाहता है। शिक्षा के अभाव में भारतीय नारी असभ्य, अदक्ष अयोग्य एवं अप्रगतिशील बन जाती है। वह आत्मबोध से वंचित आजीवन बंदिनी की तरह घर में बन्द रहती हुई चूल्हे–चौके तक सीमित रहकर पुरुषों की संकीर्णता का दण्ड भोगती हुई मिटती चली जाती है। पुरुष नारी को अशिक्षित रखकर उसके अधिकार तथा अस्तित्व का बोध नहीं होने देना चाहता। वह नारी को अच्छी शिक्षा देने के स्थान पर उसे घरेलू काम–काज में ही दक्ष कर देना ही पर्याप्त समझता है। प्राचीन काल से ही नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण रहा है, 'नारियों के लिए पढ़ने की क्या जरूरत, उन्हें कोई नौकरी–चाकरी तो करनी नहीं, न किसी घर की मालकिन बनना है ,उसके लिए तो घर 'गृहस्थी' का काम सीख लेना ही पर्याप्त है। 'एक तरह से समाज की यह विचारधारा ही शैक्षणिक शोषण के आधार को और भी मजबूत कर देती है।

शैक्षणिक शोषण के अन्तर्गत बेटियों को विद्यालय भेजने की जगह उनसे घरेलू कामकाज करवाना, अभिभावकों द्वारा बालिका मजदूरी करवाना, बेटी के पराया धन के रूप मान्यता, बेटे व बेटी में अंतर करके बेटी को शिक्षा से वंचित कर देना आदि मानसिकताओं को लेकर नारी का शैक्षणिक शोषण होता आया है। अशिक्षा के कारण एक गृहिणी होते हुए भी सही अर्थों में गृहिणी सिद्ध नहीं हो पाती है। बच्चों के लालन–पालन से लेकर घर की साज–संभाल तक किसी काम में भी कुशल न होने से उस सुख–सुविधा को जन्म नहीं दे पाती जिसकी घर में उपेक्षा की जाती है। नारी परावलम्बी और परमुखापेक्षी बनी हुई विकास से वंचित, शिक्षा से रहित मूक जीवन बिताती हुई अनागरिक की भान्ति परिवार में जीवनयापन करती है। अशिक्षा के कारण नारी का बौद्धिक एवं नैतिक विकास भी उचित रूप से नहीं हो पाता। आमतौर पर घर–परिवार में यही मान्यता बनी रहती है कि नारी को घर का काम–काज ही देखना होता है, तो उसे शिक्षा की क्या आवश्यकता है? परिवार का मानस एक ऐसी रूढ़िवादिता से ग्रसित हो जाता है, जिसमें नारी को न तो पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा न उसे वैसी सुविधा प्रदान की जाती है। अशिक्षा का शिकार नारी अनेकानेक पूर्वाग्रहों , अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, कुसंस्कारों से ग्रस्त होकर अपने अधिकारों से वंचित हो जाती है। अगर नारी शिक्षित होकर एक कुशल इंजीनियर, लेखिका, वकील, ड़ॉक्टर भी बन जाती है, तो भी कई बार पति व समाज द्वारा ईर्ष्यावश उसका शैक्षणिक शोषण किया जाता है। परिणामस्वरूप नारी को शिक्षित होते हुए भी पति का अविश्वास झेलकर आर्थिक, मानसिक व दैहिक रूप से उत्पीड़ित होना पड़ता है।

नारी को समाज में उसका उचित स्थान दिलवाने के लिए एक ओर राजा राममोहन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी जैसे महान सुधारकों ने भरसक प्रयत्न किये, परन्तु आज भी जीवन के हर क्षेत्र में उसके साथ भेदभाव होता है। आज भी समाज में किसी न किसी रूप में नारी का शैक्षणिक स्तर पर शोषण किया जा रहा है। महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार और छेड़छाड़, घरों, सड़कों, बगीचों, कार्यालयों सभी स्थानों पर देखा जा सकता है। बलात्कार, दहेज उत्पीड़न, हत्या आदि के जो मामले प्रकाश में आते हैं, उनमें से अधिकांश सबूतों के अभाव से टूट जाते हैं। बाल–विवाह की त्रासदी अनेक कन्याएं भोग रही हैं जो चाहे इन सभी का कारण नारी को अशिक्षित बनाकर उसे उसके मानवीय अधिकारों से वंचित करना है। वास्तविकता यह है कि एक शिक्षित नारी ही अपने परिवार की अशिक्षित नारियों को पढ़ाकर अपने अर्जित ज्ञान व विकसित क्षमता का लाभ पूरे परिवार को दे सकती है। नारी सशक्तीकरण की आधारशिला भी शिक्षा ही

है। शिक्षा द्वारा नारी सशक्त और आत्मनिर्भर बनकर अपने व्यक्तित्व का उचित रूप से विकास कर सकती है, परन्तु आज नारी सशक्तीकरण के क्षेत्र की मुख्य बाधाएँ हैं जैसेः महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा, अधिकारों के प्रति उदासहीनता, सामाजिक कुरीतियां तथा पुरुषों का महिलाओं पर प्रभुत्व आदि। इन सभी समस्याओं से निजात दिलवाने का एक मात्र साधन शिक्षा ही है इसलिए समाज के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास के लिए महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्तर पर यह महसूस किया जा रहा है कि नारी शिक्षा की दिशा में ठोस प्रयास के बिना समान का सन्तुलित विकास सम्भव नहीं है। इसलिए नारी–शिक्षा की दिशा में लगातार प्रयास किया जा रहा है सआज भारत में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय चलाये जा रहे हैं। महिलाओं को शिक्षित बनाने का वास्तविक अर्थ उसे प्रगतिशील और सभ्य बनाना है ताकि उसमें तर्क–शक्ति का विकास हो सके। यदि नारी शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार की व्यवस्था ज्यादा अच्छी तरह से चला सकेगी। एक अशिक्षित नारी न तो स्वयं का विकास कर सकती है और न ही परिवार के विकास में सहयोग दे सकती है। शैक्षणिक स्तर पर कन्या शिक्षा की सदैव से ही उपेक्षा की जाती रही है व उसे केवल घरेलू कामकाजों को सीखने तथा पुत्र–सन्तान को जन्म देने के सन्दर्भ में ही प्रकाशित किया जाता है। इसलिए नारी सबसे पहले पूर्णता शिक्षित हो तभी वह शोषण व अत्याचारों के चक्रव्यूह से निकल कर मानवी का जीवन व्यतीत कर सकेगी।

स्वास्थ्यवर्धक

क्या आपके खाने में फाइबर है ?

रेशेदार आहारः सेहत का आधार

वैसे तो आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में अनेक तरह की बीमारियाँ हमें अपनी चपेट में ले चुकी हैं लेकिन आमतौर पर जिस बीमारी से आज हर इंसान परेशान है, वह है पेट की बीमारी। आज ज्यादातर लोग पेट दर्द, एसिडिटी, जलन, खट्टी डकार जैसी पेट की बीमारियों से परेशान हैं। इस तरह की समस्याएँ रेशेदार भोजन न करने से होती हैं। फलों को छिल्के समेत खाने से भी हमारे शरीर को फाइबर प्राप्त होता है जो हमारी पेट संबंधी बीमारियों को दूर करने में अहम भूमिका निभाता है। फाइबर युक्त या रेशेदार भोजन से खाना अच्छी तरह पच जाता है।

बार–बार मुँह में छाले होना, पेट खराब रहना, कब्ज की शिकायत है या फिर आंतों में जलन की शिकायत है तो जान लें कि आपके खाने में फाइबर शामिल नहीं है। फाइबर यानी रेशेदार भोज्य पदार्थ। इनसे न केवल शरीर को अतिरिक्त ऊर्जा मिलती है, बल्कि पेट भी साफ रहता है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बनी रहती है।

©HEMANT CHAWLA

भारतीय संस्कृति और सभ्यता में तो पुरातन काल से रेशेदार खाद्य पदार्थों को भोजन में शामिल किया जाता रहा है। ऑस्ट्रेलिया में हुए नए शोध ने इसे और ज्यादा वजनदार बना दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक, 'रेशेदार खाद्य पदार्थ सिर्फ कब्ज ही नहीं, डाइबिटीज, अस्थमा, हृदय रोग और कैंसर को दूर भगाने में सहायक होते हैं। फाइबर हमारे शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को सुचारू रखने में प्रमुख भूमिका निभाता है।

फाइबर भोजन को इकट्ठा करके बड़ी आँत तक ले जाता है। यहाँ मौजूद बैक्टीरिया इसे ऊर्जा में बदल देते हैं जिसे फैटी एसिड कहा जाता है। पेट खराब रहने के कारण होने वाली बीमारियों से दूर रखने का काम दरअसल हमारी आँत में मौजूद बैक्टीरिया ही करते हैं, इन्हें रेशेदार भोज्य पदार्थों के द्वारा ही कायम रखा जा सकता है।

शहरी रहन–सहन ने खाने की थाली से रेशेदार भोजन को दूर कर दिया है। पहले मोटा खाना खाने का चलन था। आटा भी मोटा पिसवाया जाता था। इसमें चना या दूसरी चीजें मिलाई जाती थीं। छानने की भी जरूरत नहीं होती थी। ग्रामीण इलाकों में तो नाश्ते में भूजा या चना–चबेना की परंपरा पुराने समय से थी जो आज भी कहीं–कहीं कायम है।

आज भी छिलके वाली दाल, छिलके समेत खाए जाने वाले फल और सब्जियाँ ही रेशेदार खाने यानी फाइबर के गिने–चुने स्रोत रह गए हैं।

समय के साथ सब कुछ बदल गया है। गेहूँ का आटा भी बारीक पिसवाया जाता है। इसमें रेशा नहीं रहता। बगैर रेशे वाला भोजन बड़ी आँत तक पूरी तरह से नहीं पहुँच पाता। इसकी वजह से वह पच भी नहीं पाता और पेट खराब रहता है। इसकी वजह से कई तरह की बीमारियाँ पनपने लगती हैं। अब आप ही तय कीजिए कि आपके भोजन में फाइबर है क्या?

http://hindi.webdunia.com/

सन्नाटे का शोर

क्या सच में वह एक रूह से प्रेम कर बैठा था...

रहस्यमयी कथा

बहुत से लोग ऐसे हैं जो यह मानते हैं कि आत्माएं नहीं होती, उनका कोई वजूद नहीं होता. लेकिन उन लोगों को शायद यह नहीं पता की वैज्ञानिकों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि आत्माएं सच में होती हैं. मेरा भी मानना कुछ ऐसा ही है कि आत्माएं होती है, इंसानी दुनियां के अंदर उनकी भी एक अलग दुनियां होती हैं. अगर कोई भी मनुष्य उनकी दुनियां में दखल देता है तो वह इसे बिल्कुल सहन नहीं कर सकते. अगर कोई गलती से उनकी दुनियां में कदम रखता भी है तो उसे पछताने के अलावा और कुछ हासिल नहीं होता.

यह कहानी मेरी नहीं मेरे एक परिचत की है लेकिन फिर भी इसे मनगढ़त मानने की गलती मत करना.

एक बार मेरे अंकल अपने कुछ दोस्तों के साथ अपनी गाड़ी से पटना से रांची जा रहे थे. रात का करीब एक बजा होगा, उनकी गाड़ी में खूब गाना बजाना हो रहा था. सब लोग बहुत मस्ती कर रहे थे कि अचानक अंकल ने गाड़ी रोक दी. गाड़ी रुकने से उनके सारे दोस्त उन पर चिल्लाने लगे कि गाड़ी क्यों रोक दी? तब अंकल ने बाहर की तरफ इशारा किया और कहा की वो देखो बाहर एक लड़की अकेली खड़ी है. उनके सारे दोस्त आंखें फाड़-फाड़ कर ऐसे देखे जा रहे थे मानों आज तक कभी इतनी सुंदर लड़की नहीं देखी हो.

अचानक अंकल की आवाज ने दोस्तों के ध्यान को तोड़ा. अंकल ने कहा कि इतनी रात को ये लड़की यहां क्या कर रही है, रुको मैं पूछ कर आता हूं. तब उनके एक दोस्त ने कहा कि नहीं यार मत जा, इतनी सुनसान जगह पर ये लड़की अकेली यहां है. मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा हैं. पहले तो अंकल कुछ गंभीर हुए, फिर अचानक हंसते हुए कहने लगे कि तुम को क्या लगता है, ये कोई भूत हैं? उसने कहा हो सकता हैं. इस पर अंकल उस को डाटने लगे की इतने पढ़े लिखे होने के बावजूद भी तुम ये सब बातें करते हो.

फिर गाड़ी से उतर कर उसके पास गए और पूछा कि कोई परेशानी है क्या? लेकिन वो कुछ नहीं बोली और बस चुपचाप चलती जा रही थी. जब अंकल ने दो-चार बार पूछा तब उसने कहा कि मेरे परिवार वाले मुझे यहां सुनसान सड़क पर छोड़ कर चले गए हैं. ये बात अंकल को थोड़ी अजीब लगी लेकिन उन्होंने उनसे कुछ पूछा नहीं फिर लड़की ने नेन उनसे कहा कि क्या आप मुझे मेरे घर तक छोड़ देंगे ? अंकल ने कहा कि क्यों नहीं. फिर वो लड़की उनकी गाड़ी में आ कर बैठ गई. उसके बैठते ही पूरी गाड़ी में एक अजीब सी खुशबू फैल गई जिससे सब मंत्र-मुग्घ हो गए .

बीच रास्ते में अचानक उस लड़की ने कहा की बस मुझे यहीं उतार दीजिए मेरा घर आ गया है. पर अंकल को कोई घर नहीं दिख रहा था. जब तक वो कुछ पूछते तब तक तो वो जा चुकी थी. फिर अंकल ने भी गाड़ी स्टार्ट की और वहां से चले गए. घर पहुंच कर सब अपने अपने जीवन में व्यस्त हो गए, लेकिन अंकल उसका चेहरा नहीं भुला पा रहे थे. उन्हें उस लड़की के प्रति प्रेम का अहसास होने लगा था. धीरे-धीरे वक्त बितता गया फिर अचानक एक दिन अंकल उस लड़की को अपने घर के पास देखकर चौंक गए. उसे अपनी तरफ आता देख वो समझ गए कि वो उनसे ही मिलने आ रही है. पता नहीं क्यों उसको देखते ही उनकी सोचने समझने की शक्ति चली जाती थी और वह बस उसे देखते ही रहते थे. उससे मिलने का सिलसिला बहुत दिन तक चलता रहा.

फिर एक दिन जब वो सुबह-सुबह पेपर पढ़ रहे थे तब अचानक उनकी नजर उस पेज पर पड़ी जिस पर उस लड़की की फोटो छपी थी. जिससे वो लगातार कई दिनों से मिल रहे थे. लेकिन जब उस फोटो के नीचे लिखे लाइनों को उन्होंने पढ़ा तो वो चौंक गए. उसमें उसके मृत्यु दिवस पर उसे श्रद्धांजलि दी गई थी. उस दिन के बाद से आज तक वो फिर उनसे नहीं मिली. इस बात को एक लंबा समय गुजर गया है लेकिन अंकल आज भी यह नहीं समझ पा रहे कि क्या वह एक आत्मा से प्यार करने लगे थे ?

●

सलमान अहमद
सम्पर्क सूत्रः चन्दन पट्टी, दरभंगा

salmanahmed70@yahoo.co.in
http://salman1981.jagranjunction.com

रूबरू

(प्रेम के सुमधुर गीतकार डॉ. विष्णु सक्सैना से बातचीत के कुछ अंश)

दिया हूँ प्यार का हिम्मत से जल रहा हूँ मैं...

साक्षात्कार

सचमुच गीत की यात्रा जीवन की यात्रा की तरह बहुत कठिन है। जैसे जीवन में कभी उतार, कभी चढ़ाव, किसी मोड़ पर दुखों का मेला, तो किसी मोड़ पर सुख अकेला, कहीं खुशियों के चटख रंग, तो कहीं मायूसी की कालिमा। बस कुछ इसी तरह विगत वर्षों में गीत की हालत देखने को मिली। आज से दो दशक पहले बड़े गीतकारों के निजी स्वार्थों के चलते लगातार हिन्दी काव्य मंचों पर गीत की हालत दयनीय होती चली गयी। गीत साहित्य के परिदृश्य से हाशिये पर चला गया। एक बार को तो ऐसा लगने लगा कि हास्य और वीर रस की आँधी में गीत की लौ कहीं बुझ न जाये। तब ऐसे में गीत विधा को सरल भाषा और सुमधुर स्वर की चाशनी में लपेट कर एक नौजवान का पदार्पण हुआ जिसे सुन कर लोग उसके रंग में रंगते चले गये और वो देखते ही देखते श्रोताओं के दिलों की धड़कन बन गया। जी हाँ वो नाम था डा. विष्णु सक्सैना का। आज ये नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। गत दिनों हाथरस जिले के सिकन्दराराऊ कस्बे में इनके आवास पर कुछ फुरसत के क्षणों में बातचीत करने मौका मिला।

प्रस्तुत हैं उसके कुछ अँश–––

सवाल– आपको गीत लिखने की प्रेरणा कैसे हुयी ?

जवाब– मेरे दादा जी बचपन में शहर में होने वाले कवि सम्मेलनों में मुझे अपने साथ ले जाया करते थे, इसलिये शुरू से ही कवियों को सुना, उनकी कविताओं के प्रभाव से मेरे अन्दर कुछ ऐसा स्फुरण हुआ कि मेरा रुझान कविता लिखने की तरफ हो गया। वैसे मेरे परिवार का माहौल भी साहित्यिक था, मेरे दादा जी श्री चन्द्रभान और मेरे पिता श्री नारायण प्रकाश स्वयं बहुत अच्छे कवि थे इसलिये रक्त में भी कुछ अंश था। उदयपुर में शिक्षा काल के समय बागड़ी गीतकार उपेन्द्र अणु ने मेरा रुझान गीतों की ओर कर दिया वरना मैं तो पहले हास्य व्यंग की कवितायें लिखा करता था। बाद में फिर गीत लिखने में असीम आनन्द आने लगा तो कई गीत लिख डाले और आज भी अनवरत लिख रहा हूँ। इसी का परिणाम है कि आज गीत का नाम आते ही लोग सबसे पहले मुझे याद करते हैं।

सवाल– आपके आगमन पर आपकी वरिष्ठ पीढ़ी की क्या प्रतिक्रिया रही?

जवाब– लगभग सभी ने मेरा स्वागत किया। क्योंकि काव्य का मूल तत्व तो गीत ही है, जो सच्चा कवि होगा वो अच्छे गीत और अच्छे गीतकार का कभी विरोध नहीं करेगा। मैंने सदैव अपने से बड़े कवियों का सम्मान किया है चाहे वो किसी भी रस के हों इसलिये सभी मेरा सम्मान भी करते थे और प्यार भी देते थे वो सिलसिला आज भी कायम है।

सवाल– जब आपने पहली कविता मंच पर पढ़ी तो आपको कैसा लगा?

जवाब– इसकी भी एक अजीब कहानी है। बात 1983 की है जब मैं उदयपुर में बी.ए.एम.एस. कर रहा था। मेरे मित्र उपेन्द्र अणु ने जिद की और बिना आमंत्रण के बांसवाड़ा जिले के परतापुर में होने वाले कवि सम्मेलन में ले गये। मुझे देखकर संयोजक की भौंहें सिकुड़ गयीं क्योंकि वहां पहले से ही 38 कवि आये हुये थे। उपेन्द्र ने उनके भावों को भाँप कर उनको आश्वस्त किया कि मैं इस कवि को अपने किराये से लाया हूँ अगर तुम्हारे सारे कवियों से ठीक कविता पढ़े तो इसको मानदेय दे देना वरना अपने किराये से वापस ले जाऊंगा। रात को कवि सम्मेलन हुआ मैं उपेक्षित सा एक तरफ बैठा था। रात के दो बजे मुझे पढ़वाया गया। मेरा पहला अनुभव, बस भगवान का नाम ले कर कविता पढ़ना जो शुरू किया तो हर तरफ से तलियों की आवाज आने लगी इससे मेरा हौसला और बढ़ा... और फिर वंस मोर की आवाज पर एक गीत और पढ़ डाला। सुबह संयोजक ने खुश होकर मुझे 121 रुपये का मानदेय दिया। ये मेरी उस रात की और मेरे जीवन की पहली कमाई थी।

सवाल– आपके काव्य जीवन में आपकी उपलब्धि में किस–किस की भूमिका उल्लेखनीय रही?

जवाब– जब मैं आया तब कवि सम्मेलनो में गीतकारों को ज्यादा सुना नहीं जाता था गीत के लिये किसी सुदर्शना कवियत्री को बुलाकर कोरम पूरा कर लिया जाता था, मैं उस समय नया युवक था, मेरे पास नई शैली, नया स्वर तथा नया फ्लेवर था। तो उस समय उर्मिलेश जी ने मुझे हाथों हाथ लेकर कवि सम्मेलनों की दुनिया से परिचय कराया, थोडा ही समय गुजरा था कि मैं कवि सम्मेलनीय जगत के किंग मेकर श्री रामरिख मनहर के हाथ लग गया उन्होंने

देखते ही देखते मुझे अखिल भारतीय बना दिया, उन दिनों श्री अशोक चक्रधर का नाम विदेश जाने में सबसे आगे था, उनकी निगाह मेरे व्यक्तित्व और कृतित्व पर कई वर्षों से लगी थी उन्होंने मुझे अपनी कसौटी पर भली भाँति परख कर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा, तक पहुँचा दिया। मैं इन तीनों को प्रणाम करता हूँ।

सवाल– आपके विरोधी दबी जुबान में अक्सर यह कहते हैं कि आपके गीतों की भाषा साहित्यिक नहीं है।

जवाब– विरोधियों के मुंह मैं नहीं लगता। उनकी तो प्रवृति बन गयी है बात अच्छी हो या खराब उन्हें तो विपरीत ही बोलना है। जो सबकी समझ में आ जाये अगर ऐसी भाषा का मैं प्रयोग करता हूँ तो इसमें बुराई क्या है? अगर मैं बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग करूँ और दस प्रतिशत लोग समझें तो मैं नब्बे प्रतिशत लोगों के साथ अन्याय करूँगा या नहीं?

सवाल– आपके जितने अच्छे गीत हैं उससे अच्छी उनकी प्रस्तुति है, ये कला कहाँ से पाई आपने?

जवाब– ये करामात भी मेरे अन्दर अनुवांशिक है। मेरे चाचा जी डा. प्रेम प्रकाश जौहरी शास्त्रीय संगीत के बहुत बड़े महारथी रहे हैं उन्होंने अनेकों रागों का निर्माण किया, उनके बहुत सारे शिष्य आज भी फिल्मी दुनिया में अपनी सेवा दे रहे हैं, वो मुझसे कहा करते थे कि अगर आपके घर पर कोई अतिथि आया है, घर पर साधारण सा खाना बना है, आपने वही खाना बहुत सलीके के साथ परोस कर खिला दिया तो वो अतिथि बहुत खुश होकर आपके घर से जायेगा और बाहर जाकर आपकी पचास जगह तारीफ करेगा। कहने का मतलब यह है कि आपके शब्दों को स्वर और लय का अगर सहयोग मिल जाता है तो यह मणि कांचन योग कमाल कर देता है और लोग तारीफ किये बिना नहीं रह पाते।

सवाल– आज कल मंचों पर फैली गुटबाजी से आप कहाँ तक सहमत हैं?

जवाब– दरअसल जो होता है वो दिखता नहीं है और जो दिखता है वो होता नहीं है। कला के जितने क्षेत्र हैं उनके मुकाबले कवि सम्मेलनों में गुटबाजी ना के बराबर है। अशिक्षित लोग एकजुट हो सकते हैं लेकिन बुद्धिजीवी नहीं, सबकी अपनी अपनी सोच होती है। अगर गुटबाजी है भी तो मैं इसमें कोई बुराई नहीं समझाता। एक ही मन के लोग एक ग्रुप बना कर काम करेंगे तो काम का आउटपुट अच्छा और अधिक निकलेगा अपेक्षाकृत अलग–अलग विचार धाराओं के लोगों के एक साथ काम करने के। ऐसा मेरा मानना है।

सवाल– ऐसा सुनने में आया है कि आजकल के कवि सम्मेलन सभ्य लोगों के लिये नहीं रह गये हैं।

जवाब– ऐसा लगता है आपने बहुत दिनों से कवि सम्मेलनों को सुना नहीं है। आज भी सबसे अधिक और सबसे सभ्य लोगों द्वारा सुने जाने वाली विधा है ये। ये अलग बात है कि किसी कवि सम्मेलन में किसी अकवि ने आकर कोई अशालीन कविता सुना दी तो आपने पूरे कवि कुनबे पर ऊंगली उठा दी। इसमें दोष संयोजक का सबसे अधिक है वो पैसे के लोभ में आकर ऐसे तथाकथित कवियों को बुला लेते हैं जिनके पास हल्के स्तर की बातों के अलावा कुछ होता ही नहीं है। आप अच्छे कवियों को बुलाइये फिर देखिये कैसा रस बरसता है।

सवाल– पैसे पर याद आया कि आजकल के कवि इतने मंहगे क्यों हो गये हैं? जब कि पहले के कवि धन पर इतना ध्यान भी नहीं देते थे।

जवाब– ये आर्थिक युग है। अगर हम समाज की रफ्तार से नहीं चलेंगे तो पिछड़ जायेंगे। कवि रातों रात जाग कर कवितायें लिखता है, फिर मंहगे और लम्बे सफर कर जाग जाग कर अपनी उम्र कम करता हुआ जन सामान्य का मनोरंजन करता है, इसके बदले अगर कुछ अर्थ ले लेता है तो इसमें बुराई क्या है। आज भी मनोरंजन की सारी विधाओं मे सबसे सस्ते कवि सम्मेलन ही है जो सर्वाधिक देर तक श्रोताओं को बाँधे रहते हैं। इस मंहगाई के युग में कवि भी एक मनुष्य है उसका भी एक सोशल स्टेटस होना चाहिये, उसकी भी जरूरतें हैं वो भी चाहता है कि उसके पास सारी सुख सुविधायें हों, उसके भी बच्चे अच्छे स्कूल मे पढ़ें। इसलिये उसे भी वो सब मिलना चाहिये जिसका वो हकदार है।

सवाल– इस हास्य प्रधान कविता के युग में आप अपने गीतों को कहाँ खड़ा पाते हैं?

जवाब– आज भी गीतों का स्थान सर्वोपरि है। मैं मानता हूँ कि गत दशकों में गीत हाशिये पर चला गया था लेकिन आज ऐसा नहीं है आज फिर से मुख्य धारा में है। इसमें कोई दो राय नहीं कि गीत को इस स्थिति तक लाने में हास्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके लिये मैं व्यक्तिगत रूप से अपने वरिष्ठ हास्य कवियों जिन्हें गीत के मर्म और पीड़ा का अहसास था उन सभी का एहसान मंद हूँ। मेरे वरिष्ठ कवि मुझे और मेरे गीतों को ससम्मान मुख्य धारा का मानते हैं।

सवाल– कुछ दिन पहले एक साक्षात्कार में नीरज जी ने अपने बाद के गीतकारों में प्रमुख रूप से डा. विष्णु सक्सैना का नाम लिया था। आज यही प्रश्न डा. विष्णु सक्सैना से किया जाये तो........?

जवाब– अभी से ये सवाल बेमानी सा नहीं लगता आपको? अभी तो मैं प्रतिष्ठा की पहली पायदान पर खड़ा हूँ। नीरज जी की उपस्थिति तक इसका उत्तर देना मेरे लिये मुश्किल होगा....

सवाल– फिर भी......

जवाब– (कुछ सोचते हुए)....फिर तो कई लोग हैं जो शुद्ध गीत को लेकर गीत की अस्मिता को आगे बढ़ाये हुये हैं। जैसे– देवल आशीष, बलराम श्रीवास्तव, यशपाल यश, आदि।

सवाल– आजकल कुछ तथाकथित गीतकार अपने गीतों को चुटकलों की बैसाखियों के सहारे चला रहे हैं क्या यह सही है?

जवाब– बहुत दुखद सवाल कर दिया आपने..... इन दिनों हमारे कुछ गीतकार भाइयों ने चुटकलों और फूहड़ जुमलेबाजी के सहारे गीतों की गंगा को अपावन कर रखा है जो उचित नहीं है। मुझे डर है कहीं आज की युवा पीढ़ी इसी फूहड़ता को गीत का मानक न मान ले। कवि सम्मेलन में चुटकलों का मैं विरोधी कतई नहीं हूँ लेकिन ये माल हास्य कवियों की दुकान का है, अगर हम उनकी दुकान का माल अपनी दुकान में सजा कर अपना माल बेचते हैं तो इसका मतलब है कि आपकी दुकान में माल की कमी है और गीत विधा के साथ सरासर बेईमानी है। ऐसा नहीं होना चाहिये।

सवाल– आपने तो बहुत सारी विदेश यात्रायें की हैं। हिन्दी गीतों के प्रति कैसी अभिरुचि है वहाँ। कोई कड़वा या मीठा अनुभव रहा हो बतायें?

जवाब– सन 1995 में मेरी पहली विदेश यात्रा मस्कट की हुई थी। वहाँ तो कोई खास अनुभव नहीं रहा। 1997 में जब श्री अशोक चक्रधर के साथ अमेरिका जाने का अवसर मिला तो 18 दिनों के प्रवास में बहुत अनुभव हुये। वहाँ हास्य कविता के श्रोता तो थे लेकिन गीत को सुनने में कोई खास अभिरुचि नहीं थी। अधिकांश श्रोता अधेड़ आयु के थे, युवाओं की संख्या न के बराबर। मैंने जब सरल भाषा के गीत सुमधुर कंठ से सुनाये तो उन्हें बहुत आनन्द आया, लोगों ने मेरे स्वर से स्वर मिलाकर मुझे यह अहसास करा दिया कि वे आज भी गीत के दीवाने हैं बशर्ते कोई सम्प्रेषण वाला गीतकार हो। वो मेरी कैसेट खरीद कर ले गये अपने घरों में बैठे युवाओं को जो हिन्दी कवियों और हिन्दी गीतों के प्रति एक भय अपने मन में लेकर बैठ गये थे, उन्हें सुनाये तो उनका सारा भय समाप्त हो गया। मेरे रोमांटिक गीतों में उन्हें अपनी छवि दिखाई देने लगी। जब 2001 में मैं फिर अमेरिका गया तो वहाँ का नजारा बिल्कुल बदला हुआ था। श्रोताओं में अधिकांश युवा पीढ़ी मुझे सुनने आई थी। लगभग चौदह शहरों में आयोजित हर कवि सम्मेलन में गीत की भूमिका प्रमुख रही। मेरी अधिकाधिक किताबें और सी.डी.

की बिक्री हुई। इससे यह सिद्ध हुआ कि विदेशी धरती पर हिन्दी गीतों के लोकप्रिय कराने में मेरी अधिक नहीं तो आंशिक भूमिका तो है ही।

सवाल– क्या आपसे हास्य कवि चिढ़ते हैं..?

जवाब– बिलकुल नहीं। मुझसे हास्य कवि जितना प्यार करते है उतना तो हास्यकवि किसी अन्य हास्य कवि से नहीं करते। चाहे वो अशोक चक्रधर हों या सुरेन्द्र शर्मा, अरुण जैमिनी हों या प्रदीप चौबे या अन्य। सभी की सूची में मैं सर्वोपरि रहता हूँ। मेरा मानना है कि अगर आपका व्यवहार सबके प्रति आदर और सम्मान का है तथा आप अपना काम पूरी ईमानदारी और मन लगा कर करते हैं तो आप किसी के अप्रिय हो ही नहीं सकते। अत्यधिक महत्वाकांक्षी होना भी मनुष्य को अप्रिय बनाने में सहायक होता है।

सवाल– आपकी कोई महत्वाकांक्षा?

जवाब– नहीं, मेरी कोई महत्वाकांक्षा नहीं है। आदमी को आकांक्षा तो करनी चाहिये लेकिन महत्वाकांक्षा नहीं पालनी चाहिये। मेरी बहुत अधिक आवश्यकतायें नहीं हैं। जितनी मुझे जरूरत है उससे अधिक मेरे ऊपर प्रभु की कृपा हो जाती है। मैंने बहुत अधिक महत्वाकांक्षायें पालने वाले लोगों के बुरे हश्र होते देखे हैं। मैंने कहीं पढा था–

"अपनी इच्छाओं को सीमाओं में
बाँधे रहिये,
वरना ये शौक गुनाहों में
बदल जाते हैं ।

सवाल– कवि सम्मेलनों में आजकल पहले जैसी भीड़ नहीं आती? क्या कारण है?

जवाब– कवि सम्मेलनों को बहुत बड़ा नुकसान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने पहुँचाया है। आज घरों में बैठ कर खाना खाते हुये, अन्य काम धाम करते हुये अच्छे से अच्छा मनोरंजन टीवी हमें परोस देता है तो क्यों कोई सर्दी की रात में रजाई का सुख छोड़ कर बाहर पूरी रात बरबाद करेगा। अब तो पांडाल में होने वाले कवि सम्मेलनों का केबल्स के माध्यम से घर–घर में जीवंत प्रसारण भी होने लगा है तो क्यों कोई घर से बाहर निकले।...... फिर अब पहले जैसे श्रोता भी कहाँ रहे जो कवियों से व्यक्तिगत मिलने और उनसे हाथ मिलाने में गर्वानुभूति करें। लाइफ बहुत फास्ट हो गयी है। सारे कवियों के वीडिओ आडियो सी.डी. बाजार में उपलब्ध हैं। कवियों की ताजा कवितायें इंटरनेट पर यू–ट्यूब पर हाजिर हैं, जब मन चाहे एक क्लिक करो और आनन्द ले लो।

सवाल– नई पीढ़ी को कितनी रुचि है कविता और कवि सम्मेलनों में?

जवाब– बहुत कम, कारण है कॉन्वेंट स्कूल की शिक्षा, वो कविता के नाम पर सिर्फ ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार .... जानते हैं इसके अलावा और कुछ नहीं। वे चुटकलों को ही हास्य कविता मानते है। सारी मिशनरीज की संस्थायें पूर्व नियोजित हमारे नौनिहालों को हमारी मूल संस्कृति से दूर रखना चाहती हैं। ये इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। कवि सम्मेलनों में नई पीढ़ी ना के बराबर आती है। ये तो सच है कि अगर आज हास्य कविता न होती तो कवि सम्मेलन नामक संस्था समाप्त हो गयी हो जाती। कविता हमें संस्कार देती है सोचने को नया फलक देती है। अगर हम अपने बच्चों में हिन्दी कविता के प्रति रुचि नहीं जगायेंगे तो इस समाज का बहुत बढ़ा अहित होगा।

सवाल– आप जब आइने के सामने खड़े होते हैं तो आइना आपसे क्या कहता है?

जवाब– हमेशा आगाह करता रहता है, आइने का अक्स मुझसे यही कहता है कि विष्णु सक्सैना तुमने अब तक जो भी उपलब्धियाँ पायीं है वो तुम्हारी नहीं हैं, ये सब उसी परम पिता परमात्मा की हैं इन सबका श्रेय उसी को देते हुये अब तक जिस ईमानदारी के रास्ते पर चले हो उसी पर चलते रहना।

◆

लघुकथा

–सतीश दुबे

बर्थ डे गिफ्ट

आटो रिक्शा जैसे ही रुका उन्होंने गेट के बाहर पाँच वर्षीय पोती को खड़े पाया। उसके चेहरे से यह झलक रहा था कि वह उन्हीं का इन्तजार कर रही है।

''दादाजी!''

''बेटे! आज जरूर कुछ विशेष बात है। ऑटो से उतरकर उन्होंने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखा।

''दादाजी, आज आपको बहुत अच्छी बात बताऊँगी।'' किसी विशिष्ट मेहमान के आगमन में व्यस्त किए जाने वाले, आत्मीय खुशी के इजहार में रूप में वह उनके आगे-आगे चलते हुए नृत्य करने की मुद्रा में हाथ-पैर मटका रही थी।

वे सौफे पर जाकर बैठ गए। पत्नी द्वारा दिया गया एक गिलास पानी गटक जाने के बाद भी थकान के कारण उनका हलक सूखा था। उन्होंने पानी और देने को संकेत किया। अब वे तर थे। पोती इस पूरे क्रिया-कलाप से बेख़बर उनके दोनों पैरों के बीच चेहरा डाले मुस्कुरा रही थी। ''बता दूँ....'' उसने दादी की ओर निगाह डाली। वे समझ गए, दादी-पोती की कोई साजिश है। ''बता दो. ...क्या बताना चाहती हो।'''

''दादाजी, आज आपका हैप्पी बर्थ-डे है ना!'' उन्होंने हिसाब लगाया, आज उनकी उम्र के सत्तावन साल पूरे हो गए हैं।

''अच्छा ! हाँ ! मैं तो भूल ही गया था।'' वे न जाने कौन से विचारों में खो गए।

''दादाजी, मैं आपके लिए गिफ्ट लाई हूँ।.....लाती हूँ।'' उसकी जल्दबाजी से लग रहा था, गिफ्ट के रूप में अपनी खुशी को प्रकट करने के लिए अपने आपको न जाने कब से रोक रही थी। पीछे की ओर हाथों में कुछ छिपाए वह लौटी। ''आप आँखें मींचिए।'' उन्होंने आँखें मूँद लीं।

''खोल लीजिए।''

''इधर देखिए'' उसने सेन्ट्रल टेबल पर रखी टॉफी की ओर इशारा किया तथा ताली बजाकर गाने लगी-''हैप्पी बर्थ-डे टू यू....दादाजी....।'' उन्होंने महसूस किया, उनके सामने बेशकीमती उपहार रखा हुआ है। घर का सन्नाटा टूट चुका है तथा पूरा कमरा ''हैप्पी बर्थ-डे टू यू'' से गूँज रहा है। याद आया, उसे कल दो टॉफियाँ दिलाई गई थीं। उसे याद था, कल दादाजी का बर्थ-डे है, इसलिए उसने एक टॉफी जतन से अपने स्टडी टेबल के ड्राअर में छुपाकर रख दी थी।

''दादाजी, आपको गिफ्ट कैसा लगा....''

''बहुत अच्छी। थैंक्यू बेटे....।''

''तो लीजिए ना!'' उसने रैपर खोलकर, हँसते हुए टॉफी उनके मुँह में डाल दी। उन्होंने दोनों हाथों से उसे अपने सीने से भींच लिया। जीवन में पहली बार इतने आत्मविभोर वातावरण में उनका जन्मदिन मनाया गया था। नम आँखों से उन्होंने पोती को चूम लिया।

हास्य माधुरी

आशिक है कोई रजनीकांत का बेटा नहीं

लड़कीः क्या तुम मेरे सच्चे आशिक हो?
लड़काः हां।
लड़कीः तो मेरे लिए चांद, तारे और दुनिया की सारी दौलत लाकर दो.
लड़काः अबे तेरा आशिक हूं, रजनीकांत का बेटा नहीं.

मून या सन

टीचरः पहले सन आया या मून?
संताः मून मैडम.
टीचरः वह कैसे?
संताः मैडम, पहले हनी 'मून' होगा, तभी तो सन आएगा न!

व्यंग्य

एक पत्नी का प्रेम पत्र

एक औरत कम पढ़ी-लिखी थी. उसे पता नहीं था कि पूर्ण विराम कहां लगाना है. इसलिए, लिखने के दौरान वह कहीं भी पूर्णविराम लगा देती थी. उसके पति बाहर रहते थे. एक दिन उसने अपने पति को चिट्ठी लिखी, जो कुछ ऐसे थी-

मेरे जीवनसाथी मेरा प्रणाम आपके चरणों में. आप ने अभी तक चिट्ठी नहीं लिखी मेरी सहेली को. नौकरी मिल गयी है हमारी गाय को. बछडा दिया है दादाजी ने. शराब की लत लगा ली है मैंने. तुमको बहुत खत लिखे पर तुम नहीं आये कुत्ते के बच्चे. भेड़िया खा गया दो महीने का राशन. छुट्टी पर आते समय ले आना एक खूबसूरत औरत. मेरी सहेली बन गई है. और इस समय टीवी पर गाना गा रही है हमारी बकरी . बेच दी गयी है तुम्हारी मां. तुमको बहुत याद कर रही है एक पडोसन. हमें बहुत तंग करती है. तुम्हारी पत्नी.

चिंटी की स्कूटी पर हाथी

हाथी की बाइक बिगड़ गई, चिंटी ने उसे अपनी स्कूटी पर लिफ्ट दी।
रास्ते में चिंटी ने हाथी से कहाः यार जरा नीचे होकर बैठ जा
हाथीः क्यों?
चिंटीः अरे अगर डैड ने देख लिया तो बेवजह का बवाल हो जाएगा.

इज्जत की कीमत

प्रीतोः मां मैं शादी नहीं करूंगी और अगर आपने जबरदस्ती मेरी शादी किसी से करवाई तो मैं घर से भाग जाऊंगी.
रोते हुए मां बोलीः बेटी मैंने तेरे पिता से भाग कर शादी की, तेरी बहन, मांसी ने भी भागकर शादी की, तेरा भाई नौकरानी के साथ और तेरे चाचा धोबन के साथ भाग गए. तेरी बुआ सब्जी वाले के साथ भाग गई, तेरे पिता भी दो बार पड़ोसन के साथ भागने की कोशिश कर चुके हैं और अब तू भी भागने की जिद कर रही है.. तू ही सोच अगर तू ऐसे करेगी तो आस-पड़ोस में हमारी क्या इज्जत रह जाएगी.

कैसा पति है

पति (गुस्से में): तुम्हें खाना नहीं बनाना आता, क्या गोबर जैसा खाना बनाया है.....
पत्नीः हे भगवान, कैसा पति दिया है. इसने तो हर चीज चखी हुई है.

क्या यही प्यार है

मैंने पूछा भगवान से
नींद नहीं आती रात को,
चैन नहीं आता दिन को,
क्या यही प्यार है
भगवान ने भी मुस्कुरा कर जवाब दिया
नहीं रे पागल, दिल्ली की सर्दी से सभी का यही हाल है.....!

लड़कियाँ ऐसी क्यों होती हैं

ब्वायफ्रैंड ने गर्लफ्रैंड को कॉल की तो उसने काफी देर बाद फोन उठाया......
ब्वायफ्रैंड (गुस्से में): इतनी देर से फोन कर रहा हूं, उठाती क्यों नहीं हो?
गर्लफ्रैंड (शर्माते हुए): अरे वो ना मैंने नई रिंगटोन लगाई है, उसी पर डांस कर रही थी.

बारिश बहुत तेज है

संता अपने दोस्त बंता के घर डिनर पर आया था, खाना खाकर वह अपने घर जाने लगा तो उसका दोस्त बोलाः
बंताः आज यही रुक जाओ बाहर बहुत तेज बारिश है
संताः ठीक है
बंता सोने की तैयारी ही कर रहा था कि संता गायब हो गया.
लगभग एक घंटे बाद संता वापस बंता के घर आया
बंता (हैरानी से): ओये तू कहां चला गया था?
संताः यार वो मैं घर पर प्रीतो को बताने गया था कि आज बारिश की वजह से मैं तेरे घर ही रहूंगा !

हाथी को चींटी का प्रपोज

हाथी ने चींटी को प्रपोज किया।
चींटी ने कहा- मैं भी तुम से प्यार करती हूं.
हाथीः तो फिर शादी से क्यों मना करती हो.
चींटीः मैं तुम से कितनी बार कह चुकी हूं!
मेरे घर में इंटर कास्ट शादी तो हो सकती है
लेकिन इंटर साइज नहीं.

संता का ब्लड टेस्ट

संता खून के बारे में एक किताब पढ़ रहा था. उसे देख उसकी पत्नी ने पूछा कि आज यह किताब क्यूं पढ़ रहे हो ?
संता बोला आज डॉक्टर ने कहा है कि कल तुम्हारा ब्लड टेस्ट होगा इसलिए.

खाना-खजाना

निशा मधुलिका

कद्दू की बर्फी

कद्दू की सब्जी तो हम लोग अक्सर ही बनाते हैं और कभी–कभी कद्दू का हलवा भी. आइये आज हम कद्दू की बर्फी (Kaddu ki Burfi) बनायें.

कद्दू की बर्फी (Kaddu ki Burfi) हम नवरात्रि के व्रत (Navratri Var Recipes) या अन्य व्रत में फलाहार के रूप में भी ले सकते हैं. कद्दू की बर्फी बनाने के लिये कद्दू एकदम पका हुआ पीला होना चाहिये, तो

आवश्यक सामग्री–

Ingredients for Kaddu ki Barfi

कद्दू – 1 किग्रा.

घी – 4 टेबल स्पून

चीनी – 250 ग्राम

मावा – 250 ग्राम

बादाम – 15 छोटा छोटा काट लीजिये

काजू – 15 (एक काजू के 7–8 टुकड़े करते हुये काट लीजिये)

इलाइची – 6–7 (छील कर बारीक कूट लीजिये)

पिस्ते – एक टेबल स्पून (बारीक कतरे हुये)

विधि

How to make Kaddu ki Burfi

कद्दू के बीज हटा कर छील लीजिये, धोइये और कद्दूकस कर लीजिये, कढ़ाई में बिना पानी डाले कद्दू डालिय, 2 टेबल स्पून घी भी डाल दीजिये, ढ़ककर धीमी आग पर पकने रख दीजिये, थोड़ी देर में चमचे से चलाइये और फिर से ढ़क दीजिये. कद्दू को नरम होने तक पकने दीजिये. नरम हुये कद्दू में चीनी डालकर पकाइये, चीनी के साथ मिलकर कद्दू से काफी मात्रा में पानी निकल आता है, थोड़ी थोड़ी देर में चमचे से चलाते रहिये, कद्दू तले में न लगे, इस तरह कद्दू से पानी बिलकुल खतम होने तक पका लीजिये.

बचा हुआ घी डालिये और कद्दू को अच्छी तरह भून लीजिये। भुने कद्दूचीनी में मावा और मेवे मिलाइये और चमचे से चलाते हुये तब तक पकाइये जब तक कि वह जमने वाली अवस्था में न आ जाय, इसके लिये उंगलियों से इस कद्दू के हलवे को चिपका कर देखिये वह उंगलियों से चिपकते हुये जमने सा लगता है. आग बन्द कर दीजिये और इलाइची पीस कर मिला दीजिये.

थाली में जरा सा घी लगाकर चिकना कीजिये और ये मिश्रण थाली में डालकर एकसार करके जमने रख दीजिये. 1 घंटे में कद्दू की बर्फी जमकर तैयार हो जाती है. बर्फी के ऊपर कतरे हुये बारीक पिस्ते डाल कर चिपका दीजिये. कद्दू की बर्फी को आप अपने मन पसन्द आकार में काटिये, परोसिये और खाइये. बची हुई कद्दू की बर्फी (Kaddu ki Burfi) को एअर टाइट कन्टेनर में रखिये और फ्रिज में रखकर 7 दिन तक खाइये.

छैना पनीर केक

बिना अंडे का केक बनाने जा रहे हैं तो आज छैना केक (Chena Cake) बनाकर देखिये, आपको बहुत पसंद आयेगा.

आवश्यक सामग्री

Ingredients for Paneer Cake

पनीर या छैना – 250 ग्राम (1 1/4 कप)

मैदा – 200 ग्राम (एक कप)

बेकिंग सोडा – 3/4 छोटी चम्मच

बेकिंग पाउडर – 1 1/2 छोटी चम्मच

मक्खन या शुध्द घी – 100 ग्राम (आधा कप)

क्रीम या ताजा मलाई – 100 ग्राम

चीनी – 200 ग्राम (एक कप) पिसी हुई

दूध – 200 ग्राम (एक कप)

काजू – 20–25 (छोटे टुकड़े में काट लीजिये), किशमिश – 20–25

विधि – How to make Paneer Cake

मैदा को बेकिंग सोडा और बेकिंग पाउडर के साथ मिलाकर चलनी से 2 बार छान लीजिये. छैना या पनीर को किसी थाली में डालकर अच्छी तरह हथेली से मसल करके चिकना कर लीजिये. पनीर घर में कैसे बनायें

मक्खन, क्रीम और चीनी को डाल कर अच्छी तरह फेट लीजिये, आप इसके लिये मिक्सर का प्रयोग कर सकती है, इस मिश्रण में चिकना किया हुआ छैना मिलाकर फैटिये. अब मैदा मिलाइये और अच्छी तरह मिलाइये, थोड़ा थोड़ा दूध डालकर एक ही दिशा में फैटिये, इस तरह केक का पेस्ट तैयार कर लीजिये. काजू डालकर पेस्ट में मिला दीजिये. (आ चाहें तो इसमें एक छोटी चम्मच इन्स्टैन्ट काफी मिला दीजिये, इससे केक का कलर आ जाता है)

बर्तन जिसमें केक बनाना हैं उसे चिकना कीजिये और एक छोटी चम्मच मैदा डालकर चारों ओर फैला दीजिये, इस तरह बर्तन की पूरी सरफेस पर मैदा की पतली परत बन जाती है.

ओवन को 200 सेग्रे. पर गरम (pre heat) कीजिये.

केक के पेस्ट को बर्तन में डालिये और केक को बेक होने के लिये ओवन में रखिये. ओवन का तापमान 180 सेग्रे. पर सैट करके केक को 25 मिनिट के लिये बेक होने दीजिये. अब तापमान को 160 सेग्रे पर सैट कर दीजिये और 30 मिनिट तक केक को बेक होने दीजिये. ओवन खोलिये और केक में चाकू डाल कर टेस्ट कीजिये, यदि चाकू केक से साफ बाहर निकल आता है तब आपका केक बन चुका है, यदि चाकू के ऊपर केक का मिश्रण चिपक कर आता है तब केक को 10 मिनिट के लिये और बेक करने के लिये रख दीजिये और टेस्ट करके देख लीजिये. छैना का केक (Paneer Cake) बन चुका है, छैना केक को अपने मन पसन्द आकार में काटिये और खाइये. बचे हुये केक को एअर टाइट कन्टेनर में रख कर फ्रिज में रख कर 3 दिन में खत्म कर लीजिये,

छैना पनीर केक को 3 दिन से अधिक मत रखिये

http://nishamadhulika.com/

महामंत्र ब्रह्मतत्त्व

प्रो0 श्रीकान्त पाण्डेय प्रसून

सामान्यतया ऊँ का ज्ञान, प्रणव की पहचान और ब्रह्म में लीनता जैसी श्रेष्ठ, दिव्य, मोक्षदायक शब्द और शब्द–ब्रह्म का परिज्ञान नहीं हो पाता क्योंकि वह निरन्तर सत्कर्मों; ध्वनि और नाद के सहारे ही सम्भव है। किन्तु सतत् चेष्टा होनी चाहिए कि ऊँ या प्रणव या ब्रह्म को जाना जाये।

ऊँ आदि है, विस्तार है, अनन्त है। इसका कोई विकल्प नहीं है। यह जन्म है, अमरता है और विरामता है ।

ऊँ स्वयंभू है और सबके जन्म का कारण है। यह सर्व सर्जना है और सबके जीवन का कारक है।

ऊँ प्राण है, प्राणदाता और प्राणरक्षक है। यह प्राणवायु है और प्राण से भी पवित्र है। यह प्रणव है।

ऊँ ब्रह्म है, 'ओमिति ब्रह्म', 'आत्मा' है, परमात्मा है। ऊँ आत्म–ज्ञान है और आत्म रूप है। जगत भी यही और जगत की पहचान भी यही है। 'ओमिति सामानि गायन्ति।'

ऊँ स्फोट है, स्फोट की पूर्वावस्था है। स्फोट का कारण यही है और परिणाम भी। शून्य भी यही है। समस्त भी यही है। बिन्दु यही है और 'पूर्ण' भी यही है। 'ओमतीदं सर्वम्'।

ऊँ ही मुक्ति है, मुक्ति का मार्ग है और इसी ध्वनि से जप करके मुक्त हुआ जा सकता है। यह परमात्मा का प्रतीक है और इसी पर ध्यान केन्द्रित करके परमात्मा को पाया जा सकता है ।

ऊँ शाश्वत क्रिया है। इसे ही लेकर हम चलते हैं। इसी तक हमें जाना भी है।

ऊँ की ध्वनि की तुलना किसी अन्य शब्द या ध्वनि से नहीं की जा सकती। यह अतुलनीय है। स्वयं में समाहित कर लेने की और स्वयं के प्रकाश से व्यापक बोध देने की इसमें जो क्षमता है, वह वर्णनातीत है और पकड़ से परे भी। 'ओम आत्मा वा इदमेक एवाग्रे आसीत्। नान्यत् किंचन मिषत्। स ईक्षत लोकान्नुसृजा इति।

ऊँ संस्कृत भाषा का मात्र एक शब्द नहीं है। ऊँ भाषा के विकास के पूर्व ही जान लिया गया था। यह भाषा में नहीं है। भाषा से परे है। यह लैटिन का 'ओम' (omne) शब्द भी नहीं है। यह मूल ध्वनि है जो ध्यान से सुनने की चेष्टा करने पर हर जगह सुनाई पड़ती है। साँसों से यह ध्वनि स्वतः सहज निकलती है। मुँह खुला, कोई ध्वनि बाहर आई और होंठ बन्द हो गये, यही है ऊँ। बिना आघात या व्यवधान के यह ध्वनि निकलती है। ऊँ सदा अनाहत है।

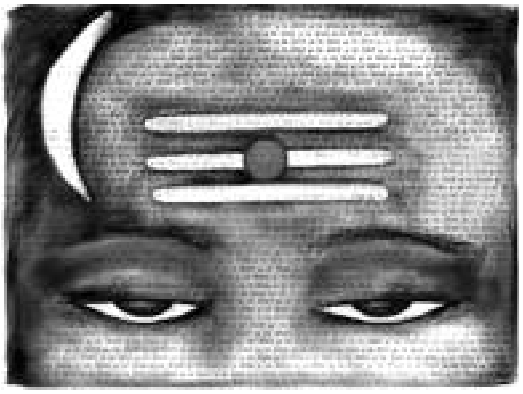

ऊँ इन्हीं दोनों भाषाओं में नहीं, अनेक भाषाओं में सर्व अर्थ को द्योतित करता है । यह सर्वज्ञान है, सर्वव्यापकता है और सर्वशक्ति है। दूसरे शब्दों में कहें तब यही ब्रह्माण्डीय ज्ञान है, ब्रह्माण्डीय व्यापकता है और ब्रह्ममाण्डीय शक्ति है। 'एकाक्षरं परं ब्रह्म'।

ऊँ प्रतीक है, गहन प्रतीक, सर्वग्राह्य प्रतीक। सबको प्रतिकित करता है और निरपेक्ष तथा निर्लिप्त रहता है।

ऊँ अ उ म् तीन ध्वनियों से बना है। अ जागृतावस्था है, चेतन अवस्था है, ज्ञान की अवस्था है।

ऊँ का उ स्वप्नावस्था है। दैहिक स्थिरता में मन की गतिशीलता को प्रकट करता है।?

ऊँ का म् सुप्तावस्था है। स्वप्न विहीन गहरी निद्रा की अवस्था है। अज्ञानता ही नहीं मृत्यु को भी प्रतिकित करता है ।

ऊँ पर लगे अर्द्धचन्द्र और बिन्दु तुरीयावस्था है। सभी अवस्थाओं की, कत्रित और संयुक्त अवस्था है। संयुक्त कर देनेवाली है। यही समाधि की अवस्था है।

ऊँ का अ जहाँ वाणी का प्रतीक है, वहीं उ मन का और म् प्राण का प्रतीक है। इस रूप में यह जीवात्मा का अंश नहीं, पूर्ण परमात्मा है।

ऊँ की तीनों ध्वनियाँ लम्बाई, चौड़ाई और गहराई जताती है। यह वह दिव्यता है जो रूप, रंग, गंध और आकार की सीमा से परे है। दृष्टा और साधक की शक्ति की क्षमता की सीमा होगी, वह सीमित होगा किन्तु असीम है।

ऊँ की ये ध्वनियाँ अलग–अलग पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग को जताती है। सम्पूर्ण स्रष्टा–सहित सम्पूर्ण सृष्टि का अर्थ वहन करता है। ये ध्वनियाँ तीनों कालों भूत, वर्तमान और भविष्यत् को प्रकट करती हैं भूतं भवद् भविष्यदिति सर्वमोंकारं–एव। जबकि अपनी इयत्ता में यह समग्र काल को या कालहीनता को दर्शाने के साथ ही साथ कालातीत हो जाता है और काल की सीमा का अतिक्रमण करता है।

ऊँ की ये तीनों ध्वनियाँ माता–पिता–गुरू द्वारा दिए गये ज्ञान की अभिव्यक्ति हैं। यह अविनाशी या हर घर, हर मन के अनश्वर की शिक्षा है।

ऊँ की ये ध्वनियाँ त्रिमूर्ति हैं, त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं। ये त्रिगुण–राजस, तामस और सात्विक हैं। ये ही त्रिलोक–स्वर्ग, मर्त्य और पाताल हैं। ये स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर रूपी त्रिघट हैं।

अ उ म् इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना है। अतः सूर्य, चन्द्र और ब्रह्मरंघ्र का योग है। इस रूप में इसे आसानी से गंगा, यमुना और सरस्वती का त्रिवेणी संगम माना जा सकता है। इसलिए यह पूर्ण ज्ञान है, ब्रह्म प्रकाश है और अन्तस का आलोक है।

प्रो0 श्रीकान्त पाण्डेय
प्रसून
सम्पर्क सूत्रः
मोतिहारी, बिहार
फोनः 9430994377
Email: shrikantprasoon@yahoo.co.in

ऊँ का अ उ म् योग साधना का पूरक, रेचक और कुंभक है । ऊँ की ध्वनि बेधती हुई चलती है और अपर के आलोक

में सहज और साधिकार पहुँचती है क्योंकि कार्य–ब्रह्म के 108 मनकों की माला ,क होकर, एक रूपाकार ग्रहणकर, एक साथ होकर परब्रह्म हो जाती है–अजन्मा, अनन्त और अविनाशी।

> The voice that chants to the creator Fire. The symbolled OM, the great assenting word-
>
> **Sri Aurobindo**

ऊँ ही तीनों दशाओं में एक सा बने रहने वाला त्रिदश है। यही ज्ञान, कर्म और उपासना का त्रिमार्ग है। यही ज्ञाता है, ज्ञान है और ज्ञेय है यानि त्रिपुटी है अर्थात शिरोभाग है।

ऊँ ही क्षय, स्थिति और वृद्धि है। त्रिशक्ति इच्छा, ज्ञान और क्रिया है। यही दिन का और जीवन का प्रातः, मध्याह्न और संध्या

है।

ऊँ अपने सम्पूर्ण रूप में आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार नामक तीनों अव्यवस्थायें है। साधक पर ही ध्यान लगाकर ब्रह्मत्व को प्राप्त करता है। इसलिए ऊँ ही सम्पूर्ण शक्ति हैं।

ऊँ के बिन्दु से संयुक्त ''ओं'' शब्द का योगीजन ध्यान सदा अपनी भृकुटी में लगाते हैं जो कि कामनाओं को पूरा करने वाला और मोक्ष देने वाला है। उस ओंकार को बार–बार नमस्कार है–

ओंकार बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव तस्मै ओंकाराय
नमोनमः ।।

ऊँ ही वह ओंकार है जो भूत और सूक्ष्म जगत् का प्राण है। सबमें व्याप्त ऊर्जा है। इसी से जीवन सम्भव होता है। शक्ति यही है जिससे कार्य सम्पन्न होते हैं और इसी ओम् या ओंकार का शरीर से निकल जाना मृत्यु है।

ऊँ वेद–वेदान्त–ब्राह्मण–पुराण–उपनिषद–व्यवहार का ज्ञान और सज्जन, साधु, संत, पंडित, महात्मा, तपस्वी, मुनि, ऋृषि, महर्षि और देवर्षियों की वाणी है। यह भारतीय मनीषा का सर्वोच्च आविष्कार है या सर्वोत्तम प्राप्ति है। उन्होंने ही इसके विविध, विचित्र रूपों और अर्थों का बोध कराया है और इसे अपनाने तथा दैनन्दिन जीवन में सदा प्रयोग में रखने की शिक्षा और प्रेरणा दी है। ये और अन्य अनेक पारिभाषिक शब्द और संवेदनात्मक भाव हैं जो ऊँ को, उसकी शक्ति को प्रकट और व्याख्यायित करते हैं।

ऊँ शब्द और ध्वनि को यूँ ही जाया न करें। जब भी अवसर मिले मन में, हल्की ध्वनि से या जोर से इसका उच्चारण करें। साहस और निर्भयता तो बढ़ेगी ही कार्य सिद्धि भी होगी यानि मनोवांक्षित सफलता मिलेगी। यह पूर्ण ध्वनि है और पूर्णता देती है। इसे साथ रखें, सब कुछ साथ रहेगा इसे साध लें, कुछ और साधने की आवश्यकता नहीं रहेगी। सब अपने आप सध जायेगा। ओमित्येतत्।

क्रतो स्मर, कृतं स्मर।

इसलिए हे जीव! ऊँ का स्मरण कर अपने किए हुए, कर्मों का स्मरण कर।

ऊँ का यह अटूट सिलसिला अगम है। इसका कहीं किनारा नहीं दिखता। वस्तुतः इतना सूक्ष्म है कि उसका किनारा हो ही नहीं सकता और इतना विस्तृत कि अनन्त तक यह आक्षितिज फैलाव सदा किनारा विहीन लगता है। इसलिए ऊ में ही सब समाहित हो जाते हैं। वे वस्तुतः ऊ से ही जन्मे रहते हैं। इसलिए जाप में पहले ऊ आता है।

ऊ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्।

श्री सतगुरू नानक ने इस ऊ के पहले 1 लगाया और 1ऊ एक–ओंकार बना दिया। जितने 'त्रि' शब्द, जितने 'त्रि' अर्थ हैं उन सबको इस ओंकार में समाहित कर दिया। श्री गुरूनानक का यह एक–ओंकार निर्गुण–निराकार परब्रह्म है। दक्षिणी राग में इसका उच्चारण होना चाहिए अतएव इसे ही दक्षिणी ओंकार कहा जाता है।

वस्तुतः ओंकार रहस्मय ध्वनि है। आप दोनों हाथ से दोनों कान बन्द करके कान की ध्वनि सुनें। वह ओंकार है– अनादि, अनन्त, अजस्र, स्वयंभू और अनाहत। यही गुरूनानक का ईश्वरत्व है जिसका न पिता है, न माता, न पुत्र है, न भ्राता, जो सब है, सब में है, मुझमें, आप में, एक में, अनन्त में। यह स्वर सुनें अथवा नाभी से इसका उच्चारण करें। यही स्वर हर तरफ से आता हुआ सुनायी पड़ता है और हर तरफ फैलता जाता है। इसे साधें और ब्रह्मत्व प्राप्त करें। यह सद्गुरू की शिक्षा भी है और आकांक्षा भी।

ओंकार ही ब्रह्म है, परब्रह्म है जिसे जान लेने पर सबकुछ जाना हुआ हो जाता है, जिसे पा लेने पर और कुछ पाना शेष नहीं रहता। प्राप्तकर्त्ता जो चाहता है वह उसे मिल जाता है। यही अति उत्तम आलंबन है। सर्वश्रेष्ठ आश्रय है। इसे जानकर ज्ञाता साधक ब्रह्मलोक में महिमान्वित होता है और इहलोक आगमन समाप्त हो जाता है ::

एतद्धयेवाक्षरं ब्रह्म एतद्धयेवाक्षरं परम् ।
एतद्धयेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य
तत्।।
एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

कठोपनिषद् 1।2।16,17

प्रकृति विनाशशील है। उसको भोगनेवाला जीवात्मा अमृतस्वरूप अविनाशी है। विनाशशील जड–तत्त्व और अविनाशी चेतन आत्मा दोनों को ईश्वर अपने शासन और नियंत्रण में रखता है। इस बात को जानकर और मानकर उस परमेश्वर का निरन्तर ध्यान करने से, मन को उसमें लगाये रहने से तथा तन्मय हो जाने से साधक उसी को प्राप्त हो जाता है। उसके बाद सब माया की निवृत्ति हो जाती है। उसे ध्यान लगाकर जान लेने पर समस्त बन्धनों का नाश हो जाता है। क्लेशों का नाश हो जाने पर जन्म–जरा– मृत्यु समपप्त हो जाती है। अतः शरीर का नाश होने पर आत्मा स्वर्ग तक के समस्त ऐश्वर्य त्यागकर सर्वथा विष्णु) और पूर्णकाम हो जाती है::

क्षरं प्रधानममृताक्षरं हरः क्षरात्मानावीशते देव
एकः।
तस्य–आभिध्यान–आद्योजना–
तत्त्वभावाद्7भूयः–आन्ते।।
ज्ञात्वा देवं सर्व–पाशाप–हानिः क्षीणैः
क्लेशः–जन्म–मृत्यु–प्रहाणिः।
तस्य–आभिध्याना–तृतीयं देहभेदे विश्व–एंश्वर्यं
केवल आप्तकामः।।

कठोपनिषद् 1।10,11

निष्काम भाववाला साधक इस परम विशु) प्रकाशमान ब्रह्मधामरूप परमेश्वर को जान लेता है। इसी में सम्पूर्ण जगत् स्थित है। जो कोई भी निष्काम भाव से उस परम सत्यरूप ब्रह्म की उपासना करता है वह बुद्धि से पूर्ण हो जाता है और इस जगत् का अतिक्रमण कर जाता है ::

स वेदै–तत्परमं ब्रह्म धाम य= विश्वं निहितं
भाति शुभ्रम्।
उपासते पुरूषं ये ह्यकामास्ते
शुक्रं–एतद्–अति–वर्तन्ति धीराः।।

मुण्डक उपनिषद् 3।2।1

'उस अक्षर ओंकार को अविनाशी जानना चाहिए जो परब्रह्म और प्रजापति का स्वरूप है। उसका विधियज्ञ करने से जपयज्ञ दसगुना श्रेष्ठ है। उपांशु जप, होंठों से किया जानेवाला, ऐसा जप जिसे दूसरे न सुन सकें, सौ गुना श्रेष्ठ है और मानसिक जप हजार गुना श्रेष्ठ है। शेष कर्मयज्ञ या पाकयज्ञ जप यज्ञ के सोलहवें कला के बराबर नहीं हैं।' यह मनुस्मृति का विचार है जिसे सब स्वीकार करते हैं::

अक्षरं त्वक्षरं ज्ञेयं ब्रह्य चैव प्रजापतिः।
विधियज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिः–गुणैः।
उपांशु स्याच्छतगुणः साहस्त्रो मानसः स्मृतः।।
ये पाकयज्ञाः–चत्वारो विधियज्ञ समन्विताः।
सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।

मनुस्मृति 2।84–86

महर्षि पतंजलि ने यह कहकर कि तस्य वाचकः प्रणवः यह स्थापित कर दिया था कि ऊँ, ब्रह्य और प्रणव एक ही हैं। ऊँ ही प्रणव है जो ब्रह्यवाचक है। उन्होंने यह भी कहा था कि तज्जपस्तदर्थभावनम्; उस परमात्मा के नाम का जप और उसके अर्थ और स्वरूप की भावना करनी चाहि, क्योंकि उसकी भक्ति से मन आसानी से समाधिस्थ हो जाता है, ईश्वरप्रणिधानाद् वा। ऐसी साधना से सभी विघनों का नाश हो जाता है और परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है::

तःप्रत्यक्–चेतना–अधिगमो–अप्य–अन्तराया–भावः–च।

इसलिए उस ब्रह्म को जानना और ऊँ का उपांशु या मानसिक जाप करना और इन्द्रियों के समुदाय को भली प्रकार वश में करके मन बुद्धि से परे सर्वव्यापी, अकथनीय स्वरूप और सदा, करस रहने वाला, नित्य अचल, निराकार, अविनाशी, सच्चिदानन्द घन ब्रह्म को एकीभाव रखकर निरन्तर ध्यान करते हुए भजते हैं। इसकी घोषणा श्रीकृष्ण ने गीता में कर दी::

ये त्वक्षरम–निर्देश्यम्–अव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्र–अगम–चिन्त्यं च कूटस्थम्–अचलं
ध्रवम्।।
संनियम्य–इन्द्रिय–ग्रामं सर्वत्र समबुधयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्व–भूत–हिते रता।।

गीता 12।3–4

अध्यात्म रामायण में स्वयं भगवान अपने एकभक्त से कहते हैं : 'इसलिए मेरी भक्ति से युक्त पुरूष को शीघ्र ही ज्ञान, विज्ञान और वैराग्य प्राप्त हो जाता है जिससे वह मुक्ति को पा लेता है, जन्म मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है ::

अतो मद–भक्ति–युक्तस्य ज्ञानं
विज्ञानमेव च।
वैराग्यं च भवेत् शीघ्रम ततो
मुक्तिम्–वाप्नुयात।

सृजन का आधार... प्रेम

राज शिवम
सम्पर्क सूत्रः
श्री साई राम शिवम निवास
मोतिहारी, बिहार
फोनः 9431258486
Email: omsairajshivam@gmail.com

–राज शिवम

प्रेम को समझना खुद को समझ लेना है। किस प्रेम की बात की जा रही है? कपट प्रेम, विशुद्ध प्रेम, अलौकिक प्रेम या महाप्रेम। शास्त्र की उक्ति है परमात्मा ही प्रेम है। कहां रहता है, कैसे उत्पन्न होता है? प्रेम वस्तु है या वासना है या भाव है या श्रद्धा है। क्या है प्रेम? प्रेम किससे उत्पन्न होता है त्याग से या मोह से। कही काम उर्जा से प्रेम का प्राक्टय तो नहीं होता। कारण क्या है, उद्गम क्या है? प्रेम अगर परमात्मा है तो बाकी प्रेम क्या है। प्यार, इश्क, मोहब्बत आज आम बात है तो इसका प्रेम से क्या सम्बंध है। प्रेम का आधार क्या है? क्या मनुष्य के जीवन में प्रेम जो विशुद्ध हो क्या कभी पूर्णत्व के साथ साकार हो पाता है। आइये, यहां मै आपको अपने अनुभव की दृष्टि से समझाना चाहता हूँ। सारी इच्छाओं का लोप हो जाने पर जब शरीर, मन सारी इंद्रियों पर बंधन हो जाये। कुछ न बचे न ज्ञान, न बुद्धि, न मोह, न भाव अंत में इकलौता जो बचे वही प्रेम है। शुद्ध प्रेम, विशुद्ध प्रेम तब मैं ही प्रेम हूँ, प्रेम मैं ही हूँ। किसी के ज्ञान, किसी की वाणी, किसी के शरीर, किसी का सौंदर्य, सुंदरता किसी के मोह से प्रेम उत्पन्न होता है। वह सब क्या है उसी प्रेम की एक छोटी सी झलक परंतु शायद अंतहीन, कई विषाद, कई रोग उत्पन्न करता है। यह प्रेम इसे शायद बहना आता है, झरना आता है, गहराईयों से जीने, मरने का वादा। कभी साथ में जीवन का अंत भी कर लेते है। यह विषाद है, मोह है, लोभ है। इसमें प्रेम का कोई तत्व विद्यमान तो है परंतु ये जो भी हो रहा है इसमें एक प्रेम का स्पर्श जीवन में हुआ है प्राणों से रचा, बसा तभी तो ऐसा होता है। प्रेम के बिना कदापि सम्भव नहीं है।

प्रेम निराकार है, शून्य है कोई दिखायी देने वाला पदार्थ नहीं है, न इसका कोई स्थान है यह सर्व व्यापक है। इसका आधार क्या है शक्ति, रूप, भाव, श्रद्धा।

शिवत्व के सगुण सृष्टि की एक उच्च चेतना जो परम शुद्ध तत्व का एक आधार है यही प्रेम हो सकता है। प्रेम के बिना जीवन सम्भव ही नहीं है, न ही सृष्टि चक्र का संचालन सम्भव है। यह प्रेम जो परमात्मा है इसे हिन्दु शिव कहते है, ईसाई ईश्वर, मुसलमान अल्लाह। यह कितने नामों से पूजा जाता है, परंतु यह एक ही है। राधा–कृष्ण का प्रेम हो या भक्त–भगवान का प्रेम हो, स्त्री–पुरुष का प्रेम हो या प्रेमी–प्रेमिका का सबमें कमोवेश उसी प्रेम का रस है तभी तो सृजनकर्ता सृजन कर रहा है, सृजन का आधार प्रेम है। संतान का मोह, धन का मोह, राज्यसत्ता का मोह या स्त्री का मोह सभी में उस प्रेम का स्पंदन हो रहा है। श्रीराम रावण के हृदय में बाण नहीं मार रहे थे। क्यों, क्या कारण था? रावण के हृदय में सीता माता जो विराजमान थी। आपके प्रेम का आधार क्या है वह आपके विवेक पर निर्भर है। बुद्धि भटका देती है, मन उलझा देता है, तन मोह वासना से बांधता है। वही विवेक रूपी ज्ञान उसे सत्य का स्वरूप दिखाकर प्रेम की परम प्राप्ति करा देता है। शिव प्रेम है, परम पुरुष परमात्मा है। तभी तो शक्ति सती हो या पार्वती शिव के लिये तपस्या करती है, रोती है, तड़पती है कितने जन्म लेने पड़ते है, कितना प्रेम करना पड़ता है? जब प्रेम का पूर्ण स्वरूप प्रकट होता है तो शेष सभी बंधन कट जाते है। शिव को आना पड़ता है, मनाना पड़ता है, अपने आलिंगन में शक्ति को बैठाना पड़ता है। तभी सृष्टि में दोनों का एक होना आनंद, कल्याण, सृजन का आरम्भ होता है। आदिशक्ति भी रोती है प्रेम के बिना, राधा भी रोती है कृष्ण के बिना, भक्त हनुमान भी रोते थे राम के बिना, आप भी रोते है संतान के बिना, पद के बिना, धन के बिना या प्रेमिका, पत्नी के बिना। सारी सृष्टि कभी–कभी रोती है प्रेम के लिये। क्यों सभी कहीं न कहीं प्रेम से अपने जीवन का मूल्य, महत्व चाहते हैं, पा लेना चाहते है। क्या प्रेम भी रोता है, शिव भी रोते हैं? किसके लिये? सम्पूर्ण सृष्टि के लिये, सभी जीवों के लिये, सभी अपनी संतानों के लिये। परंतु शिव प्रेम है जगत का आधार है, ये मूल पुरुष है, सिर्फ देते हैं, लेते कुछ भी नहीं। बांटते हैं, जाँचते हैं प्रेम से जो पुकारे तो दौड़े चले आते हैं।

प्रेम विरह देता है, आंसू देता है, खुशी देता है तो कही वैराग्य भी देता है। पारा का नाम सुना होगा आपने। इसे शिव वीर्य कहा जाता है। ये जीवित होते हैं। इन्हें एक सूत्र में बांधने के लिये कितनी जड़ी, बुटीयां प्रयोग करनी पड़ती हैं। गन्धक रज है प्रकृति रूप शक्ति का। इसी को संयोग करा कर सिंदूर बनाया जाता है। प्रकृति व पुरुष ही सृष्टि के माता–पिता है। जीवन में एक व्यक्ति को एक

बार के वीर्य स्खलन में 7 से 10 करोड़ जीवाणु होते है। सभी जीवाणु बच नहीं पाते क्यों? पुरुष शरीर के अंदर तो ये सुरक्षित, सबल हैं परंतु बाहर आते ही नष्ट होने लगते है। कारण उनका संयोग प्रकृति रज से होता है और प्रकृति की अपनी एक क्षमता है, वे 7–10 करोड़ जीवाणु को अपने गर्भ में एक साथ रख नहीं पाती कारण प्रकृति संतुलन है, मर्यादा है, माँ है। इतने जीवाणु को उत्पन्न करना प्रकृति में विध्वंस प्रकट कर देगा। इसलिये प्रकृति तय करती है कि इतने एकाध जीवाणु गर्भ में सुरक्षित रहे। एक पुरुष का पूरे जीवन काल के जीवाणु का संख्या खरबों में हो जायेगा। एक पूरी सृष्टि एक व्यक्ति के सृजन से हो जायेगी। इसलिये प्रकृति संतुलन बनाकर रखती है, तय करती है की इस प्रेमरूपी सृजन का कैसा उत्पति हो। शिव इतना प्रेम बाँटते है कि कोई ले ही नहीं पायेगा। तभी तो श्रीविद्यापति शिव–शिव रटते है तो शिव नौकर बन जाते है, विष्णु शिव–शिव रटते है शिव में रमे रहते है तो शिव हनुमान बन जाते है। शक्ति शिव–शिव कह रोती है, बिलखती है तो शिव सगुण रूप में प्राप्त हो जाते है। जो जिस नाम रूप का जप करता है। अतः वह देर–सबेर उसे प्राप्त होता है यही शिव का प्रेम है जीव पर। शिव को कोई नहीं जान सकता, न ही कोई पूर्णतः समझ सकता। शिव को शिव ही जानते है। कारण शिव परम प्रेम है जो उन्हें जाना वह उन्हीं में समाहित हुआ। बूँद सागर में प्रवेश करे तो बूँद का क्या वह तो सागर ही हो गया। हम इस सृष्टि को ध्यान से देखे। बिना किसी मूल्य, बिना उद्यम कुछ है तो वह प्रेम ही है परंतु हम उसे भी समझ नहीं पाते कारण अहंकार, दुर्गुण, मोह से हम जकड़े है। रिश्तों में अपने कर्तव्य के प्रति इमानदार नहीं है तभी तो सृष्टि में इतना महातांडव होता है। मीरा ने रणछोड़ जी के मंदिर में, कृष्णमूर्ति में सशरीर समाहित हो गयी, कबीर पुष्प बन गये, साईं शिरडी में विराज गये, हनुमान सदा पृथ्वी पर विराजमान हो गये। क्यों? क्योंकि हम प्रेम से जीवन के मर्म को समझे परंतु पशुता में हम जकड़ कर रह गये है। क्या होगा प्रेम के बिना सृष्टि का यही शिव की चिंता है। वे हमेशा हमे प्रेम रस के आसपास ले जाते है परंतु हम प्रेम के प्यास के लिये अतृप्त ही बने रहते है। लिंग की पूजा क्यों होती है? क्योंकि ध्यान से देखे तो लिंग शून्य का बोध कराता है। ये परमशून्य निराकार, परम ज्योति से साकार सृजनकर्ता है। उसका आधार क्या है, वह अकेला एक ही है परंतु जब वह महा. लिंगाकार से पूजित होता है तो प्रकृति, महामाया भगवती पराम्बा, आदिशक्ति, योनिस्वरुपा आधार बनती है। तभी लिंग स्थापित होता है। यही प्रकृति, पुरुष का सृजन है। आधार के बिना जीव का कल्याण संभव ही नहीं है। कारण कितने जीव परम परमात्मा से मिलने हेतु व्याकुल है। सभी संसार चक्र में फंसे तरह–तरह की कामना से ग्रसित है। कौन महाप्रेम प्राप्त करना चाहेगा। लोग पहले संसार की माया की पूर्ति चाहते हैं बाद में ईश्वर प्राप्ति। इसी माया में कितने जीवन बीत जाता है। इसी कारण आधारशक्ति को ममतामयी माता कहा गया नहीं तो शिव को कोई नहीं जानता, क्योंकि शिव निर्गुण हैं।

राधा–कृष्ण का महाप्रेम कितना अलौकिक है जिस कृष्ण के लिये देवता सहित समस्त पुण्यात्मा रोते है वह कृष्ण धरातल पर विराज रहे है। पुण्यात्माओं में कुछ गोपियां तो कुछ गोप का रूप धारण कर आ गये है। रासलीला हो रही है। परमप्रेम कृष्ण प्रेम रस बाँट रहे हैं और सभी विद्वान, वीर, राजा कुरुक्षेत्र में उन्हें मायावी शत्रु समझ रहे हैं। यहा तक की उनका प्रिय सखा अर्जुन भी कृष्णा का पूर्ण नहीं समझ पाया क्यों बुद्धि, बल, अक्षर ज्ञान कभी–कभी अहंकार से पुष्ट होकर हृदय की बात समझ नहीं पाते और व्यर्थ जीवन के उस अमूल्य क्षण जहां परमात्मा प्राप्ति का साधन है कृष्ण जो खड़े है महाभारत के योद्धा समझ नहीं पाये। कृष्ण के जाने के बाद अर्जुन को भी समझ में आया परंतु जो चूक गया सो खो दिया। इसी कारण प्रेम हृदय से होता है, बुद्धि से नहीं।

लोग साथ रहकर भी प्रेम को समझ नहीं पाते। हृदय रोता है जब ये शिव के लिये, शक्ति के लिये, राम के लिये या कृष्ण के लिये तो आंखों से जो नीर बहे वो गंगा, नर्मदा का पावन जल है जो हमारे अंतःकरण के सारे विकारों को धो हमें शुद्ध बना देता है तभी उसकी झलक मिल पाती है। दूसरा उपाय कष्टकर व अस्थायी है। शिव के लिये माता ने बार–बार जन्म लिया, तपस्या की कारण शक्ति के बिना शिव तो निराकार समाधि में चले जाते है। तभी तो सृजनकर्ता शक्ति से साथ जीवों का कल्याण करता है। शिव ही प्रेम है जीव ही प्रेमिका। बुद्धि ही द्वारा है, मन है सेविका। इंद्रिया निग्रह, सत्संग, जप से तन का निरोगता हो जब योग, आचार का मेल। ध्यान करिये जब प्रेम का तो घृणा, दोष दुष्ट भागे, सब जीवों में एक ही रमते, इस उपाय से ये जागे। प्रेम से प्रेम कीजिये, मधुर स्वर सब को दीजिये। अगर कपट की मीठी वाणी होगी, द्वेष, लोभ आपने मन में ठानी होगी। कितने जीवन जी ले, भक्ति करे या सत्संग पी ले, जप करे,भोग करे, भोजन करे या करे अहंकार, शिव तो बस एक है, प्रेम हृदय से निराकार।

●

तेरा मेरा प्यार अमर

सुरीली बांसुरी

ललित कुमार
सम्पर्क सूत्रः
मेहरौली, नई दिल्ली

Email:
india.lalit@gmail.com

सन् 1962 में रिलीज हुई फिल्म ”असली नकली” में संगीत शंकर–जयकिशन का था और इसके गीत शायर हसरत जयपुरी ने लिखे थे। कल इसी फिल्म का एक गीत काफी समय के बाद सुना और मैं धुन की सरलता के बावजूद गीत के असर से दंग रह गया। यहाँ मैं लता के गाए ”तेरा मेरा प्यार अमर” गीत की बात कर रहा हूँ।

इस गीत में लगभग सभी कुछ परफेक्ट है। लेकिन सबसे पहले साधना की सुंदरता और सादगी अपना ना मिटने वाला असर छोड़ती है। साधना मेरी सबसे प्रिय अभिनेत्रियों में से एक हैं। कई वर्ष पहले मैं साधना के लिए एक फैन साइट भी चलाता था। मेरी प्रिय अभिनेत्रियों में सबसे ऊपर की पाँच के बारे में मेरे कई मित्र जानते भी हैं। ये हैंः नूतन, साधना, मीना कुमारी, वहिदा रहमान और नंदा। इस गीत में साधना का परिधान और श्रृंगार सम्मोहित कर लेने वाला है। वे स्त्रियों में सुंदरता की परिभाषा नजर आती हैं।

आप साधना की छवि के असर से उबर भी नहीं पाते कि लता की सधी हुई आवाज दिल में उतर जाती है। गीत के मुखड़े को लता ने झूलती हुई सी आवाज में गाया है। गीत में ”तेरा” और ”मेरा” शब्दों को जिस तरह से रुक–रुक कर गाया गया है वो अंदाज इस गीत को एक अलग ही कशिश देता है। गीत का फिल्मांकन भी सुंदर है। हालांकि लिप–सिंकिग में थोड़ी–सी कमी है लेकिन कुल मिला कर सभी दृश्य सुंदर बन पड़े हैं। पेड़ की पत्तियों में से चांद को फिल्माना और इन्हीं पत्तियों की छाया साधना के चेहरे पर पड़ने वाले दृश्य कमाल के हैं। ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मांकन वैसे अक्सर अच्छा ही बन पड़ता है। ”फिर क्यूं मुझको लगता है डर” पंक्ति पर साधना के चेहरे पर आने वाले चिंता के भाव बड़े स्वाभाविक और नाजुक लगते हैं।

हालांकि धुन सादी है लेकिन संगीत में शंकर–जयकिशन ने बड़े ऑरकेस्ट्रा का प्रयोग किया है। गीत के अंतरों के साथ तबले और बैंड़ों की धुन चलती है, और अंतरों के बीच में पार्टी ऑरकेस्ट्रा के साज प्रयोग हुए हैं। फिल्म ”असली नकली” उस दौर की फिल्म है जब हिन्दी फिल्मों में संगीत देने के लिए बड़े–बड़े दिग्गज संगीतकार मौजूद थे और स्वर्णिम गीतों की जैसे झड़ी–सी लगी हुई थी। उस दौर में भी शंकर–जयकिशन लोकप्रियता के मामले में सबसे आगे थे। उस दौर में शंकर–जयकिशन की सफलता का आलम यह था कि उनकी हर फिल्म का हर गाना हिट हो जाता था! ”तेरा मेरा प्यार अमर” जैसा कर्णप्रिय गीत उनकी लोकप्रियता पर मुहर लगाता प्रतीत होता है।

यह सभी जानते हैं कि शंकर और जयकिशन धुनें अलग–अलग बनाते थे लेकिन यह सार्वजनिक नहीं किया जाता था कि किस गीत की धुन किसने बनाई। हमें इससे वैसे भी कोई मतलब नहीं है कि इस गीत की धुन शंकर ने बनाई या जयकिशन ने हमारे दिलों में तो उनकी जोड़ी ही स्थान बनाए हुए है। उनके संगीत का प्रसाद हमें मिला यह हम सभी संगीत–प्रेमियों का सौभाग्य है।

दशमलव से.. http://dashamlav.com/

नुस्खों का पिटारा

मोटापा घटाएं, घर के नुस्खे आजमाएं

–भोजन में गेहूं के आटे की चपाती लेना बन्द करके जौ–चने के आटे की चपाती लेना शुरू कर दें। इसका अनुपात है 10 किलो चना व 2 किलो जौं। इन्हें मिलाकर पिसवा लें और इसी आटे की चपाती खाएं। इससे सिर्फ पेट और कमर ही नहीं सारे शरीर का मोटापा कम हो जाएगा।

–प्रातः एक गिलास ठंडे पानी में 2 चम्मच शहद घोलकर पीने से भी कुछ दिनों में मोटापा कम होने लगता है। दुबले होने के लिए दूध और शुद्ध घी का सेवन करना बन्द न करें। वरना शरीर में कमजोरी, रूखापन, वातविकार, जोड़ों में दर्द, गैस ट्रबल आदि होने की शिकायतें पैदा होने लगेंगी।

–पेट व कमर का आकार कम करने के लिए सुबह उठने के बाद या रात को सोने से पहले नाभि के ऊपर के उदर भाग को 'बफारे की भाप' से सेंक करना चाहिए।

–एक तपेली पानी में एक मुट्ठी अजवायन और एक चम्मच नमक डालकर उबलने रख दें। जब भाप उठने लगे, तब इस पर जाली या आटा छानने की छन्नी रख दें। दो छोटे नैपकिन या कपड़े ठण्डे पानी में गीले कर निचोड़ लें और तह करके एक–एक कर जाली पर रख गरम करें और पेट पर रखकर सेंकें। प्रतिदिन 10 मिनट सेंक करना पर्याप्त है। कुछ दिनो में पेट का आकार घटने लगेगा।

सुबह उठकर शौच से निवृत्त होने के बाद निम्नलिखित आसनों का अभ्यास करें या प्रातः 2–3 किलोमीटर तक घूमने के लिए जाया करें। दोनों में से जो उपाय करने की सुविधा हो सो करें।

–भुजंगासन, उत्तानपादासन, शलभासन, सर्वागासन, हलासन, सूर्य नमस्कार । इनमें शुरू के पांच आसनों में 2–2 मिनट और सूर्य नमस्कार पांच बार करें तो पांच मिनट यानी कुल 15 मिनट लगेंगे।

●

बिंदिया

–रेखा जोशी

लघुकथा

मीनू की डोली जब प्रशांत के घर के आगे रुकी तो दरवाजे पर पूजा की थाली लिए शिखा खड़ी थी। शिखा ने आगे बढ़ कर अपने प्यारे भैया प्रशांत और अपनी प्यारी सखी जो आज दुल्हन बनी, भाभी के रूप में उसके सामने खड़ी थी, आरती उतार कर स्वागत किया। बर्तन में भरे हुए चावल को अपने पैर से बिखराते हुए, पूरे रीति रिवाज के अनुसार मीनू ने अपने ससुराल में प्रवेश किया। पूरा घर खुशियों से चहक उठा, शिखा ने मीनू को गले लगाते हुए कहा, 'आज तुम्हारा पांच साल से परवान चढ़ता हुआ प्रेम सफल हुआ, मैं जानती हूँ तुम और प्रशांत भैया दो जिस्म एक जान हो, तुम एक दूसरे के बिना रह ही नहीं सकते।'

जल्दी ही मीनू अपने ससुराल में घुल मिल गई, खासतौर से शिखा के साथ उसकी दोस्ती और भी गहरी हो गई। समय कब पंख लगा कर उड़ जाता है, मालूम ही नहीं पड़ता, दिन महीने और साल पर साल गुजरने का एहसास ही नहीं हुआ मीनू को, फिर पता नहीं किसकी नजर लग गई और दबे पाँव अनहोनी ने उसकी प्यारी सी जिंदगी में दस्तक दे दी, प्रशांत की एक कार दुर्घटना में मौत हो गई। मीनू की जिंदगी में घनघोर अँधेरा छा गया, सारा सारा दिन प्रशांत की यादों में निकल जाता और रातें तो कटने का नाम ही नहीं लेती, रो रो कर आंसू भी सूख गये थे। शिखा भी अपने भाई को भूल नहीं पा रही थी, जब भी वह मीनू को देखती उसकी आँखें मीनू के सूने माथे पर ही अटक कर रह जाती, जहाँ कभी दमकती लाल रंग की बिंदिया मीनू की सुन्दरता की और भी निखार देती थी, 'नहीं नहीं, मैं मीनू की यूं घुट घुट कर जीने नहीं दूंगी, उससे बात करनी ही होगी'

और एक दिन उसने मीनू से दूसरी शादी की बात छेड़ दी, शिखा की बात सुन कर मीनू को जोर का झटका लगा, तड़प उठी वह, 'शिखा मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ, तुम्हें उस प्यार की कसम, जो आज के बाद तुमने यह बात दुबारा कही, तुम ही तो जानती हो कि तुम्हारे भैया से मैं कितना प्यार करती हूँ, किसी और के बारे में सोचना भी मेरे लिए पाप है, चाहे वह आज शारीरिक रूप से मेरे साथ नहीं, लेकिन मैं सिर्फ और सिर्फ प्रशांत की हूँ, वह हर पल मेरे दिल में रहते है, मैं अपने से उनकी यादें दूर नहीं कर सकती।

शिखा उसकी प्रिय सखी होने के नाते उसकी मनोदशा अच्छे से समझ रही थी, 'ठीक है मीनू, मैं तुम्हें समझ सकती हूँ, लेकिन तुम्हें भी मेरी एक बात तो माननी ही होगी, 'शिखा ने मेज से बिंदियों का एक पत्ता उठाया और लाल रंग की एक बिंदी निकाल कर मीनू के सूने माथे पर लगा दी, 'यह बिंदिया मेरे भैया के उस प्यार के लिए, जिसे तुम अब भी महसूस करती हो।'

मीनू अवाक खड़ी देखती रह गई।

●

राजनैतिक

धन कुबेरों का काला धन

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकारः
प्रिंट-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
सम्पर्क सूत्रः
शब्दार्थ,
49, श्रीराम कॉलोनी,
शिवपुरी,(म.प्र.)
फोनः 09425488224

अभी तक विदेशों में नेताओं और अधिकारियों का ही कालाधन जमा होने की जानकारियां जनचर्चा में थीं, लेकिन अरविंद केजरीवाल के नए खुलासे से साफ है कि देश के उन धनकुबेरों का भी कालाधन स्विस बैंकों में जमा है, जिनकी नवोन्मेशी सोच और औद्योगिक कर्मठता पर देश गर्व करता है। यही वे उद्योगपति हैं जो उद्योगों के घाटे में चले जाने की आशंकाएं गढ़के करोड़ों की करों में छूट लेते हैं। मुफ्त में जमीन और बिजली, पानी लेते हैं। तत्कालीन वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी ने संसद में श्वेत–पत्र जारी करके इस हकीकत को झुठलाने की कोशिश की थी कि देश का धन, विदेशों में है। उन्होंने यह दावा भी किया था कि किसी भी कांग्रेसी सांसद का कालाधन विदेशी बैंकों में जमा नहीं है। लेकिन अब उन्नाव से कांग्रेस की महिला सांसद अनु टंडन और उनके पति संदीप टंडन का नाम केजरीवाल द्वारा जारी सूची में दर्ज है। दोनों के सवा–सवा सौ करोड़ रुपए स्विट्ज़रलैंड के जेनेवा स्थित हांगकांग एंड शंघाई बैंकिंग कॉर्पोरेशन यानी एचएसबीसी में जमा हैं। इस बैंक की गतिविधियां हमेशा संदिग्ध रही हैं। बिना स्विट्ज़रलैण्ड जाए यह बैंक हवाला के जरिये कालाधन भारत में ही जमा करने की सुविधा देता है। कालाधन जमा करने, आतंकी संगठनों का वित्तपोषण करने और ड्रग माफियाओं के लेनदेन से भी यह बैंक जुड़ा रहा है। अमेरिका तो इस पर जुर्माना लगा चुका है। अभी भी डेढ़ अरब जुर्माने का प्रस्ताव लंबित है। जाहिर है, एचएसबीस बड़े पैमाने पर गैर–कानूनी गोरखधंधों से जुड़ा है।

अब यह तथ्य महत्वपूर्ण नहीं रह गया है कि भारतीयों का विदेशों में कितना कालाधन है, बल्कि जरुरी यह है कि जिन नामों का खुलासा हो रहा है, उनसे धन वापिसी के सिलसिले की शुरुआत हों, क्योंकि जिस सीडी को आधार बनाकर इंडिया अगेंस्ट करप्शन की टोली ने नामों का खुलासा किया है, वह सीडी दो साल से जनचर्चा में है। इस सीडी की अधिकृत प्रतिलिपि भारत सरकार के पास भी है। क्योंकि इस सीडी को एचएसबीसी बैंक के कर्मचारी हर्व फेल्सियानी ने चोरी–छिपे तैयार किया था। हर्व फ्रांस के ही एचएसबीसी बैंक में कर्मचारी था। फ्रेंच अधिकारियों ने स्विस सरकार की हिदायत पर हर्व के घर छापा मारा और काले खाताधारियों की सूची बरामद की। इसी सूची के आधार पर फ्रांस ने उदारता बरतते हुए अमेरिका, इंग्लैण्ड, स्पेन और इटली के साथ, खाताधारकों की जानकारी बांटकर सहयोग किया। यही सीडी 'ग्लोबल फाइनेंशल इंस्टिट्यूट' ने हासिल कर ली। यही सीडी बाद में भारत सरकार के वित्त मंत्रालय को प्राप्त हुई। इसमें भारतीयों समेत कुल 700 काले खातेधारियों के नाम है। अनु टंडन, मुकेश अंबानी, अनिल अंबानी, रिलांयस समूह का मोटेक सॉफ्टवेयर, रिलायंस इंडस्टीज, संदीप टंडन, नरेश गोयल, डॉबर बंधु और यशोवर्द्धन बिरला के नाम इसी सूची में दर्ज हैं। कोकिला बेन और धीरुभाई अंबानी के भी स्विस बैंक में खाते है। लेकिन इन खातों में फिलहाल कोई धनराशि नहीं है। हो सकता है धीरुभाई की मौत के बाद किसी और खाते में स्थानंतरित कर दी गई हो। स्विस बैंक के एक और सेवा निवृत कर्मचारी रुडोल्फ ऐल्मर ने भी दो हजार खाताधारियों की सूची की सीडी गोपनीय ढंग से तैयार करके विकिलीक्स के संपादक जूलियन अंसाजे को सौंप दी थी। इसी दबाब के चलते स्विस सरकार ने खुद आधिकारिक तौर से कालाधन जमा करने वालों की एक सूची जारी कर दी। जिससे ऐल्मर की सूची की कोई महत्ता न रह जाए।

हर्व फेल्सियानी से इसी सीडी को जर्मन सरकार ने बरामद किया। जब जर्मन सरकार अपने देश के लोगों के नाम से जमा धन की सच्चाई से वाकिफ हुई तो जर्मनी ने कठोर पहल करते हुए 'वित्तीय गोपनीय कानून' शिथिल कर कालाधन जमा करने वाले खातेधारियों के नाम आधिकारिक रुप से उजागर करने के लिए स्विट्ज़रलैण्ड सरकार पर दबाव बनाया। इसी मकसद पूर्ति के लिए जर्मनी ने इटली, फ्रांस, अमेरिका और ब्रिटेन को भी उकसाया। यही 2008 का वह समय था, जब दुनिया आर्थिक मंदी से जूझ रही थी। दुनिया की आर्थिक महाशक्ति माना जाने वाला देश अमेरिका भी इस मंदी की जबरदस्त चपेट में था। लिहाजा पश्चिमी देशों का यह समूह सक्रिय हुआ और इसी समूह ने काले पक्ष में छिपे, इस उज्जवल पक्ष की जानकारी अन्य पश्चिमी देशों को देते हुए इस सत्य की पुष्टि की, कि कालाधन ही उस आधुनिक पूंजीवाद की देन है, जो विश्वव्यापी आर्थिक संकट का कारण बना हुआ है। 9/11 के आतंकवादी हमले ने भी अमेरिका की आंखें खोलीं। उसे खुफिया जानकारियां मिलीं कि दुनिया के नेता, नौकरशाह, कारोबारी और दलालों का गठजोड़ ही नहीं, उस समय आतंकवाद का पर्याय बना, ओसामा बिन लादेन भी आतंकी घटनाओं को अंजाम देने के लिए कालाधन का उपयोग हवाला और गोपनीय खातों के माध्यम से कर रहा है और इस लेनदेन में एचएसबीसी बैंक सहायक की भूमिका निभा रहा है। इसी साल अमेरिकी सीनेट की एक समिति ने अपनी जांच में पाया कि एचएसबीसी ने आतंकियों और मनीलॉडिंग से जुड़े लोगों के साथ अरबों डॉलर का लेनदेन किया है। यही नहीं इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 2001 से 2010 के बीच इस बैंक ने अमेरिकी सरकारी तंत्र का भी इस्तेमाल किया। साथ ही अमेरिकी संसद के उपरी सदन सीनेट की जांच संबंधी स्थाया उप समिति ने पाया है कि एचएसबीसी ने सउदी अरब के अल रजही बैंक के साथ भी कारोबार किया है। इस बैंक के मुख्य संस्थापक को पहले अलकायदा का वित्तीय संरक्षण मिला हुआ था। इन गैरकानूनी गतिविधियों की वजह से ही अमेरिका इस बैंक पर शिकंजा कस रहा है और उसने डेढ़ अरब डॉलर जुर्माने की तलवार एचएसबीसी पर लटकाई हुई है।

इस परिप्रेक्ष्य में अरविंद केजरीवाल के बयान को गंभीरता से लेने की जरुरत है। धनकुबेरों के कालेधन से जुड़े खुलासे के दौरान एचएसबीसी को कठघरे में खड़ा करते हुए अरविंद ने कहा है कि

एचएसबीसी बैंक देश में अपहरण, भ्रष्टाचार और आतंकवाद को प्रोत्साहित कर रहा है। बैंक हवाला और मनीलॉडिंग का रैकेट चला रहा है। इसीलिए इस बैंक के भारत स्थित बड़े अधिकारियों को तत्काल हिरासत में लेकर जांच करने के बात भी अरविंद ने रखी है। अरबिंद ही नहीं अमेरिकी सीनेट की समिति ने भी इस बैंक के भारतीय कर्मचारियों पर आतंकियों के साथ लेनदेन को रोकने में नाकाम रहने का आरोप लगाया हुआ है। एचएसबीसी के मनीलांडिंग रोकने वाले विभाग में भारतीय कर्मी भी हैं, हालांकि इनकी संख्या नगण्य है। जांच में अमेरिका के अधिकारियों को 2007 में भारत दौरे के दौरान इस बात का पता चला था कि बैंक के आंतरिक नियंत्रण तंत्र की निगरानी प्रणाली कमजोर व पक्षपाती है। ऐसे नाजुक हालातों को रेखांकित करते हुए यदि केजरीवाल कह रहे हैं कि भारत सरकार काले खातेधारियों को दंड देने के बदले, उनके दोषों पर परदा डालने का काम ज्यादा कर रही है, तो इसमें गलत क्या है? इसीलिए जब प्रणव मुखर्जी वित्तमंत्री थे, तब उन्होंने सभी 700 खाताधारियों को क्षमा कैसे किया जाए, इस योजना पर अमल करना शुरु कर दिया था। यही नहीं पुणे के अश्व कारोबारी हसन अली खान को भी शीर्ष न्यायालय की फटकार के बावजूद बचाने की कोशिशें की गईं। हालांकि अब गृहमंत्री सुशील कुमार सिंधे ने माना है कि सरकार के पास ऐसे सबूत हैं कि भारत और भारत के बाहर आतंकी समूह कई तरीकों से स्टॉक मार्केट में निवेश कर रहे है और मनीलॉडिंग के जरिये भारत में सक्रिय आतंकी संगठन को मदद दी जा रही है।

हर्व फल्सियानी और रूडोल्फ ऐल्मर की सूचियों के आधार पर अमेरिका की बराक ओबामा सरकार ने स्विट्जरलैंड पर इतना दबाव बनाया कि वहां के यूबीए बैंक ने कालाधन जमा करने वाले 17 हजार अमेरिकियों की सूची तो दी ही 78 करोड़ डॉलर काले धन की वापसी भी कर दी। अब तो मुद्रा नकदीकरण से जूझ रही पूरी दुनिया में बैंकों की गोपनीयता खत्म करने का वातावरण बनना शुरु हो चुका है।

हालांकि केंद्र सरकार का केजरीवाल द्वारा लगाए आरोपों के बाद जो बयान आया है, उससे साफ हुआ है कि केजरीवाल के आरोप ठोस हैं। सरकार उन्हें नकार नहीं पा रही है। लिहाजा सरकार को कहना पड़ा कि 'फ्रांस से मिली जानकारी पर वह उचित कार्यवाई कर रही है।' लेकिन कुटिल चतुराई बरतते हुए सरकार ने यह बहाना भी गढ़ दिया कि, 'गोपनीय श्रेणी की इस जानकारी का इस्तेमाल सिर्फ कर संबंधी मामलों में किया जा सकता है। यहां सवाल उठता है कि नेता और अधिकारी कोई उद्योगपति नहीं हैं कि उन्हें आयकर से बचने के लिए, कर चोरी की समस्या के चलते विदेशी बैंकों में कालाधन जमा करने की मजबूरी का सामना करना पड़े। यह सीधे–सीधे घूसखोरी से जुड़ा अपराध है। इस पेंच को सांसद अनुटंडन और उनके आयकर अधिकारी पति संदीप टंडन के स्विस बैंक में जमा कालेधन से भी जोड़कर समझा जा सकता है। संदीप टंडन ने रिलायंस समूह पर आयकर की बड़ी कार्यवाई की। बाद में उनकी पत्नी अनु टंडन रिलायंस की एक कंपनी में प्रशासनिक अधिकारी बना दी गईं और उनके दोनों बेटों को भी रिलायंस ने नौकरी दे दी। जाहिर है संदीप टंडन ने ईमानदारी से पड़ताल न करते हुए, रिलायंस से लेनदेन की सांठगांठ कर ली और रिलांयस ने घूस की राशि अनु और संदीप टंडन के नाम स्विस बैंक में जमा करा दी। अनुटंडन कांग्रेसी सांसद हैं और उनके जैसे कांग्रेस के कई सांसद व मंत्रियों के नाम भी सीडी में हो सकते हैं, लिहाजा सरकार कर चोरी के बहाने काले धन की वापिसी की कोशिशों को पलीता लगा हरी है। जिससे कि नकाब हटने पर कांग्रेस की फजीहत न हो। वरना स्विट्जरलैंड सरकार तो न केवल सहयोग के लिए तैयार है, अलबत्ता वहां की संसदीय समिति ने भी जमाखोरों के नाम उजागर करने की स्वीकृति दे दी है।

क्या है एडविना-नेहरू के प्रेम का सच ?

आज के राजनेताओं की तो बात ही छोड़ दीजिए उनके संबंध किससे कब और कैसे बन जाते हैं यह शायद स्वयं उन्हें ही पता नहीं चलता. पत्नी के पीठ–पीछे एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर रखना हो या फिर अपनी पहुंच का फायदा उठाकर किसी मासूम की इज्जत के साथ खिलवाड़ करना हो अक्सर सबसे आगे इन्हीं का नाम आता है.

इस लिस्ट में केवल भारतीय राजनेताओं का ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी कई नेता इस सूची में शामिल हैं. लेकिन यहां हम जिस राजनेता की बात कर रहे हैं उनका संबंध हमेशा से ही विवादित रहा है. भारत के पहले प्रधानमंत्री और एक बेहद प्रभावशाली राजनेता रहे जवाहरलाल नेहरू खुले विचारों वाले और आधुनिक नेता थे लेकिन उनके साथ एक सत्य और भी जुड़ा हुआ है कि उनका संबंध भारत के आखिरी वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन की पत्नी एडविना के साथ था.

हालांकि कोई भी यह बात पूरी तरह नहीं नकारता कि उन दोनों के बीच संबंध थे लेकिन यह हमेशा से ही एक बहस का विषय रहा है कि जवाहर लाल नेहरू का एडविना के साथ किस तरह का रिश्ता था. कोई इसे एक्स्ट्रा–मैरिटल अफेयर की संज्ञा देता है कुछ लोग इसे महज दोस्ती का संबंध कहते हैं.

अब हाल ही में एडविना की बेटी पामेला हिक्स ने अपनी किताब में यह बात कही है कि उनकी मां और जवाहर लाल नेहरू के बीच जिस्मानी नहीं केवल भावनात्मक और आत्मिक प्रेम संबंध था. पामेला का कहना है कि एडविना जवाहर लाल नेहरू से बहुत अधिक प्रेम करती थीं लेकिन कभी भी उन्होंने अपनी सीमाएं नहीं लांघी.

83 वर्षीय पामेला का कहना है कि जवाहरलाल नेहरू के साथ समय बिताकर उनकी मां को भावनात्मक रूप से संतुष्टि मिलती थी. बस यही वजह है जो वह उनसे मिलने के लिए तड़पती रहती थीं. जवाहर और एडविना एक–दूसरे के अकेलेपन को दूर करने की कोशिश करते थे.

इंडिया रिमेम्बर्ड नामक अपनी किताब में पामेला ने यह लिखा है कि भारत में रहने के दौरान मैंने जवाहर लाल नेहरू के साथ भी एक लंबा समय बिताया था. इस दौरान मैंने यह भी महसूस किया कि मेरी मां और नेहरू के बीच गहरा आकर्षण था. वह बिल्कुल दो जिस्म एक जान की तरह थे.

पामेला के अनुसार भारत आजाद होने के दस वर्ष बाद नेहरू ने एडविना को खत लिखकर यह कहा था कि कुछ तो था जो हम दोनों को एक–दूसरे के प्रति आकर्षित करता था, जिसकी वजह से हम करीब आए. पामेला के अनुसार उनकी मां के पास नेहरू के लिखे गए एक सूटकेस भर के पत्र भी थे. उन पत्रों को पढ़कर ऐसा स्पष्ट हो रहा था कि वे दोनों एक–दूसरे से बहुत प्रेम करते थे.

उस जमाने में राष्ट्रीय और अंत राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर लॉर्ड माउंटबेटन और एडविना पर नजर टिकी हुई थी. दोनों एक साथ ही नजर आते थे लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल विपरीत थी. एडविना माउंटबेटन के साथ नहीं बल्कि जवाहरलाल नेहरू के साथ खुद को ज्यादा सहज महसूस करती थीं.

<http://jagranjunction.com/>

'अपने क्रोध को पालना सीखो'

डॉ0 शालिनी अगम

बी +ve

अपने क्रोध को पालना सीखो, इसे सही वक्त पर, सही situation में express करना सीखो,

फालतू में अपनी energy waste करना सबसे बड़ी बेवकूफी है...... एक लड़की हैं, मेरी पड़ोसन... अभी छोटी है 2nd year में है... medical student है. सुंदर सुशील, समझदार और बहुत गुणी।

ईश्वर ने उसे सब कुछ दिया है जो इस उम्र में एक बच्ची को चाहिए. घर का माहौल भी अनुकूल है, संपन्न और संस्कारी घराना है, पर वो लड़की हमेशा गुस्से में ही रहती है, अनावश्यक चीखना–चिल्लाना, रोना व परेशान होना उसकी फितरत में हैं.... मैंने जब उससे पूछा कि बेटा आपकी परेशानी कि वजह क्या है तो वो कुछ ना बता पाई उलटे मुझसे ही नाराज हो गयी कि 'आंटी प्लीस मुझे कोई प्रोब्लम नहीं मैं ठीक हूँ'

मुझे कुछ नहीं हुआ ....

पर मुझे ना जाने क्यों लगा कि उसकी ये प्रतिक्रिया नयी नहीं है............... इस उम्र की हर दस में से दो लड़कियां ऐसा ही व्यवहार करने लग जातीं हैं....... मुझे अपना भी 18–19वाँ साल याद आ गया.......... जब सहेलियों से गुफ्तगू के दौरान पाता चलता था कि कौन कितने आत्मविश्वास से भरी है......... और कितनी हीनभावना से...... विचार केवल मन से पैदा किया है........ जो बहुत आत्मविश्वास से भरी है उसमें ना कोई खास रूप–रंग है.. ना विशेष शैक्षिक योग्यता..... ना ही पिता का समृद्ध–शाली background.... पर फिर भी वो खुश हैं........ मस्त हैं............ इसके ठीक विपरीत एक दो सहेलियां ऐसी थी जो सुंदर होने के साथ–साथ गुणी भी थीं.......... अच्छे घर से भी थीं...... पर हर समय स्वयं को हीन समझना और चिढ़–चिढ़ाना........ कारण स्वयं को कमतर समझ साथ कि लड़कियों से comparison करना और रोते से रहना .... बात–बात पर गुस्से में भर जाना और करीबी दोस्त को भी अचरज में डाल जाना कि क्यों वो मुझसे ऐसा रूखा व्यवहार कर रही है.......... या नारा. जगी दिखा रही है........ अपनी कीमती energy को गुस्से कि भेंट चढ़ा देना..... .... मेरी समझ में उसकी परेशानी आ चुकी थी......मैंने उसे कुछ बातें समझाने की कोशिश की......... तब मैंने उससे कहा की क्रोध करना है तो अपनी हीनभावना से करो.....चीखना–चिल्लना है तो अपने खोये आत्म–विश्वास पर चिल्लाओ.......... अगर किसी को दूर करना है अपनी जिन्दगी से तो अपनी बेवजह की मायूसी को दूर करो........ क्यों ऊपर वाले को नाराज करतो जिसने सब कुछ दिया है.... . फिर भी कभी thanks नहीं निकलता तुम्हारे मुंह से........

सकारात्मक सोच

You are the only one who will love you just as you are, except for God!

तुम जैसे हो..... वैसे ही खुद से प्यार करो...........क्योंकि तुम सबसे 'स्पेशल' हो.........

जो लोग अपनी रिस्पेक्ट नहीं करते दुनिया भी उन्हें नहीं पूछती है, एक छोटी सी बात. मगर एकदम सच्ची, जब तुम खुद को ही पसंद नहीं करोगे तो कैसे उम्मीद करते हो कि सामने वाला तुम्हे पसंद कर ले। हर पल अपने में ही कमियां खोजता रहना मैं एसा–मैं वैसा और चाहते ये हो की दुनिया कहे वाह–वाह क्या व्यक्तित्व है.......... कितना सुंदर है........... ये कितना गुणी है........... वगैरहा–वगैरहा।

आईने में खुद को देखो और सराहो अपने आप को, अपने कामों पर दृष्टि डालो और शाबाशी दो खुद को, जब भी कुछ मेहनत से हासिल करो तो अपनी हिम्मत खुद बढ़ाओ.............

'वाह मैंने ये कर दिखाया',

आत्म–प्रशंसा दूसरों के सामने चाहे मत करो, पर अपने लिए, अपनी खुशी के लिए अकेले में तो कर ही सकते हो। देखो कितना मनोबल बढ़ेगा, कुछ कर दिखाने का हौसला, कठिन से कठिन परिस्थिति में भी मुस्कुराकर कुछ कर गुजरने का साहस.और हाँ क्रोध करना है तो खुद पर करना जब भी कोई नकारात्मक विचार आये जब भी खुद को दूसरे से हीन समझो झटक डालना अपने इस ख्याल को कि मैं अमुक व्यक्ति से कमतर हूँ।

ये बात अलग है की अमुक व्यक्ति की खूबियाँ आपसे भिन्न हों, क्योंकि इस सृष्टि मैं हर प्राणी एक दूसरे से कुछ तो भिन्नता लिए होता ही है, अब गायक किशोर कुमार की क्रिकेटर धोनी से तुलना नहीं कर सकते.............. न ही श्री अब्दुल कलाम जी को ए.आर. रहमान से क्योंकि ऊपर वाले ने हर किसी को एक खास काबिलियत, एक खास गुण से सुशोभित किया है, न ही सब प्राणी नैन–नक्श में सामान होते हैं, इसलिए खुद को स्पेशल समझो, सबसे भिन्न सबसे प्यारा सबसे न्यारा, क्योंकि तुम जैसे हो.... वैसे ही प्रिय हो एकदम खास,........ एकदम अलग। जब भी गुस्सा आये, झुंझलाहट आये कि सामने वाला तुमसे किसी बात में श्रेष्ठ कैसे हो गया ?........ आगे कैसे निकल गया ?..........

डॉ0 शालिनी अगम
सम्पर्क सूत्रः
बी-182, रामप्रस्थ
गाजियाबाद (उ0प्र0)
फोनः 9990018989
Email:
shalini8989@gmail.com

इस विचार को तुरंत निकाल फेंको, और उस नकारात्मक विचार को जोर से क्रोधित होते हुए कहो कि.......'भागो यहाँ से, तुम् जैसे विचारों का मेरे इस सुंदर संसार में कोई स्थान नहीं मैं जो हूँ जैसा भी हूँ बहुत भला हूँ। बहुत विशेष हूँ. मेरी अपनी खासियत हैं, अपनी विशेषताएं हैं और मुझे खुद से बहुत प्यार है'....... फिर देखना इस इतराहत के साथ ही चेहरे पर कितनी खिलावट आएगी, और आप आत्म–सम्मान से झूमते नजर आयेंगे।

जब आत्म–विश्वास बढ़ता है तो हम जो भी करतें हैं उसमें सफलता मिलती जाती है और हम स्वयं में कितने प्रसन्न होते हैं। जरा आजमा कर तो देखिये, दोस्तों.........

◆

कल के मुसाफिर

अमृता और इमरोज: प्रेम का दूसरा नाम

किरण आर्य
सम्पर्क सूत्रः नई दिल्ली
Email:ojasvikiran9@gmail.com

यादें

आज के सन्दर्भ में कहे तो प्रेम देहिक तुष्टि का माध्यम मात्र रह गया है लेकिन प्रेम वो तो रूह से रूह का रिश्ता है पाक साफ सा और यह जाना मैंने जब जाना इमरोज और अमृता को उनका रिश्ता कहे तो जिस्म से परे रहा और आज भी है इमरोज कहते है अमृता को मैंने इक लेखिका के रूप में नहीं सीधी साधी इंसान के रूप में चाहा ! अमृता बोलती भी अधिक नहीं थी। हमने कभी एक–दूसरे से यह भी नहीं कहा कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ या करती हूँ। व्यवहार से ही पता चलता था कि हम प्यार करते हैं। मैंने तो कभी उसकी शक्ल की तरफ भी ध्यान नहीं दिया। वह एक खूबसूरत इंसान थीं यही जाना था। हम दोनों ही एक–दूसरे को पसंद करते थे। इंसान हूँ मैं सीधा–सादा। जब हमने एक साथ रहना शुरू किया था तो अमृता का पति से तलाक नहीं हुआ था। हमने शादी नहीं की थी। जरूरत ही नहीं थी। रिश्ते में कानून की जरूरत कहाँ होती है? कानून उनके लिए होता है जो गैर जिम्मेवार होते हैं।अमृता के पति ने अलग होने के 12–15 साल बाद तलाक लिया था। कनाडा एक ऐसा देश है जहाँ दो साल अगर साथ रह लें तो उन्हें शादीशुदा ही मान लिया जाता है।

अमृता और इमरोज इक ही घर के दो अलग अलग कमरों में रहते थे अपनी अपनी दुनिया थी दोनों की अलग भी और साझी भी इमरोज की हरेक पेंटिंग और भाव में अमृता की झलक थी तो अमृता के हरेक भाव में इमरोज का स्नेह और साथ झलकता था ! इमरोज के शब्दों में कहे तो सन् 58 की बात है। बच्चों को स्कूल से लाता था। अमृता को भी छोड़कर आता था। बच्चे शुरू से हमारे साथ रहे। लड़का भी अब हमारे साथ नीचे वाले हिस्से में रहता था। असल में मैं श्वन ट्रैक माइंडश वाला इंसान हूँ। बस अमृता ही नजर आती थी मुझको। अमृता उम्र में मुझसे सात साल बड़ी थी। रचनाकार को स्पेस और अपना समय चाहिए होता है। हमारे अलग–अलग कमरे थे। हम अपने–अपने कमरों में ही सोते थे। हाँ बाद में जब अमृता बीमार थी उनका ध्यान रखने के लिए एक कमरे में सोते थे। मैं अकेला नहीं हूँ। कमरा वैसा ही है। अमृता का आसपास भी वही है बस उसका शरीर नहीं है। जब वह थी तो भी हम दोपहर को ही मिलते और सब बैठते थे। दोनों मिलकर खाना भी साथ बनाते थे। कभी अमृता आवाज देती, अगर वह लिख रही होती, तो खाना मैं ही बनाता। मैं उदास नहीं होता। उदास होना मेरी आदत ही नहीं।

मेरी आँखों में आँसू तब आते हैं जब कोई मुझसे अच्छा व्यवहार करे। अमृता की तबीयत खराब थी। आने वाले पूछते थे – तबीयत खराब है क्या? मैं कहता – नहीं। दरख्त अब बीज बन रहा है। एक कविता भी लिखी – कल तक जो एक दरख्त था, महक, फूल और फलों वाला, आज का एक जिक्र है वह, जिंदा जिक्र है, दरख्त जब बीज बन गया है, हवा के साथ उड़ गया है, किस तरफ अब पता नहीं। उसका अहसास है मेरे साथ।

अमृता वही लिखती थी जो अनुभव करती थी। जो उसे लिखना होता था। हो सकता है किसी नायक में उसने वह लिखा हो जो उसको मुझमें अच्छा लगता था। अमृता ने मुझे एक बार कहा था – तब मैं शमा के दफ्तर में काम करता था। श्क्या कभी तुमने औरत विद माइंड भी बनाई है?श मैंने सोचा, खूबसूरत चेहरों वाली औरतें तो बनाई पर श्औरत विद माइंडश किसने बनाई। शायद वे औरत को माइंड के साथ जोड़कर देखते ही नहीं। शायद आदमी को औरत को माइंड के साथ होने की जरूरत ही नहीं होती होगी। तभी दूसरी औरत भी कर लेते हैं।

फिर मैंने उसके 6 साल बाद एक पेंटिंग बनाई श्वूमन विद माइंडश। मैंने एक नज्म भी लिखी – संपूर्ण औरत। आदमी जिस्म वाली औरत के साथ सो तो सकता है पर जाग नहीं सकता। क्योंकि औरत जिस्म से कहीं आगे होती है। 'नागमणि' पत्रिका में अमृता ने एक पन्ना मेरे लिए रखा था जिसमें मैं पाठकों के उत्तर देता था। एक व्यक्ति ने सवाल पूछा था– 'आदमी और औरत का रिश्ता ठीक क्यों नहीं बैठता (नहीं अगर वह औरत के साथ जागकर देखता तो पूरी कला ही बदल जाती। '

इमरोज कहते है ईगो क्या है? ईगो एबसेंस ऑफ लव या रजनीश की भाषा में कहूँ तो एंटी विज्डम है। मुझे कभी कोई कॉम्प्लेक्स नहीं हुआ, न ही हमारे बीच कभी कोई कॉन्फिलिक्ट हुआ। अमृता को जो भी मिलने आते थे उन्हें चाय, पानी मैं ही देता था। जब अमृता जी राज्यसभा की सदस्य मनोनीत हुईं तो मैं उसे लेकर जाता था वह अंदर चली जाती थी मैं गाड़ी को पार्किंग में लगाकर या तो संगीत सुनता था या कोई किताब पढ़ता रहता था।

इक ऐसा रिश्ता जो रूह से रूह का रिश्ता रहा जब अमृता रही तब भी और आज भी जब अमृता नहीं है इमरोज के शब्दों उनके अहसासों में झलकती है अमृता आज भी ...... दो इंसान जो रहे साथ हमसफर हमसाया बन इक दुसरे को जीते अपनी जिंदगी में शामिल करते चले साथ और आज भी इमरोज उन्ही अहसासों को सजाये दिल में चल रहे है अमृता की यादो के साथ ....उन्हें देखती हूँ और उनके विचार पढ़ती हूँ तो लगता है हाँ

यहीं है प्रेम और उसका पुरसुकून अहसास देहिक तुष्टि से प्रेम मानसिक तुष्टि से प्रेरित इक ऐसा रिश्ता जो रूह से रूह को जोड़ता है।

गज़ल

पता तो चले

–पुष्यमित्र उपाध्याय

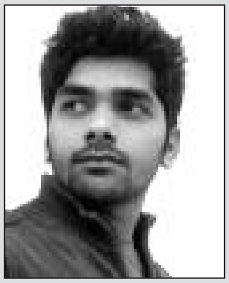

और कितनी है जुदाई पता तो चले
वो मेरी है या पराई, पता तो चले

यूं बहारों पे कब्जा, यूं फिजाओं पे हुक्म
अदा किसने सिखाई पता तो चले ।

कँवल खिलने लगे अब्र जलने लगे
किसने ली अंगड़ाई पता तो चले ।

ये किसने छुआ है, ये किसका नशा है
ये कली क्यों बलखाई पता तो चले ।

चाँद खिलने लगा गुल महक से गये
मेहँदी किसने रचाई पता तो चले ।

खोलकर आज गेसू वो मुस्कुरा गये
मौत किसपे है आई पता तो चले ।

गनीमत यही उन्हें मुहब्बत हुई
कुछ उन्हें भी तन्हाई पता तो चले ।।

विज्ञान का कारनामा

ब्लैक बॉक्सों का रहस्य

शशांक द्विवेदी

सम्पर्क सूत्रः

चित्रकुट, उ0प्र0

Email:
dwivedi.shashank15@gmail.com

21 अक्तूबर 1976 का दिन था। मुम्बई में बारिश का मौसम लगभग समाप्त हो चुका था इस लिये वहां के मछुआरे बड़े उत्साह के साथ अपनी नौकाये ले कर सागर यात्रा के लिये निकल पड़े थे। इसी प्रकार मुम्बई के प्रसिद्ध जुहू तट के समीप ही कुछ मछुआरे मछली पकड़ने के उद्देश्य से सागर में अपना जाल डाल रहे थे। अचानक एक मछुआरे को अपने जाल में कुछ ठोस वस्तु फंसी नजर आई। बाहर निकालने पर चटक नारंगी रंग का लगभग ० किलो वजन का एक चौकोर लम्बा सा मजबूत बक्सा सा पाया गया जिस पर कुछ बटन आदि लगे थे। बस्ती के कुछ पढ़े लिखे लोगों नें उस पर लिखे विवरण को पढ़ कर बताया कि संभवतः वह किसी वायुयान का भाग था।

कुछ इनाम आदि मिलने की आशा में मछुआरा उस वस्तु को मुम्बई के सान्ताक्रूज हवाई अड्डे पर ले आया और वहां के अधिकारियों को सौंप दिया। उस बक्से को देख कर हवाई अड्डे के अधिकारी उछल से पड़े और तब मालूम पड़ा कि यह तो वही वस्तु थी जिसकी खोज में उन लोगों ने पिछले नौ दिनों से आकाश पाताल एक कर डाला था। मछुआरे के जाल में फंसी वह वस्तु वास्तव में विमान का ब्लैक बाक्स था जो नौ दिन पहले दुर्टनाग्रस्त हुये इडियंन एयरलाइन्स के कैरावेल विमान से अलग हो कर सागर में गिर गया था।

इस के लिये मुम्बई नगर के जुहू, सान्ताक्रूज तथा विले पार्ल उपनगरों की गलियां गलियां छान मारी गईं थीं किन्तु उसका पता नहीं चल पाया था। और अब अनजाने में उस मछुआरे ने ब्लैक बाक्स को ढूंढ कर उनकी इतनी बड़ी समस्या हल कर दी थी।

इडियंन एयरलाइन्स का यह कैरावेल विमान १२ अक्तूबर १६७६ की देर रात को ६५ यात्रियों तथा विमान कर्मियों को ले कर मुम्बई से चेन्नै के लिये रवाना हुआ था।

दुर्भाग्यवश उड़ान के तुरन्त बाद विमान के पूंछ के पास स्थित एक इंजन में भीषण आग लग गई।

वैज्ञानिक शोध

विमान कप्तान के पास अधिक समय नहीं था इसलिये उसनें फौरन विमान को वापस मुम्बई हवाई अड्डे की ओर मोड़ा। तब तक आग काफी फैल चुकी थी और विमान के टुकड़े टूट टूट कर आकाश से नीचे गिरने लगे। चालक ने विमान को धावन पथ से थोड़ा पहले उतार तो लिया किन्तु तब तक आग नें सम्पूर्ण विमान को जला कर नष्ट कर दिया था तथा उस में सवार सभी व्यक्तियों की (चालक सहित) दुखद मृत्यु हो चुकी थी। चूंकि यह दुर्घटना अचानक हो गई थी तथा देर रात में घटी थी अतरू उसके चश्मदीद गवाह मिलना कठिन था।

इस प्रकार विमान दुर्घटना की जांच के सिलसिले में ब्लैक बाक्सों का मिलना अत्यन्त आवश्यक समझा जा रहा था। इस प्रकार मछुआरे के जाल से निकाले जाने के बाद अब सबकी निगाहें उसी विशेष बक्से पर लगी हुईं थीं। और आश्चर्य की बात यह थी कि लगभग नौ दिनों तक सागर के जल में डूबे रहने के बाद भी उस को कुछ नुकसान नहीं पहुंचा था तथा टेप को खोलने के बाद उस पर अंकित रिकार्डिंग को भली भांति पढ़ा जा सका तथा उस के द्वारा दुर्घटना से पूर्व की अनेक छुपी हुई कड़ियों का पता लगाया जा सका। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्लैक बाक्सों का कितना महत्व है।

क्या हैं ये डिब्बे ?

सबसे पहले तो हमें यह जान कर आश्चर्य होता है कि प्रत्येक विमान में एक नहीं बल्कि दो दो ब्लैक बाक्स होते हैं, जो क्रमशरू फ्लाइट डेटा रिकार्डर (एफ.डी.आर.) तथा काकपिट वायस रिकार्डर (सी.वी.आर.) कहलाते हैं। जहां एफ.डी.आर. विमान के उड़ान सम्बन्धी आंकड़े रिकार्ड करता है वहीं सी.वी.आर. विमान के यान कक्ष में होने वाली बातचीत रिकार्ड करता है। और यह काम ब्लैक बाक्स उड़ान के दौरान निरन्तर करते रहते हैं।

एफ.डी.आर. तथा सी.वी. आर. यद्यपि ब्लैक बाक्स अथवा काले बक्से कहलाते हैं किन्तु आशा के विपरीत इनका रंग काला ना हो कर गहरा लाल अथवा नारंगी होता है। इन्हे ब्लैक बाक्स इसलिये कहा जाता है क्यों कि इन में अंकित सूचनायें तब तक ज्ञात नहीं हो सकती हैं जब तक इन डिब्बों को खोल कर टेप को बाहर ना निकाला जाये। इनका रंग गहरा लाल अथवा नारंगी रखने का मकसद यह होता है कि दुर्घटना के समय इनको आसानी से ढूंढा जा सके।

एफ.डी.आर. तथा सी.वी. आर. बाहर से देखनें पर आकार तथा भार आदि में बिल्कुल एक जैसे लगते हैं किन्तु वास्तव में ये बिल्कुल भिन्न भिन्न उपकरण हैं तथा इनकी कार्य प्रणाली एक दूसरे से बिल्कुल अलग होती है। इसके अलावा इनकी अन्दरूनी बनावट भी अलग अलग होती है।

ब्लैक बाक्सों का आकार सामान्यतरू आयताकार होता है, जिनकी लम्बाई ३० से.मी., चौड़ाई २० से.मी. तथा ऊंचाई १३ से.मी. होती है तथा इनका भार लगभग१० किलोग्राम होता है। इस प्रकार देखनें में ये किसी ब्रीफ केस से बड़े नहीं दिखते हैं। इन के ऊपरी आवरण अत्यन्त सुद्धढ़, जल निरोधक तथा ताप निरोधक होते हैं जो विमान दुर्घटना के भयंकर आघात तथा कठोर ताप को सहने में सक्षम होते हैं। इन ब्लैक बाक्सों के माइक्रोफोन तथा अन्य रिकार्डिंग यन्त्र यद्यपि विमान के यानकक्ष (काकपिट) तथा अन्य स्थानों पर लगे होते हैं, किन्तु ये बक्से प्राय विमान के पिछले हिस्से में लगाये जाते हैं। इन्हे पिछले भाग में लगाने का प्रयोजन यह है क्यों कि ऐसा समझा जाता है कि विमान दुर्घटना होने पर अधिकतर मामलों में उसकी पूंछ का हिस्सा नष्ट होने से बच जाता है।

दोनों प्रकार के ब्लैक बाक्सों में एक एक ध्वनि प्रसारक यन्त्र भी लगा रहता है जो एक विशेष प्रकार की बैटरी द्वारा संचालित होता है। इस बैटरी की विशेषता यह है कि जब यह जल के सम्पर्क में आती है तभी अपना कार्य आरम्भ करती है, अन्यथा सुप्त बनी रहती है। इस प्रकार यदि दुरर्टना के समय विमान किसी नदी, झील या सागर में गिर जाये तो यह बैटरी चालू हो जाती है तथा ध्वनि प्रसारक यन्त्र से विशेष प्रकार की बीप बीप आवाजें आने लग जाती हैं। इन ध्वनियों को सुन कर खोज कर्ता जल में डूबे ब्लैक बाक्सों को ढूंढने में सक्षम हो सकते हैं।

एक बार चालू हो जाने के बाद यह बैटरी ३० दिन तक कार्य करती है और तब तक इन्हे ढूंढा जा सकता है। इसी कारण एयर इन्डिया के कनिष्क विमान की दुर्घटना के समय लगभग दो कि.मी. की गहराई वाली सागर की तलहटी से इन छोटे छोटे बक्सों को निकाला जा सका था। यह कार्य कुछ कुछ भूसे के ढेरी से सुई ढूंढना जैसा था। (प्रारम्भ के दिनों में ब्लैक बाक्सों में इस प्रकार के ध्वनि प्रसारक यन्त्रों की व्यवस्था नहीं थी। इसी लिये १२ अक्तूबर १९७६ को मुम्बई के निकट सागर में गिरा हुआ ब्लैक बाक्स शीघ्र खोजा नहीं जा सका था।)

ब्लैक बाक्स कितने मजबूत होते हैं इसका अनुमान नीचे लिखे विवरणों से लगाया जा सकता है।

पहली जनवरी १९७८ को नव वर्ष के अवसर पर मुम्बई के निकट एयर इन्डिया का सम्राट अशोक नामक जम्बो जेट दुर्घटना ग्रस्त हो गया तथा सम्पूर्ण विमान २१३ सवारों के साथ सागर की तलहटी में धंस गया। लगभग तीन दिनों के बाद विमान का मलवा खोज जा सका तथा ब्लैक बाक्सों कों निकाला गया। इतने भयंकर झटकों तथा सागर के खारे जल के सम्पर्क के बावजूद भी ब्लैक बाक्स बिल्कुल सही तथा कार्य करने वाले पाये गये।

इसी प्रकार ४ अगस्त १९७६ को इन्डियन एयरलाइन्स का एक एवरो (एच.एस. ७४८) विमान मुम्बई के निकट पहाड़ियों से टकरा कर नष्ट हो गया और उसमें सवार सभी ४५ व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। विमान आघात तथा आग लग जाने के कारण पूरी तरह से नष्ट हो गया तथा केवल उसके कुछ जले हुये टुकड़े ही पाये गये। इस विमान के ब्लैक बाक्सों के ऊपरी कवच भी काफी हद तक जल गये थे किन्तु अन्दरूनी हिस्से बिल्कुल सही सलामत पाये गये। उनके अन्दर के टेप को निकाल कर जब पढ़ा गया तो पता चला कि वे बिल्कुल सही हालत में थे। और फिर उन्ही की सहायता से दुर्घटना के कारणों का पता चल पाया।

इसी प्रकार अनेकों ऐसे उदाहरण मिलेंगें जब ब्लैक बाक्सों की शीत, गर्मी, बारिश, आघात आदि को झेल सकने की क्षमता सिद्ध हो चुकी है। इन बाक्सों के इतने परिचय के बाद अब सी.वी.आर. तथा एफ.डी. आर को अलग अलग जानने की बारी आती है। दुर्घटना ग्रस्त विमान का क्षतिग्रस्त ब्लैक बाक्स। किन्तु इसका टेप सही सलामत मिलेगा

काकपिट वायस रिकार्डर–आवाज की नकल

काकपिट वायस रिकार्डर अथवा सी.वी.आर. विमान के यानकक्ष (काकपिट) में कर्मी दल के सदस्यों की आपस की बातचीत तथा रेडियो पर किये गये वार्तालाप को रिकार्ड करता है। सी.वी.आर. द्वारा केवल मानवीय आवाज ही नहीं बल्कि अन्य ध्वनियां भी जैसे यानकक्ष में बजने वाली घंटी, बजर, चेतावनी के संकेत, स्विचों की आवाजें, विमान के इंजनों का शोर आदि भी रिकार्ड किये जाते हैं।

वास्तव में सी.वी.आर. काफी कुछ एक घरेलू टेप रिकार्डर जैसा ही होता है। बस अन्तर सिर्फ यह होता है कि यह अत्यन्त सुद्धढ़ ढांचे में सुरक्षित होता है तथा घरेलू टेप रिकार्डर के विपरीत इसमें एक के बजाय चार ट्रैक होते हैं। सी.वी. आर. के टेप की अवधि आधे घन्टे की होती है। आधे घन्टे के बाद पुराने टेप की रिकार्डिंग मिटती जाती है तथा नई रिकार्डिंग स्वतरू होती जाती है। इस प्रकार किसी भी समय सी.वी.आर. को खोला जाये तो उसमें केवल पिछले आधे घन्टे की रिकार्डिंग मौजूद मिलेगी। सी.वी. आर. विमान के इंजनों चलने की शक्ति प्राप्त करता है और इंजनों के बन्द हो जाने के बाद कार्य करना बन्द कर देता है।

सी.वी.आर. के प्रथम तीन चौनेलों पर क्रमशरू विमान के कप्तान तथा उपकप्तान द्वारा रेडियो पर प्रसारित किये गये तथा प्राप्त किये गये सन्देश, एयर होस्टेस द्वारा यात्रियों के लिये किया गया प्रसारण रिकार्ड होता जाता है। इसके चौथा चौनेल एरिया माइक कहलाता है जिस पर विमान के यान कक्ष में आने वाली विभिन्न ध्वनियां जैसे कर्मीदल के सदस्यों द्वारा आपस में की जाने वाली बातचीत, इंजनों का शोर, स्विचों की आवाजें, चेतावनी की घंटियां तथा बजर की आवाजे, यान कक्ष के द्वार के खुलने बन्द होने की आवाजें, तथा अन्य प्रकार का शोर शराबा निरन्तर रिकार्ड होता रहता है। विमान दुर्घटना अन्वेषक के लिये चौथा चौनेल अर्थात एरिया माइक अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है क्यों कि इसकी सहायता से उन्हे दुर्घटना की जांच सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण सूत्र प्राप्त हो जाते हैं।

विमान दुर्घटना जांच के दौरान सी.वी.आर. के टेप को निकाला जाता है, तथा उसके आधार पर टेप में रिकार्ड किये गये वार्तालाप तथा ध्वनियों आदि के लिखित विवरण तैयार किये जाते हैं। यह काम काफी

कठिन होता है क्यों कि अनेक प्रकार की मिली जुली ध्वनियां तथा वार्तालाप बहुत धीमें तथा क्षीण होते हैं जिनको समझना काफी कठिन होता है। किन्तु अनुभवी विमान दुर्घटना अन्वेषक यह कार्य कर लेते हैं। तत्पश्चात विमान चालकों की ध्वनियों से परिचित लोगों की सहायता से उन वार्तालाप को बोलने वालों की पहचान की जाती है। इस प्रकार अब यह पता चल जाता है कि दुर्घटना से पूर्व कर्मीदल के किस सदस्य नें किस मौके पर क्या वाक्य कहा था। इन सब के आधार पर सी.वी.आर. की रिपोर्ट तैयार हो जाती है।

सी.वी.आर. पर रिकार्ड की गई जानकारी दुर्घटना की जांच में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। जैसे इनकी सहायता से (यानकक्ष में कर्मीदल के सदस्यों की आपसी बातचीत से) यह मालूम पड़ सकता है कि दुर्घटना के समय यान कक्ष में वातावरण सामान्य था या चालक दल को किसी प्रकार की कठिनाईं का सामना करना पड़ रहा था। यह भी पता चल जाता है कि यन्त्रों के उपयोग सही ढंग से किये गये थे या नहीं, तथा क्या विमान के सभी यन्त्र सही ढंग से कार्य कर रहे थे अथवा क्या किसी यन्त्र से खतरे या चेतावनी की घन्टी या अलार्म आया था। यदि दुर्घटना किसी अपहरणकर्ता अथवा बाहरी व्यक्ति के कारण हुई हो उसकी आवाज भी रिकार्ड हो जाती है। इन सूत्रों के आधार पर विमान दुर्घटना से सम्बन्धित अनेक गुत्थियां सुलझाई जा सकती हैं।

फ्लाइट डेटा रिकार्डर-उड़ान का आंखों देखा हाल

फ्लाइट डेटा रिकार्डर अथवा एफ.डी.आर. विमान की उड़ान सम्बन्धी सूचनायें जैसे विमान की ऊंचाईं, गति, दिशा, विमान के ऊपर अथवा नीचे जाने की गति, समय तथा गुरुत्व बल आदि निरन्तर रिकार्ड करता है। इसका टेप धातु की पतली पट्टी जैसा होता है जिस पर सुई द्वारा ये सारी सूचनायें अंकित हो जाती हैं (ग्रामोफोन की तरह)। यह रिकार्डिंग स्थाई होती है अर्थात सुई द्वारा अंकित निशान मिटायें नहीं जा सकते हैं। फ्लाइट डेटा रिकार्डर का टेप २५ उड़ान घन्टे तक चलता है। तत्पश्चात नया टेप लगाया जाता है तथा पुराना टेप निकाल दिया जाता है। रिकार्ड की गई जानकारी विशेष यन्त्रों द्वारा पढ़ी जाती है तथा उसका ग्राफ बनाया जाता है।

एफ.डी.आर. द्वारा रिकार्ड की गई सूचनाओं के आधार पर विमान दुर्घटना की जांच से सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है, जिससे विमान दुर्घटना का कारण जानने में सहायता मिलती। जैसे टेप पर अंकित समय द्वारा यह ज्ञात हो सकता है कि दुर्घटना किस समय घटित हुई थी तथा उसके पूर्व यदि कोई उल्लेखनीय घटना घटी थी तो उसके तथा दुर्घटना के बीच समयान्तर क्या था। दिशा के आधार पर विमान के उड़ान पथ में किसी असामान्य परिवर्तन का पता लग सकता है। इसी प्रकार अंकित की गई गति के आधार पर यह पता चल सकता है कि दुर्घटना से पूर्व विमान सामान्य गति से उड़ान भर रहा था या उसकी गति में असामयिक रूप से तेजी या कमी आई थी। गुरुत्व बल के आधार पर यह पता चल सकता है कि विमान कितनी शक्ति से नीचे आया था अथवा भूमि से टकराया था। इन्ही सूत्रों के आधार पर जांचकर्ता अपनी रिपोर्ट तैयार करते हैं।

वैसे धातु की पट्टी वाले एफ.डी.आर. अधिकतर पुराने टाइप के विमानों जैसे एवरो, फाकर फ्रेन्डशिप आदि ही में लगाये जाते हैं। आधुनिक विमानों जैसे बोइंग-७४७, एयरबस, ए३२० आदि में कम्प्यूटर युक्त फ्लाइट डेटा रिकार्डर लगाये जाते हैं जिन्हें डिजिटल फ्लाइट डेटा रिकार्डर अथवा डी.एफ.डी.आर. कहा जाता हैं। इन में धात्वीय टेप के स्थान पर चुम्बकीय टेप का उपयोग किया जाता है तथा ये कम्प्यूटर की सहायता से रिकार्डिंग करते हैं। डी.एफ.डी.आर. का टेप २०० उड़ान घन्टों तक चलता है और उसके बाद यह टेप बदल दिया जाता है। डी.एफ.डी.आर. की रिकार्डिंग को पढ़ने के लिये भी कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है। डी.एफ.डी.आर. द्वारा विमान तथा उसके इंजनों से सम्बन्धित ५० से लेकर सगभग २०० से भी अधिक सूचनायें रिकार्ड की जाती हैं। उदाहरण के लिये इसमें सामान्य सूचनाओं के अतिरिक्त इंजनों की शक्ति, गति, तेल तथा ईंधन का तापमान व दबाव, नियन्त्रण सतहों की स्थित, यात्री कक्ष का तापमान, रेडियो सम्पर्क का समय, अवतरण गियर (लैंडिंग गियर) की स्थित, आदि रिकार्ड होती रहती है।

इस प्रकार डी.एफ.डी.आर. की सहायता से विमान की दुर्घटना से पूर्व की उड़ान का विस्तृत विवरण प्राप्त किया जा सकता है, जो कि सामान्य एफ.डी.आर द्वारा सम्भव नहीं है।

प्रत्यक्षदर्शी

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि इन ब्लैक बाक्सों की सहायता से जांच कर्ता विमान की दुर्घटना से पूर्व की उड़ान का पूरा लेखा जोखा तैयार कर पाने में सक्षम होते हैं। इस प्रकार जहां एफ.डी.आर. (अथवा डी.एफ.डी.आर.) विमान के उड़ान सम्बन्धी चित्रण प्रदान करते हैं वहीं सी.वी.आर. उन दृश्यों में आवाज भर देते हैं। यदि हम इसकी तुलना क्रिकेट कमेन्ट्री से करें तो यह कह सकते हैं कि जहां सी.वी.आर. उड़ान का रेडियो जैसा आंखो देखा हाल सुनाता है, वहीं डी.एफ.डी.आर. उन दृश्यों को एक बिना आवाज वाले टेलीविजन पर दर्शाता है। यदि दोनों को मिला कर देखा जाये तो पूरा दृश्य सामने आ जाता है।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब ब्लैक बाक्सों के कारण ही विमान दुर्घटना का वास्तविक कारण जानना सम्भव हो सका है। जैसे वर्ष १९७४ में नैरोबी में लुफ्तहसां (जर्मन एयरलाइन्स) का एक जम्बो जेट (बोइंग ७४७) विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। जांच के समय जब सी.वी.आर. टेप को सुना गया तो पता चला कि विमान चालक उड़ान से पूर्व चेक लिस्ट पढ़ते समय विमान की वायुयीय प्रणाली (न्यूमैटिक सिस्टम) को चालू करना भूल गया था। इस कारण उड़ान के समय विमान के लींडग एज फ्लैप (विमान नियन्त्रण के साधन) चालू नहीं हुये थे तथा समुचित उत्थापक बल प्राप्त ना हो पाने के कारण विमान नीचे गिर गया था। इसी प्रकार पहली जनवरी १९७८ को हुये एयर इन्डिया के जम्बो जेट की दुर्घटना, जिस का विवरण पहले दिया जा चुका है, के जांच के दौरान पता चला कि उस दौरान विमान का अट्टीटयूड डायरेक्टर इन्डीकेटर (ए.डी.आई.) नामक यन्त्र काम नहीं कर रहा था। ऐसा इस लिये मालूम चल पाया था क्यों कि सी.वी.आर. टेप में विमान का कप्तान अपने सहचालक से कहता हुआ पाया गया था माई इंस्ट्रूमेन्ट्स आर टापल्ड अर्थात मेरे यन्त्र पलट गयें हैं। और उस विमान में ए.डी.आई. ही एक ऐसा यन्त्र है जो पलट सकता है। अब यदि सी.वी.आर. से सहायता ना मिलती तो सम्भवत दुर्घटना के कारणों का पता ना चल पाता।

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि ब्लैक बाक्स विमानो के लिये कितने जरूरी होते हैं। इन्ही सब कारणों से भारत के यात्री विमानों में महानिदेशक नागर विमानन द्वारा नियमानुसार ब्लैक बाक्सों का लगाया जाना अनिवार्य कर दिया गया है।

‘सृजक’ त्रैमासिक पत्रिका का आगामी अंक

अध्यात्म विशेषांक

जीतिए इनाम

जीतिए इनाम-

पेज-31 पर दिये गये परिचर्चा में भाग लेकर। परिचर्चा के चार विषय वहां दिये गये हैं। ईमेल अथवा डाक द्वारा 16 मई 2013 तक भेजें।

उत्कृष्ट 6 रचनाकारों को पुरस्कृत किया जायेगा।

प्रथम पुरस्कारः 1100 रुपए
द्वितीय पुरस्कारः 800 रुपए
तृतीय पुरस्कारः 500 रुपए

तीन रचनाकारों को सांत्वना पुरस्कार 200/-

सम्पादकीय कार्यालयः
‘ऊँ शिव माँ प्रकाशन’,
श्री साई राम शिवम निवास,
शिवपुरी, बेलबनवा, मोतिहारी,
पूर्वी चम्पारण, बिहार पिन-845401
मो0 9031197811
Email: contact@sahityapremisangh.com
website: www.sahityapremisangh.com
Facebook: https://www.facebook.com/Srijakhind

भेजने वाले का नाम व पता
____
____
____
____

इस कूपन को काटकर रचना के साथ संलग्न करें

लघुकथा

अफसोस

मनोज ‘अजीज’
Email: mkp4ujsr@gmail.com

पढाई-लिखाई खत्म होते ही राघव गाँव-घर छोड़ कर, किसी काम की तलाश में शहर में ही रहने लगा।

रांची-धनबाद घूम कर जब राघव कोई अच्छी नौकरी नहीं पा सका तो गुजरात जाकर ठेकेदारी का काम ही करने को उतारू हो गया। वह चला भी गया और दो-तीन सालों में अच्छी-खासी पूंजी जमा कर ली।

अब गाँव आने पर उसके इत्र-पाऊडर के इस्तेमाल से पूरा गाँव जान जाता था की राघव घर से निकला है। माँ-बाप बेटे की शादी के लिए कई जगह लड़की भी देखने लगे। इस मुद्दे पर बेटे की ‘हाँ’ भी नहीं और ‘ना’ भी नहीं। गुजरात में रहने के वक्त फोन से माँ-बाप से बातचीत कर लिया करता था। उन्हें अगर कोई जरुरत पड़े तो फौरन पैसे भेज दिए जाते। गाँव के हर किसी की नजर में राघव एक होनहार लड़का था।

एक जगह लड़की पसंद आने पर राघव को फोन से खबर की गयी। एक हफ्ते में राघव चिठ्ठी। राघव जो कल तक हर बात पर फोन करता था अब अचानक चिठ्ठी भेजने पर माँ-बाप सकते में। पिता ने काफी मशक्कत कर चिट्ठी पढ़ी।

माँ एक तरफ बेटे की चिट्ठी की बात सुनने के लिए घर के बाहर झाड़ी में खाने के लिए लिये गये अन्न को फेंकते हुए थोड़े से पानी से ही हाथ धोकर घर के अन्दर आ बैठी। तब तक चिट्ठी पढ़ी जा चुकी थी और राघव के पिता ने उस कागज के टुकड़े को बेरहमी से मोड़ कर कटे हुए पुआल के ढेर की ओर फेंक दिया। फिर कहने लगे-

‘हमारा बाबू-बेटा बाप हुआ है। और श्वसुर की नौकरी करता है। समझी न! घर-जमाई !

‘तुम भी जानती होंगी- आशा में मरता किसान और ध्यान में मरता जोगी। अच्छा ही हुआ कि जमीन अभी तक बेची नहीं।’

ऐसा कह कर राघव के पिता खटिया लेकर आंगन में जाकर लेट गए और रिसते हुए आँखों को अपने दाहिने हाथ से ढके रहे। माँ भी सर झुकाए पल्लू को भिंगोती रही।

ग़ज़ल

-देवमणि पाण्डेय

घास-पात और खोइया गायब
पोखर, ताल, तलैया गायब

कट गए सारे पेड़ गाँव के
कोयल और गोरैया गायब

सूख गई है नदी बेचारी
माँझी चुप हैं, नैया गायब

सोहर, कजरी, फगुआ भूले
बिरहा, नाच-नचौया गायब

नोट निकलते एटीएम से
पैसा, आना, पइया गायब

दरवाजे पर कार खड़ी है
बैल, भैंस और गैया गायब

सुबह हुई तो चाय की चुस्की
चना-चबेना, लइया गायब

सारे मौसम बदल गए हैं
सावन की पुरवैया गायब

भाभी देख रही हैं रस्ता
शहर गए थे, भैया गायब

"अनुवाद श्रृंखला में"

रूपान्तरण

मुझे तलाश थी एक स्त्री की जो मुझे दुःखी कर सके

अनुवादकः सिद्धेश्वर सिंह
सम्पर्क सूत्रः खटीमा,
उत्तराखंड, मो. 9412905632
Email: sidhshail@gmail.com

तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया है
दुःखी होना ।
दुःख-
जिसकी मुझे तलाश थी सदियों से ।
मुझे तलाश थी एक स्त्री की
जो मुझे दुःखी कर सके
जिसके बाहुपाश में मैं
एक गौरये-सा दुबक कर रोता रहूँ ।
मुझे तलाश थी एक स्त्री की
जो मेरी चिंदियों को बीन सके ।
वो जो बिखरी हैं टूटे क्रिस्टल के
टुकड़ों की तरह
तुम्हारे प्रेम ने सिखला दी हैं
मुझे बुरी आदतें
मसलन
इसने मुझे कॉफी के कपों को पढ़ना
सिखला दिया है।
एक ही रात में हजारों-हजार बार
इसने मुझे सिखला दिए हैं
कीमियागीरी के प्रयोगात्मक कार्य
इसी के कारण मैं अक्सर दौड़ लगाने
लगा हूँ भविष्य बाँचने वालों के
ठौर-ठिकानों की ओर।
इसने मुझे सिखला दिया है
घर छोड़ भटकना सड़क की पटरियों
पर गहन आवारागर्दी करना और
बारिश की बूँदों तथा कार की लाइट्स
में तुम्हारे चेहरे की तलाश का
उपक्रम करना।
अजनबियों के परिधानों में तुम्हारे
पहनावे की पहचान करना और यहाँ
तक कि..
विज्ञापन के पोस्टरों में भी तुम्हारी
छवि की एक झलक-सी पा जाना ।
तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया है
यूँ ही भटकना बेमकसद-बेपरवाह घंटों
तक डोलना एक ऐसी बंजारन की
खोज में जो सौतिया डाह से भर देगी
पूरी बंजारा औरत बिरादरी को चेहरों
और आवाजों के रेवड़ में मैं कब से
तलाशे जा रहा हूँ एक चेहरा...
एक आवाज.. ।
मेरे भीतर धँस गया है तुम्हारा प्रेम
उदासी के नगर में...
मैं पहले कभी दाखिल नहीं हुआ हूँ
अकेले।
मुझे पता नहीं,
फिर भी
अगर आँसू होते होंगे इंसान
तो उदासी के बिना
वे साधारण इंसानों की छाया मात्र
होते होंगे ..शायद.।
तुम्हारे प्रेम ने
सिखला दिया है
एक बच्चे की तरह हरकतें करना
चाक से उकेरना तुम्हारा चेहरा-
दीवार पर
मछुआरों की नावों पर
चर्च की घंटियों पर
और न जाने कहाँ-
कहाँ..
तुम्हारे प्रेम ने सिखला
है
कि किस तरह प्रेम से
बदला जा सकता है..
समय का मानचित्र...।

तुम्हारे प्रेम ने सिखला
दिया है
कि जब मैं प्रेम करता हूँ
थम जाती है पृथ्वी की परिक्रमा।
तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया दिया है
हर चीज को विस्तार और विवरणों के
साथ देखना।
अब मैं पढ़ता हूँ बच्चों के लिए लिखी
गईं परियों की कथाओं वाली किताबें
और दाखिल हो जाता हूँ जेन्नी के
राजमहलों में
यह सपना पाले कि सुल्तान की बेटी
मुझसे झट शादी कर लेगी...
आह..वो आँखें....
लैगून के पानी से भी ज्यादा शफ्फाक
और पानीदार
आह ..वो होंठ..
अनार के फूल से भी ज्यादा मादक
और सम्मोहन से लबरेज..
मैं सपने देखता हूँ कि एक योद्धा की
तरह उसका हरण
कर लाऊँगा...
सपने में यह भी
देखता हूँ कि
उसके गले में
पहना रहा हूँ
मूँगों और मोतियों का हार।
तुम्हारे प्रेम ने मुझे सिखला दिया है
पागलपन
हाँ, इसी ने सिखला दिया है कि कैसे
गुजार देना है
जीवन,
सुल्तान की बेटी के
आगमन की प्रतीक्षा
में।

तुम्हारे प्रेम ने
सिखला दिया है
कि कैसे प्रेम करना
है सब चीजों से
कि कैसे प्रेम को
खोजना है सब चीजों में,
जाड़े-पाले में ठिठुरते एक नग्न गाछ
में,
सूखी पीली पड़ गई पत्तियों में,
बारिश में,
अंधड़ में,
उतरती हुई शाम के सानिध्य में,
एक छोटे-से कैफे में पी गई
अपनी पसंदीदा काली कॉफी में।

तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया है...
शरण्य
शरण लेना होटलों में
बेनाम - बेपहचान
चर्चों में
बेनाम - बेपहचान
कॉफी-हाऊसों में
बेनाम - बेपहचान।
तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया है
कि कैसे रात में अजनबियों के बीच
अचानक उपजती उभरती उलाहना
देती है उदासी,
इसने मुझे सिखला दिया है
बेरुत को एक स्त्री की तरह देखना
एक ऐसी स्त्री-
जिसके भीतर भरा है निरंकुश प्रलोभन
एक ऐसी स्त्री-
जो हर शाम पहनती है अपनी सबसे
खूबसूरत पोशाक,
और मछुआरों तथा राजपुत्रों को
लुभाने के लिए-
उभारों पर उलीचती है बेशकीमती
परफ्यूम।
तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया है रुलाई
के बिना रोना...
तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया है
कि कैसे उदासी को आ जाती है नींद
रोश और हमरा की सड़कों पर
पाँव कटे, एक रोते हुए लड़के की
तरह।
तुम्हारे प्रेम ने सिखला दिया है दुःखी
होना...
दुःख- जिसकी मुझे तलाश थी सदियों
से ।
मुझे तलाश थी-
एक स्त्री की जो मुझे दुःखी कर सके
जिसके बाहुपाश में
मैं एक गौरये-सा दुबक कर रोता रहूँ
मुझे तलाश थी एक स्त्री की
जो मेरी चिंदियों को बीन सके
वो जो बिखरी है टूटे क्रिस्टल के
टुकड़ों की तरह ।

(सीरियाई कवि निजार कब्बानी की कविता उदासी का महाकाव्य)

‘एक अनार के कई बीमार’

विदेशी चैनलों के युग में जैसे भारतीय संस्कृति गायब है, वैसे ही पिछले कई दिनों से राधेलाल गायब है। भारतीय जनता बुद्धू बक्से की नशेड़ी है, मैं राधेलाल का नशेड़ी हो गया हूँ। जानता हूँ कि राधेलाल से मिलकर मुझे कोई सार्थकता उपलब्ध नहीं होगी, घंटों इधर उधर की हाँक कर वह मेरा समय ही नष्ट करेगा, पर क्या करूँ जानकर भी अनजान होना पड़ता है। लोग जानते हैं कि शराब आत्मा और शरीर दोनों का नाश करती है, लोग जानते हैं कि जिन्हें हम जनसेवक समझकर वोट देते हैं, वो जनता और देश दोनों का नाश करते हैं, परंतु स्वयं को भुलावे में रखने की हम भारतीयों को आदत पड़ गयी है, और मैं भी भारतीय हूँ। लोगों के लिए मजबूरी का नाम महात्मा गांधी होता है, मेरे लिए राधेलाल होता है। दफ्तर से घर लौटता हूँ तो निगाहें राधेलाल को तलाशती हैं कि उसका बटन खोलूँ और कुछ भी अनाप खनाप सुनता रहूँ। राधेलाल अनाप शनाप बोलता है तो कुछ भी सोचने को मन नहीं करता है, मन करता है तो बस उसे देखने और उसकी बकवास सुनने का। जीवन में जब कुछ सार्थक न रह गया हो तो बकवास सुने बिना गुजारा ही कहाँ है। चुनाव के दिनों में लगातार बकवास सुनते सुनते अब कुछ भी सार्थक सुनने का मन ही नहीं करता है।

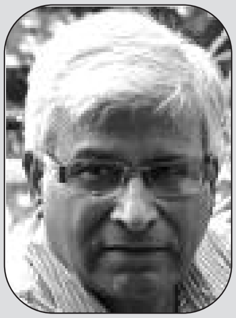

डॉ0 प्रेम जन्मेजय
सम्पर्क सूत्रः
73, साक्षर अपार्टमेंट्स,
ए-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली
फोनः 09811154440
Email:
mail@premjanmejai.com

बहुत ढूँढ़ने पर भी राधेलाल ईमानदारी, नैतिकता और न्याय की तरह नहीं मिला। जैसे महापुरुष सत्य की खोज में निकल पड़े थे, वैसे ही मैं भी राधेलाल की खोज में निकल पड़ा। महापुरुष तो सत्य की खोज में जंगलों, पहाड़ों, नदियों, नालों आदि में भटके थे और मैं भी खोज के नाम पर भटकना चाहता था परंतु मेरा भाग्य कि मेरा सत्य, राधेलाल मेरे घर से मात्र सौ गज की दूरी पर रहता है। महानगर में ये दूरियाँ ऐसे होती हैं जैसे हाथी के मुँह में गंडेरी या राजनेता की जिंदगी में सौ रुपए का घोटाला।

मैंने राधेलाल को घर में खोजा तो पाया कि दोनो हाथों में सर दिए वह ऐसे सुशोभित हो रहा है जैसे विदेशी चैनलों के बीच भारतीय दूरदर्शन सुशोभित होता है। राधेलाल के चेहरे पर कृषि दर्शन की शुष्कता थी और आँखें किसी समाचार वाचक सी बेजान थीं। ओंठ टेलीफिल्म की तरह नीरस लग रहे थे।

‘अरे राधेलाल, ये क्या महात्मा बुद्ध की तरह मुद्रा बनाए बैठा है ?’

मेरा प्रश्न सुनकर राधेलाल ने सर उठाकर देखा और थोड़ा ब्रेक के बाद बोला, ‘महात्मा बुद्ध की तरह मुद्रा नहीं, मैं महात्मा बुद्ध की तरह घर छोड़ने की सोच रहा हूँ।’

‘........घर छोड़ने की सोच रहा है! तुझे किस सत्य की तलाश है, प्यारे राधेलाल ?’

‘सत्य गया भाड़ में,’ राधेलाल ने सच ही कहा, आजकल सत्य भाड़ में ही रहता और सच कहने वाले भाड़ झोंकते हैं। सत्य के पास आजकल न तो न्यायालय में रहने के लिए जगह है और न संसद में। लोगों के दिल ईर्ष्या, द्वेष और आकांक्षाओं से भरे हुए हैं, बेचारा रहे तो रहे कहाँ ?

‘यार सत्य ने तेरा क्या बिगाड़ा है, जो उसे तू भाड़ में झोंक रहा है? बहुत परेशान लग रहा है चिंता मत कर महंगाई जल्दी ही दूर होगी। विश्व बैंक से बहुत सा उधार मिलने वाला है।’

‘महंगाई गयी भाड़ में वो तो साली हर समय लागू रहती है। जब से मैं पैदा हुआ, और आज जब मेरी पैदावार मेरे लिए पोते-नातियों को संसार में ला रही है, एक दिन भी ऐसा नहीं गया कि मैंने महंगाई का रोना न सुना हो। इतने वेतन आयोग आ गए, इतने डी.ए.-शी.ए. मिल गए पर महंगाई को नहीं जाना था नहीं गई। इधर सरकार वेतन बढ़ाती है और उधर दुकानदार दाम बढ़ा देते हैं। घर कभी महंगाई के लिए अखाड़ा बनता है और कभी दूरदर्शन के कारण।’

‘दूरदर्शन के कारण घर अखाड़ा बना हुआ है, मैं समझा

नहीं...'

'तू समझेगा भी नहीं, **जाकि फटी न पैर बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।** तेरा क्या है, घर में एक तू है और दूसरी भाभी जी हैं। बच्चे होस्टल में पढ़ रहे हैं। यहाँ दो लड़कियाँ, एक लड़का, बहू, पोते- पोतियाँ और एक अदद पत्नी, है।'

'ये तो अच्छा ही है, भरा पूरा परिवार है, जैसे शांति धारावा. हिक का है।'

'शांति नहीं अशांति कह.... समझ ले जो हाल शांति धारावाहिक का है, वही हाल मेरा है। बस नाम की शांति है।'

'वो कैसे ?'

'वो ऐसे प्यारे प्रेम भाई, टेलीविजन एक है और उसके प्रेम दीवाने अनेक हैं। किसी को कॉमेडी सीरियल देखना है तो किसी को सस्पेंस वाला देखना है, किसी को फिल्म देखनी है तो किसी को धार्मिक धारावाहिक देखना है, किसी को क्रिकेट का मैच देखना है तो किसी को समाचार सुनने हैं। इस चक्कर में सारे घर में महाभारत मचा रहता है। शाम को दफ्तर से घर का लौटता हूँ तो कोई चाय को नहीं पूछता है। बच्चे किताबें कम खोलते हैं, टी.वी. ज्यादा खोलते है। किसी के पास किसी से बात करने के लिए समय नहीं है। घर में घुसते ही घर, घर कम मछली बाजार अधिक लगता है। यकीन न हो तो अंदर घुसकर देख लो....'

'ओह तो तुम इसलिए बाहर बरामदे में बैठे हो... शुक्र है घर का कोई कोना, चाहे घर से बाहर ही हो, तो तुम्हारे आराम के लिए सुरक्षित है।'

'कैसा आराम ? यहाँ भी कोई चैन से नहीं बैठने देता है... अभी देखना थोड़ी देर में...'

राधेलाल ने बात अभी पूरी ही नहीं की थी कि उसके पोते पोतियों ने लड़ते झगड़ते प्रवेश किया। तीनों को लड़ते देश भारतीय संसद की याद हो आई। भारत का सुनहरा भविष्य इस विषय पर संघर्ष-पथ पर कदम से कदम मिलाए चल रहा था कि घर में किस कंपनी के नुडल्स आएँगे और किस कंपनी की सॉस आएगी और किस कम्पनी का ठंडा पेय आएगा। इस महाभारतीय संग्राम में अंततः तय हुआ कि तीनों के लिए अलग अलग कंपनियों के पदार्थ आयेंगे।

मैंने कहा 'सच राधेलाल, ये तो बहुत बड़ी समस्या है...' ये समस्या तो कुछ नहीं है प्यारे प्रेम भाई, समस्या तो तब विकराल रूप धारण करती है जब मेरी पत्नी बहू और बेटियों में खींचातानी चलती है। हर समय कोई न कोई अपने पसंदीदा धारावाहिक को देखने के लिए दूरदर्शन से ऐसे चिपका रहता है जैसे दूरदर्शन न हो मंत्री-पद हो। न समय पर खाना मिलता है और न समय पर चाय। घर में आए हुए मेहमान भी आपसी दुख-सुख की बात कम करते हैं, धारावाहिकों के सुख - दुख की बात अधिक करते हैं। धारावाहिक में कोई प्रिय पात्र कष्ट में हो तो उसे देशकर सब गमगीन हो जाते हैं और मेरी बीमारी का उनके लिए कोई मतलब ही नहीं है। घर में कई कंपनियों के चाय, घी, तेल, साबुन आदि आ जाते हैं। एक ही समय में तीन लोगों के लिए तीन ब्रांडो की अलग-अलग चाय बनती है। घर का बट कानून और व्यवस्था की स्थिति की तरह बिगड़ता ही जा रहा है। सरकार के पास तो विश्वकोष है, घाटे का बजट है और पार्टी है, मेरे पास क्या है?'

यह कहकर राधेलाल फूट

समसामयिक मुद्दा

–रंजीता विश्वकर्मा

स्त्री माने बलात्कार

दामिनी के बहाने ही सही, भारतीय पुरुष संस्कृति प्रधान देश जागा तो सही। नारी विमर्श के क्षेत्र में शायद यह पहली बार है, जब समूची युवा पीढ़ी खुलकर बिना किसी के उकसाये, स्वतःस्फूर्त आंदोलन करने निकल पड़ी। युवतियों ने परिवार नाम की नियामक संस्था के आदेशों को दरकिनार कर रात के अंधेरे में भी सड़क की राह गह ली। रात–दिन बिना किसी पहरेदार के विरोध का झंडा फहराती रहीं।

लेकिन हैरत होती है, उन शीर्ष महिलाओं पर जो खुद सत्ता और राजनीति के शीर्ष पर आसीन हैं और जिनके इशारे पर ही समूचा भारतीय तंत्र संचालित होता है। सोनिया गांधी, शीला दीक्षित, मायावती, जयललिता, ममता बनर्जी, सुषमा स्वराज, रेणुका चौधरी समेत सैकड़ों माननीया, इस मामले में कितनी खामोश और निष्ठुर रहीं। न तो उन्हें दामिनी की पीड़ा प्रभावित कर पायी और न ही देश की असंख्य बालाओं का स्वर सुनाई दिया।

भारतीय संविधान की तो बात ही नहीं करनी। उसके निर्देशों और सत्ता के व्यवहार में जमीन–आसमान का फासला है। संविधान की मानें तो कानूनन स्त्री–पुरुष में कोई फर्क नहीं है और दोनों को अपनी मर्जी से जिन्दगी जीने की पूरी आजादी है। लेकिन सत्ता द्वारा इस निर्देश का क्रियान्वयन! एकदम यक्ष प्रश्न। सत्ता ने स्त्री को कभी एक वस्तु से ज्यादा नहीं मानने दिया। उदाहरण के तौर पर हम राष्ट्रपति के बेटे सांसद प्रणब मुखर्जी, कांडा प्रकरण में वहां के मंत्री, गृहमंत्री आदि के बयानों को देखना चाहेंगे। इनके बयानों का ध्वन्यार्थ यदि निकालें तो प्रतीत होगा कि स्त्री कोई मामूली सी चीज हैं और ये नवाबजादे उनके देवता। देवता की मर्जी के अनुरूप ही स्त्रियों को अपनी बात कहने का, अपने जीवन जीने का अधिकार है। अन्यथा वे कुलक्षणा हैं। इन बयानों के उलट भी अनेक महानुभावों के बचाव भी हैं। लेकिन सवाल इससे भी आगे खड़ा है।

बात यह है कि पुरुष पक्ष में हो या विपक्ष में, वह महिला को या तो गुस्से में अपमा. नित करता है या फिर प्यार से। यानि खेलते दोनों हैं। पुरुषों में वैमनस्य, मनमुटाव और लड़ाई हुई तो स्त्री को आगे कर दिया। वाक्युद्ध हुआ तो निशाना स्त्रियां बनने लगी। दुनिया की हर गाली स्त्री केन्द्रित है। क्या कोई गाली पुरुष केन्द्रित भी होती है! स्त्री लक्ष्य है और पक्ष–विपक्ष के पुरुष अर्जुन। वे लगातार भेद रहे हैं स्त्री की आत्मा। यह लक्ष्य भेदन प्रतिदिन, प्रतिपल इतनी बार हो रहा है कि स्त्री की आत्मा अब आत्मा से ज्यादा छलनी हो गयी है। इस गुस्सा और पुचकार में स्त्री देह को न पाने या पाने का ही विषय–बिन्दु निहीत रहता है। वह शोषण का केन्द्र स्वतः मानी जा चुकी है। पुरुष आपस में लड़े तो स्त्री से बलात्कार, प्रेम में हार गये तो बलात्कार, पुरुष विवेक खो दे तो बलात्कार, युद्ध हुआ तो बलात्कार, कानून शिथिल हुआ तो बलात्कार, कड़ा हुआ तो बलात्कार। अर्थात् स्त्री माने बलात्कार। बलात्कार की केन्द्र।

क्यों ? इसलिए कि वह अभी तक पुरुष के प्रति अंध वफादार बन कर रही है। उसने जोखिम उठाने की कोशिश नहीं की। उसने बगावत नहीं किया। उसने पुरुषनिर्मित चारदीवारी को तोड़ने की कोशिश नहीं की। दामिनी हमारे बीच नहीं है, पर सच तो यह है कि वर्तमान की युगप्रवर्तक प्रेरणा है। उसने हमें जगा दिया है। यह बिहान दोपहरी तक नहीं पहुंची तो शायद हम उसकी कुर्बानी को कभी नमन करने के अधिकारी नहीं हो सकेंगी।

(लेखिका स्वामी गोविन्दाश्रम महाविद्यालय पैड़ापुर, मीरजापुर, उत्तर प्रदेश में राजनीतिशास्त्र की प्राध्यापक हैं।

सफ़र की यादें

एक यात्रा...हिसार से रोहतक तक

कहाँ है
अब वह
प्रकति के सब ढंग,
धरती के, पर्वत के
सब उड़ गए हैं रंग...

पिछले दिनों हिसार जाना हुआ यह रास्ता मुझे वैसे भी बहुत भावुक कर देता है ।

रोहतक जहाँ बचपन बीता उसके साथ लगता कलानौर जहाँ जन्म लिया... क्या वह घर अब भी वैसा होगा... कच्चा या वहां भी कुछ नया बन गया होगा ... बाग खेत ..कई यादें एक साथ घूम जाती हैं...दिल्ली के कंक्रीट जंगल से कुछ पल सिर्फ राहत मिल जाती है और लगता है कि अभी भी कोई कोना तो है दिल्ली के आस पास जो कुछ हरियाला है.. मेट्रो के कारण दिल्ली जगह जगह से उधडी हुई है. .. एक जगह से दूसरी जगह जाने में एक युग सा लगता है... वही हुआ बस तो आई एसबीटी से ही मिलनी थी, जिसने दिल्ली से बाहर निकलते निकलते ही दो घंटे लगा दिए ...और उसके बाद का रास्ता ही सिर्फ तीन घंटे का है... रोहतक तक आते आते अब खेत कुछ कम दिखायी देते हैं वहां भी अब ओमेक्स के फ्लेट्स का बोर्ड लहरा रहा है । नींव तो पड़ ही चुकी है एक और कंक्रीट के जंगल की......मन में चिंता होती है कि यूँ ही सब मकान बनते रहे तो खेत कहाँ रहेंगे ...और खेत नहीं रहेंगे तो खाने को क्या मिलेगा ...पर रोहतक से हिसार के दूर दूर तक फैले पीले सरसो के फूल, गेहूं की नवजात बालियाँ यह आश्वासन देती लगती है कि चिंता मत करो अभी हम है, पर कब तक यह कह नहीं सकते...तभी बीडी के धुएँ से बस के अन्दर ध्यान जाता है .....हरियाणा की बस है सो कम्बल लपेटे बेबाक से कई ताऊ जी बैठे हैं... कुछ ताई जी भी हैं जो

अभी भी हाथ भर घूँघट में हैं पर उनकी आँखें बाहर देख रही रही ..दिल्ली से एक लड़के को सीट नहीं मिली है और रोहतक से आगे बस आ चुकी है, वह सीट के साथ बैठे ताऊ को थोड़ा अपना कम्बल समेट लेने को कहता है, जिससे वह वहां बैठ सके ...पर ताऊ बड़ी सी हम्बे कर के उसको देखता है और फैल कर बैठ जाता है..लड़का फिर कहता है कि 'मैंने भी टिकट ली है, बैठने दो मुझे यहाँ' ...ताऊ उसको घूर कर कहता है कि 'थम जा अभी महम आने पर मैं उतरूंगा तब यहाँ बैठ लीजो...टिकट रख ले अपने खीसे में .... 'और शान से अपनी बीडी का धुंआ फेंकता है जो सीधे मेरी तरफ आता है और मैं रुमाल से अपना नाक बंद कर लेती हूँ .. लगता है कि इसको कुछ कहूँ पर लड़के को दिये जवाब से चुप हो जाती हूँ ...और ब्लागर ताऊ जी की इब खूंटे पर याद करके मुस्कराने लगती हूँ ...ताऊ जी के लिखे कई कारनामे याद आने लगते हैं ...ब्लागिंग से जुड़े कई काम याद आने लगते हैं...

यात्रा वृतांत

महम आ गया है और वह ताऊ जी उतर गए हैं ...लड़का लपक के वह सीट ले लेता है...बस फिर आगे को भागने लगती है...तभी मेरे सेल की घंटी बजती है और बहन पूछती है कि कहाँ तक पहुँची तुम... महम से बस निकल चुकी है कुछ ही देर हुई है... मैं कहती हूँ कि हांसी आने वाला है पहुँच जाऊंगी कुछ देर में..तभी आगे की सीट पर उंघती महिला एक दम से चौकस हो जाती है और खिड़की से बाहर देख कर मेरी तरफ देख के कहती है अभी हांसी दूर है ..उन्होंने शायद वहीं उतरना है इस लिए एक दम से चौंक गई है ...सेल पर मेरी बात सुन कर. ..मैं कुछ सोच कर मुस्करा देती हूँ ...मैं भी बाहर देखने लगती हूँ ..गांव है, घरों के आगे चारपाई पर हुक्के सुलगे हुए हैं.. कई बुजुर्गवार बैठे हैं... घर के आगे की हवेली में ट्रेक्टर और भैसें बंधी हुई हैं.... सड़क के साथ ही एक स्कूल से लड़के नीली वर्दी पहने निकल रहे हैं और जाते हुए ट्रेक्टर में लदे गन्नों को लपकने की कोशिश में हैं ....लडकियां नहीं दिखती नीली वर्दी में...कुछ आगे जाने पर दिखती है चेहरा ढके हुए...कुछ सिर पर घडा रखे हैं, पानी भरने जा रही है, किसी के सिर पर चारा है और कोई भैंसों को नहला कर घर की और ले जा रही है...इस रास्ते से आते जाते अब तक कई सालों से लड़कियों को सिर्फ इसी तरह से देखा है.. ....आगे बैठा लड़का अब शायद अपनी गर्लफ्रेंड से बात कर रहा है ...सेल पर.. .

उसकी आवाज तेज है जो सुनाई दे रही है किसी बात पर मनाने की कोशिश है, आवाज में बेचारगी है पर चेहरे पर आक्रोश है ...अभी अभी आँखों में खिले सपने हैं ..उसको देख कर नजर फेर लेती हूँ कहीं मेरे यूँ देखने से वह परेशान न हो जाए पर मेरे कान उसकी बातों को न चाहते हुए भी सुनते रहते हैं...और फिर कुछ देर पहले उस औरत पर जो मुस्कराहट आई थी वह अपने ऊपर आ जाती है...इंसानी फितरत स्वभाव से मजबूर है क्या करें...

वापसी पर भी वही सब है भरी बस, कम्बल लपेटे ताऊ जी, आधे घूँघट में ताई जी और बीडी का धुंआ.....जो रोहतक आते आते कम हो जाता है....हिसार से रोहतक तक तेज रफ्तार और दिल्ली की शुरुआत होते ही वही कंक्रीट के जंगल... मेट्रो का रास्ता बनाते मजदूर ...बस अड्डे से ऑटो ले कर घर का रास्ता तय हो ही रहा होता है । रास्ते में कई झुग्गियां टूटी हुई हैं .. यहाँ पर अब मेट्रो का रास्ता बनेगा... फिर यह मजदूर और कागज बीनने वाले कहाँ रहेगे ? ठण्ड भी कितनी है, बारीश भी हो रही है ...उनके टूटे घरों में चूल्हा जल रहा है शायद खाने पीने का काम जल्दी से ख़त्म कर के सोने की कोई जगह तलाश करेंगे ।

तभी एक जोर की ब्रेक ले कर ऑटो एक दम से घूम जाता है सामने के नजारा देखकर मेरी रूह कांप जाती है... एक बाइक वाले ने सीधे जाते जाते एक दम से यू टर्न ले लिया था, उसको बचाने के चक्कर में ऑटो वाले ने एक दम से ब्रेक

लागने की कोशिश की और एक ब्लू लाइन बस हमारे ऑटो को छूती हुई निकल गई...यानी कुछ पल यदि नहीं संभलते तो अपना टिकट ऊपर का काटने वाला था . ..ऑटो वाला सकते में कुछ पल यूँ ही खड़ा रहता है..... और फिर धीरे से कहता है.

'मैडम आज तो बच गए....मैं भी कुछ पल तक जैसे सकते में आ जाती हूँ. ......मन ही मन जय श्री कृष्ण और बाबा जी का शुक्रिया अदा करती हूँ , और रास्ते में फिर से टूटी झुग्गियों को देख कर सोचती हूँ कि इतनी ठण्ड में यह अब कैसे रहेंगे...कुछ समय पहले लिखी अपनी कुछ पंक्तियाँ याद आने लगती है...

रंजना भाटिया
सम्पर्क सूत्रः
सी-1/121,लाजपत नगर-1,
नई दिल्ली-24
मो. 9971780817
Email:

दिख रहा है ......
जल्द ही
दिल्ली का नक्शा बदल जायेगा
खेल कूद के लिए खुद रहा है
दिल्ली की सड़कों का सीना
हर तरफ मिटटी खोदते
संवारते यह हाथ
न जाने कहाँ खो जायंगे ।
सजाती दिल्ली को
यह प्रेत से साए
गुमनामी में गुम हो जायेंगे ।
घने ठंड के कुहरे में
दूर गांव से आए यह मजदूर
फटे पुराने कपड़ों से ढकते तन को
खुद को दे सके न चाहे एक छत
पर आने वाले वक्त को
मेट्रो और सुंदर घरों का
एक तोहफा
सजा संवार के दे जायेंगे ।

कुछ खासः अंक विशेष

प्रेम, वसंत और वैलेंटाइन

आकांशा यादव
सम्पर्क सूत्रः
टाइप-5, निदेशक
बंगला, जीपीओ कैम्पस,
सिविल लाइंस, इलाहाबाद
Email:
kk_akanksha@yahoo.com

प्यार क्या है ? यह एक बड़ा अजीब सा प्रश्न है। पिछले दिनों इमरोज जी का एक इण्टरव्यू पढ़ रही थी, जिसमें उन्होंने कहा था कि जब वे अमृता प्रीतम के लिए कुछ करते थे तो किसी चीज की आशा नहीं रखते थे। जाहिर है प्यार का यही रूप भी है, जिसमें व्यक्ति चीजें आत्मिक खुशी के लिए करता है न कि किसी अपेक्षा के लिए। पर क्या वाकई यह प्यार अभी जिन्दा है? हम वाकई प्यार में कोई अपेक्षा नहीं रखते। यदि रखते हैं तो हम सिर्फ रिश्ते निभाते हैं, प्यार नहीं? क्या हम अपने पति, बच्चों, माँ-पिता, भाई-बहन, से कोई अपेक्षा नहीं रखते। सवाल बड़ा जटिल है पर प्यार का पैमाना क्या है? यदि किसी दिन पत्नी या प्रेमिका ने बड़े मन से खाना बनाया और पतिदेव या प्रेमी ने तारीफ के दो शब्द तक नहीं कहे, तो पत्नी का असहज हो जाना स्वाभाविक है। अर्थात पत्नी-प्रेमिका अपेक्षा रखती हैं कि उसके अच्छे कार्यों की सराहना की जाये। यही बात पति या प्रेमी पर भी लागू होती है। वह चाहे मैनर हो या औपचारिकता, मुख से अनायास ही निकल पड़ता है- 'धन्यवाद या इसकी क्या जरूरत थी।' यहाँ तक कि आपसी रिश्तों में भी ये चीजें जीवन का अनिवार्य अंग बन गई हैं। जीवन की इस भागदौड़ में ये छोटे-छोटे शब्द एक आश्वस्ति सी देते हैं। पर सवाल अभी भी वहीं है कि क्या प्यार में अपेक्षायें नहीं होती हैं? सिर्फ दूसरे की खुशी अर्थात् स्व का भाव मिटाकर चाहने की प्रवृत्ति ही प्यार कही जायेगी। यहाँ पर मशहूर दार्शनिक ख़लील जिब्रान के शब्द याद आते हैं- ***"जब पहली बार प्रेम ने अपनी जादुई किरणों से मेरी आंखें खोली थीं और अपनी जोशीली अंगुलियों से मेरी रूह को छुआ था, तब दिन सपनों की तरह और रातें विवाह के उत्सव की तरह बीतीं।"***

भारतीय संस्कृति में तो इस प्यार के लिए एक पूरा मौसम ही है-वसंत। वसंत तो प्रकृति का यौवन है, उल्लास की ऋतु है। इसके आते ही फिजा में रूमानियत छाने लगती है। **निराला जी** कहते हैं-

सखि वसंत आया
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया।

वसंत के सौंदर्य में जो उल्लास मिलता है, फिर हर कोई चाहता है कि अपने प्यार के इजहार के लिए उसे अगले वसंत का इंतजार न करना पड़े। भारतीय संस्कृति में ऋतुराज वसंत की अपनी महिमा है। प्यार के बहाने वसंत की महिमा साहित्य और लोक संस्कृति में भी छाई है। तभी तो **'अज्ञेय'** ऋतुराज का स्वागत करते नजर आते हैं-

अरे ऋतुराज आ गया।
पूछते हैं मेघ, क्या वसंत आ गया?
हंस रहा समीर, वह छली भुला गया।
किंतु मस्त कोंपलें सलज्ज सोचती-
हमें कौन स्नेह स्पर्श कर जगा गया?
वही ऋतुराज आ गया।

प्रेम आरम्भ से ही आकर्षण का केंद्र बिंदु रहा है। **कबीर** ने तो यहाँ तक कह दिया कि- ***'ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'***

प्रेम को लेकर न जाने कितना कुछ कहा गया, रचा गया। यहाँ तक कि वैदिक ऋचायें भी इससे अछूती नहीं रहीं। वहाँ भी प्रेम की महिमा गाई गई है। अथर्ववेद के एक प्रेम गीत 'प्रिया आ' के हिन्दी में रूपांतरित सुमधुर बोल अनायास ही दिलोदिमाग को झंकृत करने लगते हैं-

मत दूर जा लिपट मेरी देह से
लता लतरती ज्यों पेड़ से
मेरे तन के तने पर
तू आ टिक जा अंक लगा मुझे,
कभी न दूर जा पंछी के पंख कतर,
जमीं पर उतार लाते ज्यों छेदन करता मैं तेरे दिल का,
प्रिया आ, मत दूर जा। धरती और अंबर को सूरज ढक लेता ज्यों,
तुझे अपनी बीज भूमि बना आच्छादित कर लूंगा,
तुरंत प्रिया आ, मन में छा, कभी न दूर जा आ प्रिया।

प्रेम एक बेहद मासूम अभिव्यक्ति है। अर्थववेद में समाहित ये प्रेम गीत भला किसे न बांध पायेंगे। जो लोग प्रेम को पश्चिमी चश्मे से देखने का प्रयास करते हैं, वे इन प्रेम गीतों को महसूस करें और फिर सोचें कि भारतीय प्रेम और पाश्चात्य प्रेम का फर्क क्या है? प्रेम सिर्फ दैहिक नहीं होता, तात्कालिक नहीं होता, उसमें एक समर्पण होता है। अथर्ववेद के ही एक अन्य गीत 'तेरा अभिषेक करूं मैं' में अतर्निहित भावाभिव्यक्तियों को देखें-

पृथ्वी के पयस से अभिषेक करूँ
औषध के रस से अभिषेक
धन-संतति से सुख-सौभाग्य
सभी तुझ पर वार करूँ मैं।
यह मैं हूँ वह तुम
मैं साम तुम ऋचा

मैं आकाश तुम धरा।
हम दोनों मिल सुख सौभाग्य से
संतति संग जीवन बिताएं।

वेदों की ऋचाओं से लेकर कबीर-वाणी के तत्व को सहेजता यह प्रेम सिर्फ लौकिक नहीं अलौकिक और अप्रतिम भी है। इसकी मादकता में भी आत्म और परमात्म का ज्ञान है। तभी तो **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** कहते हैं- 'वसंत का मादक काल उस रहस्यमय दिन की स्मृति लेकर आता है, जब महाकाल के अदृश्य इंगित पर सूर्य और धरती-एक ही महापिंड के दो रूप-उसी प्रकार वियुक्त हुए थे जिस प्रकार किसी दिन शिव और शक्ति अलग हो गए थे। तब से यह लीला चल रही है।"

हमारे यहाँ तो प्रेम अध्यात्म से लेकर पोथियों तक पसरा पड़ा है। उसके लिए किसी साकार और निर्विकार का भेद नहीं बल्कि महसूस करने की जरूरत है। राधा-कृष्ण का प्रेम भी अपनी पराकाष्ठा था तो उसी कृष्ण के प्रेम में मीरा का जोगन हो जाना भी पराकाष्ठा को दर्शाता है। आखिर इस प्रेम में देह कहाँ है ? खजुराहो और कोणार्क की भित्तमूर्तियाँ तो देवी- देवताओं को भी अलंकृत करती हैं। फिर कबीर भला क्यों न कहें- 'ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'

पर, दुर्भाग्यवश आज की युवा पीढ़ी प्यार के लिए भी पाश्चात्य संस्कृति की ओर झाँकती है। लैला-मजनू, शीरी-फरहाद, रोमियो-जूलियट के प्यार के किस्से सुनते-सुनते जो पीढ़ियाँ बड़ी हुईं, उनके अंदर प्रेम का अनछुआ अहसास कब घर कर गया पता ही नहीं चला। मन ही मन में किसी को चाहने और यादों में जिन्दगी गुजार देने का फलसफा देखते ही देखते पुराना हो गया। फिल्मों और टी०वी० सीरियलों ने प्रेम को अभिव्यक्त करने के ऐसे-ऐसे तरीके बता दिए कि युवा पीढ़ी वाकई 'मोबाइल' हो गई, पत्रों की जगह 'चैट' ने ले ली और अब प्यार का इजहार 'ट्वीट' करके किया जाने लगा। प्रेम का रस उसे वेलेण्टाइन-दिवस में दिखता है, जो कि कुछ दिनों का खुमार मात्र है । ऋतुराज वसंत और इसकी मादकता की महिमा वह तभी जानता है, जब वह 'वेलेण्टाइन' के पंखों पर सवार होकर अपनी खुमारी फैलाने लगे। दरअसल यही दुर्भाग्य है कि हम जब तक किसी चीज पर पश्चिमी सभ्यता का ओढ़ावा नहीं ओढ़ लेते, उसे मानने को तैयार ही नहीं होते। 'योग' की महिमा हमने तभी जानी जब वह 'योगा' होकर आयातित हुआ। और यही बात इस प्रेम पर भी लागू हो रही है। काश कि वे वसंती बयार में मदमदाते इस प्यार को अंदर से महसूस करते-

शुभ हो वसंत तुम्हें
शुभ्र, परितृप्त, मंद मंद हिलकोरता
ऊपर से बहती है सूखी मंडराती हवा,
भीतर से न्योतता विलास गदराता है
ऊपर से झरते हैं कोटि कोटि सूखे पात
भीतर से नीर कोंपलों को उकसाता है
ऊपर से फटे से हैं सीठे अधजगे होठ
भीतर से रस का कटोरा भरा आता है।

(विजयदेव नारायण साही)

फिलहाल वैलेंटाइन-डे का खुमार युवाओं के दिलो-दिमाग पर चढ़कर बोल रहा है। जो प्रेम कभी भीनी खुशबु बिखेरकर चला जाता था, वह जोड़ों को घर से भगाने लगा। कोई इसी दिन पण्डित से कहकर अपना विवाह-मुहूर्त निकलवाता है तो कोई इसे अपने जीवन का यादगार लम्हा बनाने का दूसरा बहाना ढूंढता है। एक तरफ नैतिकता की झंडाबरदार सेनायें वेलेण्टाइन-डे का विरोध करने और इसी बहाने चर्चा में आने का बेसब्री से इंतजार करती हैं- 'करेंगे डेटिंग तो करायेंगे वेडिंग।' यही नहीं इस सेना के लोग अपने साथ पण्डितों को लेकर भी चलते हैं, जिनके पास 'मंगलसूत्र' और 'हल्दी' होगी। अब वेलेण्टाइन डे के बहाने पण्डित जी की भी बल्ले-बल्ले हैं तो प्रेम की राह में 'खाप पंचायतें' भी अपना हुक्म चलाने लगीं। जब सबकी बल्ले-बल्ले हो तो भला बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कैसे पीछे रह सकती हैं। प्रेम कभी दो दिलों की धड़कन सुनता था, पर बाजारवाद की अंधी दौड़ ने इन दिलों में अहसास की बजाय गिफ्ट, ग्रीटिंग कार्ड, चाकलेट, फूलों का गुलदस्ता भर दिया और प्यार मासूमियत की जगह हैसियत मापने वाली वस्तु हो गई। 'प्रेम' रूपी बाजार को भुनाने के लिए उन्होंने वेलेण्टाइन-डे को बकायदा कई दिनों तक चलने वाले 'वेलेण्टाइन-उत्सव' में तब्दील कर दिया है। यही नहीं, हर दिन को अलग-अलग नाम दिया है और लोगों की जेब के अनुरूप गिफ्ट भी तय कर दिये हैं। यह उत्सव फ्रैगरेंस-डे, टैडीबियर-डे, रोज-डे स्माइल प्रपोज-डे, ज्वैलरी-डे, वेदर चॉकलेट-डे, मेक ए फ्रेंड डे, स्लैप कार्ड प्रॉमिस-डे, हग चॉकलेट किस डे, किस स्वीट हर्ट हग डे, लविंग हार्टस डे, वैलेण्टाइन डे, फॉरगिव थैंक्स फारेवर योर्स डे के रूप में अनवरत चलता रहता है और हर दिन को कार्पोरेट जगत से लेकर मॉल कल्चर और होटलों की रंगीनी से लेकर सोसल नेटवर्किंग वेबसाइट्स और मीडिया की फ्लैश में चकाचौंध कर दिया जाता है, और जब तक प्यार का खुमार उतरता है, करोड़ों के वारे-न्यारे हो चुके होते हैं। टेक्नोलॉजी ने जहाँ प्यार की राहें आसान बनाई, वहीं इस प्रेम की आड़ में डेटिंग और लिव-इन-रिलेशनशिप इतने गड्डमगड्ड हो गए कि प्रेम का 'शरीर' तो बचा पर उसका 'मन' भटकने लगा। प्रेम के नाम पर बचा रह गया 'देह विमर्श' और फिर एक प्रकार का उबाउपन। काश वसंत के मौसम में प्रेम का वह अहसास लौट आता-

वसंत वही आदर्श मौसम और
मन में कुछ टूटता सा अनुभव
से जानता हूँ कि यह वसंत है।

(रघुवीर सहाय)

24, हैरिंगटन मैन्शन,
8, हो-ची-सिंह सारणी,
कोलकाता-700071
फोन: 033-24000302
मो0 9830010986

शुक्तिका प्रकाशन

एक नजर

दुर्गतिविनाशनी

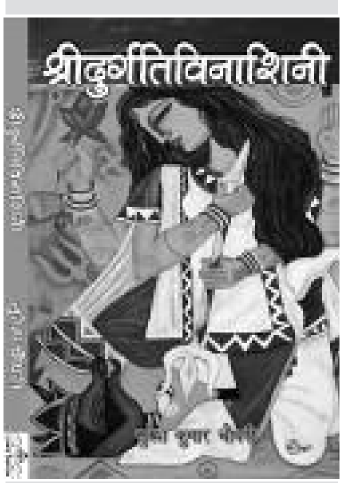

रचनाकारः सुरेश चौधरी

कोलकाता निवासी सुरेश चौधरी द्वारा रचित काव्य पुस्तक ‘श्रीदुर्गतिविनाशिनी’ में श्रीदुर्गासप्तशती के तेरह अध्यायों का संक्षिप्त एवं सरल शब्दों में काव्य वर्णन किया गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा भक्तगण देवी माँ की स्तुति कर लाभान्वित हो सकें। इस पुस्तक को मेरठ के उत्कर्ष प्रकाशन ने प्रकाशित किया है।

(प्रार्थना)

हे जगन्माता !
आप अनुपम तेजोमयी माँ !
आप के मुख मंडल पर आभाषित तेज
मुझे प्रदान करें,
मैं भी प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित रहूँ ।
कोमल केशों में समाहित सुरुभी से मुझे सुरभित करो,
मैं पा कोमलता कोमल बनूँ ।
ललाट पर विराजित देदीप्य-मान ओज दे माँ,
ज्ञानोदय मेरे मस्तिस्क में हो ।
आपके राजीव-लोचन से प्रवाहित ज्योत मुझे में प्रवेशित करें,
मेरे चक्षु भी विनय-अन्य की भिन्नता जान सके।
आपके वक्षस्थल में शोभित करुणा दें माँ,
मैं भी करुण बन दीन-सेवक होऊं।
आपकी दसों भुजाएं
अस्त्र-शस्त्र से
शोभायमान हो रही,
मुझे भी दसों दिशाओं से आ रही विपत्ति का अग्रिम भान हो।
माँ आपके केहरी के गर्जन से भयभीत हुआ जा रहा,
मुझे शक्ति दे, मैं सब कुत्सित विचारों से लड़ सकूँ ।
आपके अवर्णनीय चरणों में स्थान दे,
प्रत्येक क्षण आपकी शरण रहूँ।

सुरेश चौधरी

(साहित्यिक मध्यममार्गी)

सुरेश चौधरी

साहित्यिक जगत में नव-प्राचीन हिंदी के द्वन्द के बीच बिना विचलित हुए ही विभिन विधाओं में अपनी कलम सामान कौशलता से चलाते हुए सुरेश चौधरी अहिसास परिवार के वरिष्ठ तथा सक्रिय लेखक हैं। उनकी कवितायें किसी एक विधा की दासी नहीं वरन हिंदी के आकाश में स्वछंद तैरती तितलियों के सामान हैं। प्रस्तुत है परस्पर दो युगों को मिलाती ये कवितायें–

‘ज्ञानी उद्धव को, प्रिय माधव सो,
प्रेम पाठ सिखावे है
वृन्दावन धामा, किशोरी श्यामा,
प्रेम विद्या बतावे है
रतनारे नैना, छीने चौना,
डूबा प्रेम रस पिलावे है
होती प्रीत पूजा, धर्म न दूजा,
इंदु समझे समझावे है’

तथा–

‘चांदी सी चमकती चांदनी रात में
खेलने मेरी परी के साथ में
आज जमीन पर उतरा चाँद है
संग झिलमिलाती तारों की बरात है
दूध की सफेदी लिए उजाले से नहाई
गगन-परी भी खेलने आयी
वाह क्या बात है।’

दोनों ही रचनाएँ समकालीन समाज में सामान प्रभाव रखती हैं प्रथम जहाँ नव-कवियों को प्राचीनता की भव्यता से जोड़ती है वहीं द्वितीय नव-हिंदी के आगमन का गान गाती है. .. सुरेश जी को पढ़ते समय पाठक को निश्चित ही लेखक के गहन ज्ञान तथा आध्यात्मिक जुड़ाव के दर्शन होते हैं... आध्यात्मिकता में सरलता तथा दार्शनिकता दोनों का ही पुट होता है किन्तु नव-कवि मन को निश्चित ही सरलता आकर्षित करती है–

‘छाडी दो इसे बीच भंवर में
खा खा समय लहर को थपेड़ों
उर को मैल उतर जाए
प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल
नित नयो उत्पात मचाये’

सुरेश जी की विविधता का एक रूप उनका मनो भावों का एक उचित दर्शन भी है–

बंद कमरे के अंधेरों में रौशनी आने दो
बहुत मायूस हूँ जरा मुझे मुस्कराने दो
माना की बाहर बहुत सर्द मौसम है
बहुत गहरी धुंध छाई है
इंसान को इंसान नहीं दे रहा दिखाई है
जज्बाते दोस्ती के हाथ उठाओ
हथेलियों पर प्यार की गर्माहट आने दो
बहुत मायूस हूँ जरा मुझे मुस्कराने दो।

उपरोक्त कविता में कवि के मन को सीधा पढ़ पाना तो संभव नहीं किन्तु पाठक स्वयं की मन स्थिति से इन पंक्तियों को सरलता से जोड़ देता है... यही चौधरी जी के साहित्य को अनूठा बनता है...

‘हे कृष्ण कन्हाई कान्हा
कुंजबिहारी हे कमलकिशोर।
कालिंदी की कदरी काटी काट
कालिया को गर्व घोरा।।’

जैसी रचनाओं में कवि निश्चित ही प्राचीनता के समुद्र में गोते खाते हुए अतीत के गौरव को वर्तमान में सार्थकता प्रदान करते हैं ... तो वहीं धर्म के गान को सरल भाषा में समाज तक पहुंचने हेतु अथक प्रयास करते नजर आते हैं।

‘श्याम रंग में रंग्यो पक्षी तन मेरो
मन में बिसरावे।
कभी या डाल कभी वा डाल पर
बैठ प्रभु गुण गावें।।

निश्चित ही सुरेश जी हिंदी जगत में प्राचीनता के प्रहरी तो साथ ही साथ आधुनिकता के अभिलाषी भी हैं। अहिसास से जुड़ा युवा वर्ग कवि के शब्द विन्यास तथा दर्शन से बहुत कुछ सीखता है... अहिसास परिवार तथा नव हिंदी आपके आभारी हैं...

–गौरव नैथानी

सुरेश चौधरी आज के साहित्यिक आकाश में चमकने वाले वैसे सितारे हैं जिसकी रौशनी अंधेरी काली रात को भी सुहानी चाँदनी रात में बदलने की क्षमता रखता है। आज के परिपेक्ष्य में जहां साहित्य बस बिकने व दिखने की चीज रह गयी है वही सुरेश जी की रचनाशीलता हमें आज भी साहित्य की बची हुई स्वर्णिम धरोहर की याद दिलाती है। सुरेश जी की कविताओं में व्यक्त अध्यात्मिक चिंतन व अंतरमंथन अलौकिक होता है। शब्द गहरे तक असर करते हैं और इस प्रखर कवि के अद्भुत काव्य मर्मज्ञता को अभिव्यक्त करते हैं। मेरी समझ से सम्पूर्ण कवि की सार्थकता तब होती है जब वो परमसत्ता परमेश्वर की असीमित आभामंडल को भी अपने शब्दों से इंगित कर देता है और एक योगी की भांति पाठकों के सामने छिपे हुए रहस्यों को उजागर करता है। इस कार्य में सुरेश जी की लेखनी निरंतर कार्यरत है और आशा करता हूँ कि यूँही ये हमें काव्य के चरमोत्कर्ष का सुख शब्द दर शब्द दिलाते रहेंगे। शुभकामनाओं के साथ धन्यवाद ।

सत्यम शिवम
प्रधान सम्पादकः सृजक

26 दिसम्बर 2012 की शाम ऑरवेल हाऊस, मोतीहारी पर सी.आर.पी.एफ कमांडेन्ट परम शिवम जी, विश्वविख्यात डॉक्टर व कवि प्रकाश खेतान जी, वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० महेश्वर प्रसाद सिंह, प्रो० श्रीकांत पाण्डेय प्रसून व प्रसिद्ध रंगकर्मी प्रसाद रत्नेश्वर जी के संग चम्पारण के हर तबके से पहुँचे नामचीन साहित्यकारों की उपस्थिति में ‘सृजक’ पत्रिका के प्रवेशांक का विमोचन और काव्य शरद का आयोजन.........

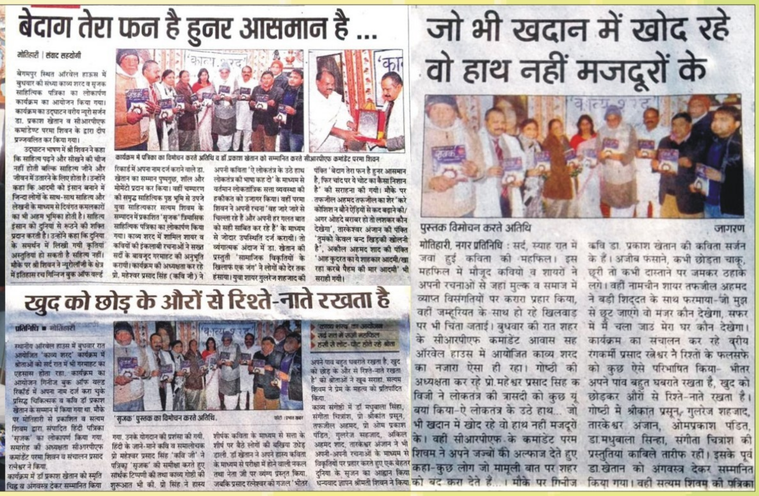

बेदाग तेरा फन है हुनर आसमान है ...

मोतिहारी | संवाद सहयोगी

बेगमपुर स्थित ऑरवेल हाउस में बुधवार की संध्या काव्य शरद व सृजक साहित्यिक पत्रिका का लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन वरीय न्यूरो सर्जन डा. प्रकाश खेतान व सीआरपीएफ कमांडेण्ट परमा शिवन के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

उद्घाटन भाषण में श्री शिवन ने कहा कि साहित्य पढ़ने और सीखने की चीज नहीं होती बल्कि साहित्य जीने और जीवन में उतारने के लिए होता है। उन्होंने कहा कि आदमी को इंसान बनाने में जिन्दा लोगों के साथ-साथ साहित्य और लेखनी के माध्यम से दिवंगत कमलकारों का भी अहम भूमिका होती है। साहित्य इंसान को दुनिया से रूठने की शक्ति प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि दुनिया के समर्थन में लिखी गयी कृतियां अस्तुतियां हो सकती है साहित्य नहीं। मौके पर श्री शिवन ने न्यूरोलॉजी के क्षेत्र में इतिहास रच गिन्निज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज कराने वाले डा. खेतान का सम्मान पुष्पगुछ, शॉल और मोमेंटो प्रदान कर किया। वहीं चम्पारण की समृद्ध साहित्यिक पृष्ठ भूमि से उपजे युवा साहित्यकार सत्यम शिवम के सम्पादन में प्रकाशित 'सृजक' त्रिमासिक साहित्यिक पत्रिका का लोकार्पण किया गया। काव्य शरद में शामिल शायर व कवियों की इंकलाबी रचनाओं ने सख्त सर्दी के बावजूद गरमाहट की अनुभूति करायी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. महेश्वर प्रसाद सिंह (कवि जी) ने अपनी कविता 'ऐ लोकतंत्र के उठे हाथ लोकतंत्र की भाषा कह दो' के माध्यम से वर्तमान लोकतांत्रिक सत्ता व्यवस्था की हकीकत को उजागर किया। वहीं परमा शिवन ने अपनी रचना 'वह जारे जारे से चिल्ला रहे हैं और अपनी हर गलत बात को सही साबित कर रहे हैं' के माध्यम से जोरदार उपस्थिति दर्ज करायी। तो व्यंगात्मक अंदाज में डा. खेतान की प्रस्तुती 'सामाजिक विकृतियों के खिलाफ एक जंग' ने लोगों को देर तक हंसाया। युवा शायर गुलरेज शहजाद की पंक्ति 'बेदाग तेरा फन है हुनर आसमान है, फिर चांद पर ये चोट का कैसा निशान है' की सराहना की गयी। मौके पर तफजील अहमद तफजील का शेर 'करे कोशिश न बौने ऐड़ियों से कद बढ़ाने की/ अगर ओहदे बराबर हो तो लश्कर कौन देखेगा', तारकेश्वर अंजान की पंक्ति 'तुमको केवल बन्द खिड़की खोलनी है', अकील अहमद शाद की पंक्ति 'आह कुदरत का ये शाहकार आदमी/खा रहा करबे पैहम की मार आदमी' भी सराही गयी।

कार्यक्रम में पत्रिका का विमोचन करते अतिथि व डॉ प्रकाश खेतान को सम्मानित करते सीआरपीएफ कमांडेंट परमा शिवन

खुद को छोड़ के औरों से रिश्ते-नाते रखता है

प्रतिनिधि ▪ मोतिहारी

- काव्य शरद का आयोजन
- सर्द रात में सजी महफिल
- हंसी से लोट-पोट होते रहे श्रोता

स्थानीय ऑरवेल हाउस में बुधवार रात आयोजित 'काव्य शरद' कार्यक्रम में श्रोताओं को सर्द रात में भी गरमाहट का एहसास होता रहा. कार्यक्रम का आयोजन गिनीज बुक ऑफ वल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करा चुके प्रसिद्ध चिकित्सक व कवि डॉ प्रकाश खेतान के सम्मान में किया गया था. मौके पर मोतिहारी से प्रकाशित व सत्यम शिवम द्वारा संपादित हिंदी पत्रिका 'सृजक' का लोकार्पण किया गया. समारोह की अध्यक्षता सीआरपीएफ कमांडेंट परमा शिवन व संचालन प्रसाद रत्नेश्वर ने किया.

कार्यक्रम में डॉ प्रकाश खेतान को स्मृति चिह्न व अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया. उनके योगदान की प्रशंसा की गयी. हिंदी के जाने-माने कवि व समालोचक प्रो महेश्वर प्रसाद सिंह 'कवि जी' ने पत्रिका 'सृजक' की समीक्षा करते हुए सार्थक टिप्पणी की तथा काव्य गोष्ठी की शुरूआत भी की. प्रो सिंह ने हास्य शीर्षक कविता के माध्यम से सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों की बखिया उधेड़ डाली. डॉ खेतान ने अपने हास्य कविता के माध्यम से परीक्षा में होने वाली नकल तथा नेता जी पर व्यंग्य प्रस्तुत किया. जबकि प्रसाद रत्नेश्वर की गजल 'भीतर अपने पाव बहुत घबराते रखता है, खुद को छोड़ के और से रिश्ते-नाते रखता है' को श्रोताओं ने खूब सराहा. सत्यम शिवम ने प्रेम के महत्व को प्रतिपादित किया.

काव्य संगोष्ठी में डॉ मधुबाला सिंहा, संगीता चित्रांश, प्रो श्रीकांत प्रसून, तफजील अहमद, प्रो ओम प्रकाश पंडित, गुलरेज सहजाद, अकिल अहमद शाद, तारकेश्वर अंजान ने भी अपनी-अपनी रचनाओं के माध्यम से विकृतियों पर प्रहार करते हुए एक बेहतर दुनिया के सृजन का आह्वान किया. धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती शिवन ने किया.

'सृजक' पुस्तक का विमोचन करते अतिथि. फोटो | प्रभात खबर

जो भी खदान में खोद रहे वो हाथ नहीं मजदूरों के

पुस्तक विमोचन करते अतिथि जागरण

मोतिहारी, नगर प्रतिनिधि : सर्द, स्याह रात में जवां हुई कविता की महफिल। इस महफिल में मौजूद कवियो व शायरों ने अपनी रचनाओं से जहां मुल्क व समाज में व्याप्त विसंगतियों पर करारा प्रहार किया, वहीं जम्हूरियत के साथ हो रहे खिलवाड़ पर भी चिंता जताई। बुधवार की रात शहर के सीआरपीएफ कमांडेंट आवास सह ऑरवेल हाउस में आयोजित काव्य शरद का नजारा ऐसा ही रहा। गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे प्रो. महेश्वर प्रसाद सिंह क विजी ने लोकतंत्र की त्रासदी को कुछ यूं बयां किया-ऐ लोकतंत्र के उठे हाथ... जो भी खदान में खोद रहे वो हाथ नहीं मजदूरों के। वहीं सीआरपीएफ के कमांडेंट परम शिवम ने अपने जज्बों को अल्फाज देते हुए कहा-कुछ लोग जो मामूली बात पर शहर को बंद करा देते हैं...। मौके पर गिनीज कवि डा. प्रकाश खेतान की कविता सर्जन के हैं। अजीब फंसाने, कभी छोड़ता चाकू, छूरी तो कभी दास्ताने पर जमकर ठहाके लगे। वहीं नामचीन शायर तफजील अहमद ने बड़ी शिद्दत के साथ फरमाया-जो मुझ से छूट जाएंगे वो मंजर कौन देखेगा, सफर में मैं चला जाउं मेरा घर कौन देखेगा। कार्यक्रम का संचालन कर रहे वरीय रंगकर्मी प्रसाद रत्नेश्वर ने रिश्तों के फलसफे को कुछ ऐसे परिभाषित किया- भीतर अपने पांव बहुत घबराते रखता है, खुद को छोड़कर औरों से रिश्ते-नाते रखता है। गोष्ठी में श्रीकांत प्रसून, गुलरेज शहजाद, तारकेश्वर अंजान, ओमप्रकाश पंडित, डा.मधुबाला सिन्हा, संगीता चित्रांश की प्रस्तुतियां काबिले तारीफ रहीं। इसके पूर्व डा.खेतान को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया। वहीं सत्यम शिवम की पत्रिका

‘साहित्य प्रेमी संघ’ के तत्वावधान में प्रकाशित पुस्तकें

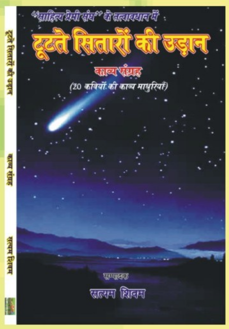
"साहित्य प्रेमी संघ" के तत्वावधान में
टूटते सितारों की उड़ान
काव्य संग्रह
(20 कवियों की काव्य माधुरियाँ)
सम्पादक
सत्यम शिवम

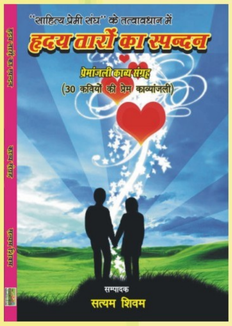
"साहित्य प्रेमी संघ" के तत्वावधान में
हृदय तारों का स्पन्दन
प्रेमांजली काव्य संग्रह
(30 कवियों की प्रेम काव्यांजली)
सम्पादक
सत्यम शिवम

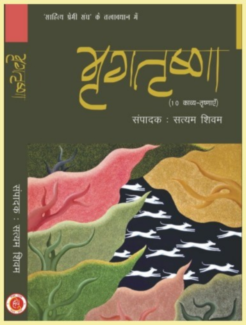

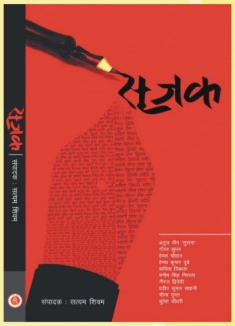

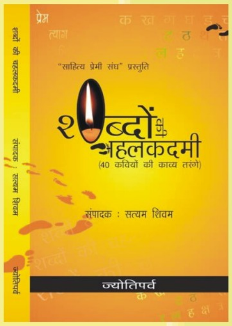

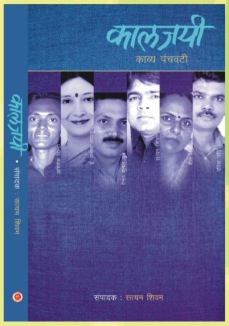

साहित्य प्रेमी संघ
साहित्य पुष्पों की खुशबू फैलाता एक संयुक्त ब्लॉग

साहित्य को नयी दिशा देती एक ऐसी संस्था जिसका ध्येय है नवोदित साहित्यकारों को प्रोत्साहित करना और सृजनात्मकता को एक नया आयाम देना...हमने अब तक हजारों नवागंतुकों को मंच दिया है.... और वे यहाँ पर अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने में सहज महसूस करते हैं....हम सृजन की एक नयी कहानी लिख रहे हैं....हर रोज नये ‘सृजक’ की उत्पति और शब्दों की नयी दुनिया का निर्माण....पेश है हमारी नई पहल....

www.sahityapremisangh.com

Facebook: https://www.facebook.com/Srijakhindi

Email: contact@sahityapremisangh.com

रामनवमी की हार्दिक मंगलकामनाएँ

Dr. Visvesvaraya Institute of Engineering & Technology

A division of Dr. Visvesvaraya Social welfare education society, bhopal
Registered Under SR Act of 1973, No. 44 of Govt, of Madhya Pradesh
Authorised Study Center Under Dep: 1) KARNATAKA STATE OPEN UNIVERSITY, Mysore (Center Code-SF/KSOU/544
Recognised by UGC, DEC and AIU HRD Ministry
2) JRN Rajasthan Vidhyapeeth University, Udaipur
Recognised by HRD Ministry Dept. Of Education Govt. Of India, UGC, DEC

Under Distance Education Program:

Courses Conducted under Distance Education Program (KSOU)
Diploma, **B.Tech, M.Tech, MBA, MCA, BCA, MA, M.Com, M.Sc, MLI.Sc, LLM, BA, B.Com, BLI.Sc**
Courses Conducted under Distance Education Program (RVD)
Diploma, B.Tech, MBA, BBA, BCA, MCA, PGDCA, M.Sc, M.A., MSW, M.Com, B.A, B.Com, BSW

ENGINEERING

Diploma Engineering

Mechanical
Electrical
Electronics & Telecommunication
Civil
Computer Science
Automobile
Duration : 3 Years **Semester :** 6

Bachelor of Technology

(B.Tech)
Civil
Computer Science
Mechanical
Electrical
Electronics & Telecommunication
Duration : 4 Years **Semester :** 8

Master of Technology

(M.Tech)
Civil
Computer Science
Mechanical
Electrical
Electronics & Telecommunication
Duration : 2 Years **Semester :** 4

Head Office: 18-A Kamakshi Complex, 2nd Floor, Infront of JK Road Bus Stop, Indrapuri BHEL, Bhopa
Email: viet_engginst@yahoo.com, Website: www.vietbhopal.com
Campus: Gram Khazuri Kalan, Amzara Road, Near SOS Ashram, Bhopal
Fax : 0755 - 4260750 Mob.: 9179732390, 9826058403